स्टैण्डर्ड

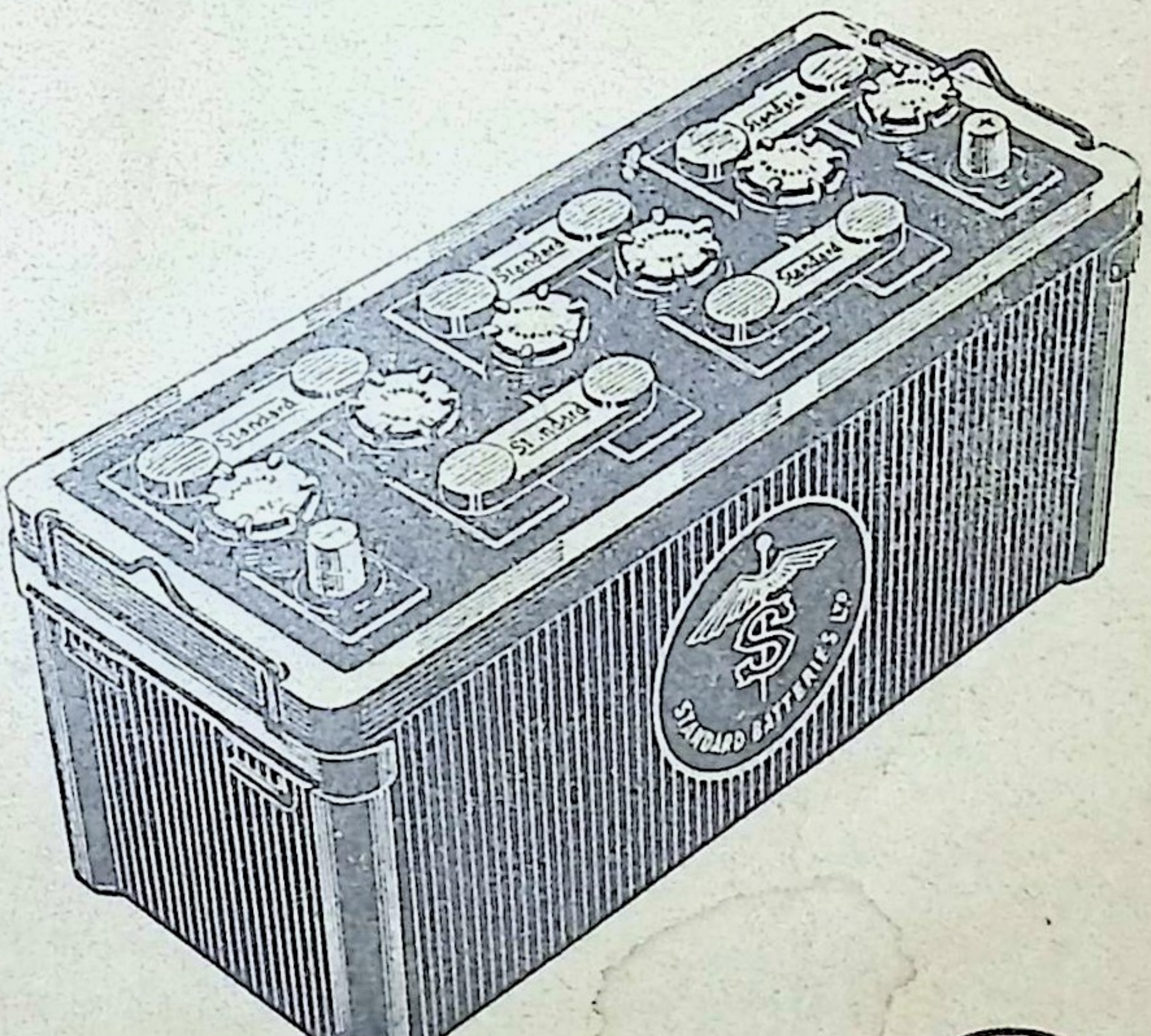

मोटरगाड़ियाँ चलाने के लिए
तीन महाद्वीपों में लोकप्रिय!

स्टैण्डर्ड बैटरीज़ लि०
वाकोला, सान्ता क्रूज पूर्व, बम्बई-५५

(JWT-STB. 1948

दीपावली के शुभ पर्व

पर

अपने ग्राहकों संरक्षकों व शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

नक़लों से सावधान

रजिस्टर्ड नं० ३०८०

लालतेल

ही बच्चों के

सूखा रोग

की प्रसिद्ध दवा

और

दाँत सरलता से निकलते हैं

लाल तेल फ़ार्मेसी उन्नाव यू. पी.

स्टाकिस्ट :- माता बदल पंसारी

अमीनाबाद

लखनऊ

हर शहर व कस्बे में सरलता पूर्वक प्राप्य

दीपावली पर हार्दिक
शुभ कामनायें

कमल. ब्राण्ड

**पाट
के
ग़लीचे व पट्टी**

कार्यालयों
स्कूलों तथा
घरों के लिए

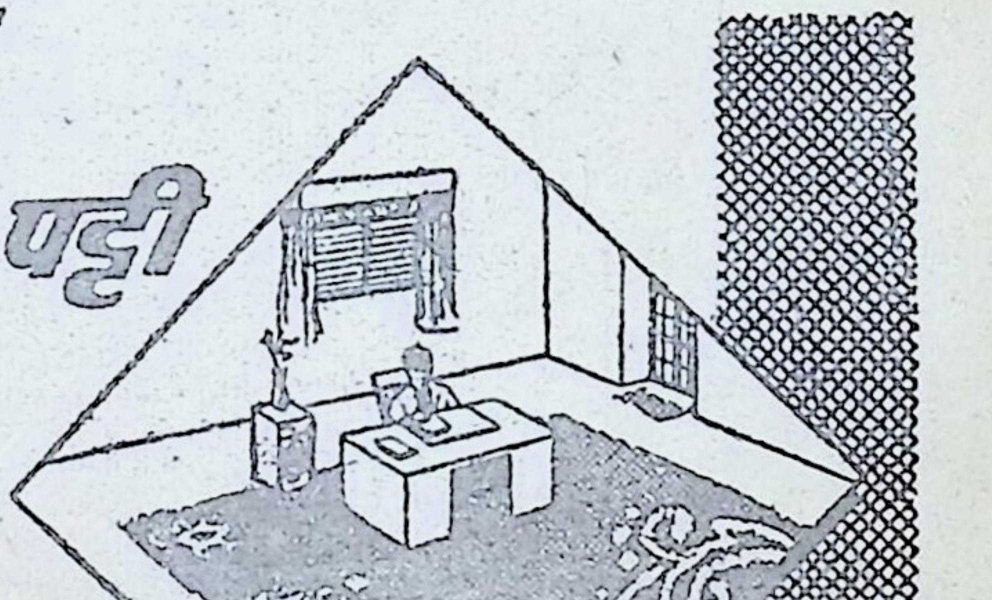

* अच्छी बुनाई
* आकर्षक
* टिकाऊ एवं मुलायम
* न्यूनतम मूल्य पर

खरदा कम्पनी लि.

७, वेलेस्ली प्लेस, कलकत्ता-१

वितरक: अमर उद्योग, कंचन भवन, पी रोड, कानपुर

With Compliments of :

M/s Graphic Suppliers

Distributors : Coates & Hooghly Inks

Dealers in All Kinds of :

Printing & Process, Machinery Materials

AND

Paper and Box-Board

166, GHASSIARI MANDI

OPP. BALDA, LUCKNOW.

Phone : 23348

शुभ दीपावली

हंसा

सम्पूर्ण परिवार

के लिए

दी रामपुर इंजीनियरिंग

कं० लि०

अजमेरीगेट, दिल्ली, फैक्टरी—रामपुर (उ.प्र.)

दूरध्वनि : साहित्य*दूरभाष्य ३३-५३५६

स्वस्तिका ट्रेडिंग कं०

१३२, तुलापटी (चार तल्ला)

कलकत्ता—७

सुतली, हेसीयन बोरा तथा नया व पुराना केनवास तिरपाल आदिके थोक व खुदरा व्यापारी व आढ़तिया।

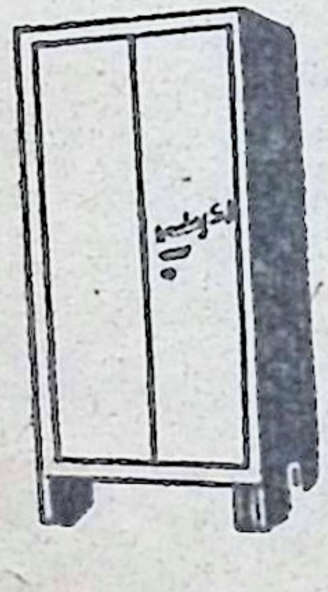

अलमारी, रैक कैबिनेट, कैश-बाक्स व स्टील फर्नीचर के लिये सुप्रसिद्ध निर्माता

अग्रपाल स्टील प्रोडक्ट्स

२७, खगेन्द्र चटर्जी रोड,
काशीपुर—कलकत्ता—२

सुरक्षा, सौंदर्य और सुदृढ़ता
की
गारेन्टी लीज़िये !

M.P.A.

दीपावली
की
हार्दिक शुभ कामनायें

IF **COLD** IS ON YOUR **NERVES**

YOU NEED

जोशीना

जब सरदी के कारण शरीर के अंग सुन्न होते प्रतीत हों, आंखों और नाक से पानी बहने लगे, शरीर मे बेचैनी अनुभव हो तो जोशीना प्रयोग कीजिए। यह छीकों और बेचैनी को रोकेगा, सांस की नालियों को खोलेगा और आराम पहुंचायेगा।

सदा एक शीशी अपने पास रखें

हमदर्द देहली कानपुर पटना

वर्ष की अत्युत्तम रोमांचक पुस्तक

"नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथायें"

—वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

तीन महत्वपूर्ण सम्मतियाँ :—

डा० जाकिर हुसैन, उपराष्ट्रपति : "मुझे विश्वास है कि यह पुस्तिका देशभक्ति की भावनाओं का संचार करने में समर्थ होगी।"

यशवन्तराव चह्वाण, रक्षामंत्री : "इस पुस्तक के प्रकाशित करने का जो निश्चय किया है वह सचमुच सराहनीय है।

इन्दिरा गांधी : श्री वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी के इन वीर गाथाओं के संकलन के लिये मैं उनको वधाई देती हूँ।

● सर्वत्र रोमांचकारी चित्रों से युक्त ● मूल्य २II) (डाक खर्च अलग)

● बच्चों में दशभक्ति की भावना पैदा करने के लिये उन्हें किशोर-उपन्यास माला उपहार में दें। मूल्य : प्रत्येक २)

स्थानीय पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें या लिखें

उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट नई सड़क, दिल्ली-६

S.D.A—115

—: दीपावली पर हार्दिक शुभ कामनायें :—

With the compliments of

M/s. SIMPLEX CONCRETE PILES (INDIA)

PRIVATE LIMITED.

Reinforced Concrete And Foundation Specialists

103/3, Diamond Harbour Road.

CALCUTTA — 38.

M. P. A.—I

दीपावली के शुभ अवसर पर !

क्या आप फोरम आफ फ्री एण्टर प्राइज के सदस्य बन चुके हैं ?

यदि आप विद्यार्थी हैं तो दो रुपये मात्र देकर विद्यार्थी सदस्य बनकर बारह माह तक हमारे प्रकाशन प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही हमारे वाचनालयों का भी उपयोग कर सकते हैं। विवरण के लिये लिखें :—**फोरम आफ फ्री एण्टरप्राइज**

२३५, डा.डी.एन.रोड, पो.बा.नं. ४८-A बम्बई-१

maa. FFE. 1113

तार—मारीवाला फोन—२६६३७

दीपावली के पावन पर्व पर

मारीवाला कोल्ड स्टोरेज

१२३/३६२, फैक्ट्रीएरिया, फजलगंज, कानपुर

ग्रालू के व्यापारियों, ग्राढ़तियों तथा किसानों

को

अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ

ग्रर्पित करता है

जनता की पसन्द में श्रेष्ठ

भारत के अपने दो उत्पादन

अजन्ता

लालटेन

और

स्टोव

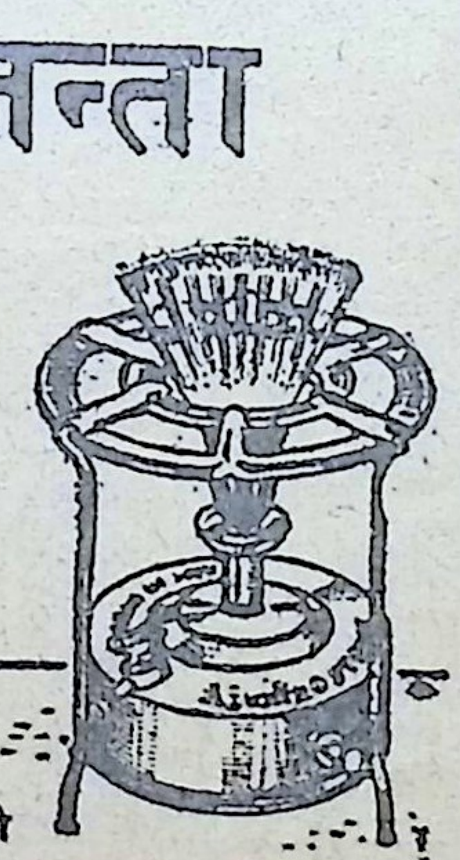

निर्माता : नारन लाला सेंटल वर्क्स नवसारी

एजेंट : सोराबजी खन्ना एंड कम्पनी, ५४० सदर बाजार, दिल्ली-६

और गांधी गेट अमृतसर

दीपावली के शुभकामनाएं

Gram : NIMBARAK
Ph : 346811 (3 Lines)

AGARWAL Hardware Works (P) Ltd.

167, Chittaranjan Avenue
Calcutta—7

STEEL RE-ROLLERS

Rounds, Squares, Flats, Octagons, Angles, Wire Rods, Cotton & Jute Baling Hoops

★

IRON FOUNDERS OF

Pipes & Specials (S.S. & D.F. Pipes-According To B. S. S.) Manhole Covers, Machine Parts, C. I. Pans, General up to 10 Tons each.

★

MANUFACTURERS OF

Bolts, Nuts, Rivates, Washers Dogspikes, Rounds spikes, Cotters & Tie Bars, Coal Tubs and other colliery Stores.

★

STRUCTURAL ENGINEERS

Light Structural Works for

- BUILDINGS,
- FACTORIES,
- & GODOWNS.

M P.A.—110

दीपावली अभिनन्दन

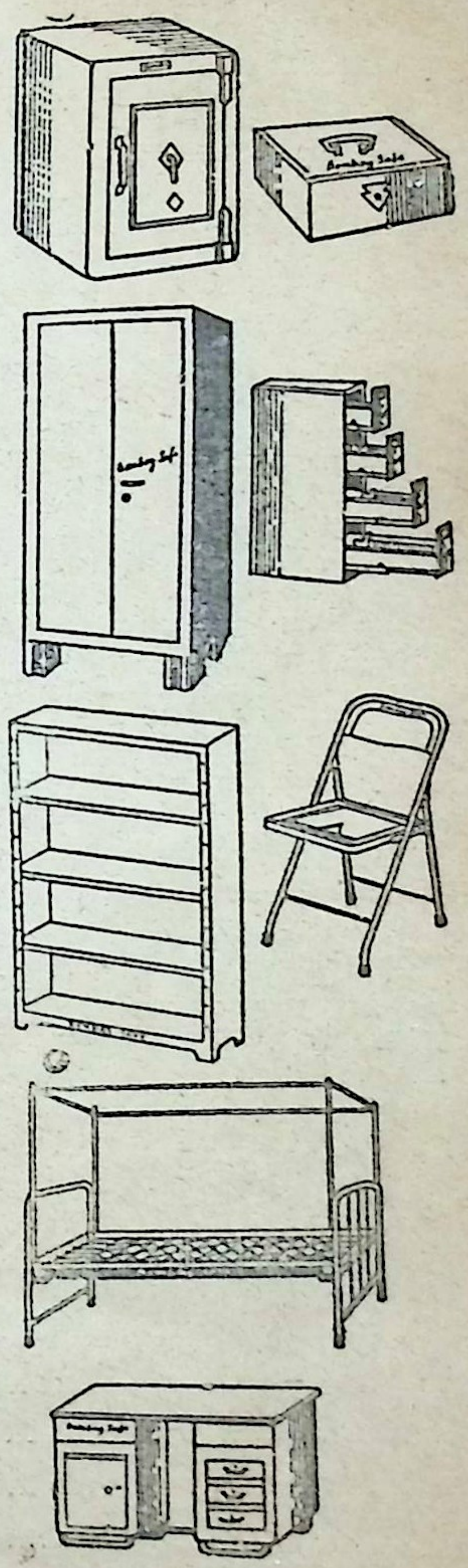

सभी प्रकार के घरेलू, आफिस,
अस्पताल का फर्नीचर देश के ऊंचे
दक्ष टक्नीशियनों द्वारा निर्मित

निर्माता :

बाम्बे सेफ एण्ड स्टील वर्क्स प्रा. लि.
५६, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१
फोन : २२-११८१

M.P.A.-109

भारती

"भवन की पत्रिका"

का

प्रकाशन अब पाक्षिक हो गया है

"भारती" की बढ़ती हुई मांग और दिन-दिन उन्नत होते स्तर को लक्ष्य में रखकर ३ नवम्बर १९६३ से यह पत्र पाक्षिक रूप में प्रकाशित हो रहा है । पाठकों को अब हर पन्द्रहवें दिन "कुलपति का पत्र", "कृष्णावतार" तथा विविध रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री पढ़ने को मिलेगी जिसके लिये भारती इतना सुप्रसिद्ध है, साथ ही "भारत के भव्य मन्दिर" नामक एक सचित्र लेखमाला इसी अंक से आरम्भ की जा रही है ।

पृष्ठ संख्या ७२ * मूल्य केवल ३० न.पै.

मैनेजर, स्थान ....

भारती तिथि..................

बम्बई—७

महोदय,

३ नवम्बर, १९६३ से मुझे/मेरे मित्र को भारती का वार्षिक ग्राहक बना कर निम्नलिखित पते पर अंक भेजने की कृपा करें ।

नाम..............................

पता..............................

....

....

मैंने ६५० न.पै. मनीआर्डर द्वारा भेज दिये हैं । भवदीय

हस्ताक्षर..................

I.P.C.

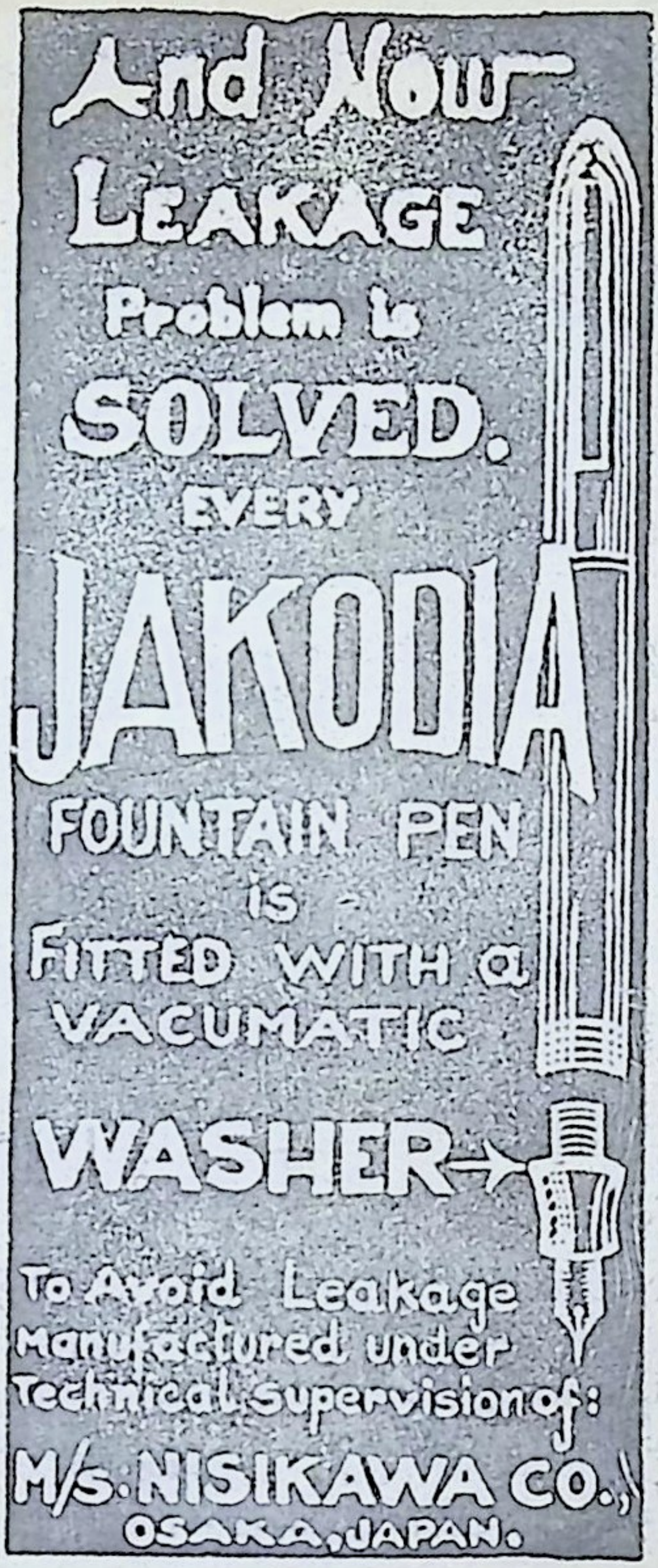

B.D.K.

सुन्दर और कलात्मक
छपाई के लिये
पधारें

स्वदेश प्रेस

गौतमबुद्ध मार्ग (बांसमण्डी)
लखनऊ

फोन : २२९०१

७

पाञ्चजन्य

युद्ध-अङ्क

राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख साप्ताहिक

सम्पादक

यादव राव

ज्ञानसागर वर्मा

भानुप्रताप शुक्ल

अच्युतानन्द मिश्र

●

मुखपृष्ठ

शक्ति रूपिणी भारत माँ

चित्रकार

बी. एन. आर्य

●

वर्ष १७

अंक १९-२०

दीपावली सं० २०२०

१५ नवम्बर, १९६३

●

मूल्य

१ रु० ५० न० पै०

इस अंक में–

विषय	लेखक	पृष्ठ
	सम्पादकीय	१९
अहिंसा और युद्ध	–श्री० दा० सातवलेकर	२२
युद्ध एक दैवी विधान	–श्री मा०स० गोलवलकर	२२
युद्ध क्यों होते हैं ?	–डा० सम्पूर्णानन्द	२८
युद्ध स्वर्ग का द्वार	–डा० वासुदेवशरण अग्रवाल	३०
आधुनिक शस्त्र एवं युद्ध तंत्र	–श्री यशवंत गणेश कोपरकर	३३
युद्ध और गुप्तचर विभाग	–ब्रिगेडियर स्वामीनाथन	४०
प्रक्षेपास्त्र और भावी युद्ध	–श्री परशुराम गोस्वामी	४४
साम्यवाद का अंतर्संघर्ष	–श्री ग० वि० केतकर	४९
सैनिक गुटबन्दियां–एक ऐतिहासिक विश्लेषण	–डा० रामनाथ भल्ला	५५
इतिहास की ये विडम्बनाएं	–च० राजगोपालाचारी	६५
विश्व में सैनिक तानाशाही का बढ़ता स्वरूप	–श्री गौरीनाथ रस्तोगी	६७
भारतीय हितों की हत्या पर आधारित कोलम्बो प्रस्ताव	–श्री लल्लन प्रसाद व्यास	७३
क्या भारत की सीमाएं अस्पष्ट हैं ?	–डा० गोपालाचारी	८१

पाक-चीन दुरभिसन्धि
—श्री रामनरेश सिंह ८७
चीनी आक्रमण—कारण और उद्देश्य
—श्री एन० राघवन पिल्लई ९३
पाक-चीन के षड्यन्त्रों से असम की रक्षा के लिए
—श्री नानाजी देशमुख ९७
विश्व में भारत की स्थिति एक भू-राजनैतिक अध्ययन
—प्रो० नित्यानन्द १०३
हमारी विजयशालिनी स्थलसेना
—कर्नल रामस्वरूप ११३
देश-रक्षा में उद्योगों का महत्व
—श्री सी० सुब्रमण्यम् ११७
पाक-चीन की सम्मिलित शक्ति से क्या भारत लोहा ले सकता है ?
—श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार १२०
युद्ध-कालीन अर्थ-नीति
—पं० दीनदयाल उपाध्याय महामंत्री (अ०भा० जनसंघ) १३१
सुरक्षा की कमजोर कड़ियाँ सिक्किम-भूटान
—श्री वीरेन्द्र आई. के. सरीन १३७
भारत अणुबम बनाए
—प्रो० राजेन्द्र सिंह १४५
अब हम भी तैयार हैं
—श्री यशवन्तराव चौव्हाण १४८
जब वाहिनियां टकराती हैं
—ले० जनरल थोराट १५३
नेफा पराजय का कलंक
—श्रीअटल बिहारी वाजपेयी १६१
नेफा पराजय के लिए सेना नहीं नेता उत्तरदायी
पं० किशोरीदास वाजपेयी १६७
विदेश नीति कसौटी पर
—प्रो० बलराज मधोक १६९
अपने बहादुर जवानों पर मुझे गर्व है
—जनरल करियप्पा १७७
यह प्रवञ्चना कब तक ?
—डा० राममनोहर लोहिया १८१
तटस्थता बनाम सुरक्षा
—श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी १८५
युद्ध हमारा धर्म
—श्री कन्हैयालाल मा० मुन्शी १९३
गली-गली रणभूमि बनेगी
—पं० कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' १९७
विजय का पथ
—श्री एम० ए० व्यंकट राव २००
राष्ट्र-रक्षा के लिए
पं० प्रेमनाथ डोगरा २०९
विजय की पंचसूत्री योजना
श्री वि० घ० देशपाण्डेय २१५
दो आदर्शों का संघर्ष
डा० सी० पी० रामस्वामी अय्यर २२३

● कविताएं

लहू में तैर-तैर कर नहा रहीं जवानियाँ
—श्री रामधारी सिंह—दिनकर ३२
बढ़ने दो लपटों को
—श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' ७८
यह तुंग हिमालय किसका है ?
—पं० श्यामनारायण पाण्डेय १२६
बोलो सुभाष ! बोलो सावरकर !!
—पं० वचनेश त्रिपाठी १२९
जिन्दगी रण में प्रतीक्षा कर रही है
—लाला जगदलपुरी १६०
कसम बिस्मिल की खाकर कह रहा हूँ
—श्री या० रा० ओकटे २०५

● कहानी

नया आदमी
—रसिक २२५

दीपावली

की

शुभकामनायें

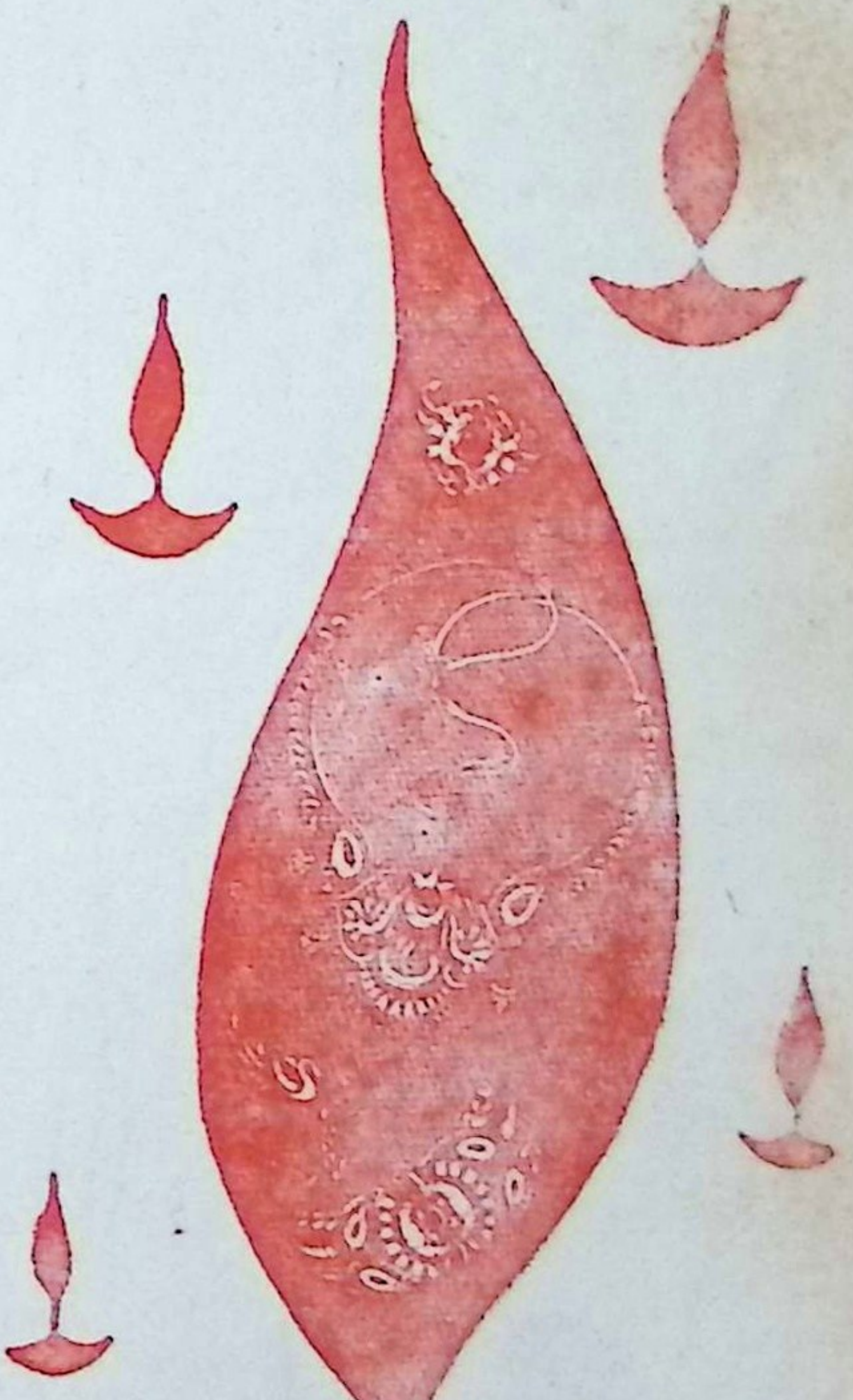

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि.

* पाञ्चजन्य
* तरुण भारत
* स्वदेश प्रेस

१, अशोकनगर, लखनऊ
पोस्ट बाक्स २०७
लखनऊ–१

दूरभाष
कार्यालय : २३१९६
प्रेस व सम्पादक : २२६०१

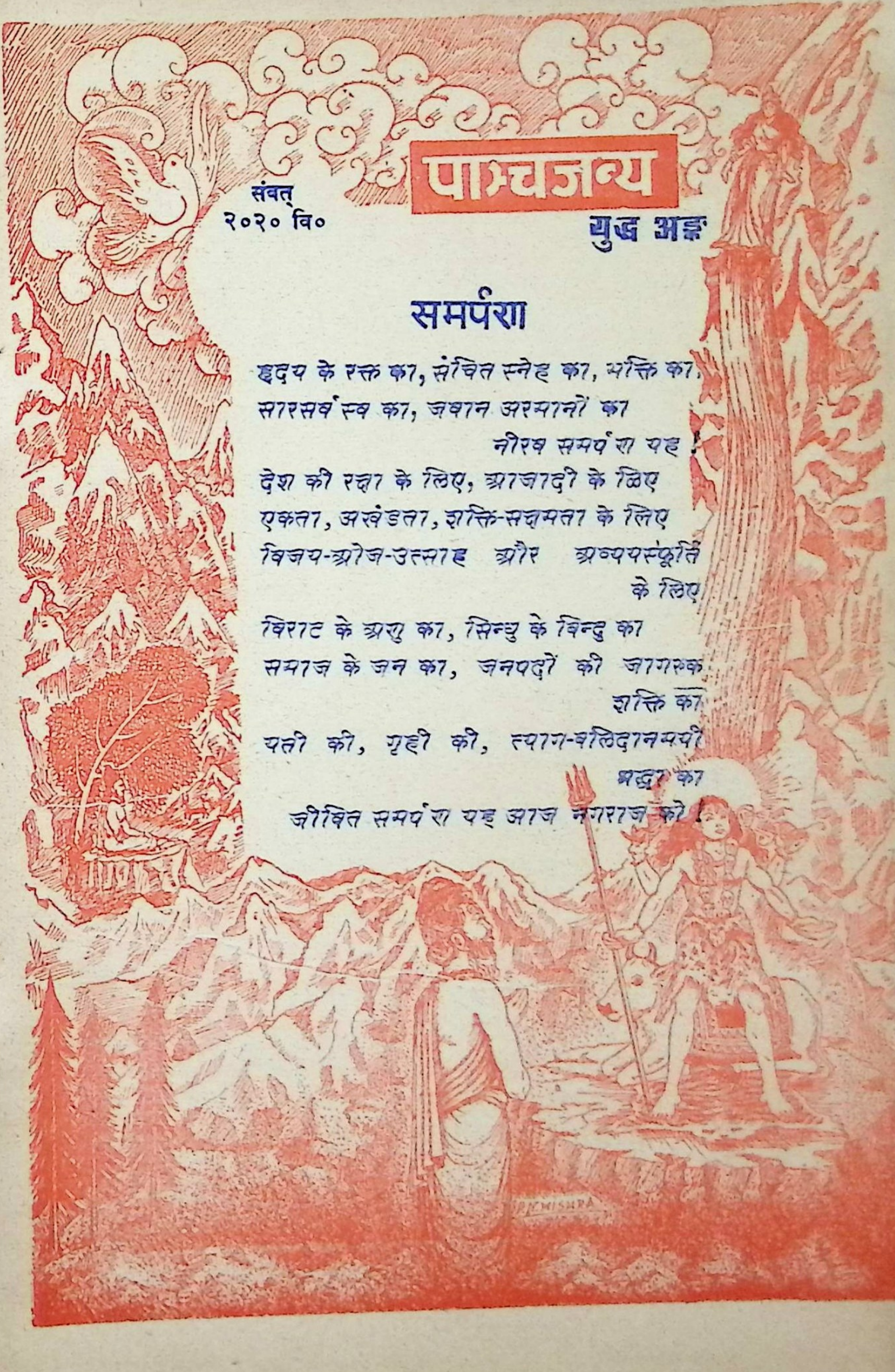

संवत्
२०२० वि०

पाञ्चजन्य

युद्ध अङ्क

समर्पण

हृदय के रक्त का, संचित स्नेह का, भक्ति का,
सारसर्वस्व का, जवान अरमानों का
नीरव समर्पण यह !
देश की रक्षा के लिए, आजादी के लिए
एकता, अखंडता, शक्ति-सक्षमता के लिए
विजय-ओज-उत्साह और अव्ययस्फूर्ति
के लिए
विराट के अणु का, सिन्धु के बिन्दु का
समाज के जन का, जनपदों की जागरूक
शक्ति का
यती की, गृही की, त्याग-बलिदानमयी
श्रद्धा का
जीवित समर्पण यह आज नगराज को !

अपनी बात

नेफा व लद्दाखके मोर्चों पर गत वर्ष भारतको पराजित होना पड़ा। सरकारकी नादानी और सुरक्षाके प्रति उपेक्षाका भारी मूल्य चुकाना पड़ा हमारे वीर जवानोंको अपने खून से। १८ हजार वर्गमील हमारी भूमि आज शत्रु के पजेंमें है और हमारा आहत स्वाभिमान दिल्लीके शाहंशाहोंकी देहली पर अपना सिर धुन रहा है। 'शत्रुके पञ्जेसे अपनी पवित्र धरतीके इञ्च-इञ्च भूमिको मुक्त' करने का संसदका पवित्र संकल्प रद्दीकी टोकरीमें फेंक दिया गया। विश्व-शान्तिके ठेकेदार, भारतीय अस्मिताके मूल्य पर शान्ति खरीदने का प्रयास कर रहे हैं। भारतका जन-जन व्याकुल है, अपमानके कलंकको धो डालने के लिए। पर शासन समझौतों की मृग-मरीचिका के पीछे भागकर अपमानों को भुला देना चाहता है; विश्व-शान्तिके नाम पर स्वयं को ही बरगलाना चाहता है; तैयारीके नाम पर समय काटना चाहता है।

संकटोंसे मुह मोड़ लेनेसे न संकट दूर हो सकते हैं न कोरी शुभेच्छाओंके बल पर दुश्मनोंको सही रास्ते पर लाया जा सकता है। 'युद्ध' की भाषा समझने वाले 'बुद्ध' की भाषा नहीं समझ सकते। उन्हें समझाने का, सही रास्ते पर लाने का, एक ही मार्ग है 'युद्ध'।

युद्ध टालने का प्रयास कर, न युधिष्ठिर दुर्योधनको सही रास्ते पर ला सके, न चेम्बरलेन हिटलरको। फिर 'अयूब' और 'माओ' को शान्ति और समझौतेसे रास्ते पर लानेका दुराग्रह क्या कभी फलीभूत हो सकेगा ?

भारतकी जनता अधिक दिनों तक इस स्थितिको बर्दाश्त नहीं कर सकेगी। पराजयके अपमानकी व्यथा उसके अन्तःकरणको कुरेद रही है। वह उसका बदला लिए बिना कभी शान्त न बैठ सकेगी।

पाञ्चजन्यका 'युद्ध अङ्क' सत्ताधीशोंकी मोह निन्द्रा भंगकर जनताके उस युद्ध-संकल्पको किञ्चित भी बल प्रदान कर सका तो हम अपने प्रयासोंको सार्थक मानेंगे। ●

—सम्पादक मण्डल

सम्पादकीय

रणचंडी का आह्वान करें

"भारत का वर्तमान इतिहास 'राष्ट्रीय शर्म' का इतिहास है" ये शब्द जब लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर बोलते हुए समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया ने कहे तब कतिपय बुद्धि-जीवियों ने उनकी भाषा को 'असन्तुलित' कहकर उसकी गंभीरता कम करने का प्रयास किया था। पर अपनी बुद्धि को कोरे तर्कों तक सीमित रखने वाले ये लोग विगत १६ वर्षों की उस ऐतिहासिक विडम्बना को समझने में असमर्थ रहे जिसके कारण भारत को एक 'पराजित राष्ट्र' कहलाने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ।

२६ जनवरी सन् १९२९, को रावी के तट पर की गई भारत के 'पूर्ण स्वाधीनता' की प्रतिज्ञा को विस्मृत कर ३ जून, सन् १९४७ को जब हमने 'खण्डित स्वराज्य' स्वीकार करने की तत्परता दिखाई उस दुर्भाग्यपूर्ण क्षण ने हमारे पराजय के इतिहास का श्रीगणेश किया। यह बात नहीं कि इसके पूर्व भारत को किसी युद्ध या मोर्चे में पराजय स्वीकार न करनी पड़ी हो। छोटी-बड़ी कितनी ही लड़ाइयों में विजय हमसे रूठी। पर ऐसा एक भी दुर्भाग्यपूर्ण अवसर नहीं आया जब हमने पराजय 'स्वीकार' कर ली हो। देश की एक-एक इञ्च भूमि को शत्रुओं से मुक्त कराने के लिए लगभग १२ सौ वर्षों तक यह राष्ट्र संघर्ष करता रहा। इतना लम्बा संघर्ष दुनिया के किसी राष्ट्र ने नहीं किया। इस काल में हुए अगणित बलिदान हमसे आशा रखते थे कि जिस देश की पवित्रता और अखण्डता के लिए उन्होंने अपने सर्वस्व की आहुति दी, आगे आने वाली पीढ़ियां उसकी रक्षा करेंगी। हमने उन पूर्वजों के साथ विश्वासघात कर उनकी पवित्र धरोहर को खण्डित कर डाला—अपनी स्वीकृति से, अपने ही हाथों से। माता की प्रतिमा भंग कर दी गई। उसे एक निर्जीव जमीन का टुकड़ा मानकर हमने शत्रुओं से सौदेबाजी की। मानव जीवन की इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है कि हमने इतना बड़ा पाप किया 'शान्ति' और 'सौहार्द' के नाम पर, जिसमें लगभग

एक करोड़ लोग मौत के घाट उतार दिये गये और कई करोड़ दर-दर भटकने के लिए बाध्य हुए।

एक बार हृदय में कायरता ने प्रवेश किया और मातृभूमि के प्रति उत्कट भक्ति की भावना दबा दी गई तो फिर प्रत्येक पग पर अपमानास्पद समझौते करने में संकोच ही क्या हो सकता था ? हाँ, अपनी कायरता को छिपाने के लिए हमारे नेताओं को एक आवरण की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति उन्होंने 'पञ्चशील' और 'विश्वशान्ति' के नारों से कर ली। फिर भूमिदान के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान के भी दान का जो सिलसिला चल पड़ा, आज तक वह विराम न ले सका।

'शान्ति' की खरीद के लिए हमने सिन्ध दिया, बलूचिस्तान दिया, पश्चिम सीमाप्रान्त दिया, आधा पंजाब दिया, आधा बंगाल दिया; पर 'शान्ति' देवी रूठी ही रही। कश्मीर पर हमला हुआ और पुनः 'शान्ति' के नाम पर हमने एक तिहाई कश्मीर का भी दान कर डाला। पाकिस्तानी दानव अपनी सफलता पर अट्टहास कर उठा। उसने बेरूबारी की मांग की—नहरी पानी का विवाद खड़ा किया। शान्ति के पुजारियों ने विश्वशान्ति के नाम पर, दानव की क्षुधा शान्त करने के लिए बेरूबारी दे दी, नहरी पानी दे दिया और ८१ करोड़ रुपये का उपहार भी दिया। भारत की जनताने इसका विरोध किया—राष्ट्रवादी नेताओं ने चेतावनी दी। पर विश्वशान्तिके ठीकेदारों के कानों में जूं तक न रेंगी। हमें समझाया गया कि "कश्मीर जाता है तो जाने दो—बेरूबारी की छोटी-सी जमीन के लिए पड़ोसी राष्ट्र से वैर मोल लेना कोई बुद्धिमानी की बात थोड़े ही है।" दुश्मन की भूख बढ़ती गई और हम उसे शान्त करने के लिए अपनी भूमि, धन और सम्मान सब कुछ दांव पर लगाते गये।

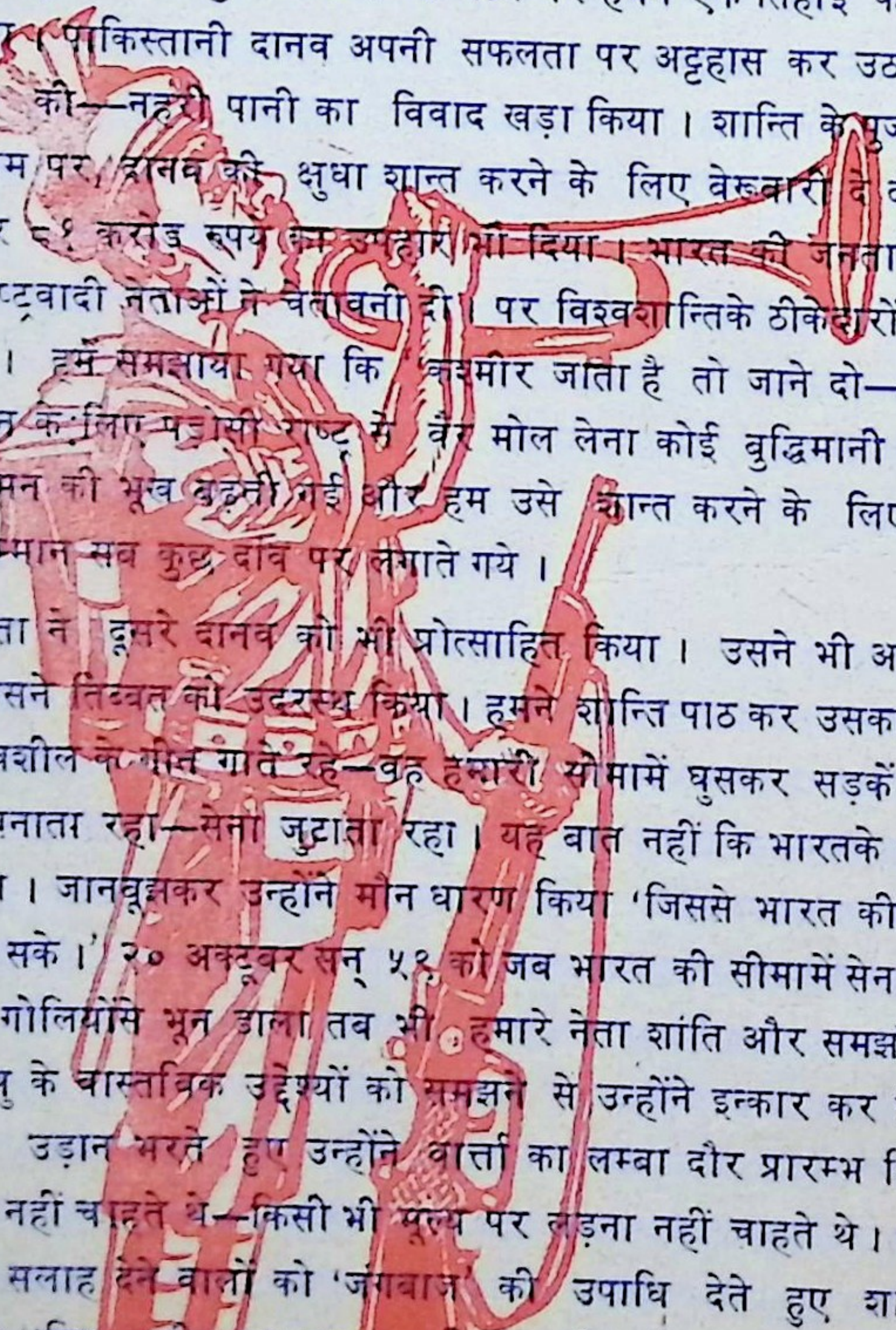

हमारी कायरता ने दूसरे दानव को भी प्रोत्साहित किया। उसने भी अपने पंजे बढ़ाने शुरू किये। उसने तिब्बत को उदरस्थ किया। हमने शान्ति पाठ कर उसका 'श्राद्ध' कर डाला। हम पंचशील के गीत गाते रहे—वह हमारी सीमामें घुसकर सड़कें बनाता रहा—हवाई अड्डे बनाता रहा—सेना जुटाता रहा। यह बात नहीं कि भारतके शासकों को उसका पता न हो। जानबूझकर उन्होंने मौन धारण किया 'जिससे भारत की जनता में रोष व्याप्त न हो सके।' २० अक्टूबर सन् ५९ को जब भारत की सीमामें सेना के नौ जवानों को चीनने गोलियोंसे भून डाला तब भी हमारे नेता शांति और समझौते की बातें करते रहे। शत्रु के वास्तविक उद्देश्यों को समझने से उन्होंने इन्कार कर दिया। काल्पनिक जगत में उड़ान भरते हुए उन्होंने वार्त्ता का लम्बा दौर प्रारम्भ किया। कारण कि वे लड़ना नहीं चाहते थे—किसी भी मूल्य पर लड़ना नहीं चाहते थे। लड़ाई की तैयारी करने की सलाह देने वालों को 'जंगबाज' की उपाधि देते हुए शान्ति पुजारियों ने कहा कि "जिस जमीन पर घास का तिनका भी नहीं उगता उसके लिए लड़ाई करने की बात मूर्खता नहीं तो क्या है?"

और फिर आया २० अक्टूबर सन् ६२ का वह दुर्दिन ! चीनने व्यापक पैमाने पर हमला कर दुनियां के बाजारमें हमारे शौर्य और स्वाभिमान को नीलाम कर डाला। नेफा में भारत की पराजय हुई। इसलिए नहीं कि हमारा शौर्य कम पड़ गया अपितु इसलिए कि हमारे नेताओं ने अहिंसा और पंचशील के नाम पर युद्ध से मुंह मोड़ कर राष्ट्र को तैयार न होने दिया। आज भारत का स्वाभिमान क्षत-विक्षत अवस्था में पड़ा कराह रहा है। कौन उसे सांत्वना दे ? कौन उसे आश्वस्त करे ?

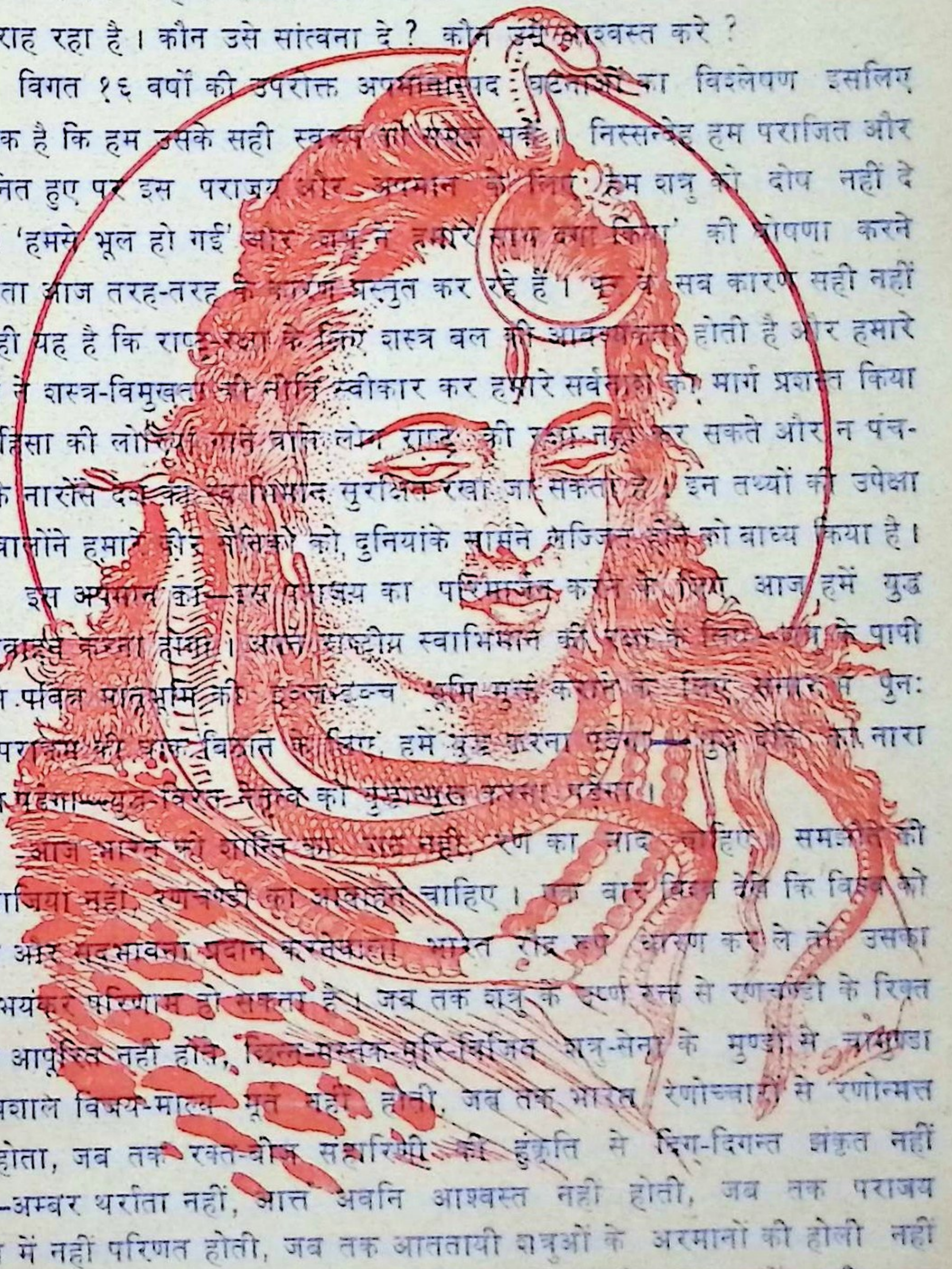

विगत १६ वर्षों की उपरोक्त अपमानप्रद घटनाओं का विश्लेषण इसलिए आवश्यक है कि हम उसके सही स्वरूप को समझ सकें। निस्सन्देह हम पराजित और अपमानित हुए पर इस पराजय और अपमान के लिए हम शत्रु को दोष नहीं दे सकते। 'हमसे भूल हो गई' और 'शत्रु ने हमारे साथ दगा किया' की घोषणा करने वाले नेता आज तरह-तरह के कारण प्रस्तुत कर रहे हैं। पर ये सब कारण सही नहीं हैं। सही यह है कि राष्ट्र-रक्षा के लिए शस्त्र बल की आवश्यकता होती है और हमारे नायकों ने शस्त्र-विमुखता की नीति स्वीकार कर हमारे सर्वनाश का मार्ग प्रशस्त किया है। अहिंसा की लोरियां गाने वाले लोग राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते और न पंचशील के नारोंसे देश का स्वाभिमान सुरक्षित रखा जा सकता है। इन तथ्यों की उपेक्षा करने वालोंने हमारे वीर सैनिकों को, दुनियांके सामने लज्जित होने को बाध्य किया है।

इस अपमान का—इस पराजय का परिमार्जन करने के लिए, आज हमें युद्ध का आवाहन करना होगा। अतः राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा के लिए—शत्रु के पापी पंजों से पवित्र मातृभूमि की इन्च-इन्च भूमि मुक्त कराने के लिए, संसार में पुनः अपने पराक्रम की धाक बिठाने के लिए, हमें युद्ध करना पड़ेगा—युद्ध देहि का नारा लगाना पड़ेगा—युद्ध-विरत नेतृत्व को युद्धातुर करना पड़ेगा।

आज भारत को शान्ति का राग नहीं, रण का नाद चाहिए। समझौते की कलाबाजियां नहीं, रणचण्डी का आवाहन चाहिए। एक बार विश्व देखे कि विश्व को शान्ति और सद्भावना प्रदान करनेवाला भारत रौद्र रूप धारण कर ले तो उसका कैसा भयंकर परिणाम हो सकता है। जब तक शत्रु के उष्ण रक्त से रणचण्डी के रिक्त खप्पर आपूरित नहीं होते, छिन्न-मस्तक-परिवर्जित शत्रु-सेना के मुण्डों से चामुण्डा की विशाल विजय-माला पूर्ण नहीं होती, जब तक भारत रणोच्चारों से रणोन्मत्त नहीं होता, जब तक रक्त-बीज संहारिणी की हुंकृति से दिग-दिगन्त झंकृत नहीं होते—अम्बर थर्राता नहीं, आर्त्त अवनि आश्वस्त नहीं होती, जब तक पराजय विजय में नहीं परिणत होती, जब तक आततायी शत्रुओं के अरमानों की होली नहीं जल जाती—तब तक भारत चैन से नहीं बैठेगा। नेफा और लद्दाख में शहीद हुए जवानों की आत्माएं भी तब तक शान्ति नहीं पा सकेंगी। राष्ट्रीय धर्म के इतिहास के इन कलंकित पृष्ठों के स्थान पर स्वाभिमान के स्वर्णिम पृष्ठ भी तब तक जोड़े नहीं जा सकेंगे। ● ●

अहिंसा और युद्ध

पं० श्री दा. सातवलेकर,

एक बार महानतम राजनीतिज्ञ चाणक्य से अहिंसा का अर्थ पूछा गया तो उत्तर मिला कि "आक्रमणकारी शत्रु को मारना ही अहिंसा है और उसके अत्याचारोंको चुपचाप सह लेना ही हिंसा है। क्योंकि इस प्रकार अत्याचारों को सहने से आत्मा का पतन होता है, उसका हनन होता है" और वेद के अनुसार आत्महन्ता मरने के पश्चात् ऐसे लोक को जाता है, जिसमें सूर्य का प्रकाश नाममात्र को भी नहीं होता। वेद में उस लोक को "असूर्य लोक" नाम दिया है। चाणक्य की अहिंसा की यह परिभाषा महात्मा बुद्ध की परिभाषा से सर्वथा विपरीत है। चाणक्य के समय में यह भारत पौरुष का भण्डार था। यही कारण था कि चाणक्य की नीति ने सिकन्दर और सेल्यूकस को भारत से खदेड़ कर सम्राट् चन्द्रगुप्त का चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किया।

यमका एक अंग "अहिंसा" प्राचीन कालसे भारतीय संस्कृतिका एक आवश्यक और मुख्य तत्व रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तत्वका यदि सोच-समझ कर उपयोग किया जाय, तो यह उपभोक्ताके एक बहुत बड़े उत्कर्षका कारण बन सकता है, पर जब इस शब्द को गलत अर्थोंमें लेकर इसका उपयोग किया जाता है तब यही शब्द जनतामें निष्कर्मण्यता पैदा करता है।

अहिंसाका अर्थ

योग दर्शनके "अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः" इस सूत्र पर भाष्य करते हुए भाष्यकार व्यास कहते हैं "निरपराध प्राणिषु कारुण्यमहिंसा" अर्थात् निरपराध प्राणियों पर दया दिखाना ही अहिंसा है। यही अर्थ समुचित है। आक्रमणकारी पशु या मनुष्यको आत्मरक्षामें मारना हिंसा नहीं कहलाती। वह भी अहिंसा ही है। पर किसी शान्त, निर्बल और निरपराध को बिना किसी कारण मारना हिंसा है और इस प्रकार की हिंसाका ही प्रतिरोध अहिंसामें किया गया है। यही अहिंसाका सच्चा स्वरूप है। आगे चलकर कुछ सुधारकोंने इस शब्दके अर्थको विकृत कर दिया और

जन्य

घोषणा की कि "यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर चांटा मारे, तो अपना दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो"। इस तरहके अनुचित और भीरुतापूर्ण प्रचार का परिणाम यह हुआ कि सारा भारत अक्कर्मण्य बन गया, डरपोक बन गया और उसमें इतना भी साहस न रहा कि वह शत्रुओंका मुकाबला कर सके।

एक बार महानतम राजनीतिज्ञ चाणक्यसे अहिंसाका अर्थ पूछा गया, तो उत्तर मिला कि "आक्रमणकारी शत्रु को मारना ही अहिंसा है और उसके अत्याचारोंको चुप-चाप सह लेना ही हिंसा है; क्योंकि इस प्रकार अत्याचारोंको सहनेसे आत्माका पतन होता है, उसका हनन होता है" और वेदके अनुसार आत्म-हन्ता मरनेके पश्चात् ऐसे लोकको जाता है, जिसमें सूर्यका प्रकाश नाम मात्रको भी नहीं होता। वेदमें उस लोकको "असूर्य लोक" नाम दिया है। चाणक्य की अहिंसाकी यह परिभाषा महात्मा बुद्धकी परिभाषासे सर्वथा विपरीति है। चाणक्यके समयमें यह भारत पौरुषका भण्डार था।

आततायीका हनन हिंसा नहीं है

अत्याचार करने वालेकी अपेक्षा अत्याचार सहने वाला ज्यादा पापी होता है। इसलिए ईंटका जवाब पत्थरसे देना ही पापसे बचनेका एक मात्र उपाय है। आततायीको मारना ही सच्ची अहिंसा है, इसीलिए मनु जी ने अपने स्मृति ग्रन्थमें लिखा है–

साहसे वर्त्तमानं तु यो मर्षयति पार्थिवः।
स विनाशं व्रजत्याशु विद्वेषं चाधि-
गच्छति ॥३४८॥
आत्मनश्च परित्राणे दक्षिणानां च संगरे।
स्त्री विप्राभ्युपपत्तौ च घ्नन्धर्मेण न
दुष्यति ॥३४९॥
गुरु वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्
आततायिन मायान्तं हन्यादेवा विचार-
यन् ॥३५०॥
नाततायि वधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन।
प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा मन्युस्तं मन्यु-
मृच्छति ॥३५१॥

"आक्रमणमें प्रवृत्त मनुष्यको जो राजा चुपचाप सहता है, वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। क्योंकि आततायीसे पीड़ित प्रजा राजासे द्वेष करने लगती है। अपने धन और स्त्री - ब्राह्मणकी रक्षामें उपद्रवियोंको मारना धर्म है, इस प्रकार कर्म करते हुए वह पापसे लिप्त नहीं होता। गुरु, बाल, वृद्ध अथवा महाज्ञानी ब्राह्मण भी यदि आततायी बन कर प्राण लेने आवे, तो उसे बिना विचारे मार डाले। चाहे लोगोंके सामने हो या एकान्तमें, पर आततायीके मारने वाले को कोई दोष नहीं होता, क्योंकि वहां क्रोध, क्रोधका मुकाबला करता है।"

भारत विकृत अहिंसाके चक्करमें

भारतकी वर्तमान परिस्थिति किसी विशद् विवेचना की आवश्यकता नहीं रखती। आज तक भारत विकृत अहिंसाके चक्करमें पड़ा रहा और अनेक शतियों तक इसे विदेशी आक्रमणकारी लूटते-खसोटते रहे। यह अब तक धूर्तोंके साथ भी सज्जनता का बर्ताव करता रहा। भारतकी यह स्थिति देख कर हमें "किरातार्जुनीय" के उस श्लोकका स्मरण हो आता है, जिसमें सच्चा क्षत्रिय भीम अहिंसावादी एवं निष्क्रिय युधिष्ठिर को फटकारता है। कि—" जो धूर्तों के साथ धूर्तता नहीं करते, वे मूर्ख मनुष्य हार जाते हैं, कहना

चाहिए, नष्ट हो जाते हैं। क्योंकि ये धूर्त सज्जनोंके बीचमें घुसकर उन्हें उसी प्रकार मार देते हैं, जिस प्रकार नंगे शरीरवालों को तीक्ष्ण बाण।"

भ्रमपूर्ण अहिंसा के एतिहासिक प्रमाण

इस अहिंसात्मक व्यवहारसे भारतको कितनी क्षति उठानी पड़ी, इसका इतिहास भी साक्षी है। तैमूरलंग दूसरे देशको रौंदता हुआ बढ़ा आ रहा था, पर भारत आकर उसे मुंहकी खानी पड़ी। यहांउसकी बड़ी बुरी पराजय हुई। पर उसने किसी प्रकार जान लिया कि भारतीय वीर बड़े अहिंसावादी हैं। वे गायको मातृवत् मानते हैं, अत: वे उस पर कभी भी हथियार नहीं उठायेंगे। अत: तैमूरने एक उपाय सोचा। युद्ध भूमिमें उसने अपनी सेनाके आगे गायोंकी पंक्ति खड़ी कर दी और उनके पीछेसे वह भारतीय जवानों पर आक्रमण करने लगा। इधर भारतीयोंने सोचा कि यदि हम भी युद्ध करेंगे, तो बेकारमें इन गायोंकी हिंसा होगी और हमें हिंसाका पाप लगेगा। अत: बेहतर है कि हम आत्मसमर्पण कर दें; और उन्होंने किया भी वैसा ही। परिणामत: देश पर विदेशियोंका राज्य हो गया।

पर हमें इस भूतकालके इतिहासका दु:ख नहीं है, दु:ख तो इस इतिहासका है, जो वर्तमानकालमें बन रहा है। आज भी भारतमें ऐसे बुद्धिविहीनोंकी कमी नहीं है, जो यह कहते हैं कि चीनके साथ युद्ध करने के बजाय अहिंसाकी नीति अपनानी चाहिए और शांतिपूर्ण तरीकोंसे सीमा-विवादका निपटारा करना चाहिए। पर क्या चीन और पाकिस्तान जैसे हठवादी राष्ट्रोंके सामने यह अहिंसाकी नीति कामयाब हो सकेगी? ●

इसे कभी न भूलें

बौद्धोंने घोषणाकी, "संसारमें मोक्षके समान और है ही क्या? अत: तुम जो भी हो, सब इसे पानेका प्रयत्न करो।" मैं पूछता हूँ, "क्या यह कभी संभव है?" हिन्दू शास्त्रोंका स्पष्ट निर्देश है "यदि तुम गृहस्थ हो तो तुम्हारे लिये ये सब बातें आवश्यक नहीं हैं। तुम अपने स्वधर्मका पालन करो।" जो एक पग नहीं कूद सकता उससे एक ही छलांगमें समुद्र पार कर लंका पहुंच जाने की आशा रखना कहां तक उचित है? क्या यह युक्ति-संगत है? तुम अपने परिवारका तो पेट भर नहीं सकते, दो स्व-बन्धुओंको भोजन देने की तुममें क्षमता नहीं, अन्य लोगोंके साथ तुम लोक कल्याणका एक छोटा सा कार्य भी नहीं कर पाते—और तब भी तुम मुक्तिके पीछे दौड़ रहे हो। हिन्दू शास्त्रोंका कथन है—'निस्संदेह मुक्ति धर्मसे कहीं श्रेष्ठ है; किन्तु पहिले धर्मका पूर्ण पालन करो।

"अहिंसा ठीक है; बुराईका प्रतिरोध न करो" यह भी बड़ी बात है। यह सचमुच ऊंचा सिद्धान्त है। किन्तु शास्त्रोंका आदेश है "तुम गृहस्थ हो यदि कोई तुम्हारे गाल पर एक थप्पड़ मारे और यदि तुम उसका जवाब दस थप्पड़ोंसे न दो तो तुम पाप करते हो।"

—स्वामी विवेकानन्द

युद्ध एक दैवी विधान

मा० स० गोलवलकर
[सरसंघचालक रा० स्व० संघ]

इसे दुर्भाग्य मानें या सौभाग्य, पर वस्तुस्थिति यह है कि इस जगत में जो बलवान है वह निर्बल पर आक्रमण किये बिना नहीं रहता। पंचशील और सहअस्तित्वके हम चाहे जितने भी नारे लगायें पर दुर्बल और बलवानके बीच सह-अस्तित्व की रम्य-कल्पना सत्य सृष्टि में आज तक तो परिणत नहीं की जा सकी। हमारे पूर्वजों ने मनुष्य स्वभाव के दोष को ध्यान में रखते हुए कहा कि संसारमें संघर्ष अटल है। वे कल्पना जगतमें विचरण करनेवाले लोग न थे। जीवनके कठोर तथ्योंका विचार और अनुभव कर उन्होंने कहा कि 'जीवो जीवस्य जीवनम्' का न्याय अटल है। इसलिए जो व्यक्ति या राष्ट्र स्वयंको जीवित रखना चाहता है उसे स्वयं बलवान बनकर खड़ा रहना चाहिए जिससे कोई दूसरा उसे भक्ष्य बनानेका दुस्साहस न कर सके।

"ऐसी परिस्थिति में फिर आत्मरक्षा का सम्मान के साथ जगत् में जीने का एक ही उपाय शेष रहता है कि हम बलवान बनें—अपने राष्ट्र को शक्ति सम्पन्न करें।"

"दुर्बलता ही आक्रमण एवं हिंसा को बढ़ावा देती है"

पिछले हजार बारह सौ वर्षोंसे भारत पर विदेशियोंके जो आक्रमण प्रारम्भ हुए उसका यदि ठीक-ठीक विश्लेषण किया जाय तो यही दिखाई देगा कि आपसी कलह से छिन्न-विच्छिन्न और जर्जरित रहकर हमने ही विदेशियों को आक्रमण करने का अवसर दिया। हमारी कमजोरीने ही हमें मुगलों की और बादमें अंग्रेजोंकी गुलामी स्वीकार करनेके लिए बाध्य किया। देश-विभाजन की अपमानजनक स्थिति भी हमारी दुर्बलतासे ही उत्पन्न हुई। पाकिस्तानका कश्मीर पर आक्रमण और असम व त्रिपुराकी सीमा पर छुट-पुट हमले भी हमारी दुर्बलताके प्रतीक हैं तथा चीनका सम्पूर्ण उत्तरी सीमा पर किया गया आक्रमण और हमारी पवित्र धरती पर किया गया अधिकार भी उसी अटल सिद्धान्तका

युद्ध क्यों होते हैं?

सम्पूर्णानन्द

राज्यपाल—राजस्थान

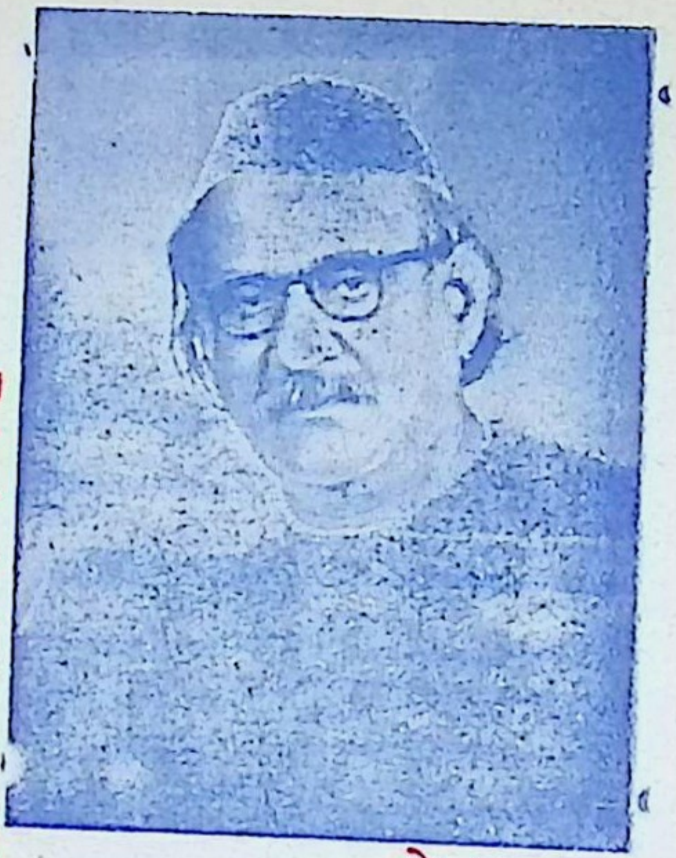

लेखक

यह रोचक प्रश्न है और इसीलिए इस पर बराबर विचार-विमर्श होता रहा है। विचारकों के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न थे, इसलिए स्वभावत: प्रश्न के भिन्न-भिन्न उत्तर मिलते हैं। अब तक के ऊहापोह के जो निष्कर्ष निकले हैं उनको मुख्यत: चार वर्गों में बांट सकते हैं।

पहिला वर्ग धर्मयुद्धों का है। पृथिवी पर शोषण और उत्पीड़न है, अन्याय और परस्वत्वापहरण है। ये बातें किसी को अच्छी नहीं लगतीं। पहले चेष्टा तो यही होती है कि समझा-बुझाकर काम चल जाय परन्तु कभी-कभी ऐसा प्रतीत होने लगता है कि बातचीत से काम न चलेगा। उस अवस्था में बहुत लोग तो हाथ पर हाथ रखकर दैव के भरोसे बैठ जांयगे परन्तु कुछ लोग ऐसा नहीं करते। उनका स्वभाव अकर्मण्यताके विरुद्ध विद्रोह करता है और युद्ध की भीषणता को जानते और समझते हुए भी वे युद्ध करना करना अपना अनिवार्य कर्त्तव्य समझते हैं। जहां तक श्रीकृष्ण का सम्बन्ध है महाभारत का महायुद्ध इसी प्रकार का युद्ध था। धर्म्म और स्वातंत्र्य के लिए जो युद्ध लड़े जाते हैं, वे इसी प्रकार के होते हैं। यह हो सकता है कि बुद्धि के अपरिष्कृत होने के कारण कर्त्तव्य को पहचानने में भूल हो; परन्तु भावना की दृष्टि से ये सब लड़ाइयां धर्मयुद्ध में ही गिनी जायंगी।

दूसरा उत्तर तो बहुत सीधा-साधा है। ऐसा माना जाता है कि मनुष्य के स्वभाव के लोभ और क्रोध सहज अंग हैं। इनके वशीभूत होकर मनुष्य युद्ध के लिए प्रवृत्त होता है। जब तक मानव स्वभाव से रजोगुण का पूर्णतया विच्छेद न हो जाय तब तक किसी न किसी व्याज से युद्ध होता ही रहेगा।

तीसरे उत्तर का सारांश यह है कि युद्ध मनुष्य को आत्माभिव्यक्ति और आत्मस्फूर्ति का अवसर देता है। जब किसी राष्ट्र को सम्पन्नता और शक्ति प्राप्त होती है या किसी नये धर्म या नयी विचारधारा के प्रभाव से उसको स्फूर्ति और शक्ति का अनुभव होता है तो उसका 'स्व', उसकी आत्मा, एक प्रकार

के विस्तार, फैलाव का अनुभव करती है। अपनी वर्तमान परिस्थिति में अपने को संकुचित दबी हुई पाती है। यह बन्धन युद्ध द्वारा ही टूटता है। युद्ध दूसरों से अपनी शक्ति, अपनी महत्ता, मनवाने का साधन है। युद्ध के लिए तैयारी करने मात्र से बन्धन ढीला होता है। यदि युद्ध में विजय प्राप्त हुई तो बन्धन से मुक्ति का अनुभव होता है। ऐसा लगता है कि जैसे अपना खोया हुआ "स्व" मिल गया और उसमें कृत्स्नता आ गई।

चौथे उत्तर का सारांश यह है कि युद्ध एक प्रकार का प्राकृतिक अन्ताराष्ट्रीय रेचक है। बहुत दिनों तक शान्ति रहने से मनुष्य के चरित्र में दुर्बलता आ जाती है। उत्साह, आत्मोत्सर्ग की प्रवृत्ति दब जाती है। मोह छा जाता है। लोग अपने-अपने स्वार्थ के संकीर्ण घेरों के बन्धन से जकड़ जाते हैं। पर यह बात समाज के लिए अच्छी नहीं है। उपायान्तर न होने से प्रकृति की प्रेरणा मनुष्य को युद्ध करने के लिए प्रवृत्त करती है। यह ठीक है कि युद्ध में युवक, उत्साही, वीर पुरुष भी हताहत होते हैं फिर भी युद्ध जिस पर्यावरण को जन्म देता है उसमें आत्मबलि, परार्थ सेवा और शौर्य को पनपने का अवसर मिलता है। राष्ट्रीय चरित्र का उन्नयन होता है। जिस प्रकार शरीर में विकारों के जमा हो जाने पर प्रकृति कोई रोग उत्पन्न करके उनका रेचन करा देती है उसी प्रकार युद्ध जैसी कष्टदायक चीजों के द्वारा प्रकृति चरित्र के दुर्बल तत्वों का रेचन करके लोगों को ऊपर उठाती है। यदि समय-समय पर युद्ध न हो तो मानव जाति की सारी प्रगति रुक जाय।

संक्षेप में इस प्रश्न के यही तीन-चार उत्तर हैं। इनमें से कौन सा उत्तर समीचीन है वह सोचना यहाँ अप्रासंगिक है। ●

हमारी परम्परा

"जहाँ तक हमारी बात है हमारा रास्ता बिल्कुल साफ है। एक जमाने में भारतकी बड़ी शक्ति थी। अकेले हर्षवर्धनके बारे में, जो उस समयके लेखक हैं, उन्होंने वर्णन किया है कि हर्षवर्धनकी सेना में ६ लाख सिपाही थे। हमारे मुकाबले में क्या मिस्र, क्या बेबिलोन, क्या ईरान, इनकी शक्ति कम थी। उन देशोंके नरेशोंने दूसरे देशों पर भले ही आक्रमण किया हो, लेकिन पूर्ण शक्ति रखते हुये किसी भी भारतीय नरेश ने कभी, किसी बाहरके देश पर अपनी तलवार नहीं उठाई। यह हमारी परम्परा रही है। हमने कभी भी दूसरेको गुलाम बनानेकी कोशिश नहीं की है। शक्ति "परेशाम् परपीड़नाय" नहीं बल्कि 'रक्षणाय' होनी चाहिये। शक्तिका प्रयोग दूसरोंकी रक्षा करने के लिये होना चाहिये न कि पीड़ित करने के लिये—यह हमारी परम्परा रही है। तो हम 'वार मांगरिंग' करें, एक 'वार साइकोसिस' पैदा करें, यह हो ही नहीं सकता। लेकिन इसके साथ एक बात यह भी है कि हम कायर नहीं हैं। हम किसीको छेड़ना नहीं चाहते, लेकिन इस प्रकारकी छेड़-छाड़को बरदाश्त भी नहीं कर सकते।

—डा० सम्पूर्णानन्द

—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

युद्ध
स्वर्ग का द्वार

गीताकारने युद्ध को स्वर्ग का खुला हुआ द्वार कहा है। यह बहुत बड़ी बात हुई। इस कथन का कोई बुद्धिगम्य हेतु होना चाहिए, जिसका भारतीय संस्कृति की मूल भावनासे मेल हो। प्रत्यक्ष देखनेमें तो युद्ध विनाश और दुःख का कारण है एवं नरक का दृश्य है। जैसा अर्जुनने कहा "युद्धसे बढ़कर और घोर पाप क्या हो सकता है?" किंतु कृष्ण ने इसी आग्रहसे 'युद्ध स्वर्ग का द्वार है' अंतमें अर्जुन को उस बिन्दु पर पहुंचा ही दिया जहाँ वह पुनः युद्धके लिए कटिबद्ध हो गया।

युद्ध स्वर्ग या नरक कैसे ?

इस कथनके मूलमें हेतु क्या है? इस प्रश्न का समाधान यही है कि अपनी प्रचंड स्वार्थलिप्सा को लेकर जो युद्ध किया जाता है वह नरक का द्वार और स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति और स्वआत्मा की रक्षा के लिए जो युद्ध किया जाता है वह स्वर्गका द्वार है। 'धर्मयुद्ध' से बढ़कर कोई अन्य कल्याण नहीं है। वैसे ही अधर्म युद्धसे अधिक कोई दूसरा पाप भी नहीं है।

कलिंग देश पर वृद्ध अशोक का आक्रमण अधर्म युद्ध था और नितांत विनाश का मार्ग था। उसके मूलमें कलिंग वासियोंके लिए नरक का दुःख भरा हुआ था। किंतु भगवान की कृपासे और अपने पूर्व जन्मके शुभ संस्कारोंसे अशोकके मन में परिवर्तन हुआ और उसने धर्म विजय का वह मार्ग अपनाया जिसकी सुगंधि आज भी जीवित है। यदि अशोकके मार्ग को वर्तमान चीनी नेता भी अपना सकते तो विश्व का कितना हित होता। आजके चीनमें जो शक्ति है वह भगवान का ही रूप है; किंतु रावण या बाणासुरकी भांति उस शक्ति का आसुरी प्रयोग नितांत विनाशकारी और नारकीय है और यह भी निश्चित है कि चीनी जनता का भी इसमें अंत में कोई हित नहीं होगा। अभी ताजी घटना हमारे सामने है जब जापान के मदोन्मत्त शासकोंने ऐसी ही असुर विजय की भावनासे चीन पर आक्रमण किया था, उसका अंतिम फल जापानके लिए अच्छा नहीं हुआ। हिटलरके देश जर्मनी को भी इसी प्रकार विनाशके दुर्दिन देखने पड़े।

चीन का पागलपन

चीनने भारतवर्ष पर आक्रमण का जो मार्ग चुना है वह कोई छोटी भूल नहीं है, एक पागलपन ही है। भारत जैसे शांतिप्रिय पड़ोसी देशके साथ चीन का जो सहस्रों वर्षों का प्रीति-भाव था वह इस युद्ध से मिट गया। यदि चीन और भारत दोनों मिलकर एशियाके महान् जनसमूहके हित की बात सोचते और उसमें साहाय्य प्रदान करते तो समस्त जम्बु द्वीपमें स्वर्गीय राज्य की स्थापना हो जाती। भारत की भावनाएं इसी ओर थीं। चीनने उन पर कुठाराघात कर दिया।

युद्ध हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य

अब भारतके लिए जीवन-मरण का जो प्रश्न है वह इस देश की रक्षा का है। और इस राष्ट्र-रक्षाके लिए युद्ध का प्रतिकार युद्धसे ही होना अनिवार्य है। अतः वर्तमान युद्धके लिए कटिवद्ध होना यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य और धर्म हो जाता है। इस प्रकार नृशंस सैनिक बल का उत्तर अधिक बलसे देना ही संभव है। बल की संज्ञा इंद्र शक्ति है। राष्ट्र को वज्रधर इंद्रके समान अपना प्रचंड रूप धारण करना होगा, जिसके दर्शन और शक्तिसे शत्रुओं का निवारण किया जा सके और देश की सीमाओं को अभेद्य बनाया जा सके। इस विषयमें कोई दो मत संभव ही नहीं। इस संकल्प को धारण करनेसे प्रत्येक भारतीय को स्वयं वज्र बन जाना होगा और सर्वस्व देकर भी राष्ट्र की रक्षा का व्रत लेना होगा।

यह समय 'संघ-शक्ति' का है

युद्धके समय अथवा ऐसे राष्ट्रीय संकट की घड़ीमें सबसे मूल्यवान गुण है धैर्य। यह समय उद्वेग या घबराहट का नहीं मानसिक दृढ़ता का है और उस प्रकारके अनुशासन का है जिसे 'संघ-शक्ति' या संगठन कहते हैं। इसके लिए एक ओर जनतामें उत्साह और ऐसी मानसिक सिद्धता की आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति इस कार्य को निजी कार्य समझे, दूसरी ओर इतना ही महत्व कुशल नेतृत्व का है। जिनके हाथमें इस समय राष्ट्र की बागडोर है उन्हें इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न करनी चाहिए कि देश में से जितने निर्बलता के स्थान हैं वे दूर हो जाएँ। यदि लोगोंके मनमें कुछ भय और आशंका है तो वह निर्मूल हो जाय। जो भ्रष्टाचार है वह समाप्त हो जाय। तभी सत्य और आत्मत्याग की सुदृढ़ भूमि पर अधिष्ठित होकर राष्ट्र की बल शक्ति विदेशी शत्रु का प्रतिकार करनेमें समर्थ बन सकेगी।

राष्ट्रीय-यज्ञमें सहयोग दें

इसे अवसरपर युद्ध एक राष्ट्रीय यज्ञ है जिसमें सबको योग देना है। इस यज्ञमें अनेक आहुतियाँ डालना आवश्यक होगा। उन सबका आनंदपूर्वक स्वागत करना चाहिए। समस्त विश्व भारतवर्षकी ओर देख रहा है कि यह देश इस अग्नि परीक्षामें से कैसे सफल होता है। यह कठिन अवसर है जब हम सबको आत्म निरीक्षण करना ही चाहिए। भारतके पास जो अपार जन-शक्ति है वह मानो इसी अवसर के लिए है। जैसा कुंतीने कहा था— 'यदर्थं क्षत्रियः सूते कालः। सोऽयम् उपागतः''। ठीक वही आज भारतमाताका भी वाक्य है—''यदि मैं माता हूं और तुम सब मेरे पुत्र हो तो उठो और मेरी रक्षा करो।'' ● ●

लहू में तैर तैर कर नहा रहीं जवानियाँ

'दिनकर'

नये सुरों में शिंजनी बजा रहीं जवानियां
लहू में तैर-तैर कर नहा रहीं जवानियां।

प्रभात शृंग से घड़े सुवर्ण के उंड़ेलती;
रंगी हुई घटा में भानु को उछाल खेलती;
तुषार-जाल में सहस्र हेम-दीप बालती;
समुद्र की तरंग में हिरण्य-धूलि डालती;

सुनील चीर को सुवर्ण बीच बोरती हुई,
धरा के ताल-ताल में उसे निचोड़ती हुई;
उषा के हाथ की विभा लुटा रहीं जवानियां;

हटो तमीचरो, कि हो चुकी समाप्त रात है,
कुहेलिका के पार जगमगा रहा प्रभात है।
लपेट में समेटता रुकावटों को तोड़ के,
प्रकाश का प्रवाह आ रहा दिगन्त फोड़ के।

विशीर्ण डालियां महीरुहों की टूटने लगीं;
शमा की झालरें वे टक्करों से फूटने लगीं।
चढ़ी हुई प्रभंजनों पे आ रहीं जवानियां।

घटा को फाड़ व्योम-बीच गूंजती दहाड़ है,
जमीन डोलती है और डोलता पहाड़ है;
भुजंग दिग्गजों से, कूर्मराज त्रस्त कोल से,
धरा उछल-उछल के बात पूंछती खगोल से,

कि क्या हुआ है सृष्टि को? न एक अंग शांत है;
प्रकोप रुद्र का? कि कल्पनाश है युगान्त है?
जवानियों की धूम-सी मचा रहीं जवानियां।

समस्त सूर्य लोक एक हाथ में लिए हुए,
दवा के एक पांव चन्द्र-भाल पर दिए हुए,
खगोल में धुंआ बिखेरती प्रतप्त श्वास से,
भविष्य को पुकारती हुई प्रचण्ड हास से;

उछाल देव-लोक को मही से तोलती हुई,
मनुष्य के प्रताप का रहस्य खोलती हुई;
विराट रूप विश्व को दिखा रहीं जवानियां।

वे देख लो, खड़ी है कौन तोप के निशान पर;
वे देख लो, अड़ी है कौन जिन्दगी की आन पर;
वे कौन थी जो कूद के अभी गिरी है आग में?
लहू बहा? कि तेल आ गिरा नया चिराग में?

अहा वह अश्रु था कि प्रेम का नया उफान था?
हंसी थी या कि चित्र में सजीव, कौन जान था?
अलभ्य भेंट काल को चढ़ा रहीं जवानियां।

आधुनिक शस्त्र एवं युद्ध-तंत्र

श्री यशवन्त गणेश कोपरकर

आधुनिक शस्त्रास्त्र एवं युद्धतंत्र का विषय इतता व्यापक है कि उसके एक-एक पहलू पर अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं और लिखे भी गये हैं। यहाँ पर इस विषयकी सामान्य जानकारी ही प्रस्तुत कर रहा हूं।

बारूद का आविष्कार

सृष्टिके प्रारम्भसे ही युद्धका भी प्रारम्भ हुआ और उसी समयसे शत्रुका संहार करनेके लिए किसी न किसी प्रकार के उपकरणकी खोज भी हुई। इस सम्बन्ध में प्राचीनतम ग्रन्थोंमें जो भी जानकारी उपलब्ध है उसमें धनुष-बाण, खड्ग, गदा-तोमर, परशु, वगैरह का उल्लेख मिलता है। इन हथियारोंसे वार करनेके लिए आवश्यक था कि शत्रुके नजदीक जाकर वार करें। आगे चलकर धनुषमें सुधार किया गया और क्रास-बो का आविष्कार हुआ। फिर बारूदका शोध हुआ। किसी बड़ी या छोटी नलीमें आगेकी ओर बड़ा गोला या गोली रखकर पीछेसे बारूदका विस्फोट किया जाता था। बारूदके विस्फोटसे आगेकी गोली या गोला अति वेगसे शत्रु पर प्रहार करता था। एक बन्द मुँहकी नलीमें बारूद भरकर उसमें एक छोटा सा छेद, पलीतेसे आग लगानेके लिए रखा जाता था। पलीता लगाते ही अन्दरकी बारूदमें विस्फोट होता था और उसके विस्फोटसे आगे रखा हुआ गोला या गोली तीव्रगति से आगे फेंका जाता था।

कारतूस

आगे चलकर इसीका विकसित रूप कारतूसके रूपमें सामने आया। हममेंसे अधिकांशने कारतूसें देखी होंगी। एक कागजकी डिबियामें आगेकी ओर गोली और उसके पिछले भागमें बारूद भरी रहती है। पीछेकी ओरसे मध्य भागमें निश्चित स्थान पर चोट होते ही बारूदमें विस्फोट होता है और गोली तीव्र गतिसे आगेकी ओर निकल भागती है।

तोपों का विकास

सोडा-गंधक व कोयला इनके मिश्रण से बनी हुई बारूद और बारूद का विस्फोट कर शत्रु पर फेंके जाने वाले गोले और

शत्रु के विमानों को गिराने के लिए तत्पर विमान वेधी तोप

गोलियोंमें निरन्तर शोध होते रहे हैं। बन्दूकों को 'ब्रीच लोडिंग' व मैगजीन वाला स्वरूप प्राप्त हुआ। तोपें भी ब्रीच लोडिंग वाली बनाई गईं। तोपके छूटते समय पीछेकी ओर जो झटका लगता है उसके झटके का उपयोग ब्रीच का ढकन खोलकर उसमें पुनः नया गोला भरनेके लिए किया जाने लगा। दूसरा गोला अन्दर आते ही ब्रीच का ढकन अपने आप बन्द हो जाता और तोप पुनः गोला बरसानेके लिए सिद्ध रहती। लोहेके ठोस गोलोंके स्थान पर अन्दर बारूद भरे गोलों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। बन्दूककी नली को इस प्रकारसे नये ढंग पर बनाया गया कि गोली बाहर निकलते समय स्वयमेंव चारो ओर चक्कर काटते हुए आगे बढ़े। गोलीकी मार इतनी तीव्र होने लगीकि मजबूतसे मजबूत जिरह बख्तर भी उनकी मार का अवरोध करनेमें बेकार सिद्ध हुए। तोप और बन्दूकोंकी गोलीकी 'रेंज' भी बढ़ती गई। मार को सटीक व अचूक बनानेके लिए उसमें संशोधन होते रहे। ऐसे समयमें दो नये स्फोटक पदार्थों का आविष्कार हुआ। उनका नाम है 'डायनामाइट व 'गन काटन'। इन दोनों स्फोटक पदार्थों की शक्ति बन्दूककी बारूदसे कहीं अधिक थी। स्वाभाविक रूपसे युद्धोंमें इसका अत्यधिक उपयोग होने लगा।

डायनामाइट व गनकाटन

स्वीडनके एक रसायन शास्त्रीने डायनामाइटकी खोजकी। नाइट्रो-ग्लीसरीन को किसी शोषक पदार्थसे शुष्क बनाकर डायनामाइट तैयार की जाती है। उसे शुष्क बनाने की प्रयोग विधिमें सफेद मिट्टी काम आई। कपास का प्रयोग भी सफल रहा। इस महाविस्फोटक पदार्थ को प्राप्त करनेके लिए यूरोपीय राष्ट्रोंने अन्धाधुन्ध पैसा खर्च किया। इसके

आविष्कर्त्ता नोवल वर्नहार्डने इसकी बिक्री से करोड़ों रुपया कमाया। आगे चलकर जब उसे यह अनुभव हुआ कि उसके आविष्कारसे मानव विध्वंसमें सहायता मिली है तो उसे बड़ा पश्चाताप हुआ। मानव जातिके कल्याणर्थ उसने अपनी सम्पत्ति का बहुत बड़ा भाग लगाकर एक ट्रस्ट स्थापित किया।

गनकाटन

गन काटन या नाइट्रो-सेल्यूकोज का आविष्कार स्विटजरलैण्ड के वासेल ग्राम निवासी श्री थ्यून-वाईनने १८४६ में किया। नाइट्रिक एसिड एवं सल्फ्यूरिक इन दो द्रवों में मुलायम कपास अथवा तत्सम कोई वस्तु भिगोकर तदनन्तर थोड़ी सी रसायनिक प्रक्रियासे गन काटन का निर्माण होता है। उत्तम गनकाटन की पहचान यह है कि खुलेमें उसे जला देने पर उसकी राख भी शेष नहीं बचती। परन्तु दवावके नीचे उसे जलाने पर भयंकर विस्फोट होता है। उसके इस गुण का प्रयोग आधुनिक हथियारोंमें अनेक प्रकारसे होने लगा है।

मैक्जिम गन्स

सर हिरेम मैक्जिमने वन्दूकमें नया संशोधन कर वार-बार गोली भरने की प्रक्रियाके स्थान पर एकके बाद एक लगातार गोली वर्षा करने का ढंग खोज निकाला। आगे चलकर उसमें और संशोधन हुए और आजकल जो मैक्जिम गन्स प्रयोग की जा रहीं हैं उन्हें चलानेके लिए सामान्यतः तीन व्यक्ति लगते हैं। यह बन्दूक दो पहिए की एक गाड़ी पर रखी रहती है। नलीके पीछे एक पहिएदार पट्टा घूमता रहता है जिसमें कारतूस लगे रहते हैं। नलीके सामने कारतूसके आते ही बारूद का विस्फोट होता है और इस प्रकार एकके बाद एक निरंतर गोलियाँ दगती रहतीं हैं। एक व्यक्ति कारतूस का पट्टा पहिए पर चढ़ाने का काम करता है। दूसरा नलीके सामने आते ही विस्फोट करने वाला पहिया घुमाता रहता है और शत्रु पर निशानेबाजी करनेके लिए तीसरी नली को आवश्यकतानुसार बाएं-दाएं या ऊपर-नीचे घुमाता रहता है। 'मैक्जिम' गन और उसका संचालन करने वाले सैनिकों की सुरक्षाके लिए आगे की ओर मोटे लोहे की एक ढाल सी रहती है जिसमें निशानेबाजीके लिए बीच-बीचमें छेद किये रहते हैं। इस छेदमेंसे बन्दूक की नली बाहर निकली रहती है। सामनेके पैदल सैनिकों के लिए इस बन्दूक की गोली वर्षासे अपना बचाव करना लगभग असम्भव हो जाता है। इसको तोपसे गोले बरसाकर या विमानसे बम गिराकर ही नष्ट किया जा सकता है या फिर किसी प्रकार उसकी मारसे बचते हुए उसके नजदीक जाकर 'ग्रेनेड' द्वारा उसे निरुपयोगी बनाया जा सकता है।

ग्रेनेड

अण्डेके आकारका क्रिकेटके बालके समान छोटा बम होता है। इसको हाथसे फेंक सकते हैं। जमीन पर या किसी ठोस वस्तुपर टकराते ही उसमें स्फोट होता है।

जहां तक सामान्य सिपाहीके पास उसके द्वारा आसानीसे ढोये जानेवाले अस्त्रोंका सम्बन्ध है उसमें मोर्टार मशीनगन, सब मशीनगन और आटोमेटिक गन्स का उपयोग अधिक होता है। मोर्टारका प्रयोग गोलावारीके लिए किया जाता है। यह एक प्रकारकी नली रहती है। जिसमें

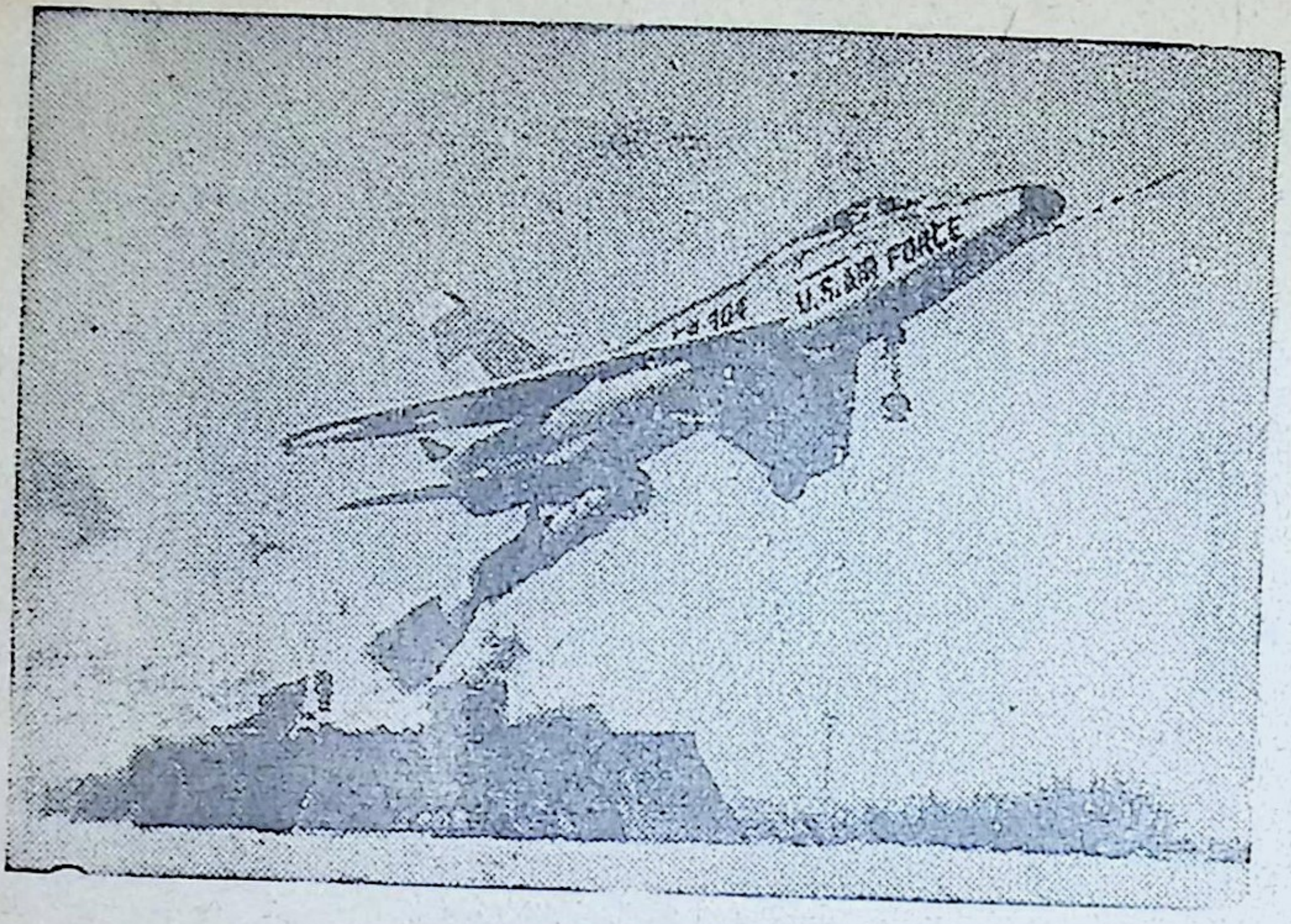

मित्रराष्ट्रोंसे प्राप्त इन विमानोंसे हमारे जवानोंको हवाई अभ्यास कराया जा रहा है

ऊपरसे दूर गोला बरसानेकी व्यवस्था रहती है। इसको बार-बार भरनेकी जरूरत नहीं पड़ती। पैदल सेनाके पास हल्के मेलका और तोपखानेके साथ भारी मेल का मोर्टार रहता है।

आटोमेटिक गन्स, सब मशीन गन्स और मशीन गन्स सभी सामान्य बन्दूकके विकसित रूप है।

मशीन गन्स तीन प्रकारकी होती है। मीडियम मशीनगन (M.M.G.) एक प्रकार का भारी हथियार है। यह तीन टांगों पर खड़ी रहती है। इससे फेंके गये गोले पर्याप्त दूरी तक जाते हैं। लाइट मशीनगन यह हल्का हथियार है। जिसे आसानीसे ढोया जा सकता है। इसके गोले अपेक्षाकृत कम दूरी पर गिरते हैं। सब मशीनगन लाइटमशीन गनका लघुरूप है। इसमें इसके किस्मके कारतूस लगते हैं। जंगलकी लड़ाईके लिए बहुत उपयोगी हथियार है। यह नजदीकसे प्रहार करनेमें भी काम आती है।

टैंक्स

यह एक प्रकारका मजबूत बख्तरबन्द रथ है। इसके ऊपर चाहे जितनी गोलियों की बौछार हो, उसका कुछ भी नहीं बिगड़ता। इसके सभी यन्त्र और चालक मजबूत बख्तरबन्दके अन्दर रहते हैं। इसके लिए समतल रास्तेकी भी आवश्यकता नहीं रहती। छोटे-मोटे गढ़ोंको आसानीसे पारकर, यह आगे बढ़ जाता है। लेकिन खड़ी चढ़ाई चढ़ना इसके लिए सम्भव नहीं। इसके गोलोंकी मार बहुत दूर तक होती है और बड़ी विध्वन्सकारी होती है। परन्तु इसे भी नाकामयाब बनाने वाले एक छोटे टैंकका आविष्कार हो चुका है, जिसे 'वैंजूका' कहते हैं। इसको तीन भागोंमें तोड़ कर आसानीसे कहीं ले जाया जा सकता है और बहुत कम समयमें पुनः जोड़कर चालू किया जा सकता है।

विध्वंसक अण-अस्त्र

आगे चलकर टी० यन० टी०के नाम से प्रख्यात महाविस्फोटक द्रव्यका आविष्कार हुआ जिसकी स्फोटक-शक्ति उपरोक्त वर्णित द्रव्योंसे कहीं अधिक थी। इस टी० यन० टी० से भी कई हजार गुनी शक्ति अणु स्फोटमें पाई गई। उसके केवल दो विस्फोटोंसे पिछले महायुद्धोंमें जापानके हिरोशिमा और नागासाकी शहरोंका जैसा विध्वंस हुआ वह सर्वविदित है। जिस एटमको पहले 'एलेमेंट' (मूल द्रव्य) माना जाता था, उसके स्फोटका तरीका मालूम होने पर मानव-संहारका एक भयानक अस्त्र लोगों के हाथ लगा। द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया पर नये-नये प्रकारके अधिकाधिक शक्तिशाली अणुवमोंके निर्माणकी होड़ सी लग गई। एटम बमके बाद हाइड्रोजन-वम और अब उससे भी आगे बढ़कर ऐसे अस्त्रोंका मनुष्य ने पता लगा लिया जिससे युद्ध की अवस्थामें संपूर्ण सृष्टि के प्रलयका संकट उपस्थित हो गया।

वायुयानोंका विकास

इधर शस्त्रास्त्रोंमें इस प्रकारकी प्रगति हो रही थी उधर आकाशमें विजय प्राप्त करनेकी मानव की आकांक्षाने विमान-विज्ञानमें भी कल्पनातीत प्रगति की। अमरीका के राइट ब्रदर्स तथा फ्रांस के कतिपय यन्त्र विशेषज्ञोंने विमान बनानेमें पहले सफलता प्राप्त की। फिर रूस और जापान भी पीछे न रहे। प्रथम महायुद्धमें तो विमानोंका उपयोग केवल कुछ जानकारी पाने या देने तक ही सीमित रहा। परन्तु दूसरे महायुद्धमें विमानोंने प्रत्यक्ष आक्रमण और प्रतिरक्षा के काममें अपनी सर्वाधिक उपयोगिता सिद्ध की। कैरियर विमान शस्त्रास्त्र एवं अन्य सैनिक सामग्री तथा सैनिकोंको पहुंचानेका काम करते—'फाइटर' विमान शत्रुके विमानोंसे जूझते, 'वाम्बर्स' का रास्ता साफ करते और वाम्वर्स शत्रुके सामरिक अड्डों और नागरिक महत्व के स्थानों पर बम वर्षा कर उसे उद्धवस्त करते। उत्पादन केन्द्रों, रेलके पुलों, बड़े-बड़े बांधों और बिजलीघरोंको उद्धवस्त करनेमें भी इनका बहुत उपयोग हुआ।

हेलीकाप्टर

विमानको ऊपर आकाशमें उड़ने या जमीन पर स्थिर होनेके लिए जमीन पर लम्बे और समतल रास्तेकी आवश्यकता पड़ती है। इसे एयर स्ट्रिप कहते हैं। यदि शत्रुके वाम्बर्स ऐसे एयर स्ट्रिप्सको बम गिराकर नष्ट कर दें तो हवाई जहाज वेकार हो जाते हैं। इस कठिनाई को दूर करनेके लिए हेलिकाप्टरका प्रयोग प्रारम्भ हुआ जो सीधे ऊपर उठ सकते हैं और बहुत कम जगहमें कहीं भी नीचे उतर सकते हैं। बादमें आगे चलकर 'एम्फिबियन' नामक विमानका आविष्कार हुआ जो पानी पर भी तैर सकता था।

विमानवेधी तोपें

वायुयानोंके हमलेसे सुरक्षाके लिए विमान-विरोधी तोपोंका आविष्कार हुआ। उसके अचूक मारसे विमानोंका बचना मुश्किल हो जाता है। ऐसी तोपोंसे घायल विमानोंके वैमानिक हवाई छतरी (पैराशूट) से सुरक्षित रूपसे नीचे उतर सकते हैं। अनेक अवसरोंपर युद्धके सैनिक भी पैराशूटसे यथास्थान उतारे जाते हैं।

रडार

विमानोंका ठीक-ठीक पता लगाकर उसे सफलतापूर्वक गिरानेके लिए रडार

यन्त्र बनाया गया। रडारसे छूटीं हुई किरणें किसी विमानसे टकरानेपर त्वरित वापस लौटती हैं और निर्धारित यन्त्रसे उस जहाज की दिशा और गति की सूचना देती हैं। वायुयानकी दिशा, स्थान व गति का पता लगने पर विमानवेधी तोपोंसे उसे गिराना अति सरल हो जाता है। अपने देशमें अभी रडार यन्त्रकी सामाग्रीका निर्माण नहीं होता। उसे भारतमें बनानेका उपक्रम चल रहा है।

रडारके समान ही भारतमें अणु-अस्त्रोंका भी निर्माण नहीं होता। हम उन्हें बना सकते हैं पर बनायेंगे नहीं ऐसी घोषणा प्रधान मन्त्री करते रहते हैं। भारतके प्रतिरक्षाकी दृष्टिसे यह नीति कहां तक उचित है यह एक विचारणीय प्रश्न है।

लैण्ड माइन्स

शत्रुकी स्थल सेना या टैंक आदि स्थल अस्त्रोंको विनष्ट करनेके लिए 'लैण्ड माइन्स' का भी प्रयोग करते हैं। विस्फोटक पदार्थों से भरी पेटियोंको रास्तों पर छिपा कर रख दिया जाता है। शत्रु की सेना या शस्त्रास्त्रोंसे भरी गाड़ियां जब उधरसे गुजरती हैं तो थोड़ेसे दवाव या झटकेसे भीषण विस्फोट होता है और सामान या सेना विनष्ट होती है। समुद्रमें भी इस प्रकार की सुरंगें बनाई जाती हैं।

टाइम बाम्ब

इस कार्य के लिए टाइम बाम्ब या लिम्पेन्ट बाम्ब का भी प्रयोग होता है। टाइम बाम्ब एक निश्चित समय के बाद स्वयमेंव फूटने वाला बाम्ब है। उसे शत्रु का नाश करने के लिए कहीं भी चुपके से रख दिया जाता है। समय होते ही वह अपने आप फूट पड़ता है। लिम्पेन्ट बाम्ब एक प्रकार का टाइम बाम्ब ही रहता है पर उसमें यह व्यवस्था रहती है कि वह लिम्पेन्ट नामक प्राणी की तरह कहीं भी चिपक जाता है और फिर यथासमय फूटता है। विशेषकर समुद्री जाहज की पेंदी में चिपकाकर उसका नाश करने में इसका उपयोग किया जाता है।

तारपीडो

अधिक बड़े जलयानों को नष्ट करने लिए तारपीडो का प्रयोग आजकल किया जाने लगा है। इन्हें पानी के अन्दर ही शत्रु के जलयान का लक्ष्यकर छोड़ा जाता है। जहाज टकराते ही जोर का धड़ाका होता है और जहाज में इतना बड़ा छेद कर देता है, जिसे ठीक करना लगभग असम्भव सा हो जाता है। इधर इस कार्य के लिए 'सब-मेरीन' का उपयोग किया जाने लगा है। यह पानी के अन्दर ही अन्दर चलने वाला यान है। इसमें एक छोटी-सी नली पानी की सतह के ऊपर निकली रहती है जिसमें पेरिस्कोप लगा रहता है। यह नली चारो ओर घूमती रहती है और इर्द-गिर्द घूमने वाले विमानों की सूचना सब मेरीन चालक को मिलती रहती है। सबमेरीन्स से ही लक्ष्य साधकर तारपीड़ो छोड़े जाते हैं और शत्रुका जहाज देखते-देखते अतलकी गहराइयोंमें समाधिस्थ हो जाता है।

डेप्थ चार्जेस

इन सबमेरीन्स का पता लगाने के लिए जलयानों में सूक्ष्मध्वनि लहरों का पता देने वाले यन्त्र रखे जाते हैं। इस यन्त्र की सहायता से सबमेरीन चालक यन्त्र की ध्वनि का पता लगाता है और अपने यान को ठीक उसके ऊपर ले जाकर

'डेप्थ-चार्जेस' छोड़कर सबमेरीन पर प्रहार किया जाता है। डेप्थ चार्ज से सबमेरीन की रक्षा का एक ही उपाय रहता है कि उसकी मार की सीमा से शीघ्रातिशीघ्र सबमेरीन को दूर ले जाया जाय। अन्यथा जल के भीतर प्रविष्ट वह सबमेरीन फिर कभी जल के ऊपर नहीं देखी जा सकती।

प्रक्षेपास्त्र

द्वितीय महायुद्ध में ऐटम बम छोड़ने के लिए किसी वायुयान चालक को बाम्ब लेकर हिरोशिमा तक जाना पड़ा था। पर अब ऐसे प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण कर लिया गया है जो निश्चित समय व स्थान पर जाकर स्वयमेंव बाम्ब गिराते हैं। ये प्रक्षेपास्त्र ९ हजार मील की दूरी तक मार कर सकते हैं। इन अस्त्रों को मार्ग में ही विफल करने अथवा उनकी दिशा मोड़कर उल्टे उसे छोड़ने वाले पर ही प्रयुक्त करने की युक्ति अभी खोजी जा रही है। इस दिशा में भी वैज्ञानिकों ने पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। ये प्रक्षेपास्त्र जल-थल या नभ कहीं से भी छोड़े जा सकते हैं।

रोग-कीटाणु एवं विष-वायु

शत्रुनाश के काम में लाई जाने वाली दो और युक्तियां बड़े राष्ट्रों ने खोज निकाली हैं। रोग-कीटाणु और विष-वायु का प्रयोग यद्यपि अमानवीय एवं निन्द्य माना जाता है। तथापि मौका पड़ने पर इनका प्रयोग करने की सिद्धता आज बड़े राष्ट्रों की अवश्य है। रूस में इस विष-वायु को टेबुन (Tabun) और अमेरिका में सेरिन (Sarin) कहा जाता है। इस विष वायु के कई तरह के परिणाम होते हैं। किसी से १०-१५ मिनटों में ही मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है। अन्यसे स्मृति शक्ति का लोप हो जाता है।

चीन की जनशक्ति

जहां तक चीन का प्रश्न है अभी तक उसके पास अणु-बम नहीं है। विमानों की संख्या भी बहुत नहीं है। विमानों को चालू रखने के लिए आवश्यक पेट्रोल की तो उसके पास बेहद कमी है। हां, उसके पास अपार जनशक्ति है। पिछले नेफा युद्ध में भी उसकी प्रचण्ड सेना के कारण ही भारतीय सैनिकों को पराजय स्वीकार करनी पड़ी थी। उससे स्थल युद्ध करते समय भारत को चीन की भारी सेना का मुकाबला करने के लिए तदनुकूल ही व्यवस्था करनी होगी।

भारत को स्वावलम्बी बनाना होगा

यदि आज की इन शस्त्रास्त्रों की दुनियां में भारत को स्वाभिमानपूर्वक जिन्दा रहना है तो उसे आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से सुसज्ज होना पड़ेगा। हमारे वैज्ञानिकों को विज्ञान के नये-नये रहस्यों का भी पता लगाना होगा। हर क्षेत्र में भारत को स्वयंपूर्ण बनाना होगा। बाहर से मिलने वाली मदद पर ही आश्रित रहना न केवल लज्जाजनक है अपितु उसमें गंभीर संभावना छिपी हुई हैं।**

(साप्ताहिक सुदर्शन से साभार)

पुरुष कौन ?

अनिर्जयेन द्विषतां यस्यामर्षः प्रशाम्यति।
पुरुषोक्तिः कथं तस्मिन्ब्रूहि त्वं हि तपोधनः॥

शत्रु को पराजित किये बिना जिसका क्रोध शान्त हो जाय उसे पुरुष कैसे कहा जा सकता है ? **

युद्ध और गुप्तचर विभाग

ब्रिगेडियर स्वामीनाथन

अत्ययंत प्राचीन ग्रंथोंमें गुप्तचरों का वर्णन मिलता है। सदैवसे उन्हें देश की सुरक्षाके लिए आवश्यक माना गया है। युद्ध काल और शान्तिकाल दोनोंमें समान रूपसे गुप्तचरों की सेवायें महत्वपूर्ण मानी गई हैं।

गुप्तचरोंको मुख्य रूससे निम्नलिखित कार्य सौंपे जाते हैं :–

(१) शत्रु देशमें जाकर पता लगाना कि शत्रु की सेना कितनी है, कहाँ-कहाँ है तथा उसके पास कौन-कौनसे अस्त्र हैं। हवाई अड्डों का पता लगाना तथा उनका चित्र लेकर अपने देश को भेजना।

(२) शत्रु देशके गुप्त सन्देशों को प्राप्त करना, गुप्त सैनिक आदेशों का पता लगाना और सैनिक हलचल की पूरी जानकारी अपने देश को भेजना।

(३) अपने देशमें शत्रुके गुप्तचरों पर निगरानी रखना।

आज की लड़ाई का स्वरुप कुछ ऐसा है कि जब तक एक देशको शत्रुकी सैनिक हलचलों की पूरी जानकारी न हो, तब तक वह अपनी स्वतंत्रता और अखंडताकी रक्षा नहीं कर सकता, भले ही उसके पास कितनी भी प्रवल सेना हो। नेफा में भारतीय सेना को जो पीछे हटना पड़ा उसके अनेक कारणोंमें से प्रमुख दो ये थे–

(१) चीनियों को उनके गुप्तचरों द्वारा नेफाके रास्तों आदि का पूरा पता था (२) भारतीय सेना को अपने गुप्तचरोंसे तिब्बत स्थित चीनियों की हलचलों का ठीक-ठीक पता नहीं लगा।

इसी कारण, आज सभी बड़े-बड़े देश गुप्तचरों पर वहुत धन व्यय करते हैं।

स्त्री गुप्तचर

गुप्तचरके लिए मधुर भाषी तथा आकर्षक होना आवश्यक गुण है। स्त्रियां वहुत सफल गुप्तचर वन पाती हैं, इसका कारण उनके यही गुण हैं। सैनिकों और अनेक सैन्य अधिकारियोंके मनमें सुन्दरियों के लिए दुर्वलता रहती है। यह संसार के विभिन्न देशोंकी सेनाओं तथा गत युद्धों का अध्ययन करनेसे पता लगता है। यह वात विचित्र ही है कि जो सैनिक मोर्चे पर कदम पीछे नहीं हटाते, देशके लिए मर जाते हैं, उनमेंसे अनेक सुन्दरियों के मोहजालमें फंस कर अपने देशके गुप्त रहस्यों को शत्रु तक पहुंचानेमें नहीं हिचकते। गत महायुद्धमें फ्रांसीसी सेना की सारी गतिविधां जर्मनों को पहिलेसे ही मालूम

हो जाती थीं। फ्रांसीसी अधिकारी इससे बड़े चिन्तित हुए। बादमें पता चला कि फ्रांसीसी कमांडरोंके शिविरमें एक अतीव सुन्दर तरुणी रहती थी। वह कमांडरोंके साथ मद्यपान तथा नृत्य आदि करती थी तथा उनके तम्बुओंमें बिना रोंक-टोंक जाती रहती थी। वह जर्मन गुप्तचर थी और कमांडरों को मद्यपान कराकर उनसे सब रहस्य पूंछ लेती थी तथा उनके कागजात देख लेती थी। क्रिस्टाइन कीलर का कांड तो अभी ताजा ही है।

शरणार्थी गुप्तचर

शरणार्थीके वेशमें भी गुप्तचर अपना काम सफलता पूर्वक कर लेते हैं। शरणार्थी शब्द सुनकर तथा उनकी दयनीय स्थिति देख कर लोगों को उन पर दया आ जाती है। देशमें घुसते समय प्रायः उन्हें कोई रोकता नहीं। गत महायुद्ध आरम्भ करनेके कुछ समय पूर्वसे ही हिटलरने जर्मनमें एक "यहूदी-विरोधी" अभियान चलाया। देश भरमें नाजी पार्टी ने सभायें कीं और यहूदियों को "देशद्रोही" घोषित किया। यहूदियोंके प्रति देशमें भारी घृणा व्याप्त हो गई। उनके घरों पर आक्रमण किये गए। कई यहूदी जानसे मार डाले गये। उन्हें सरकारी पदों से हटा दिया गया। देशमेंयहूदियों का रहना दूभर हो गया। इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका आदि देशोंने इस कृत्य की निन्दा की तथा यहूदियोंके प्रति सहानुभूति प्रकट की। फिर जर्मनीसे लाखों यहूदी शणार्थी भागने लगे। इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस आदि देशों ने उन्हें अपने यहां बसा लिया। उनकी सहायता की। इन शरणार्थियोंके दलों में हिटलरके गुप्तचर भी शरणार्थी बन कर अनायास ही अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशोंमें पहुंच गए। उन्होंने उन देशों की अनेक गुप्त बातें पता लगाई और जर्मनी तक पहुंचाई।

तीन चार वर्ष पूर्व तिब्बतसे लगभग २०-२५ हजार तिब्बती शरणार्थी भारतमें आये। उन्हें कम्युनिस्ट चीनने कष्ट दिये थे। इन शणार्थियोंके साथ अनेक ऐसे तिब्बती भी भारत आ गए जो चीन के गुप्तचर थे। भारत सरकारने इनमें से अनेकों को सीमा प्रदेश की सड़कें बनाने के काम में लगा दिया। ये सड़कें सैनिक महत्त्व की हैं। भारत सरकारने उन्हें यह काम दो कारणों से दिया—एक तो यह कि ये लोग उत्तरी सीमान्त की भीषण सर्दी सह सकते थे, दूसरे उनके उदर-भरण की समस्या हल हो जाती। परन्तु उनमें से कुछ शरणार्थी अचानक गायब हो गए। सम्भवतः वे यहां के गुप्त समाचार लेकर वापस तिब्बत चले गए।

अन्य वेशों में गुप्तचर

फ़कीर, दुकानदार तथा पागल आदमी के वेश में भी गुप्तचर पकड़े गए हैं। ये लोग सैनिक छावनियों तथा हवाई अड्डों के पास अपना डेरा जमाते हैं। सामरिक महत्त्व के स्थानों के फोटो लेते हैं, सैनिक गतिविधि पर नजर रखते हैं। चीन-भारत सम्बन्ध खराब होते ही कलकत्ते में देखा गया कि अनेक प्रमुख बाजारों में अचानक चीनियों ने कपड़ों की धुलाई आदि की दुकाने खोल लीं। उन दुकानों में सुन्दर चीनी युवतियां काम करतीं थीं। ध्यान से कई दिन तक इन दुकानों पर नजर रखने पर यह पता चला कि इनमें व्यापार तो लगभग नहीं के बराबर होता था। हां इन दुकानों में कुछ लोग केवल मिलने के

लिए अवश्य आते रहते थे। कलकत्ते में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्त्ताओं ने सबसे पहले इस बात की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। फिर सरकार के गुप्तचर विभाग ने भी उनके वही खाते आदि देखे। यह स्पष्ट हो गया कि इन चीनी दुकानों का उद्देश्य व्यापार करना नहीं था, वल्कि चीन समर्थक कम्युनिस्टों के मिलने आदि के लिए उपयुक्त स्थान वनाना था।

गत महायुद्ध में जर्मनी के एक नगर में पागल सा दिखने वाला व्यक्ति पकड़ा गया। तलाशी लेने पर उसके पाससे एक लिखा हुआ कागज मिला। उस पर जर्मनी के कुछ नगरों के नाम और उनके आगे कुछ संख्यायें लिखी थीं। जर्मनी के गुप्तचर विभाग ने उस कागजमें लिखी गई वातोंका असली अर्थ पता लगा लिया। नगरोंके नाम और संख्यायें एक गुप्त भाषाके रूपमें लिखी गई थीं। उसका अर्थ था–''अमुक स्थान पर विस्फोट करो।''

अविश्वास का परिणाम

गत महायुद्धमें जर्मनीके एक प्रसिद्ध गुप्तचर अधिकारी को यह काम सौंपा गया था कि वह लन्दन के वी० वी० सी० के अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाके व्राडकास्ट सुनकर यह पता लगाये कि आक्रमण कव होगा। उस गुप्तचर अधिकारीने वड़ा प्रशंसनीय कार्य किया। एक दिन लन्दन से अचानक एक फ्रेंच कविकी दो पंक्तियों वाली कविता की पहिली पंक्ति सुनाई गई। जर्मन अधिकारी सावधान हो गया कि जिस दिन दूसरी पंक्ति सुनाई जायगी उसदिन आक्रमण होगा। शीघ्र ही दूसरी पंक्ति भी सुनाई गई और साथमें दो निरर्थक वाक्य भी। उस गुप्तचरने अपने सेनापति को सूचित किया कि आक्रमण चौबीस घंटेके अन्दर ही होगा। किसी ने विश्वास न किया। फलतः अगली रात ही जर्मनीको आक्रमणका संकट झेलना पड़ा।

आधुनिक यंत्र और गुप्तचर

नये वैज्ञानिक यंत्रोंने गुप्तचरोंका काम सरल कर दिया है। टेपरिकार्डर जो हर कही हुई वातकी ध्वनि अपने अन्दर अंकित कर लेता है और वादमें उसे सुना देता है, गुप्तचरोंके वड़े कामका है। विदेशोंके राजदूत तथा प्रतिनिधि जिन कमरोंमें आकर कुछ दिन ठहरते हैं उनकी दीवारों तथा मेज कुर्सी आदिमें कई बार टेपरिकार्डर पाये गये हैं जो विदेशी प्रतिनिधियोंकी गुप्त वातचीतको अंकित करने के लिये रक्खे रहते हैं। मास्कोके अमेरिकन दूतावासको रूस सरकार ने लकड़ी का बना एक सुन्दर वाज पक्षी भेंट किया। उसे दूतावास में एक उपयुक्त स्थान पर लगा दिया गया। अमेरिकी गुप्तचर विभागने कुछ सन्देह होने पर उस पक्षीको तोड़ कर देखा तो उसमें एक टेपरिकार्डर जैसा छोटा सा यंत्र रखा मिला। गुप्तचरों के लिए हाथ घड़ी के आकार वाले छोटे टेपरिकार्डर बनाये गये हैं।

एक स्थानसे दूसरे स्थानको तुरन्त सन्देश भेजनेके लिए रेडियो ट्रांसमीटर काममें आते हैं। गुप्तचरोंके लिए ये भी

बड़े छोटे आकारके बनाये जाते हैं, जिससे वे सरलतासे छिपाये जा सकें।

गुप्तचर विमान

कुछ तानाशाही देशोंमें विदेशियों का प्रवेश बड़ा कठिन होता है। वहाँ तो उसी देशके नागरिकों को पर्याप्त स्वतंत्रता तथा अधिकार प्राप्त नहीं रहते। इसलिए रूस-चीन जैसे अप्रजातांत्रिक देशोंमें मनुष्यों द्वारा रहस्यों का पता लगाना कठिन हो जाता है। ये देश प्रजातांत्रिक देशोंकी अपेक्षा अधिक सफलतासे अपनी कोई भी वात गुप्त रख सकते हैं। इसलिए गुप्तचर विमान बनाये गए। ये विमान वहुत ऊँचाई पर उड़ते हैं, जहाँ भूमिसे छोड़ी गयी तोप का गोला नहीं पहुँच सकता। लड़ाकू विमान भी उनकी ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाते। इन विमानोंमें बड़े शक्तिशाली कैमरे लगे रहते हैं। वे कैमरे एक वार वटन दवाने पर दस मील लम्वे और दस मील चौड़े अर्थात् सौ वर्गमील क्षेत्र का फोटो ले सकते हैं।

गुप्तचर उपग्रह

साढ़े तीन वर्ष पूर्व रूसने यू०–२ विमान मार गिराया। अमेरिकाने भी रूस पर उसकी उड़ानें स्थगित कर दीं, यद्यपि अन्यत्र वे चालू हैं। फिर रूसके सैनिक रहस्यों का पता लगानेके लिये अमेरिकाने और भी अधिक आश्चर्यजनक साधन जुटाये। उसने कुछ उपग्रह आकाश में छोड़े हैं, जो यू०–२ से भी अधिक उपयोगी हैं। बीसवीं शताब्दी का विज्ञान कितना उन्नत हो गया है यह इन गुप्तचर उपग्रहोंके संक्षिप्त विवरणसे स्पष्ट हो जाएगा।

(१) सामोस–२–दो टन वजन का यह अमेरिकी उपग्रह (अन्य उपग्रहोंके विपरीत) पृथ्वी का चक्कर उत्तरसे दक्षिण की ओर लगाता है। तीन सौ मील ऊपर चलनेवाला यह उपग्रह रूसके ऊपरसे प्रति दिन १५ बार निकलता है। जव यह रूस के ऊपर होता है तो अपने आप इसके कैमरे काम करने लगते हैं और रूस पर से आगे वढ़ने पर वन्द हो जाते हैं। अमेरिकाके ऊपर आते ही यह उपग्रह इन चित्रों को पृथ्वी पर स्थित केन्द्रोंको टेलिविजन द्वारा भेजता है। इस प्रकार रूसी भूमिके हर भाग का चित्र अमेरिका के पास है। इस उपग्रहमें (तथा अन्य ऐसे ही उपग्रहों में) कोई मनुष्य नहीं रहता। वे इतनी ऊँचाई पर उड़ते हैं कि उनका गिराना तो क्या, उन्हें देखना लगभग असम्भव है।

(२) मीडास–४–सन् १९६१ से यह अमेरिकी उपग्रह रूस और कम्युनिस्ट चीन पर प्रतिदिन आठ चक्कर लगाता रहा है। दो हजार मील ऊपर चलने वाला यह उपग्रह ऐसे यंत्रोंसे सज्जित है जो यह जान लेते हैं कि रूस या चीनसे कोई प्रक्षेप्यास्त्र तो नहीं छोड़ा गया। यदि छोड़ा गया हो तो यह उपग्रह उसी क्षण उसका पता लगा सकता है और अमेरिका स्थित अपने अनेक केन्द्रोंको तुरन्त चेतावनी दे सकता है, जिससे वे अपना बचाव करनेके साथ ही रूस और चीन पर प्रक्षेप्यास्त्रों की वर्षा कर सकें।

इन दोनों गुप्तचर उपग्रहों का रूस को पता है। रूसके रुखमें जो नरमी आई है, उसका वहुत कुछ श्रेय इन आश्चर्यजनक उपग्रहों को है। इन दोनों पर अमेरिका कई अरब डालर खर्च कर चुका है।

देखें, भविष्यमें शत्रु देशके रहस्योंको जाननेके लिये और क्या-क्या आश्चर्यजनक साधन अपनाये जाते हैं।*

प्रक्षेपास्त्र और भावी युद्ध

परशुराम गोस्वामी

आज विश्व में अनेक नवीन अस्त्रों का आविष्कार हो चुका है। उनमें आधुनिकतम हैं–प्रक्षेप्यास्त्र। जिसका जन्म जर्मनी में हुआ।

द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी ने कई सौ विमान प्रतिदिन लन्दन पर वम-वर्षाने के लिए भेजे। उनमें से वहुत से विमान गिरा दिये गये। इस प्रकार, जर्मनी में विमानों और चालकों की वड़ी कमी हो गई। इस कमी को जर्मनी के श्रेष्ठ वैज्ञानिकों ने पूरा किया–उड़न वम यानी वी० २ से। इसमें विमान व चालकों की आवश्यकता नहीं थी। यह नियंत्रित वम जर्मनी से उड़ कर लंदन और उसके आस पास अपने लक्ष्य पर गिरता था। द्वितीय विश्व युद्धके बाद जर्मनीके वैज्ञानिकों में से अधिकांश को रूसी लोग पकड़ ले गये और कुछ को अमरीकी। रूस और अमेरिकामें इन्हीं जर्मन वैज्ञानिकों ने प्रक्षेप्यास्त्र को आधुनिक रुप दिया।

प्रक्षेप्यास्त्र कई प्रकार के होते हैं। थोड़ी दूर तक मार करने वाले तो शत्रु विमानों और टैंकों को नष्ट करने के काम आते हैं। दूर तक मार करने वाले भी दो प्रकार के प्रक्षेप्यास्त्र हैं—मध्यम दूरी वाले जो तीन-चार हजार मील तक प्रहार करते हैं, और अधिक दूरी वाले जो आठ नौ हजार मील तक लक्ष्यवेध करते हैं।

प्रक्षेप्यास्त्र का निर्माण क्यों हुआ ?

गत बीस वर्षों में तीव्रगामी विमानों का निर्माण हो चुका है। सोचा यह गया था कि इन तीव्रगामी विमानों में अणुवम या हाइड्रोजन वम लाद कर शत्रु देश पर भयंकर वम वर्षा की जा सकेगी। परन्तु तीव्रगामी वमवर्षकों को गिराने के लिये उनसे भी तीव्रगामी लड़ाकू विमान बन चुके हैं। रडार यंत्र ने तो वमवर्षकों का काम और भी कठिन कर दिया है। इसलिये, अणुवम लेकर शत्रु के बड़े-वड़े नगरों तक विमानों का पहुँचना अब लगभग असम्भव हो गया है।

प्रक्षेप्यास्त्र के अंग

इसी समस्या को सुलझाने के लिये प्रक्षेप्यास्त्र का निर्माण हुआ। प्रक्षेप्यास्त्र की सहायता से अणुवम या हाइड्रोजन वम को कई हजार मील दूर स्थित ठिकानों पर भी सफलतासे गिराया जा सकता है।

दूरगामी प्रक्षेप्यास्त्र यानी अन्तर्महाद्वीपीय प्रक्षेप्यास्त्र के मुख्यतः तीन भाग

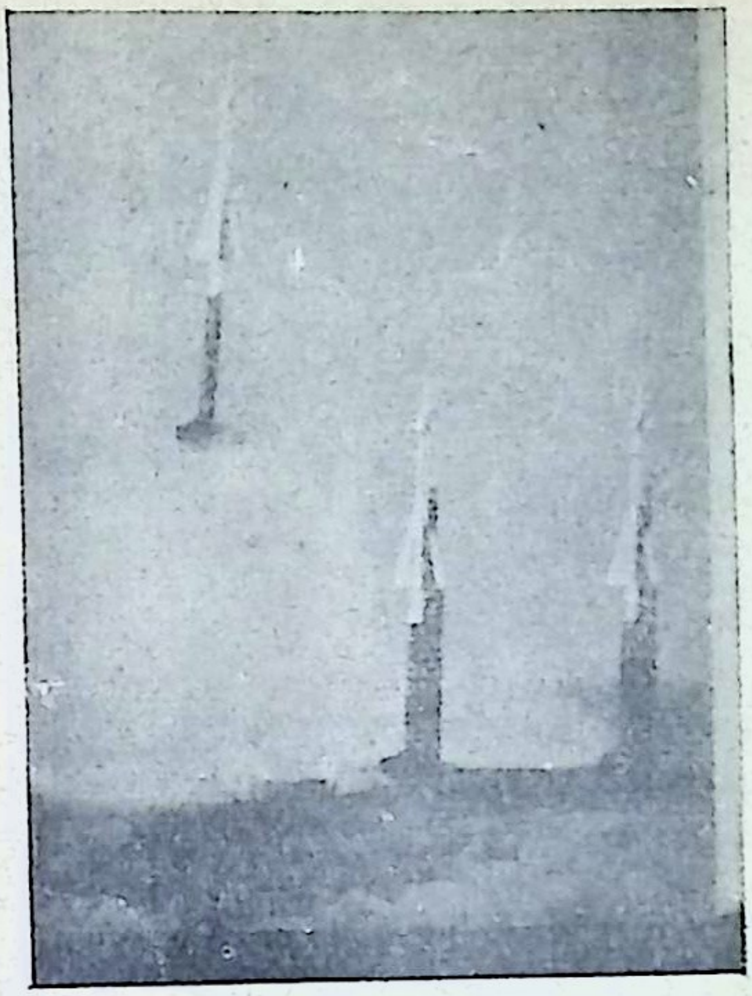

भूमि से छोड़ा जाने वाला विमान-भेदी नियंत्रित प्रक्षेपणास्त्र

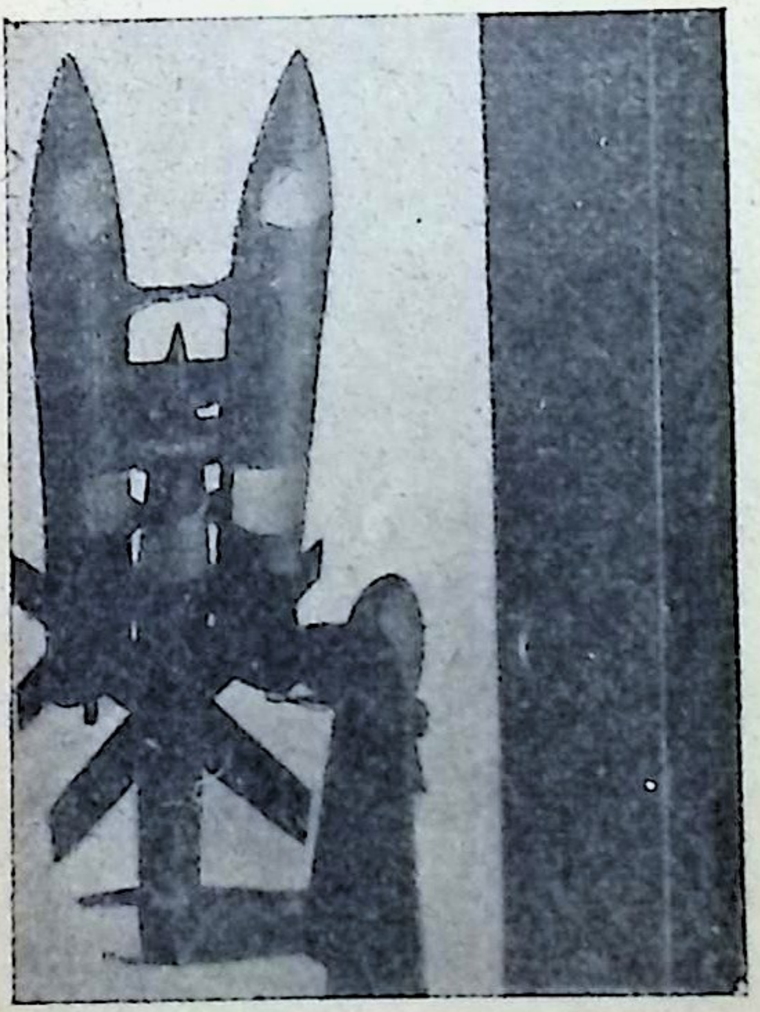

विमान से छोड़ा जाने वाला विमान भेदी प्रक्षेपणास्त्र

होते हैं। सबसे निचला और बड़ा भाग 'राकेट' होता है। राकेट एक विशेष प्रकार के ईंधनसे चलने वाला ऐसा इंजन है जो कई टन वजन को हजारों मील तक ले जा सकता है, प्रक्षेप्यास्त्र को जितनी दूर भेजना हों उतने ही अधिक और शक्तिशाली राकेट लगाये जाते हैं। जितने अधिक राकेट होंगे, प्रक्षेप्यास्त्र उतना ही बड़ा और भारी होगा। पचास फीट लम्बे प्रक्षेप्यास्त्र में लगभग ३० फीट तक इलैक्ट्रोनिक मस्तिष्क रहता है, जो प्रक्षेप्यास्त्र को उसके लक्ष्य की ओर ले जाता है। प्रक्षेप्यास्त्र के ऊपर के नुकीले सिरे पर घातक बम रखा जा सकता है। परीक्षण काल में नोक में बम न रख कर उसके भार के बराबर कंकड़ पत्थर भर देते हैं। इस पूरे प्रक्षेप्यास्त्र को राकेट ढकेलता है और इलैक्ट्रौनिक मस्तिष्क उसे लक्ष्य की ओर ले जाता है। इस इलैक्ट्रौनिक मस्तिष्क का नियंत्रण भूमि पर स्थित अड्डे से किया जाता है। यह बड़ी जटिल और रोचक क्रिया है।

प्रक्षेप्यास्त्र को छोड़ते समय उसे पृथ्वी पर ऐसा खड़ा करते हैं कि उसकी नोक ऊपर आकाश की ओर तथा राकेट पृथ्वी पर रहे। सबसे नीचे के राकेट में आग लगती है और वह बड़े वेग से धुँआ और प्रकाश छोड़ता हुआ ऊपर को उठता है। साथ में सारे प्रक्षेप्यास्त्र को ढकेलता चलता है। उसकी गति कुछ ही क्षणों में १५ हजार मील प्रति घंटा हो जाती है। तत्काल ही प्रक्षेप्यास्त्र आकाश में ओझल हो जाता है। ऊपर की ओर यह कई सौ मील तक जाता है। फिर अपने लक्ष्य की ओर मुड़ता है।

पृथ्वी से छूटते ही प्रक्षेप्यास्त्र पृथ्वी

पर स्थित अपने लक्ष्य की ओर न जाकर इतनी अधिक ऊँचाई तक आकाश में क्यों जाता है ? इसका कारण है वायु की सघनता। हम जानते हैं कि पृथ्वी के पास वायु बड़ी घनी है और ज्यों-ज्यों हम ऊपर उठते हैं वायु पतली होती जाती है। बीस मील ऊपर बहुत ही कम वायु है, पैंतालीस मील ऊपर लगभग नहीं के बराबर। उसके ऊपर शून्य है। प्रक्षेप्यास्त्र जिस भयंकर गति से यात्रा करता है, उस गति से यदि वह पृथ्वी के वायुमंडल में चले तो वायु के घर्षण से तुरन्त जल कर भस्म हो जाय। आकाश से पृथ्वी पर गिरने वाले अनेक छोटे - बड़े तारे पृथ्वी तक कभी पहुँच ही नहीं पाते। पृथ्वी के वायुमंडलमें ही वायुके घर्षणसे जलकर भस्म हो जाते हैं। इसलिए प्रक्षेप्यास्त्रको जलने से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी यात्रा पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर करे। अड्डे से छूटते ही कुछ ही क्षणों में प्रक्षेप्यास्त्र पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर निकल कर शून्य में पहुँच जाता है। आरम्भ में वह धीमी गति से ऊपर को उठता है और शून्य में पहुँच कर फिर वह अपनी पूरी गति से चलता है। तभी वह अपने लक्ष्य की ओर मुड़ता है। लक्ष्य के पास पहुँच कर फिर कुछ धीमा हो जाता है और पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करता है फिर अपने लक्ष्य पर प्रहार करता है।

प्रक्षेप्यास्त्र लक्ष्य तक कैसे पहुंचता है ?

प्रक्षेप्यास्त्र कीं गति १५ हजार मील प्रति घंटा या और भी अधिक होना आवश्यक है। उससे कम गति होने पर वह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बाहर नहीं जा सकेगा और तब अपना लक्ष्यवेध भी नहीं

विमान से टकराता हुआ प्रक्षेपणास्त्र

प्रक्षेपणास्त्र से टकराकर भूमि पर गिरता हुआ विमान

कर सकेगा। पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर जाने के लिए कम से कम इतनी गति अनिवार्य है।

रडार

प्रक्षेप्यास्त्र के अड्डे पर बड़े सूक्ष्म यंत्र लगे रहते हैं। इनमें एक रडार होता है। प्रक्षेप्यास्त्र कुछ ही क्षणों में आंख से ओझल हो जाता है। फिर उसे रडार के पर्दे पर ही देख सकते हैं। रडार के पर्दे पर प्रक्षेप्यास्त्र तो दिखाई देता ही है, नीचे की भूमि भी देखी जा सकती है। प्रक्षेप्यास्त्र इस समय किस दिशा में, कितनी दूरी पर, किस गति से और किस देश पर उड़ रहा है, यह रडार से पता चलता है।

रडार के अतिरिक्त प्रक्षेप्यास्त्र और अड्डे में बेतार का भी संबन्ध रहता है। उड़ान के बीच कभी भी और कहीं भी प्रक्षेप्यास्त्र की दिशा को बदला जा सकता है। इसके लिए अड्डे पर केवल एक बटन दबाना पड़ता है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण यंत्र अत्यधिक संवेदनशील होता है, जो गरमी की मात्रा को नापता है। प्रक्षेप्यास्त्र के राकेट इंजन से इतनी गरमी निकलती है कि यह यंत्र उसे सैकड़ों मील से अनुभव कर लेता है। इस यंत्र से भी प्रप्क्षेयास्त्र की दिशा और गति जानने में सहायता मिलती है।

कभी कभी प्रक्षेप्यास्त्र के यंत्रोंमें खराबी आ जानेसे प्रक्षेप्यास्त्र अपने मार्ग से भटक जाता है। उस दशामें वह मित्र देश पर भी गिर सकता है और भीषण विनाश कर सकता है। इसीलिये मार्ग-भ्रष्ट प्रक्षेप्यास्त्रको मार्गमें कहीं गिराने और नष्ट करनेकी व्यवस्था भी रहती है। अड्डे पर एक विशेष बटन दबाते ही प्रक्षेप्यास्त्र नष्ट हो जाता है। यदि मार्ग में समुद्रमें गिराना चाहें तो यह भी व्यवस्था की गयी है।

प्रक्षेप्यास्त्रका सबसे अधिक जटिल और रोचक अंग उसका इलैक्ट्रौनिक मस्तिष्क होता है। भूमिपर स्थित अड्डेसे इस मस्तिष्कका लगातार सम्पर्क रहता है। अड्डेसे भेजे गये आदेशोंको यह मस्तिष्क ऐसे पालन करता है मानो इसके भीतर कोई आज्ञाकारी बुद्धिमान व्यक्ति बैठकर इसका संचालन कर रहा हो। अड्डेसे इसे गिराने, दिशा मोड़ने आदि का जो भी आदेश दिया जाता है, उसका यह तुरन्त पालन करता है। आठ नौ हजार मील दूर स्थित अपने लक्ष्य पर इसका निशाना प्रायः अचूक बैठता है।

प्रक्षेप्यास्त्र और भावी युद्ध

शत्रु देश पर अणुबमकी वर्षा करने के लिये ही प्रक्षेप्यास्त्रका आविष्कार हुआ है। प्रक्षेप्यास्त्रकी मार आठ-नौ हजार मील दूर तक हो सकती है। इसी कारण रूस और अमेरिका दोनों राष्ट्रोंने ऐसे उपयुक्त स्थानों पर अणुबमसे भरे हुये प्रक्षेप्यास्त्र तैयार रखे हैं कि संसार का कोई भी कोना उनकी मारसे बाहर नहीं पड़ता। वे पृथ्वीके किसी भी भाग पर अपना प्रक्षेप्यास्त्र गिरा सकते हैं।

आज केवल अमेरिका और रूस के पास ही दूरमारक प्रक्षेप्यास्त्र हैं। इन दोनों देशोंके हवाई अड्डों, प्रक्षेप्यास्त्रके अड्डों तथा बड़े नगरोंका एक दूसरेको पूरा पता है। इन दोनोंको यह भय है कि कहीं दूसरा देश अचानक आक्रमण करके उसके प्रक्षेप्यास्त्रों और अड्डोंको नष्ट न कर दे। इसलिये, दोनों देशोंने अनेक

गुप्त स्थानों पर प्रक्षेप्यास्त्रोंको रखा है। दोनों देशोंने अपने-अपने अनेक जलयानों पर प्रक्षेप्यास्त्र लाद रखे हैं। ये जलयान कभी एक स्थान पर नहीं रहते। निरन्तर स्थान बदलते रहते हैं। और शत्रु देशके तटके पास घूमते रहते हैं। अनेक स्थानों पर भूमिके अन्दर छिपाकर प्रक्षेप्यास्त्र रखे गये हैं। जिन्हें कुछ क्षणोंमें ही पृथ्वी के ऊपर लाकर छोड़ा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त रूस और अमेरिका दोनोंने अपनी पनडुब्बियोंको भी प्रक्षेप्यास्त्रोंसे सज्जित किया है। ये पनडुब्बियां शत्रु देशके समीपवर्ती समुद्रमें ही जलके भीतर छिपी रहती हैं। अमेरिकी पनडुब्बियां "पोलारिस" नामक प्रक्षेप्यास्त्रोंसे सज्जित की गई हैं। विशेष बात यह है कि ये अमेरिकी पनडुब्बियाँ जलके भीतरसे ही प्रक्षेप्यास्त्रोंको छोड़ सकती हैं। रूसकी पनडुब्बियोंको प्रक्षेप्यास्त्रोंको छोड़नेके लिये अभी समुद्रके ऊपर आना पड़ता है।

इस संक्षिप्त वर्णनसे ही यह स्पष्ट है कि भावी युद्ध कितना भीषण हो सकता है। युद्ध होने पर स्थल सेनाका तो कोई विशेष महत्व नहीं रह जायेगा। कुछ ही घंटोंमें रूस और अमेरिका तथा अन्य युद्धरत राष्ट्रोंके सभी सैनिक अड्डे, अधिकांश बड़े नगर, प्रक्षेप्यास्त्रोंकी नोंकमें रखे अणुबमोंकी वर्षासे धूलमें मिल जायेंगे।

प्रक्षेप्यास्त्र-विरोधी प्रक्षेप्यास्त्र

प्रक्षेप्यास्त्र का निशाना प्राय: अचूक होता है। इसलिये उससे बचाव करना अभी तक एक गम्भीर प्रश्न था। रूस और अमेरिका दोनोंके वैज्ञानिक चिन्तित थे कि यदि विपक्षीने प्रक्षेप्यास्त्र छोड़ दिया तो हम अपना बचाव कैसे करेंगे? इसके लिये एक और भी जटिल वैज्ञानिक क्रिया वाला प्रक्षेप्यास्त्र बनाया गया है, जिसे उसके गुणके अनुरूप "प्रक्षेप्यास्त्र-विरोधी प्रक्षेप्यास्त्र" कहते हैं। अमेरिकाने इसका नाम रखा है "नाइक ज्यूस"।

इस प्रक्षेप्यास्त्रका काम है—शत्रु द्वारा छोड़े गये प्रक्षेप्यास्त्रका तुरन्त पता लगाकर उसे अपने देश पर आनेसे पूर्व ही मार्गमें टकराकर नष्ट कर देना। इस आश्चर्यजनक प्रक्षेप्यास्त्रका मस्तिष्क और भी जटिल होता है। इसके अन्दर ऐसी व्यवस्था रहती है कि यह अपने आप शत्रु के प्रक्षेप्यास्त्र की ओर चलता हुआ उससे जा टकराता है।

भारत प्रक्षेप्यास्त्र बनाये

चीनके पास रूस से प्राप्त "इल्युशियन—२८" नामक जैट बम वर्षक हैं जो ७५० मील तक बम वर्षा करने जा सकते हैं। परन्तु हमारे विमान चीनकी मुख्य भूमि तक नहीं पहुंच सकते, क्योंकि वह असमसे लगभग १६०० मील दूर है। इतनी दूर जाकर हमारा कोई बमवर्षक लौट नहीं सकता। इसलिए हमें मध्यम दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेप्यास्त्र अवश्य बनाना चाहिये, जिससे हम यहीं से चीन की मुख्यभूमि पर आक्रमण कर सकें। जब तक हम केवल अपना बचाव करने की ही नीति पर चलेंगे चीन या पाकिस्तान अपनी शरारत से बाज नहीं आयेंगे। हमें वह शक्ति संपादित करना चाहिये कि आवश्यकता पड़ने पर शत्रु पर आक्रमण कर सकें। इसलिये प्रक्षेप्यास्त्रका बनाना अनिवार्य है।

—:०:—

"चीन का साम्यवाद—रूस का साम्यवाद और युगोस्लाविया का साम्यवाद, राष्ट्रीय प्रकृति और स्वार्थों की भिन्नता से भिन्न-भिन्न रूप धारण करता जा रहा है... साम्यवाद का बन्धुभाव राष्ट्रीय-स्वार्थों की दीवारों को लांघने में असमर्थ रहा है।"

*

साम्यवाद का अन्तर्संघर्ष

ग. वि. केतकर

सम्पादक दैनिक 'तरुणभारत' पूना

स्टालिन की मृत्युके बाद मास्कोमें हुई २०वीं साम्यवादी कांग्रेस की गुप्त बैठक में श्री क्रुस्चेव ने साम्यवाद के आन्तरिक संघर्ष का विस्फोट किया। उसके पूर्व, स्टालिन की राक्षसी शक्ति के नीचे यह आन्तरिक संघर्ष दबा हुआ था। इस महान् विस्फोट के बाद कुछ काल तक स्टालिन के प्रभाव को समाप्त करने के लिए सड़कों और इमारतों से स्टालिन का नाम हटाने, और उसकी शव पेटिका को दूर ले जाकर रखने का क्रम चलता रहा। आज भी रूस और चीन में व्याप्त तात्विक संघर्ष की जड़, इस स्टालिनवाद की समाप्ति के प्रयत्नों में छिपी है। उस मूलभूत तात्विक विवाद में चीन की राष्ट्रीय आक्रामक मनोवृत्ति ने आग में घृत का काम किया है।

साम्यवाद भी एक धर्म

इस विवाद का विश्लेषण अनेक दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। यहां उनमें से केवल एक दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरे विचार से साम्यवाद भी एक धर्म है और अन्य धर्मों में जिस प्रकार आगे चलकर उप-पंथ निर्माण हुए उसका साम्यवाद के वर्तमान संघर्ष से पर्याप्त साम्य है। यदि क्रुश्चेव के पन्थ की महायान अथवा प्रोटेस्टेन्ट पन्थ से तुलना की जाय तो धार्मिक इतिसाहवेत्ताओं को उसमें अनेक तथ्य दृष्टिगोचर होंगे। साम्यवादी चीन का पन्थ हीनयान, रोमन कैथलिक अथवा सुन्नी पन्थ जैसा है, यह कहना अयुक्तिसंगत न होगा। उपमा सदैव आंशिक उपमा ही रहती है। पूर्णोपमा तो एकरूपता का ही दूसरा नाम

होगा। मानवीय इतिहास अथवा प्रकृति में भी ऐसी एक रूपता दिखाई नहीं देती। कुछ विशिष्ठ साम्य से ही उपमा निर्माण होती है। साम्यवाद की अन्य धर्मोंसे उपरोक्त उपमा इसी अर्थमें समझनी चाहिए।

कट्टरवादी और पोंगापंथी

साम्यवादियों का कथन है कि धर्म एक प्रकार की अफीम है जो लोगों को आर्थिक विषमता बर्दाश्त करने के लिए पिलाई जाती है। ये लोग किसी धर्म को नहीं मानते और कहते हैं कि धर्म की सभी कल्पनाएं लोगों को निकृष्ट स्थिति में दास बनाकर रखने का साधन मात्र हैं। इनकी धारणा है कि धर्म एक ऐसा हथियार है जिसका प्रयोगकर साम्राज्यवादी और पूंजीपति गरीब जनताका शोषण कर सकें। ऐसे लोगोंको यह समझाना कि साम्यवाद स्वयंमें भी एक धर्म है और वह ईसाई या इस्लाम जैसा ही कट्टरवादी पोंगापन्थी है, पर्याप्त कठिन है। किसी प्रतिक्रियामें नहीं, अत्यन्त गंभीर विचार करनेपर मैं इस निष्कर्षपर पहुंचा हूं। इसीलिये कहता हूं कि साम्यवाद भी एक धर्म है। आज साम्यवादके आन्तरिक संघर्ष की स्थिति देखकर यह भी कहना पड़ता है कि अन्य धर्मोंमें व्याप्त अटल श्रद्धाकी परिधि तोड़कर जिस प्रकार काल और अनुभव उसमें द्वैध पैदा कर देता है, उसी की पुनरावृत्ति आज साम्यवादमें हो रही है। जिस प्रकार धार्मिक मतभेदोंसे राष्ट्रीय अथवा वैयक्तिक लाभ उठानेकी प्रवृत्ति पूर्व कालमें अन्यान्य धर्मानुयाइयोंमें दिखाई दी वैसी ही प्रवृत्ति आज साम्यवादी जगतमें दिखाई देती है।

उप-पन्थों की पृष्ठभूमि

"सम्पूर्ण जगत्को साम्यवादी बनाए बगैर उसका उद्धार नहीं हो सकता–" साम्यवादियोंकी यह कल्पना भी इस्लाम व ईसाई मतावलम्बियोंके मतसे मेल खाती है। जिस प्रकार मुसलमानोंने मुसलमान और काफिरके रूपमें तथा ईसाइयोंने ईसाई और हीदनके रूपमें मानव जातिका विभाजन करने की कोशिशकी उसी प्रकार कम्युनिस्टोंने भी कहा कि या तो मनुष्य कम्युनिस्ट होगा या पूंजीपति अथवा साम्राज्यवादी। उनके मतानुसार मनुष्यकी अन्य कोई स्थिति हो ही नहीं सकती। सेमेटिक और बौद्ध धर्मावलम्बियोंके समान ही साम्यवादियोंमें अपने आचार्य द्वारा प्रणीत ग्रन्थ पर अटल श्रद्धा और उनके शब्दों को 'अन्तिम शब्द' माननेकी प्रवृत्ति विद्यमान है। मार्क्स व लेनिन इनके पैगम्बरके रूपमें हैं और उनके लिखे ग्रंथ इनके बाइबिल या कुरान बन गये हैं। एक बार किसी बातको 'अटल प्रमाण, के रूपमें स्वीकार कर लेनेके बाद, उसकी अलग व्याख्या करनेवालोंकी टीका-टिप्पणी भी प्रारम्भ हो जाती है। इसीसे पन्थोंका निर्माण होता है। प्रत्येक पन्थ यह दावा करता है कि उसके द्वारा प्रस्तुत व्याख्या ही धर्मगुरुके भावोंसे मेल खाती है दूसरी व्याख्या नहीं।

अन्धश्रद्धा का परिणाम—

धर्म संस्थापक समझते हैं कि किसी विशिष्ठ ध्येयवादके सांचेमें मनुष्यमात्र को निर्जीव गीली मिट्टीके समान ढाला जा सकता है। ध्येयवादकी रम्य कल्पना के सम्मुख वे मानव-स्वभावकी विचित्रता और देश, काल व परिस्थितिके भेदकी भी उपेक्षा कर देते हैं। काल परिस्थिति परिवर्तनमें कतिपय पुरानी मान्यताएं लड़खड़ाने लगती हैं। पुराने धर्म ग्रन्थोंको एक ओर

हटा देनेकी आवश्यकता पड़ती है। परन्तु उन धर्म ग्रन्थों पर ही अटल विश्वास रखनेवालोंके लिए नवीन विचारोंको सुपाच्य बनाना कठिन होता है। उसके लिए उनके समर्थनमें पुराने धर्मग्रन्थोंसे ही श्लेष निकालकर तदनुकूल तर्क प्रस्तुत कर नया मार्ग निकालना पड़ता है। धर्म-ग्रन्थ-निष्ठ समाजको यह विश्वास दिलाना पड़ता है कि हमने मूलविचार नहीं छोड़ा है। जिस प्रकार महायान सम्प्रदायके अनुयायी स्वयंको सच्चा बौद्ध और प्रोटेस्टेन्ट, स्वयंको सच्चा ईसाई घोषित करते हैं; आज ठीक उसी प्रकार रूस कहता है कि हम ही सच्चे मार्क्स व लेनिनवादी हैं और चीन कहता है कि "नहीं, सच्चे मार्क्स व लेनिनवादी तो हम हैं।"

बौद्धधर्ममें नये मोड़का रहस्य

वास्तविक रूपसे देखा जाय तो महायान पंथ वालोंने जब देखाकि भगवान-बुद्धका कोरा तात्तिक उपदेश, विश्वके अन्य धर्मोंकी प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं सकेगा तब उन्होंने हिन्दूधर्मके पुराणोंके सभी अद्भुत रस बुद्ध चरित्रमें समाविष्ट कर लिए। इस प्रकार बुद्ध चरित्रमें अनेक अद्भुत कथाओंको जोड़कर अनैतिहासिक कल्पनाओंका ढेर लगा दिया।

धर्मकी आड़में स्वार्थका पोषण

धर्म श्रद्धाकी आड़में व्यक्तिगत, राष्ट्रीय अथवा साम्राज्यवादी स्वार्थ-साधनों की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। 'आगे-आगे मिशनरियोंकी टोलियां चलती हैं और उनके पीछे आक्रमणकारी सैनिकोंके दस्ते' इस प्रकारकी कहावत अंग्रेजी साम्राज्यके सम्बन्धमें एशियामें प्रचलित है। 'कोई एक गाल पर चपत मारे तो दूसरा गाल उसके आगे कर दो, का उपदेश देनेवाले यीशू के अनुयाइयोंने उन्हीं के ईसाई धर्मके प्रचारार्थ छल-छद्म और हत्याकाण्डका आश्रय लिया। दूसरेने उसके गाल पर चपत मारनेके लिए हाथ उठाया पर ईसाई सेनाओंने उन पर आक्रमणकर उन पर ऐसा प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया कि उसके लिए प्राण बचाना भी मुश्किल हो गया।

साम्राज्य-विरोधी ही नये साम्राज्यों के निर्माता

'कम्युनिस्ट तो स्वयं को साम्राज्यवाद का कट्टर दुश्मन मानते हैं, फिर वे साम्राज्यों के निर्माणके लिए आक्रमक कैसे बन सकते हैं?' इस प्रकारका विचार करने वाले लोग जरा आंखे खोलकर एशिया द्वारा पूर्वी यूरोपीय देशोंमें तथा चीन द्वारा तिब्बतमें की गई अमानवीय विध्वंस लीला को देखें। साम्राज्य निर्माण करनेमें जिस प्रकार ईसाई व इस्लाम धर्मकी श्रद्धाका दुरुपयोग किया गया उसी प्रकार साम्यवादकी श्रद्धा का भी दुरुपयोग नये साम्राज्य निर्माणके लिए किया गया। ईसाई और इस्लाम धर्मको भी राष्ट्रीयता की शक्तिका उच्छेद करना सम्भव नहीं हो सका। इस्लाम व अरब वंशका रक्त सम्बन्ध होते हुये भी अरब जगतकी अलग-अलग राष्ट्रीय आकांक्षाएं समाप्त नहीं हो सकीं। अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान दोनों ही इस्लाम मतावलम्बी होने के बावजूद एक भी नहीं हो सके। मलाया और हिंदेशिया दोनो इस्लाम मतावलम्बी होते हुये भी उनकी राष्ट्रीय आकांक्षाओंमें टकराव हो रहा है। चीन और रूस दोनों साम्यवाद मतावलम्बी होने के कारण यद्यपि 'भाई' हैं पर पूर्ववर्ती मतावलम्बियोंके समानही उनकी राष्ट्रीय

आकांक्षाओंमें आज टकराव हो गया है। दोनों स्वयंको सच्चा मार्क्स व लेनिनवादी घोषितकर अपने राष्ट्रीय स्वार्थका पोषण करना चाहते हैं।

मार्क्सवाद युगानुकुल नहीं

अतीत और वर्तमानमें विशिष्ठ परिस्थितिके अनुसार जिन शास्त्रोंकी रचना हुई उनमें मेल वैठाना सम्भव ही नहीं है। जिस प्रकार रेलगाड़ी, तार या लोकतांत्रिक शासनपद्धतिकी बातें पुराने स्मृतिकारों की पहुंचके बाहर थीं, उसी प्रकार अणुशक्ति के विधायक और विध्वसंक उपयोगके शोध की कल्पना भी मार्क्स व लेनिनकी पुस्तकों की कल्पनाके बाहरके विषय हैं। क्रुश्चेव ने बड़े कष्ट व धैर्यके साथ स्टालिनवाद का उच्चाटन किया। मार्क्स व लेनिन द्वारा भविष्यके सम्वन्धमें बनाई गई कल्पनाएं आजके युगमें निरुपयोगी हो गईं; यह बात भी उन्हें अच्छी प्रकार ज्ञात है पर यह बात स्पष्ट रूपसे वे कह नहीं सकते।

ब्रिटेनका सफल प्रयोग

राजतन्त्र भ्रष्ट होने पर उसका उच्चाटन करनेके लिए जनतन्त्र सामने आया। परन्तु लोगोंके अज्ञान एवं अपने प्रभावका दुरुपयोग कर पिछड़े हुए देशों में लोकतन्त्रात्मक पद्धतिसे जिन सत्ताधारियोंने अपना वर्चस्व प्रस्थापित कर लिया उनकी तानाशाहीसे ऊब कर अव लोग कहने लगे कि इससे तो पुराना राजतन्त्र ही अच्छा था।

ब्रिटेनने अवश्य ही राजवंश और राजतन्त्रको विधानसम्मत करके लोकतन्त्रका व्यवहार करनेका सौभाग्य प्राप्त किया। देशकी भावात्मक एकताके लिए परम्परागत राजवंश, उनका मान-सम्मान उनकी शोभायात्रा एवं जलसे उपयोगी सिद्ध होते हैं। ब्रिटेनने इस बातका लोकतन्त्रमें भी अच्छा उपयोग किया। मर्यादित और अनुशासित राजतन्त्र, लोकतन्त्र के समान ही जन-कल्याणके साधन बन सकते हैं। उसके लिए राजवंशोंका उच्चाटन या राजभवनोंका विध्वंस अनिवार्य नहीं—यह बात ब्रिटेनने सिद्ध कर दी है।

निरंकुश तानाशाहीके बीज

साम्यवादने नारा लगाया कि मजदूर और पूंजीपतिका शत्रुत्व अवश्यम्भावी है। इस प्रकार पूंजीवादकी लाश पर राज्यके वर्चस्वका जन्म हुआ। इस राज्य पर किसी प्रभावी गुटका प्रभुत्व स्थापित हुआ फिर दूसरे गुटका अस्तित्व भी सत्ताधारी गुटको असह्य हो उठा। साम्यवादी कल्पनामें दूसरे मत या गुटके अस्तित्वको ही अस्वीकार कर दिया गया। फिर सत्ताधारी गुटमें अनेक षड्यन्त्र करके अपने हाथमें समस्त राज्यकी बागडोर संभालने वाला व्यक्ति कितना अत्याचारी, स्वेच्छाचारी व धोखेबाज बन सकता है इसका उदाहरण स्टालिनके रूप में सामने आया। राजतन्त्रमें जिस प्रकार किसी 'ईव्हान-दी टेरिबल' का उदय हो सकता है वैसे ही कोई क्रूर हस्ती लोकतन्त्रमें भी सामने आ सकती है और साम्यवादी शासन पद्धतिमें भी अपना वर्चस्व बना सकती है, यह बात सिद्ध करनेके लिए अब किसी प्रकारके प्रमाणकी आवश्यकता नहीं रह गई है। जिस रूसने किसी समय स्टालिनको भगवान से भी बड़ा मानकर उसे सिर आंखों पर चढ़ाया—वही रूस आज क्रुश्चेवके नेतृत्वमें उसी स्टालिनको दुष्ट और क्रूर मानकर

उसके स्मृति चिन्होंको भी उध्वस्त कर रहा है। किसी राजतन्त्रमें जैसे आततायी राजाके पैदा होनेका भय रहता है। वैसे ही साम्यवादी पद्धतिमें भी महान् क्रूर नेताके आविर्भावकी संभावनासे अब कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। अन्तर इतना ही रहता है कि साम्यवादी तानाशाह 'मजदूरोंके राज्य' का मोहक नारा लगा कर जनताका मनमाना शोषण करता है।

राष्ट्रीय स्वार्थोंके अनुकूल व्याख्याएं

जिस प्रकार धर्मके आवरणमें राष्ट्रीय स्वार्थ पनपता है उसी प्रकार साम्यवाद के आवरणमें भी राष्ट्रीय आकांक्षाएं हिलोरें लेती हैं। आज कम्युनिस्ट धर्म की एक व्याख्या रूसके राष्ट्रीय हितों के अनुकूल पड़ती है दूसरी व्याख्या चीनकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाकी पूर्ति में साधक बनती है।

युगोस्लाविया भी कम्युनिस्ट देश ही है पर उसके नेता मार्शल टीटोने अपने राष्ट्रीय स्वार्थोंके अनुकूल ही साम्यवादकी व्याख्या की, इसी कारण पहले रूसने उसपर आरोप लगाया कि वे साम्यवादी धर्मसे भ्रष्ट हो गये। अब क्रुश्चेवने पुनः उससे समझौता किया है। यह समझौता भी साम्यवादके लिए नहीं रूसके राष्ट्रीय स्वार्थके ही लिए किया गया है।

द्वन्दका मूल—राष्ट्रीय-स्वार्थ

प्रत्येक देश व समाजकी प्रकृति भिन्न होती है। भारतमें संसदीय लोकतन्त्रके बावजूद ब्रिटिश लोकतन्त्र जैसी प्रगति दिखाई नहीं देती। सहकारी संस्था और स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओंकी जैसी प्रगति अन्य कुछ देशोंमें हुई, वह भी आज भारतमें दिखाई नहीं देती। 'सहकारमेंसे जिसदेशमें 'स्वाहा कार' को प्रश्रय मिलता है, सत्ताके विकेन्द्रीकरणके नाम पर जहां भ्रष्टाचारका विकेन्द्रीकरण होता है, उसको गुन्डागिरीका प्रश्रय प्राप्त होता है और उस देशमें साम्यवादी पद्धति एवं शासन स्थापित हुई तो कैसी परिस्थिति निर्माण होगी यह कल्पना करना कठिन नहीं है। चीनका साम्यवाद, रूसका साम्यवाद और युगोस्लावियाका साम्यवाद राष्ट्रीय प्रकृति की भिन्नतासे अलग-अलग रूप धारण करता जा रहा है। अपनी युद्ध-पिपासु आक्रमणकारी प्रकृति के अनुरूप चीनने साम्यवादकी व्याख्या स्वीकारकी है। अणु-अस्त्रोंका जो ज्ञान आज रूसको उपलब्ध हुआ है वह उसे अपने कम्युनिस्ट बन्धु चीनको देनेके लिए कतई तैयार नहीं। साम्यवादका बन्धुभाव राष्ट्रीय स्वार्थोंकी दीवारों को लांघनेमें असमर्थ रहा है। विश्वके अन्यान्य धर्म जिस प्रकार राष्ट्रीय स्वार्थ पूर्तिके साधन बन गये उसी प्रकार आज साम्यवादी धर्म भी बनता जा रहा है। अन्य धर्मोंके समान ही धर्मग्रन्थका 'शब्द-प्रामाण्य' क्लिष्ट बन गया है। अन्य किसी भी धर्ममें आपसी पन्थभेदपर जितना साहित्य लिखा गया उससे कहीं अधिक साहित्य कम्युनिस्ट पन्थभेदकी चर्चामें लिखा जा चुका है पर इस सम्पूर्ण थोथे शब्द- द्वन्दकी जड़में राष्ट्रीय आकांक्षाएं ओर राष्ट्रीय स्वार्थ ही काम करते है इसमें सन्देह नहीं।

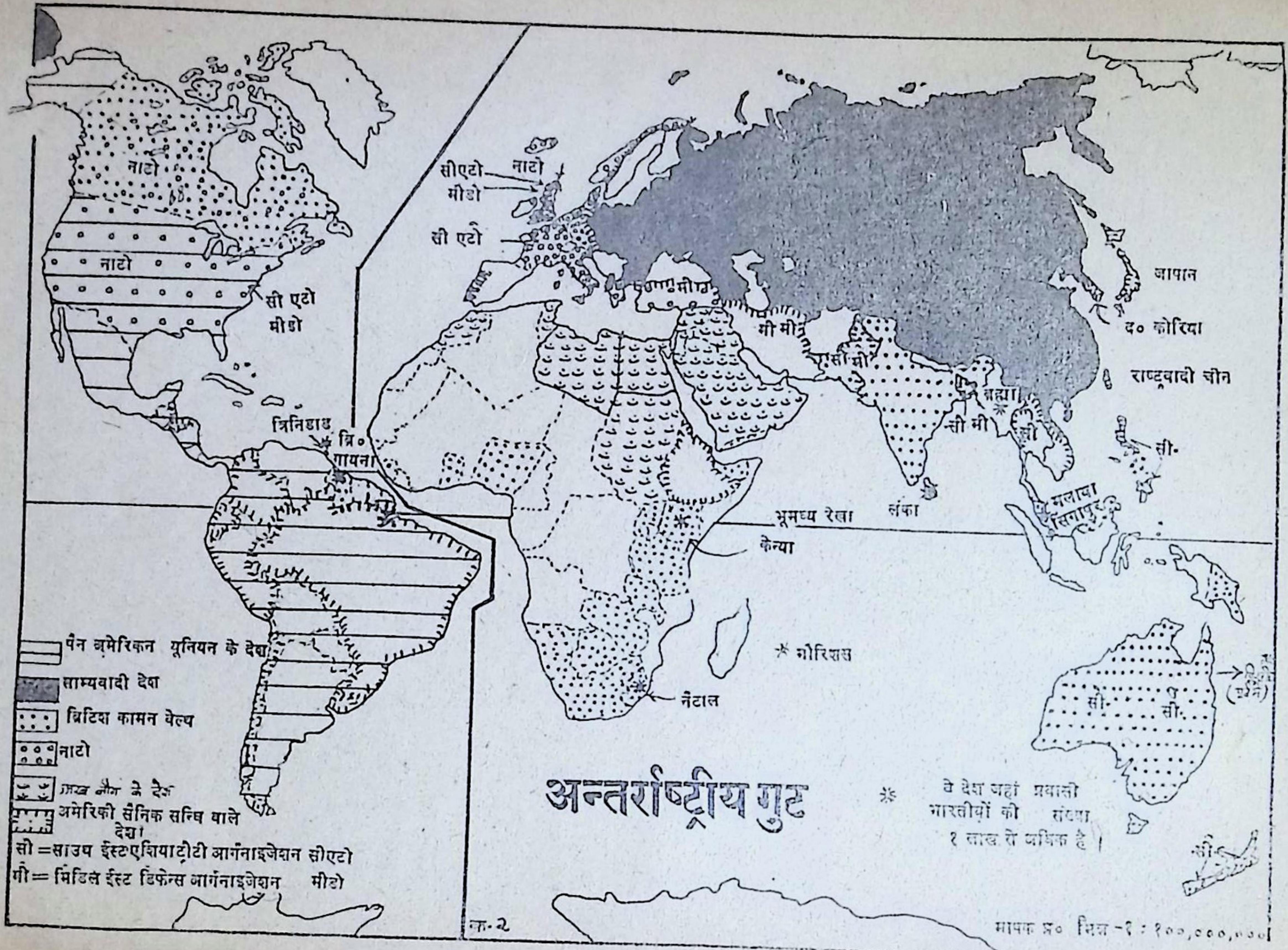
अन्तर्राष्ट्रीय गुट
नाटो
नाटो
सी एटो
मीडो
सीएटो
मीडो
नाटो
सी एटो
त्रिनिडाड
त्रि०
गायना
जापान
द० कोरिया
राष्ट्रवादी चीन
मीडो
मी मी
सी मी
ब्रह्मा
सी मी
सी
सी.
मलाया
सिंगापुर
लंका
भूमध्य रेखा
केन्या
मौरिशस
नैटाल
सी.
सी.
फिजी
वे देश जहां प्रवासी भारतीयों की संख्या १ लाख से अधिक है।
पैन अमेरिकन यूनियन के देश
साम्यवादी देश
ब्रिटिश कामन वेल्थ
नाटो
अरब लीग के देश
अमेरिकी सैनिक सन्धि वाले देश।
सी = साउथ ईस्ट एशिया ट्रीटी आर्गनाइजेशन सीएटो
मी = मिडिल ईस्ट डिफेन्स आर्गनाइजेशन मीडो
क-२
मापक प्र० भिन्न - १ : १००,०००,०००

आज दोनों ही गुटोंके सैनिक संगठनोंमें दरारें पड़ गई हैं। एक ओर दक्षिणी वीटनाम, फ्रांस और पाकिस्तान द्वारा अमरीका की नीतियोंको चुनौती दी गई है तो दूसरी ओर सोवियत संघ और लाल चीन का बढ़ता हुआ संघर्ष तथा अल्बानिया का सोवियत संघके विरोधमें लालचीन का खुला समर्थन भी दिख रहा है। तथ्य यह है कि आज विश्वको आणुविक शस्त्रों का सर्वाधिक भय है; जिन्हें कि दोनों पक्ष प्रयोग करना नहीं चाहते। परिणामस्वरूप दुनियांमें नये समन्वय हो रहे हैं और पुराने शीत-युद्ध की दीवारें ढह रही हैं।

●

आधुनिक सैनिक गुटबन्दियां— एक ऐतिहासिक विश्लेषण

—डा० रामनाथ भल्ला

विश्वको युद्ध की विभीषिकासे बचाने के लिए आज दो विचार बहुत प्रचलित हैं—एक तो विश्व सरकार और दूसरा नि:शस्त्रीकरण। विश्व सरकार के साथमूल समस्या संप्रभुताकी है। जबतक कि दुनियांके राष्ट्र एक गहरी जागरूकता के साथ अपने प्रभुत्व संबंधी अधिकारोंकी पहरेदारी करते रहेंगे तबतक इस बातकी संभावना बहुत थोड़ी है कि उन्हें राष्ट्रोत्तर संगठनोंको अपने अधिकार समर्पित करनेके लिए समझाया या विवश किया जा सकता है। विश्व सरकारकी कल्पना हमें एक ऐसे स्वर्गतुल्य नगरमें ले जानेकी है जिसका अस्तित्व ही नहीं है। परन्तु कोई भी राजनीतिक नेता, जिसका दिमाग सही है, राष्ट्रीय संप्रभुताको त्यागनेका प्रतिपादन नहीं करेगा जबतक कि उसे पूर्णरूपसे विश्वास न हो जाय कि कोई उच्चतर समुदाय कार्य कर सकेगा। ऐसे गम्भीर मसलेमें वह यह दृष्टिकोण नहीं ले सकता कि 'अच्छा प्रयोग करके देखा जाय।'

नि:शस्त्रीकरण एक असंभव कल्पना

जहाँ तक नि:शस्त्रीकरणका विचार है जबतक ऐसी पद्धति विकसित नहीं होती जिसमें विभिन्न राष्ट्र कम सैनिक शक्तिके साथ अधिक सुरक्षाका अनुभव कर सकें, तब तक निशस्त्रीकरण एक स्वप्न ही

रहेगा। पहले हेग सम्मेलनने शस्त्रीकरण को कम करनेकी दृष्टिसे कोई 'फार्मूला' देनेके स्थान पर शांतिपूर्ण समझौतेके संबध में एक समझौता किया और पंच फैसलेके लिए एक स्थायी न्यायालय स्थापित किया। दूसरे हेग सम्मेलनने, अपने 'एजेण्डा' में से निशस्त्रीकरणकी समस्याको ही हटा दिया। राष्ट्रसंघने इस दृष्टिसे सैकड़ों वैठकेंकी परन्तु उसके सारे इतिहासको संक्षेपमें इस तरह बताया जा सकता है है कि उसकी वह समिति जिसने शस्त्रीकरणको कम करनेके लिए (Committee on the Reduction of Armaments) काम प्रारम्भ किया, पंच फैसले, सुरक्षा और निशस्त्रीकरणकी समिति (Committee on Arbitration, Security and Disarmament) के रूपमें समाप्त हुई। संयुक्त राष्ट्रसंघमें शस्त्रोंको कम करनेके बारेमें वही स्वरूप चल रहा है।

"लौह आवरण" और अणुवमके इस युगमें सुरक्षाकी आवश्यकता और भी बढ़ गई है। यही कारण है कि इसके पहले कि कोई भी राष्ट्र अपनी सैनिक शक्ति कम करे निरीक्षण और नियंत्रणकी परिणामकारी पद्धतियोंको विकसित करनेका आग्रह किया जा रहा है। यह एक प्रमुख कारण रहा है कि अणुशक्ति, परम्परागत शस्त्रास्त्र और निःशस्त्रीकरण कमीशनोंके प्रयत्न असफल हुए हैं। परन्तु अभी भी आणुविक वमके सम्बन्धमें सीमित संधि भी एक महत्वपूर्ण पग है।

अहिंसात्मक असहयोग एक निष्फल प्रयोग

गांधीजी के लिये उचित सम्मान रखते हुये भी गांधी जी के 'अहिंसात्मक असहयोग' को युद्ध का एक परिणामकारी निरोध नहीं स्वीकार किया जा सकता। जब तक कि ऐसी भावनाएं कुछ थोड़े से उच्च आत्मावाले पुरुषों और महिलाओं तक सीमित हैं वे युद्ध के संकट से सुरक्षा प्रदान नहीं करते। 'अहिंसात्मक असहयोग' साधन तो समाप्त करता है परन्तु उद्देश्य प्राप्त नहीं करता। वह उस साधन का विकल्प प्रस्तुत नहीं करता जिसको वह नष्ट करता है। आज भी बहुत से ऐसे व्यक्ति और राष्ट्र हैं जो कि अपने साथियों का लाभ उठाने को तैयार हैं और जो कि वैसा करने से केवल उससे उच्चतर शक्ति के द्वारा ही रोके जा सकते हैं। निष्क्रिय असहयोग इस उच्चतर शक्ति को समाप्त करता है और अपराधी को, जो कि शक्ति का उपयोग करने को इच्छुक है, परिस्थिति का एक मात्र नियन्ता के रूप में छोड़ देता है। इस संदर्भ में लाल चीन का भारत पर आक्रमण विचारणीय है।

विरोधी विचारोंमें से उत्पन्न लीग आफ नेशन्स

प्रथम महायुद्धके पश्चात् राष्ट्रसंघके संगठन के साथ आदर्शवादियोंको लगा कि उनके विश्वशांतिके स्वप्न साकार करनेके लिये एक संगठन बन गया है। परन्तु यह शांति सम्मेलन ही, जिसने इसका निर्माण किया, दो विचारों से प्रेरित था। एक ओर तो आदर्शवादी जनमत के प्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रपति विल्सन का निश्चित मत था कि विश्ववाद और क्षेत्रीय संगठन एक दूसरे के विरोधी हैं और दूसरी ओर अपने राज्य के वास्तविकतावादी जनमत से विवश होकर इस बात का आग्रह कर रहे थे कि उस प्रलेख में 'मुनरो सिद्धान्त' को एक क्षेत्रीय संगठन के रूप में स्थान दिया जाय। आगे क्योंकि अमरीका राष्ट्रसंघ का सदस्य ही नहीं

बना इसलिये यह प्रश्न कि राष्ट्र संघ और क्षेत्रीय सैनिक संगठनों के संबंध क्या होंगे अनिर्णीत रहा और परिस्थितियों ने योरप के राज्यों को राष्ट्रसंघ को धारा २१ के अन्तर्गत क्षेत्रीय सैनिक संगठन बनाने को बाध्य कर दिया। यह थे लिटिल इन्टेन्ट, लोकर्नो संधियाँ, बाल्कन पैक्ट, बाल्टिक इन्टेन्ट। इतिहास ने यह सिद्ध किया कि राष्ट्रसंघ, मंचूरिया और इथियोपिया की समस्याओं को हल करने में बुरी तरह असफल रहा और इसने राष्ट्रसंघ के सदस्यों को इसके बारे में नये सिरे से विचार करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने अनुभव किया कि विस्तार और वचनबद्धता की अस्पष्टताओं के कारण संघ पूरी तरह से समस्याओं का मुकाबला नहीं कर सका। इस कमी और दुर्बलता को दूर करने की दृष्टि से बहुत से सदस्य एक बड़े सुनिश्चित निर्णय पर आये कि क्षेत्रीय सैनिक संगठन और समझौते राष्ट्रसंघ के निशर्देन में प्रस्थापित किये जायें। वास्तव में यही निष्कर्ष था जो कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के निर्माण के समय भी कार्य करता रहा।

एक पवित्र संगठन निर्माण की कल्पना

अगस्त १९४२ से फरवरी १९४३ के ६ मासों में एक मूलभूत परिवर्तन हुआ। मित्र राष्ट्रों द्वारा प्राप्त हुई विजयों ने द्वितीय महायुद्ध को एक नई मोड़ दी और साथ ही मित्रराष्ट्रों के संबंधों को भी। विजय की निश्चितता के साथ इंग्लैंड और अमरीका के सामने एक नई समस्या उपस्थित हो गई कि वे रूस से किस प्रकार के संबंध रखेंगे और युद्ध के पश्चात् की दुनियां में रूस का क्या हाथ होगा।

तीनों राजनीतिज्ञों ने भी अनुभव किया कि उनका आपस का सहयोग विश्व में एक स्थायी शांति ला सकता है। दूसरे शब्दों में एक नई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की एक मात्र संभावना सबसे शक्तिशाली राज्यों का मित्र बने रहने का संकल्प था। नवम्बर १९४३ में तेहरान सम्मेलन इस दिशा में एक निश्चित और महत्वपूर्ण प्रयास था। रूजवेल्ट सबसे अधिक सक्रिय थे। वे एक नये पवित्र संगठन (Holy Alliance) का निर्माण करना चाहते थे जो कि राजतंत्र के स्थान पर प्रजातंत्रीय लक्ष्यों के लिये काम करेगा।

विश्वशांति की जिम्मेदारी संयुक्त राष्ट्रसंघ पर

संयुक्त राष्ट्रसंघ एक विश्व संगठन बनने वाला था। उसकी जिम्मेदारी सारे विश्वमें शांति बनाये रखने की थी। परन्तु संघके निर्माताओंने संयुक्त राष्ट्रका विश्वशांति बनाये रखने का एकमात्र साधनके रूपमें विचार नहीं किया था। सभी परिस्थितियोंमें सिद्धता रखने की दृष्टिसे बड़े तीन अपना-अपना प्रभाव क्षेत्र निर्माण कर रहे थे। चर्चिल का अपना ब्रिटिश राष्ट्रमंडल था ही। योरपमें पश्चिमी भाग को छोड़कर जो कि ब्रिटिश और अमरीकी संयुक्त प्रभाव क्षेत्रके अन्तर्गत था, चर्चिल बाल्कन क्षेत्रके लिये अक्टूबर १९४४ में स्टालिनसे सौदा करते दिखाई देते हैं। इसमें संदेह नहीं कि रूजवेल्ट और हलने अपनी आशाओं को युद्धोत्तर तीन बड़ोंकी एकता पर केन्द्रित किया था जो कि विश्व की भावी सुरक्षा का एकमात्र आधार हो सकता था और परिणामस्वरूप वे उसके लिये गम्भीर प्रयत्न करते हुये दिखाई दिये। परन्तु वे भी लैटिन अमरीका और चीनमें अपना प्रभाव क्षेत्र निर्माण करते

ARE YOU GOING ABROAD ?
PLEASE CONTACT

ASIATIC TRAVEL SERVICE

12, Murzban Road, Fort, Bombay-1.

For Correct Guidance And Assistance in Obtaining Your

PASSPORT VISAS

Incometax Clearence Certificates

Exchange Control Regulations

Economical Passages

Shipment Of Unaccompanied Baggage

Assistance At Airport Or Dockes On

Departure And Arrival

Our Service are Entirely Free

Ph. 263581; 265061; 261074; 264978 Gram. "AIRSIA"

1/90 Connaught Circus, New DELHI.

Ph. 45366 Govtt. Apporoved Agents Gram. "AIRSIA"

J. P. C. 35

Telegram–Premvatika ॥ श्री ॥ Tele { Office–30710 Resi –77360

With Best Compliments form ;

Romesh Chander Satish Chander

COTTON, WOOLLEN & ARTSILK CLOTH MERCHANT

29, Shammi Gali, Swadeshi Market, Bombay–2

Head Office : Katra Sahan Shahi, Chandni Chowk, Delhi–6

Tele-Office. P. P. 224207, Resi–51288.

STOCKISTS OF :

GWALIOR RAYON SILK MILLS : MODI RAYON & COTTON MILLS.
SIR SILK MILLS (SIRPUR) : D. C. M. SYNTHETIC FABRICS.
CASTLE WOOLLEN MILLS · CALCUTTA SILK MFG. COMPANY
SHREE RAM SILK MFG. CO. : & OTHER OUTSTANGING MILLS.

OF

BOMBAY

J. P. C—

हुये पाये गये। रूसने भी इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाया जो उसने अपनी सैनिक विजयोंके कारण प्राप्त किया था। दिसम्बर १९४१ में स्टालिनने ईडनसे आग्रह किया कि वे रूसके बाल्टिक राज्यों, फिनलैंड, रूमानिया और पोलैंडके भागों पर कब्जे को मान्यता प्रदान करें।

मित्र-राष्ट्रों में खटक गई

याल्टामें जो सहयोग दिखाई दिया वह सैनिक और सामरिक कारणोंसे था। जैसे-जैसे विजय निकट आ रही थी, वे समस्याएँ उभरकर आ रही थीं जो तीनों राजनीतिज्ञोंके संयम और बुद्धिमत्ताके कारण अभी तक आवृत्त रक्खी गई थीं। याल्टा सम्मेलनके दो सप्ताह पश्चात् ही रूस और अमरीकाके कूटनीतिज्ञोंके बीच रूमानियन समस्याने गम्भीर रूप ग्रहण कर लिया और मार्चके प्रथम सप्ताहमें ही, यानी याल्टा सम्मेलन की समाप्तिके एक मासके बीचमें ही पोलैंड को लेकर झगड़ा प्रारंभ हो गया। जेनरल लीहेके अनुसार रूसके रवैयेसे उसकी यह मंशा दिखती थी कि वह पोलैंड पर अपना एकाधिपत्य चाहता था जो कि याल्टा निर्णयके प्रतिकूल था। पश्चिमी शक्तियों और रूसके बीचमें शीत युद्ध का यहांसे प्रारंभ कहा जा सकता है।

परिस्थितियों ने मित्र बनाया

यहां पर एक बात का विशेषरूपसे रखना आवश्यक है जो कि आगेके घटना-चक्रको समझनेकी कुञ्जी कही जा सकती है। वह यह है कि रूस और अमरीका-इंग्लैंड की युद्ध कालमें व्यापक मित्रता थी पर सत्य ऐसा नहीं है। समान संकट मित्र भाव का जनक है—इस कथनके अनुसार जर्मनी और जापानके समान संकटके कारण इनमें मित्रता हुई। फिर यह मित्रता भी कहां तक थी यह इसी बातसे पता लगता है कि युद्धकालमें भी जबकि रूस को सैनिक दृष्टिसे अमरीका बहुत बड़ी सहायता दे रहा था, रूस अपने देश में युद्धके लिये उत्पादित सामग्रीके आंकड़े बताने को कभी तैयार नहीं हुआ।

महान् दोस्ती खत्म हो गई

इस सीमित मित्रता की व्यावहारिकताका भी विचार युद्धकालमें स्टालिन ने अधिक वास्तविकतासे किया है। वह कहता है कि "कठिन समय तो युद्धके पश्चात् आयेगा जबकि विभिन्न हित 'मित्रों' को विभाजित करेंगे।" भविष्यवाणी उचित थी और भविष्यवाणीने बताया कि मित्र शक्तियाँ अपना कर्त्तव्य करनेमें पूर्ण रूपसे विफल रहीं।

इस विफलताके लिये किसी व्यक्ति को, ट्रूमेन, चर्चिल अथवा स्टालिनको जिम्मेदार ठहराया नहीं जा सकता। जैसा पहले कहा जा चुका है कि समान शत्रु उनको एक साथ लाया था और परिस्थितियोंने उन्हें मजबूर कर दिया कि वे आपसके मतभेद और भय को कुछ समयके लिये पीछे रखें। उस शत्रु का दृश्य जगतसे हट जाना उनके तात्कालिक मतभेदों का कारण था। जर्मनी और जापानके आक्रमण Grand Alliance के प्रारंभके कारण थे और जब वे पराजित हो गये तो Alliance भी नष्ट हो गया। परन्तु संयुक्त-राष्ट्र-संघ Grand Alliance की उत्पत्तिके रूपमें बच गया जिसमें कि मित्रों को बसाने की स्थाई व्यवस्था की गई।

नाटो-संगठन बनाम वारसा-संधि

युद्धके पश्चातसे ही रूस और एँग्लो-अमरीकी गुट दोनोंके संबंध प्रतिवर्ष

卐 दीपावली की शुभ कामनायें 卐

उच्च कोटि के बकल्स, चाभी

के

छल्ले, सूटकेस फिटिंग्स व

उभरे हुये बटन आदि

के

निर्माणकर्ता

दीपक मेटल वर्क्स

मामू भांजा, अलीगढ़ (उ. प्र.)

N. K. S

बच्चों के लिये ५० वर्ष से प्रचलित

बालजीवन घुट्टी के निर्माता

आपके बच्चों के लिये नवीन भेंट करते हैं

बाल जीवन

का

"ग्राइप मिक्शचर"

(अत्यन्त सुन्दर व आकर्षक पैकिंग में)

बच्चों के सूखा तिल्ली, कमजोरी, दस्त, पेट की बीमारियों

व दांत निकलते समय में अत्यन्त गुणकारी

卐

बाल जीवन कार्यालय

अलीगढ़ (उ० प्र०)

N.K.S6 .-

खराब होते चले गये और दोनों ही गुट तबसे एक शक्ति की स्थिति प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहे हैं जहांसे वे समझौते की अपनी शर्तें मनवा सकें। अजरबैजान पर १९४५-४६ में रूसका कब्जा बनाये रखने का प्रयास, ग्रीसकी घटनाओं और सोवियत संघ तथा उसके बाध्य किए जानेके कारण पूर्वी यूरोपके साम्यवादी राज्यों द्वारा मार्शल योजनाके विरोधने पश्चिमी योरपके राज्योंको आगामी आक्रमणकी आशंका ने १९४८ में ब्रुसेल्स संधि करने को प्रेरित किया। इसी समय चेकोस्लोवाकियामें कम्युनिस्ट विद्रोह और रूस द्वारा बर्लिनका घेरा ऐसी घटनाएं थीं जिसने अमरीकाको इस दृष्टिकोणसे सोचने को विवश कर दिया कि अटलांटिकके किनारे तक पहुंचनेके लिए रूसको 'केवल जूतों' की आवश्यकता थी। योरप में ब्रिटेन द्वारा परंपरागत संतुलन बनाये रखनेके कार्यको, जिसे अब वह करनेमें असमर्थ था, अमरीकाको अपने कंधे पर लेना पड़ा और इसीके परिणाम-स्वरूप ४ अप्रैल १९४९ को उत्तरी अटलांटिक संधि संगठनपर १४ राष्ट्रोंने वाशिंगटनमें हस्ताक्षर किये और नाटो का निर्माण हुआ। अमरीकी दृष्टिकोंणसे देखा जाय तो अटलांटिक तक पहुंचनेका मार्ग पश्चिमीयोरप के हाथमें ही है और अब अमरीकी सीमायें पश्चिमी जर्मनीकी सीमायें हैं।

१९५४ में पेरिस समझौतेके परिणामस्वरूप एक नया संगठन ५ मई १९५५ को 'पश्चिमी योरोपीय संगठन' के नामसे जिसमें पश्चिमी जर्मनी भी एक सैनिक शक्तिके रूपमें सदस्य होगा, उत्पन्न हुआ। उत्तरी अटलांटिक गुटके साथ पश्चिमी जर्मनी के एकीकरणके साथ ही उत्तरी

उत्सर्ग का अनोखा उत्साह

लन्दन पर बमवर्षा करने वाले जर्मन विमानोंमेंसे कुछ प्रतिदिन गिरा दिए जाते थे। ऐसा ही एक विमान लन्दनके एक उपनगर में गिर पड़ा। विमान नष्ट होगया, परन्तु उसके दो चालक बच गए पुलिसने उन्हें विमानमेंसे निकाला। लोगोंको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे दोनों चालक १५ और १६ वर्षीय दो किशोर थे। जब उनसे उनकी आयु पूछी गई, तो उन्होंने बताया कि वे १८ वर्षके हैं। परन्तु डाक्टरों तथा अन्य लोगोंने बताया कि वे १६ वर्षसे अधिक आयुके नहीं हैं।

बाद में पता चला कि बात यह थी कि जर्मनीमें १८ वर्ष तथा अधिक आयुके तरुणोंके लिए सेनामें भर्ती अनिवार्य कर कर दी गई थी। इन दोनों देशभक्त जर्मन किशोरोंने भी देश की सेवा करने की ठानी। परन्तु उनकी आयु अभी कम थी। इस लिए, वे झूठी आयु बताकर वायुसेना में भर्ती हो गए। विदेशमें भी उन्होंने अपनी असली आयु नहीं बताई। सोचा, कहीं लोग यह न सोचें कि जर्मन सरकार बड़ी निर्दयी है, बच्चोंको लड़ाई में झोंक रही है। अपनी मातृभूमिको बदनामीसे बचाने के लिए उन्होंने अपनी असली आयु छिपा ली और झूठी आयु बताई, जो स्पष्टतः अविश्वसनीय थी।

अटलांटिक प्रणालीकी शक्तियां रूसके अनुगामी पूर्वी जर्मनीके आमने-सामने आ गयीं जिसकी सीमायें निस्संदिग्धरूपसे सुरक्षाकी दृष्टिसे सोवियत संघकी सीमायें हैं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होनेके कारण सोवियत संघने, जिसकी अपने अनुगामी राज्योंसे पहले से ही सैनिक संधियां थी, वारसा संधिके द्वारा इन गठबंधनोंको अधिक सुनिश्चित और सुगठित रूप दिया। इसीलिए अल्बानिया, बल्गेरिया, चेकोस्लोवाकिया, प्रजातन्त्रीय गणतन्त्रात्मक जर्मनी, हंगरी, पोलैंड, रूमानिया और सोवियत संघ ने मित्रता, सहयोग और परस्पर सहायताकी संधि पर १४ मई १९५५ को हस्ताक्षर किए। जब तक उत्तरी अटलांटिक संगठन है तब तक वारसा संगठन भी चलता रहेगा। इस संधिमें यह उल्लेख किया गया है कि यह संधि उसी समय समाप्त हो जायगी जिस समय संपूर्ण योरप का एक सुरक्षा संगठन उत्पन्न हो जायगा।

अमेरिका द्वारा सीटो और सेंटोका जन्म

१९५० फरवरीकी सोवियतसंघ और लालचीनकी सैनिक संधि और जूनमें होने वाले कोरिया युद्धने वाशिंगटनके नेताओं को अपनी नीतिका परित्याग करने और एक निश्चित मार्ग लेनेको विवश कर दिया। प्रशान्त महासागरमें रूस और लालचीनकी नाकेबन्दी करनेकी दृष्टिसे १९५१ के ३० अगस्त और ८ सितम्बर के बीचमें अमरीकाने जापान और फिलीपीनसे सैनिक संधियां कीं और आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंडके साथ एक क्षेत्रीय सैनिक संगठन प्रस्थापित किया। थाइलैंड और फारमोसासे उसकी सैनिक संधिया हैं ही। सोवियत संघ, लालचीन और वियतनामके घनिष्ठ संबंधों के प्रत्युत्तरमें दक्षिण-पूर्वी

युद्ध जीवन का अंग है

एक दिन ऐसा आ सकता है, या यों कहिये कि निश्चय ही आयेगा, जब मनुष्य जाति, आध्यात्मिक, नैतिक और समाजिक रूप में इस बात के लिये तैयार होगी कि सर्वत्र शान्ति का राज्य हो। परन्तु जब तक ऐसा नहीं होता तब तक किसी व्यावहारिक तत्वज्ञान और धर्म शास्त्र को इसे स्वीकार करना और उचित ठहराना होगा कि युद्ध जीवन का एक अंग है और लड़ाई करना मनुष्य का स्वभाव और कर्म है।

श्री अरविन्द

एशिया संधि संगठनके नामसे एक संगठन प्रस्थापित हुआ। इसी प्रकार फारसकी खाड़ी और ईरानकी ओरसे रूसको घेरने के लिए बगदाद संधि संगठन, आज-कल सेंटो के नामसे १९५५ में निर्मित हुआ। इसी प्रकारका एक सुरक्षात्मक संगठन पश्चिमी गोलार्द्ध में अमेरिकन राज्यों का का भी है।

सन्य शक्ति-संतुलन का उदय

आज दोनों ही गुटोंके सैनिक संगठनोंमें दरारें पड़गई हैं। एक ओर दक्षिणी वीटनाम, फ्रांस और पाकिस्तान द्वारा अमरीकी नीतियोंको चुनौती दी गई है तो दूसरी ओर सोवियत संघ और लालचीन में बढ़ता हुआ संघर्ष तथा अल्बानिया का सोवियत संघके विरोधमें लालचीन का खुला समर्थन भी दिख रहा है। तथ्य यह है कि आज विश्व को आणविक शस्त्रोंका सर्वाधिक भय है जिन्हें कि दोनों पक्ष प्रयोग करना नहीं चाहते। परिणामस्वरूप दुनियांमें नये समन्वय हो रहे हैं और पुराने शीतयुद्धकी दीवारें ढह रही हैं। ●

दीपावली के पावन पर्व
पर
हम अपने ग्राहकों, शुभ चिंतकों एवं संरक्षकों
का
हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

शंकर हैन्डलूम हाउस

निकट आर्य समाज मंदिर, बक्सीपुर, गोरखपुर

सर्व प्रकार के कलात्मक हैन्डलूम के बेड शीट्स, धोतियाँ, साड़ियाँ, पिलो कवर्स, टॉवेल्स एवं सहन के प्रमुख निर्माता
एवं
वितरक

हमारी दूकान पर बंगलौरी साड़ी, मद्रासी चादरें
एवं
शर्टिंग भी प्राप्य हैं।

N. K. S.—17

"शुभ दीपावली"

"चिर विजय की कामना ही राष्ट्र का आधार है।"

युद्ध की तैयारी में सदैव तत्पर

—: नेशनल रबर वर्क्स :—

१७१ ए – महात्मा गान्धी रोड, कलकत्ता–७

फोन : ३३१५०७/३३३६०६

निर्माता :

* ग्राउन्ड सीट और मिलीटरी केप
* रबर द्वारा वाटर प्रूफ किया कपड़ा
* सिंगल एवं डबल टैक्सचर रबर वाटरप्रुफ कपड़ा
* बरसाती कोट होल्डाल एवं थैलों के लिये कपड़ा
* हवाई तकिये एवं गद्दे
* रबर (हॉस्पिटल) सीटिंग
* रबर के मोटर पार्टस, एवं रबर द्वारा निर्मित अन्य वस्तुयें।

M. P. A.—1

Ciech

CIECH WARSZAWA-POLAND

से निर्यात होने वाली वस्तुयें :—

आरगेनिक तथ इन आरगेनिक केमिकल्स, फाइन्ड केमिकल्स, कोल-तार डेरीवेटिव्ज, प्रेसड कार्बन प्रोडक्ट्स, डाइस्टफ्स, पेन्ट्स वारनिशेज. एवं इनेमल्स, प्लास्टिक्स, फर्मास्यूटिकल प्रोडक्ट्स, कास्मेटिक्स सुगन्धित तैल, माइनिंग इक्सपेलोसिव्स फोटो केमिकल प्रोडक्ट्स।

उपर्युक्त वस्तुएं नगद कैश देने पर सुलभ हैं।

विशेष विवरण हेतु सम्पर्क स्थापित करें :—

दि पालिश कर्माशियल कौन्सेलर्स आफिस

४२—४४ सुन्दर नगर, नई दिल्ली

या

दि कान्सुलेट आफ दि पालिश पिपुल्स रिपब्लिक

२८—स्टीफेन कोर्ट, १८—ए, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता।

मेवाड़ बिल्डिंग ४०—ए, पोद्दार रोड, बम्बई।

INTERADS

इतिहास की ये विडम्बनाएँ

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

•

रेनहोल्ड नीबुहर का कथन है कि हममें ऐतिहासिक दृष्टिकोणकी कमी है और हम अपने युगकी विडम्बनापूर्ण विशेषता को अनुभव नहीं करते हैं, जिसमें विश्व-समुदाय बनाने की आशाएं एक विश्व संगठन के द्वारा बाहरी तौर पर और सैद्धांतिक दृष्टि से पूरी हो चुकी हैं, लेकिन आणुविक संकट और शीत युद्ध की वास्तविकताओंने इस स्थिति को रद्द कर रक्खा है। मानव जातिकी एक संसद और दुनियां के एक संघ के स्थान पर भय-संतुलन से उत्पन्न विचित्र शांति हमारे पास है; जो दोनों शक्ति-गुटोंको टकरानेसे रोकती है कि जिससे कहीं ऐसा न हो कि पारस्परिक विनाश को ही प्राप्त हो जांय। इस अमेरिकी दार्शनिक का कथन है कि उस सभ्यता और संस्कृतिकी विडंबनाका अनुभव करने के लिए उससे ज्यादा विचार-शक्ति की जरूरत है, जिसका प्रयोग प्रायः हम करते हैं। जो ग्रहों के रहस्यों में घुसकर उनका पता लगा सकती है और विकसित देशों के रहन-सहन का स्तर न जाने आजसे कितना ऊंचा कर सकती है, लेकिन जो राष्ट्रोंके दोनों गुटोंके उस झगड़े को हल नहीं कर सकती है, जिसका कभी भी विस्फोट हो सकता है और जो इतना विध्वंसकारी हो सकता है कि उसके बाद विजेता और विजितमें कोई अंतर ही नहीं रह जायगा।

ऐतिहासिक विडंबना

१८वीं और १९वीं सदीमें मानव-जाति के लिए जो आशा बंधी थी उसमें और आज की वास्तविकताओंमें एक गहरी ऐतिहासिक विडंबना है। एक ओर महत्व-पूर्ण सिद्धांतों की खोज हुई, जिसने आदमी को प्रकृति पर बढ़ी हुई शक्ति प्रदान की और इस तरह उन्नति का अनन्त क्षेत्र विस्तृत हो गया, दूसरी ओर जिस तरह फूल के साथ कांटा होता है उसी तरह इसके साथ एक बुराई भी जुड़ गई, जिसने इन आशाओं और कल्पनाओंको रद्द कर दिया कि बढ़ी हुई शक्ति और आजादी का प्रयोग अच्छे उद्देश्यों के लिए होगा। दुर्भाग्यवश जब-जब शक्ति बढ़ी और आजादी का क्षेत्र बढ़ा उसमें निर्माणकारी और विनाशकारी संभावनाएं एक साथ सम्मिलित हो गईं। मानवजाति की संहारिक योग्यताएं अपने ऊंचे-से ऊंचे बिंदु तक पहुंच चुकी हैं, और यह हुआ ऐसी स्थिति में है कि जब आसुरी

शक्तियां भी मौजूद हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि यह बढ़ी हुई संहारक शक्ति जो अब पूरी तरह भयंकर हो चुकी है, इन आसुरी शक्तियों के प्रयोग का भी साधन हो गई है। अवतक युद्ध क्रूरता और अन्याय के पंजे से छुटकारा पाने का एक परंपरागत रास्ता था, लेकिन आज वह एक भयानक जाल बन गया है।

मास्को और पीकिंग की दरार

आशा की एक किरण

साम्यवादका केन्द्र-स्थान अब मास्को से पीकिंग हो गया है और सुदूर पूर्व में कठमुल्लापन उससे भी ज्यादा है, जितना वह मास्कोमें था। उन लोगों के लिए जो साम्यवादमें बड़ी बुराई देखते हैं, मास्को और पीकिंग की दरार निराशा के काले आकाशमें आशा की किरण है। उत्सुकतापूर्वक यह कल्पना कर ली जाती है कि रूस और अमेरिका के बीच सैद्धांतिक मतभेद की खाई होने पर भी दोनों में कोई मौन साझेदारी पनप सकती है, जिसका आधार दोनों की दुनियां को सर्व-संहारसे बचाने की समान जिम्मेदारी और दोनों का यह निश्चय है कि सभ्यताने जो कुछ उपलब्धियां अभी तक प्राप्त की हैं, उनकी महाविनाशसे हिफाजत करनी है, जो एक विस्फोट का अटल परिणाम हो सकता है। आशावादियों को विश्वास है कि मास्को उस हद तक अपने-आपको बुर्जुआ बन जाने दे सकता है। इस युग में महाविनाश के भय से पैदा जो तनाव है, उसको राहत पहुंचाने के लिए इस आशा की किरण को देखना एक आकर्षक साधन है। इस तरह आशाभरी निगाहसे देखना अच्छा भी है।

किन्तु यदि हम अपनी आशा को कोरे शब्दों पर ही आधारित करेंगे तो सम्भव है कि अपने द्वारा ही निर्मित नूतन मोर्चों से हम हट जाएँ। यदि ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण क्षण उपस्थित हुआ तो रूस-चीनमें पड़ी दरार आत्म-रक्षा के नाम पर स्वयमेव पट जायगी और विश्वाकाशमें व्याप्त युद्ध के बादल और घने हो जायेंगे। ●

जब विजय रूठ गई

नेपोलियनकी वीर वाणीने सैनिकोंकी धमनियोंमें उत्साहका जादू भर दिया। सड़कें नहीं थीं, तोपोंका पहाड़ों पर चढ़ पाना असम्भव था। परन्तु नेपोलियनके शब्द जलते हुये अंगारोंकी भांति सैनिकोंके हृदयोंमें धधक रहे थे। वे आगे बढ़े। अल्प्स की पर्वत श्रेणियोंने सर झुका लिया। उसे रास्ता मिल गया। नेपोलियन विजयी हुआ। उसकी नंगी भूखी सेना विश्व विजयी सेना बन गई। पर एक दिन ऐसा भी आया जब उसी विजयशालिनी सेना और विश्व विजेता सेनापति नेपोलियनको वाटर लू के मैदानमें पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इतिहासज्ञोंने इसकी कारण मीमांसा करते हुए कहा 'पौरुषका दामन छोड़कर अपने जवानों पर भरोसा करनेके बजाय जब नेपोलियनने अपने रिश्तेदारों व चाटुकारों पर भरोसा करना प्रारम्भ कर दिया उसी दिन विजय उससे रूठ गई।

क्या विश्व से लोकतंत्र समाप्त हो जायेगा ? यह एक ज्वलंत प्रश्न है जो आये दिन होने वाली इन सैनिक क्रान्तियोंके बीच आजके प्रत्येक लोकतांत्रिक व्यक्ति के सशंकित मन में है। चतुर्दिक सैनिक तानाशाही से घिरे भारत के संदर्भ में प्रमुख सैनिक-क्रान्तियों का विद्वान लेखक द्वारा प्रस्तुत विवरण मननीय है।—सम्पादक

विश्व में सैनिक तानाशाही का बढ़ता स्वरूप

गौरीनाथ रस्तोगी

पाश्चात्य जगतके मूर्धन्य राजनीतिवेत्ता श्री अरस्तूने सरकारोंका वर्गीकरण करते हुए मुख्य रीतिसे राजतन्त्र (Monarchy), कुलीनतंत्र (Aristrocracy) और प्रजातंत्र (Democracy) का प्रतिपादन किया था। इन पद्धतियोंके विकृत स्वरूप का: परिज्ञान कराते हुए अरस्तूने उन्हें क्रमश: अधिनायकतंत्र या तानाशाही पद्धति (Totalitarianism or Dictatorship), भ्रष्टधनिक तंत्र (Oligarchy) और नौकरशाही (Bureaucracy) की संज्ञा प्रदानकी थी। अरस्तू के मतानुसार विश्वमें सरकारोंके स्वरूपमें परिवर्तन इसी क्रमके अनुसार होता रहता है और राजतन्त्र और अधिनायक तंत्रमें विभेद उनके व्यावहारिक स्वरूपको देखकर ही कर पाना संभव है।

साम्राज्यवाद की लिप्सा ही प्रथम महायुद्ध का कारण

यदि मानव-इतिहास का विश्लेषण किया जाए तो अरस्तूके इस कथनके अनुसार सृष्टिके प्रारम्भ कालमें ही राजतन्त्र के साथ ही गणतन्त्रात्मक शासन-पद्धतियों के उदाहरण भी हमें सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। न्यूनाधिक यह क्रम आज भी उसी भांति अविच्छिन्न रूपसे चला आ रहा है। यद्यपि यह सत्य है कि १७७४ में नयी दुनियां के १३ छोटे-छोटे राज्योंके ब्रिटेनके साम्राज्यवादी चंगुलसे मुक्त होने, व १८६७ और १९०१में क्रमश: कनाडा

और कामनवेल्थ आफ आस्ट्रेलिया में उत्तरदायी प्रशासन की प्रस्थापना होनेसे लोकतन्त्र को बल मिला और प्रथम महायुद्ध तो ब्रिटेन और अमेरिकाने जर्मनीके विरुद्ध लोकतन्त्र और आत्मनिर्णयके अधिकार की दुहाई लगाकर ही लड़ा था। परन्तु प्रथम महायुद्धके दौरान आत्मनिर्णयके अधिकार की दुहाई और लोकतन्त्र की रट कितनी भी क्यों न लगायी गयी हो इतिहासके इस सत्य को कोई भी झुठला नहीं सकता कि प्रथम महायुद्ध का कारण साम्राज्यवादी राष्ट्रों की दुनियाँके अधिक से अधिक भूभाग को अपना उपनिवेश बनाने की भूखके कारण ही लड़ा गया था। प्रथम महायुद्धके पश्चात् जर्मनी, इटली और तुर्किस्तान आदि देशोंमें लोकतान्त्रिक शासन-व्यवस्था प्रस्थापित होनेके बाद भी वह अपनी जड़ें गहराईसे न जमा सकीं और २० वर्ष की अवधि व्यतीत होते-होते जर्मनी और इटली में हिटलर और मुसोलिनीके नेतृत्वमें सैनिक तानाशाही का उदय हो गया।

कम्युनिस्टों की तानाशाही

इसी सन्दर्भमें अक्तूबर १९१७ की रूसी क्रान्तिका उल्लेख करना भी अप्रासांगिक न होगा। स्मरण रहे, उक्त क्रान्ति बोल्शेविक नेताओंने अत्याचारी जारशासनके विरुद्ध की थी और उन्होंने घोषणा की थी कि इस क्रान्तिके सफल हो जाने पर मनुष्य द्वारा मनुष्य का किया जाने वाला शोषण सदा-सर्वदाके लिए समाप्त हो जायेगा।

किन्तु इतिहास साक्षी है कि यदि जर्मनी, इटली और जापानमें सैनिक तानाशाही की प्रस्थापना होकर 'लोकतंत्र' कल्पना जगतमें खो गया तो दूसरी ओर १९१७ की रूसी क्रान्तिके पश्चात् सर्वहारा वर्ग की तानाशाही प्रस्थापित करनेके नाम पर आज सोवियत संघके अतिरिक्त पूर्वी योरपके पूर्वी जर्मनी, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रूमानिया, बल्गारिया, अल्बानिया आदि देशोंमें और एशियायी भूखंडमें सम्पूर्ण उत्तरी खंडके रूसी क्षेत्रमें चले जानेके अतिरिक्त बाह्य मंगोलिया, चीन, उत्तरी कोरिया, तिब्बत, उत्तरी वियतनाम और लाओसके कतिपय हिस्सों के लाल हो जानेसे विश्वका यह भू-खंड लोकतंत्रसे कोसों दूर जा चुका है; भले ही तत्रस्थ शासक "जनवादी लोकतंत्र" (Peoples Democracy) का नारा कितनी भी जोरसे बुलन्द क्यों न करें? सच तो यह है कि यदि इन क्षेत्रों परसे सैनिक पकड़ जरा भी ढीली पढ़ जाए तो १९५३ में पूर्वी जर्मनी और १९५६ के हंगरीमें उठे राष्ट्रीयताके प्रबल जन-ज्वार की भाँति जो तूफान इन देशोंमें आएगा उसमें सर्वहारा वर्गकी तानाशाही ताशके पत्तोंके महलकी भाँति भूमिसात् होती हुई दिखाई देगी।

कम्युनिस्ट देशोंकी गणना सैनिक तानाशाही वाले देशोंमें करना इस कारण और भी स्वाभाविक है कि पूर्वी जर्मनी, यूगोस्लाविया, हंगरी, बल्गारिया, रूमानिया, जेकोस्लेवाकिया, अल्बानिया, बाह्य मंगोलिया, उत्तरी वियतनाम, उत्तरी कोरिया, तिब्बत आदिमें लाल-क्रांतिके चरण बर्बर रूसी और चीनी सेनाओंके संरक्षणमें ही बढ़ सके हैं और तत्रस्थ जनताने स्वेच्छासे कम्युनिजम या साम्यवादको गले नहीं लगाया है।

स्पेन और पुर्तगालमें उदय

पश्चिमी योरपके अन्यान्य देशोंमें

द्वितीय महायुद्धके समय ही स्पेनमें जनरल फ्रांकोके नेतृत्वमें सैनिक तानाशाही का उदय हुआ जो आज भी अपना बर्बर शासन प्रस्थापित किये हुए है। इसी भाँति यह भी सर्वविदित है कि यद्यपि १९३२ में पुर्तगालमें डा० सालाजार ९७ प्रतिशत जनताका समर्थन प्राप्त कर पदारूढ़ हुए थे किन्तु अपने प्रशासनको तानाशाही पद्धतिमें परिवर्तित करते उन्हें देर न लगी और आज यदि पुर्तगालके तानाशाह डा० सालाजारको सैनिक समर्थन प्राप्त न हो, जिसकी उपलब्धि वह अमेरिकी सहायता से कर रहा है, तो डा० सालाजारके निरंकुश शासनको वहाँकी जनता उखाड़ कर अविलम्ब फेंक दे।

सैनिक तानाशाही का शिकार दक्षिणी गोलार्द्ध

नयी दुनियांमें संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडाके अतिरिक्त लैटिन अमेरिका के जितने भी देश हैं उनमें सैनिक क्रान्तियाँ तो प्रायः होती रहती हैं। दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप के ब्राजील, अर्जेण्टाइना, बोलीविया, वेनेजुला सरीखे बड़े राष्ट्रोंमें भी प्रायः सैनिक क्रान्तियाँ होते रहना इस तथ्यकी पुष्टि करता है कि लोकतन्त्र अपनी जड़ें वहाँ गहराईके साथ नहीं जमा सका है। यही कारण है कि सन् १८६१ में डोमीनिकन रिपब्लिक एक्वेडर, एल सल्वाडोरमें सफल सैनिक क्रान्तियाँ हुई और अर्जेण्टाइना, बोलीविया एवं ब्राजील में सैनिक क्राँन्तियाँ करने का प्रयास किया गया। यद्यपि यह सही है कि अर्जेण्टाइना, बोलीविया और ब्राजीलमें सैनिक क्रान्ति का प्रयत्न असफल रहा परन्तु यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि तत्रस्थ सरकारों को सेनाकी कतिपय शर्तें स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ा था। १९६३ के पिछले दस मासोंमें भी डोमीनिकन रिपब्लिक, होण्डुरास और दो अन्य देशोंमें सफल सैनिक क्रान्तियाँ हो चुकी हैं। और क्यूबामें प्रस्थापित पूर्ववर्ती सरकारका तख्ता सेनाकी सहायतासे उलटनेके पश्चात् कामरेड कैस्ट्रो विध्वंसकारी तत्वोंको प्रशिक्षण देकर मध्य अमेरिकाके छोटे-छोटे देशों एवं लैटिन अमेरिका में विद्यमान सरकारों को नष्ट करनेकी अपनी योजनामें संलग्न हैं। इन देशोंकी सेनाओंमें इस समय भले ही कैस्ट्रो समर्थक तत्व बहुसंख्यामें न हों किन्तु आर्थिक दृष्टिसे विपन्न और प्रजातान्त्रिक पद्धतिकी स्थिरताके अभावमें इन देशोंमें विद्यमान सेनाओंमें से कभी भी महत्वाकांक्षी सेनानायक आगे बढ़कर सत्ता के समस्त सूत्र अपने हाथमें लेने का प्रयास कर सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

मिस्र ने अफ्रेशिया में तानाशाहीका मार्ग प्रशस्त किया

अफ्रेशियायी भूखंड और मध्य-पूर्व की राजनीति तो और भी विचित्र है। मिश्र में कर्नल नासिरका अभ्युदय सैनिक तानाशाहीकी ही विजय थी इसमें दो मत नहीं हो सकते। जन-भावनाओंसे पूर्णतः विलग रहनेकी जो नीति भूतपूर्व शासक शाह-फारूकने अपनायी थी उसके परिणाम स्वरूप कर्नल नासिर और जनरल नगीबका मार्ग सरल हो गया था और उन्हें जन-समर्थन प्राप्त करनेमें भी कोई कठिनाई का सामना न करना पड़ा। किन्तु शनैः-शनैः सेना पर अपना प्रभाव प्रस्थापित कर कर्नल नासिरने अन्तमें जनरल नगीब को भी चलता कर दिया। इसी भाँति कमाल अतातुर्कके तुर्किस्तानमें, जहाँ स्वस्थ संसदीय जनतन्त्र के विकास के लिए सत्तारूढ़

दल के ही एक भागको उससे पृथक कर योजनाबद्ध रीतिसे विरोधी पक्ष खड़ा करने का प्रयास किया गया था, सन् १९६० में सैनिक क्रान्ति हो गई। आज भी तुर्किस्तानकी वैधानिक सरकारका अस्तित्व सेनाके समर्थन पर ही आधारित है।

सैनिक क्रान्ति इस्लामी देशों की परम्परा

जब तुर्किस्तान जैसे अपेक्षाकृत उद्यत देशकी यह स्थिति है तब मध्य पूर्वके ईरान, सीरिया, यमन आदि देशोंका वर्णन क्या किया जाय? इन देशोंमें आए दिन होने वाली सैनिक क्रान्तियाँ और प्रति-क्रांतियोंकी याद इतनी ताजी है कि उस विषयमें इस स्थल पर कुछ न लिखना ही अधिक समीचीन होगा। दूसरी ओर सऊदी अरब, कुवैत, मोरक्कों, इथोपिया आदि देशोंमें अभी भी सामन्तशाहीका बोलवाला है।

क्या सैनिक तानाशाही स्थाई हो जायेगी

इससे भी दुर्भाग्यपूर्ण चित्र घाना, अल्जीरिया, संयुक्त अरब गणराज्य, और पूर्वी योरपके कम्युनिस्ट देश यूगोस्लाविया का है जहाँ संसदीय जनतंत्रको अमान्य करते हुए तत्रस्थ शासकोंने एक दल विशेष को ही कार्य करनेकी छूट देकर अपनी लोकप्रियता और तत्रस्थ जनताके अज्ञान और अशिक्षाका दुरुपयोग कर तानाशाहीका मार्ग प्रशस्त किया है। घानाके श्री नक्रुमा, अल्जीरियाके श्रीबेनबेला, यूगोस्लावियाके मार्शल टीटो तो उससे भी आगे बढ़ चुके हैं और अपनेको जीवन-पर्यन्त राष्ट्रपति निर्वाचित करा, सैनिक समर्थनके भरोसे ही अपनी गद्दी सुरक्षित रखे हुए हैं।

नवोदित अफ्रीकी राष्ट्र भी उसी पथ पर

अफ्रीकाके अन्यान्य देश या तो अभी घोर निद्रासे जगकर अलसायी आंखोंसे दुनियांको देख रहे हैं अथवा अंगोला, मोजम्बीक, मेंडागास्कर, दक्षिणी अफ्रीका और दक्षिणी रोडेशिया सरीखे देशोंको स्वाधीनताके वायुमण्डलमें श्वास लेनेके लिए बर्बर साम्राज्यवाद और रंगभेद से जीवन-मृत्युका संघर्ष झेल रहे हैं। नव-स्वाधीनता प्राप्त कांगोका इतिहास किसे पता नहीं, जहाँ नेताओंकी पारस्परिक होड़ने सैनिक तानाशाहीका मार्ग प्रशस्त कर, कुछ ही समयके लिये क्यों न हो, कर्नल मोबुतूको कांगोंका वास्तविक शासक बना दिया था और जिसकी विचित्र गुत्थीका हल निकालनेमें १७ सितम्बर १९६१को मानवताका एकान्तिक किन्तु सक्रिय पुजारी डाग हैमरशोल्ड सदा-सर्वदाके लिये हमारे बीचमें से उठ गया।

चीनी विभीषिका से ग्रस्त एशिया

एशियायी भूखंड ईरान, अफगानिस्तान और नेपाल जैसे देशोंको छोड़कर जहाँ पर आज भी राजतन्त्र स्थिर है, सैनिक तानाशाहीका नंगा नाच ही भूतकालमें होता आया है। १९५०में उत्तरी कोरियाको हस्तक बनाकर दक्षिणी कोरिया पर सशस्त्र आक्रमण करते हुये उसे सैनिक शिविरमें परिवर्तित कर देनेका कुत्सित षड्यन्त्र कम्युनिस्ट चीनने रचा था। संयोगवश राष्ट्रसंघके सक्रिय हस्तक्षेपके फलस्वरूप दक्षिणी कोरिया कम्युनिस्ट चीनका सैनिक शिविर तो नहीं बन सका किन्तु भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० सिंगमनरी की अदूरदर्शिताके कारण वह सैनिक तानाशाहीके जालमें फंस ही गया और आज दक्षिणी कोरियामें जनरल पार्कका सैनिक शासन प्रस्थापित है। दूसरी ओर १९५४ में बर्बर पशु बलका प्रतिकार कर सकने

में अक्षम रहनेके कारण तिब्बतकी यदि बलि चढ़ गयी तो आज मदोन्मत्त कम्युनिस्ट चीन अपनी विशाल वाहिनियोंके सहारे ४४ करोड़ भारतीयोंकी तरुणाईको ललकार रहा है, भारतके ५० सहस्र वर्गमील भूभागको अपना बता रहा है और १८००० वर्गमीलसे अधिक भूभाग उसने सैन्य बल के कारण ही छीन भी लिया है।

सैनिक तानाशाही से घिरा भारत

दूसरी ओर भारतके दायें-बायें बाजू पाकिस्तान, ब्रह्मा, थाईलैंड, दक्षिणी वियतनाम आदि देशोंमें प्रत्यक्ष सैनिक तानाशाही विद्यमान है 'बुनियादी जनतंत्र' (Basic democracy) की खाल उढ़ाकर गधेको शेर सिद्ध करनेका प्रयत्न यद्यपि तानाशाह अयूबने किया है किन्तु उन्हें अपने प्रयत्नमें सफलता नहीं मिल सकी है। पिछले दिनों ब्रह्माके भाग्यविधाता जनरल नेवि-न द्वारा लोकतन्त्र की निन्दा, थाईलैंडमें सैन्य-शक्तिके भरोसे मार्शल सरित थानरतका अक्षुण्ण सिंहासन और दक्षिणी वियतनाममें सैन्य बलका अवलम्बन लेकर बहुसंख्यक बौद्ध जनता पर किए गए भीषण अत्याचार आखिर किस बातके द्योतक हैं? हिन्देशियामें निर्देशित जनतंत्र (Guided Democracy) के नाम पर सत्ताके समस्त सूत्र अपने हाथमें लेकर और अपने को जीवन-पर्यन्त राष्ट्रपति घोषित करवा कर राष्ट्रपति डा० सुकर्णने यूगोस्लावियाके मार्शल टीटो, घानाके श्री नक्रुमा आदिसे अपना साम्य प्रस्थापित कर रखा है। फारमोसामें जनरलिस्मो, च्यांग काई शेक के प्रशासनकी कहानीसे कौन अपरिचित है?

भारतीय संस्कृति ही लोकतंत्र का आधार

जहाँ तक भारतमें लोकतांत्रिक व्यवस्थाके अबाध गतिसे जारी रहनेके प्रश्नका संबंध है हमें यह भीस मरण रखना होगा कि उसका एकमात्र कारण भारतकी वह मूल संस्कृति है जो 'जियो और जीने दो' के श्रेष्ठ सिद्धान्त पर आधारित है। आज भले ही कतिपय बुद्धिजीवी प्रगतिशीलताके नशेमें उस श्रेष्ठ संस्कृतिको अपशब्द सुनायें, किन्तु इस तथ्यसे इन्कार नहीं किया जा सकता कि १९५९में जनरल थिमैया और तत्कालीन प्रतिरक्षा मन्त्री कामरेड मेनन के मध्य सेनामें पदोन्नतिके प्रश्न पर उत्पन्न हुए मतभेदमें विपक्ष द्वारा अनेक विध आलोचनाके बाद भी अन्ततोगत्वा सरकारी रीति-नीतिके समर्थनका सर्वप्रमुख कारण यही था कि सैनिक सेवाओं बनाम प्रजातंत्र सरकारके विवादमें प्रजातंत्रकी ही श्रेष्ठता स्थापित होनी चाहिए।

किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि भारतीय लोकतंत्रके सम्मुख कोई भी खतरा विद्यमान नहीं है। सत्तारूढ़ दल का सत्ताके मदमें बढ़ता हुआ नशा, कम्युनिस्ट पार्टीकी विद्यमानता, कम्युनिस्ट चीनके आक्रमण एवं उसके विस्तारवादी मन्सूबे इस बातकी ओर अंगुलि-निर्देश कर रहे हैं कि यदि हम सतर्क न रहे तो भारतीय लोकतंत्ररूपी सूर्यको भी तानाशाही का राहु ग्रस सकता है। ***

—०◌०—

हिंसा का त्याग कर शायद तुम उतना ही प्राण नाश करते हो जितना आतयायी हिंसा का आश्रय लेकर करते हैं। —अरविन्द

दीपावली
के
अवसर
पर
हार्दिक
शुभकामनायें

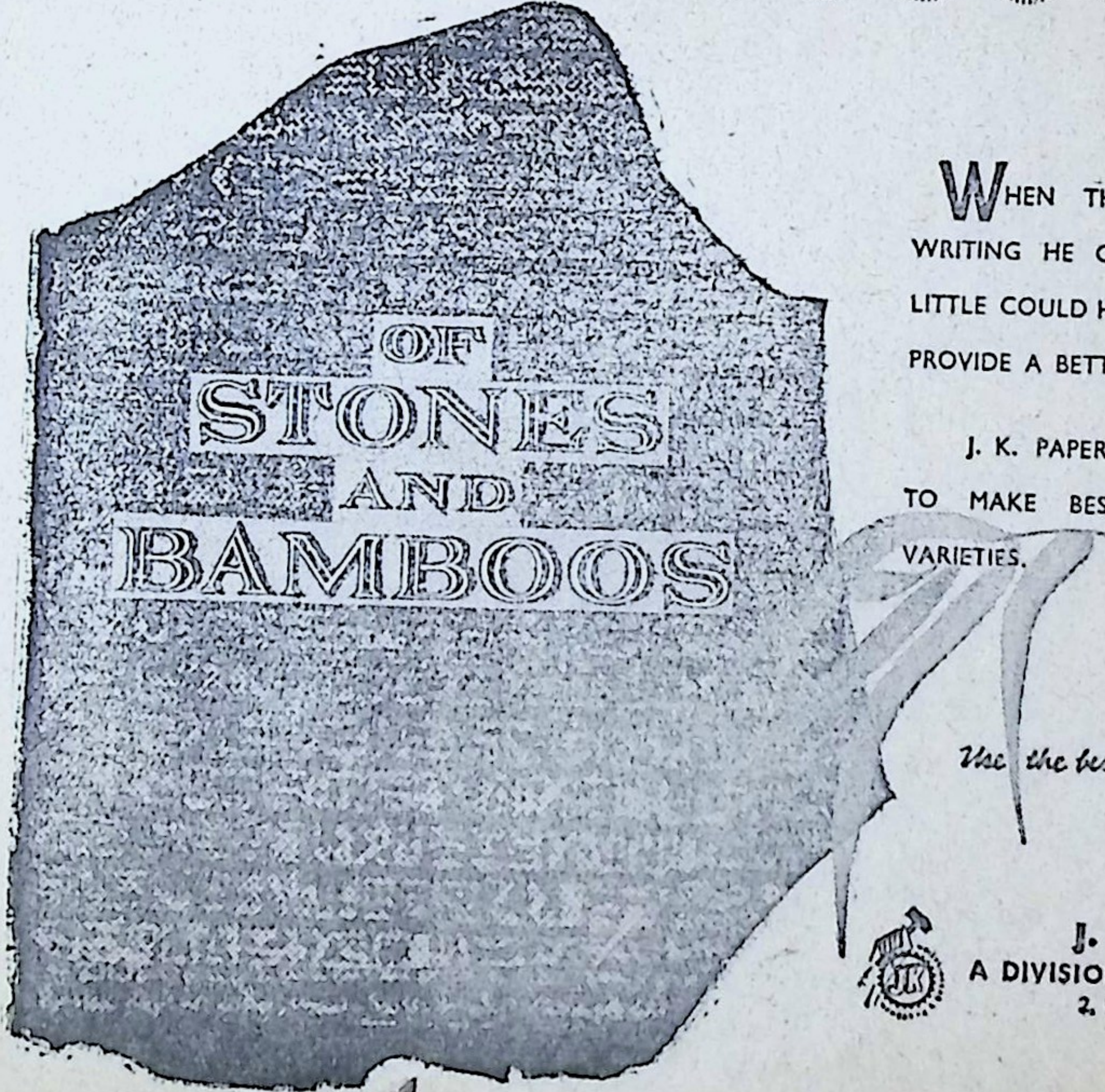

WHEN THE FIRST MAN THOUGHT OF WRITING HE CHOSE STONE AS HIS MEDIUM. LITTLE COULD HE THINK THAT BAMBOO WOULD PROVIDE A BETTER MEDIA.

J. K. PAPER MILLS TO-DAY USE BAMBOOS TO MAKE BEST QUALITY PAPERS OF ALL VARIETIES.

Use the best J K PAPER *Use J. K.*

J. K. PAPER MILLS
A DIVISION OF STRAW PRODUCTS LTD.
2, MANGOE LANE, CALCUTTA-1.

भारतीय हितों की हत्या पर आधारित
कोलम्बो प्रस्ताव

लल्लनप्रसाद व्यास

भारत-चीन सीमा युद्धके बाद ६ कोलम्बो राष्ट्रों (लंका, कम्बोडिया, हिन्देशिया, बर्मा, संयुक्त अरब गणतंत्र और घाना) के प्रस्तावोंको लेकर विश्वमें, विशेषकर भारतमें जो अत्यधिक और अनावश्यक चर्चा हुई, उसे अनेक तटस्थ पर्यवेक्षक और स्वतंत्र विचारक वर्तमान राजनीतिकी सबसे बड़ी विडम्बना मानते हैं। उचित यह था कि कोलम्बो सम्मेलनके राष्ट्रोंके कथित शांति प्रयास आक्रमणकारी चीनके आक्रमणको ही पहले पूर्णतः समाप्त करनेकी दिशामें समर्थ होते और फिर दोनों देशोंके बीच वार्ताका माध्यम बनते। किन्तु हुआ यह कि ये राष्ट्र आक्रमणकारी चीन पर किसी प्रकारका दबाव डाल न सके और उलटे आक्रांत भारतको पहले इन प्रस्तावोंको स्वीकार करनेके लिए आग्रह किया गया। अकेले भारत द्वारा इन प्रस्तावोंको स्वीकार किए जानेकी सार्थकता ही क्या है? चीनने आक्रमण किया, अन्तर्राष्ट्रीय नियमों और मर्यादाओंका उल्लंघन किया। अतएव किसी प्रकारके भी शांति प्रस्तावको मानने के लिए सर्वप्रथम दबाव उसके ऊपर ही पड़ना चाहिए था। किन्तु कोलम्बो राष्ट्रों के सम्मेलनने इस तथ्यकी उपेक्षा कर समस्याके सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलूकी उपेक्षा की गई।

कोलम्बो सम्मेलन

२० नवम्बर १९६२ को लंकाकी प्रधानमंत्री श्रीमती भंडारनायकने उक्त 'तटस्थ' राष्ट्रोंका सम्मेलन कोलम्बोमें बुलाया और परस्पर विचार विमर्श कर ये प्रस्ताव प्रस्तुत किये:—

(१) पश्चिमी क्षेत्र (लद्दाख) में चीनी सैनिक चौकियाँ २० किलोमीटर पीछे हटा ली जायें, भारत अपनी सैनिक स्थिति बरकरार रखे और सीमा समस्या हल होने तक चीनी सेना द्वारा खाली किये गए स्थान पर दोनों ओरकी गैरसैनिक चौकियां रहें।

(२) पूर्वी क्षेत्र (नेफा) में मैकमोहन रेखा ही दोनों देशोंकी सीमा रेखा बनी रहे—यद्यपि लांग्जू और थागला क्षेत्र पर अधिकार सम्बन्धी विवाद परस्पर वार्तासे तय किया जाय।

(३) मध्य क्षेत्र (बाराहोती) सम्बन्धी समस्यायें भी परस्पर वार्तासे

तय हो और तब तक दोनों ओरसे यथा-स्थिति बनाये रखी जाय।

कोलम्बो राष्ट्रों की पात्रता का प्रश्न

प्रथम और मूलभूत प्रश्न तो यह उठता है कि आखिर एशियाके दो बड़े देशोंके संघर्षमें मध्यस्थता की पात्रता इन लघु राष्ट्रोंको किसने दी? इनमें से कुछ तो भारत जैसे बड़े देशके एक राज्य या प्रदेशसे भी बड़े नहीं हैं। दो बड़ोंकी लड़ाईमें तीसरा मध्यस्थ वही बन सकता है जो लगभग उनके बराबर हो। अन्यथा वह निष्पक्ष नहीं रह सकता। किसी न किसीके प्रति उसके मनमें भय अथवा आतंक या संकोच की भावना रहेगी। कोलम्बो सम्मेलनके राष्ट्रोंके साथ भी यही बात है। इनमेंसे अधिकांश चीनके बढ़ते प्रभावसे आतंकित हैं और उसकी समस्त दुष्टताओं को देखकर भी अन-देखी करनेमें अपना कल्याण समझते हैं। अन्यथा चीनके भारतपर स्पष्ट आक्रमणको देख और समझकर भी इन राष्ट्रोंने उसकी निंदा क्यों नहीं की, उसकी बर्बरता और अन्तर्राष्ट्रीय कानूनके उल्लंघनके विरुद्ध विश्व जनमत जाग्रत करनेमें अपना योग क्यों नहीं दिया? दोषी को दोषी कह सकने का साहस न रखने वाला भी क्या कभी निष्पक्ष मध्यस्थ बन सकता है?

तटस्थ या नपुंसक

दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि राष्ट्र तटस्थ किधर से हैं? तटस्थता यह नहीं है कि कोई शक्तिशाली राष्ट्र बर्बरता पूर्वक किसी दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण कर दे तथा अन्य राष्ट्र उसको दूरसे देखते रहें। यह या तो नपुंसकता है और या स्वयं आक्रमणके समान, क्योंकि अन्याय और अनीतिको चुपचाप सहन करने वाला भी समान रूपसे ही दोषी कहा जा सकता है। तटस्थ वही है जो किसी गुट से बंधा नहीं है लेकिन साथ ही अन्याय और अनीति का मार्ग दर्शक या सहायक भी नहीं है। ऐसी स्थितिमें आज छोटे राष्ट्रों का सही माने में तटस्थ रहना सम्भव नहीं। सच पूछा जाय तो भारत जैसा बड़ा देश ही अपनी तटस्थताकी रक्षा न कर सका। सन् १९५० से तिब्बत और चीनके संघर्षमें भारत सरकारने चीन का ही प्रकट या मौन रूप से साथ दिया और तटस्थता की यह मृग-मरीचिका उस समय बिलकुल गायब हो गयी जब पिछले वर्ष स्वयं चीनने ही उस पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमणके समय ब्रिटेन और अमेरिका हमारे सबसे बड़े सहायक बने।

अतएव कोलम्बो सम्मेलन के इन राष्ट्रों की कथित तटस्थता मात्र आत्म-प्रवंचना और भ्रम है तथा आवश्यक पात्रतासे रहित इन राष्ट्रों को मध्यस्थ बनने की मान्यता देना हास्यास्पद है।

अनुचित धारणा

पात्रतासे विहीन होनेके कारण चीनी आक्रमणके प्रश्न पर इन राष्ट्रों की कुछ आधारभूत मान्यताएं और धारणाएँ भी न्यायसंगत नहीं। उदाहरणार्थ सम्मेलनके राष्ट्रों की यह आम धारणा थी कि हम यह विचार न करें कि कौन गलती पर है और कौन सही है। हम तो मध्यस्थ हैं, निर्णायक नहीं। हम तो भारत और चीनको वार्त्ता करनेके लिए तत्पर करना चाहते हैं।"

प्रश्न है कि जब गलत और सही का निर्णय नहीं कर सकते तथा आक्र-

मण, अन्याय और अनीति की निंदा नहीं कर सकते, तो मध्यस्थता अनाधिकार चेष्टाके अलावा और क्या है ? उस स्थितिमें भारत और चीनके बीच वार्ता भी निरर्थक है तथा भारत जैसे महान और स्वाभिमानी राष्ट्र की प्रतिष्ठाके सर्वथा प्रतिकूल है ।

कोलम्बो प्रस्तावों का औचित्य और भारत

कोलम्बो राष्ट्रोंने अपने प्रस्तावोंके रूपमें भारत तथा चीनके बीच वार्ता की कुछ शर्तें अवश्य रखी हैं किन्तु चीनको आक्रमणकारी मानने की एक प्राथमिकता और न्यायसंगत आवश्यकता की पूर्ति नहीं की गयी—फलस्वरूप आक्रामक और आक्रांता को एक ही सतह पर बिठा दिया गया है जो सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण है । भारतके लिए यह स्थिति उसके राष्ट्रीय स्वाभिमानके प्रतिकूल है । इसीलिए भारतके लिए यह आवश्यक न था कि वह कोलम्बो प्रस्तावों को स्वीकार करनेमें पहल करता । चीन आक्रमणकारी था और दोषी था । कोई भी प्रस्ताव या शर्त पहले उसे स्वीकार करनी थी फिर, भारत उस पर विचार करता कि उसका स्वीकार करना उसके राष्ट्रीय हितों और स्वाभिमानके अनुकूल है कि नहीं । इसके लिए चाहे जिस कूटनीतिक लाभका बहाना पेश किया जाय । इतना निःसंदेह सत्य है कि भारत सरकारने कोलम्बो प्रस्तावोंको पहले पहल स्वीकार कर अपनी कमजोरी दिखाई है तथा आक्रमण समाप्त हुए बिना वार्ता न करने की अपनी पूर्व घोषित नीतिका उल्लंघन किया है। सबसे बड़ी कूटनीतिक भूल यह भी है कि अपात्रोंके अहितकर और असम्मानपूर्ण प्रस्ताव मानकर अपनी राष्ट्रीय सीमाओं को सदैवके लिए विवादग्रस्त मान लिया जो भारत की प्रारम्भ से घोषित मूलभूत नीतिके प्रतिकूल है ।

एक बहाना मात्र

यह तर्क दिया जाता है कि हमने कोलम्बो प्रस्ताव मानकर चीनको विश्व जनमतमें अकेला (Isolate) कर दिया क्योंकि उसने इन प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया । वस्तुतः यह भारत सरकारकी कूटनीतिक असफलताओं को छिपाने का एक बहाना मात्र है । उचित और आवश्यक था कि आक्रमणके प्रश्न पर ही चीन को विश्व जनमतमें हीन बनाकर उसे पृथक या अकेला (Isolate) किया जाता । कोलम्बो प्रस्तावोंके प्रश्न पर यह दावा करना वस्तुतः भारतके स्वाभिमान की हत्या को भारत की कूटनीतिक सफलता मानने की नादानीके समान है ।

तुष्टीकरण की मनोवृत्ति का परिचायक

जहां तक कोलम्बो प्रस्तावोंके संदर्भ में भारतीय हितोंका प्रश्न है, यद्यपि प्रधानमंत्री श्री नेहरूने इसे लगभग भारतीय मांगोंके अनुकूल बताया है और कहा है कि लद्दाखी क्षेत्र संबंधी कोलम्बो प्रस्ताव भारतके लिए अधिक हितकर है किन्तु इस कथनसे श्री नेहरूकी समझौतावादी मनोवृत्ति ही अधिक झलकती है । इतना अवश्य है कि लद्दाखके सम्बन्धमें कोलम्बो प्रस्ताव लगभग भारतकी घोषित नीतिके निकट है परन्तु इसके साथ ही कोलम्बो प्रस्तावके अन्तर्गत नेफाके दो महत्वपूर्ण क्षेत्र विवादग्रस्त मान लिये गये हैं जो भारतकी घोषित नीतिके स्पष्ट प्रतिकूल है और यहां तक कि चीनने भी कुछ समय पूर्व तक इन क्षेत्रोंको विवादग्रस्त नहीं माना था ।

एव ये प्रस्ताव किसी भी प्र[illegible]रके हितोंके अनुकूल नहीं।

प्रस्तावों पर निर्भरता घातक

कोलम्बो प्रस्तावोंके सम्बन्धमें पहले तो चीनने कहा था कि वह इन पर सहानुभूति पूर्वक विचार कर रहा है लेकिन आज १०-११ माह हो रहे हैं उसने इन्हें स्वीकार नहीं किया और अब तो उसने करीब करीब स्पष्ट 'नहीं' कह दिया है। इतना ही नहीं, बल्कि चीनने इस बीच सीमा पर पुनः अपनी सैनिक शक्ति बढ़ा ली है और निरन्तर उसे सुदृढ़ बना रहा है। इसके अतिरिक्त १ मार्च, १९६३ को चीन सरकारके एक प्रवक्ताने स्वयं यह दावा किया कि चीन ने ७ नवम्बर, १९५९ की नियंत्रण रेखा के अपनी ओर २० किलोमीटरके अंदर १६ असैनिक चौकियां बना ली हैं।

चीनकी इन सब अनीतियों, अन्यायों और निरंकुशताओंके बावजूद कोलम्बो सम्मेलनके राष्ट्र उसके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कह पाये हैं। बल्कि इनमेंसे कुछ राष्ट्र तो अब यह प्रयास करने लगे हैं कि यदि चीन कोलम्बो प्रस्तावोंको नहीं मानता तो उसके माने बगैर ही दोनों देश (चीन और भारत) सीमा वार्ताके लिए तैयार हो जायें—चीन भी इसी स्थितिका इच्छुक है। कोलम्बो राष्ट्रोंकी यह अक्षमता और कमजोरी पुनः इनकी अपात्रता को सिद्ध करती है और पुकार-पुकार कर कहती है कि इन महत्वहीन राष्ट्रों के प्रस्ताव और प्रयास विश्व राजनीतिका सबसे बड़ा आडम्बर है जिसका उद्देश्य स्वयं राष्ट्रों द्वारा कुछ न कुछ अन्तर्राष्ट्रीय महत्व अर्जित करना अथवा अपनेको 'काजी' सिद्ध करना है।

युद्ध जीवन का अंग है

एक दिन ऐसा आ सकता है या यों कहिये कि निश्चय ही आयेगा, जब मनुष्य जाति, आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक रूपमें इस बातके लिये तैयार होगी कि सर्वत्र शान्ति का राज्य हो। परन्तु तब तक इसी व्यावहारिक तत्वज्ञान और धर्मशास्त्र को इसे स्वीकार करना और उचित ठहराना होगा कि युद्ध जीवन का एक अंग है और लड़ाई करना मनुष्य का स्वभाव और कर्म है।

—श्री अरविन्द

आत्महीनता का द्योतक

स्पष्ट है कि इस राजनैतिक आडम्बर या विडम्बना पर अपने हितोंको आश्रित करना भारतके लिए घातक है। यह हमारे राष्ट्रीय नेतृत्वकी आत्महीनताका भी द्योतक है। कोलम्बो प्रस्तावोंकी मृग-मरीचिकासे भारत जितनी जल्दी मुक्त होता है, उतना ही उसके लिए श्रेयस्कर होगा। इन प्रस्तावोंके लिए अत्यधिक आग्रह और इन पर अनुचित आश्रय राष्ट्र की सैनिक तत्परता और जागरूकताको क्षीण बनाने वाला है। यह एक मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक सत्य है। अतएव अब आवश्यकता इस बात की है कि भारत कोलम्बो प्रस्तावोंकी अपनी स्वीकृति को वापस लेकर, (क्योंकि चीनने अभी तक अपनी स्वीकृति प्रदान नहींकी है), अपनी सैनिक शक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करे। ●

अपने घर बैठे १००) मासिक कमायें
उत्तर प्रदेश में देशी दवाओं का
विश्वासी कारखाना
श्री शुक्ल आयुर्वेद भवन, गोरखपुर की
जिलेकी एजेन्सीके लिये पत्र व्यवहार करें

चेतक छाप साबुन
ही वापरो
महेश सोप वर्क्स
उज्जैन (म०प्र०)

दीपावली के पावन पर्व पर
अपने ग्राहकों, शुभचिन्तकों तथा संरक्षकों
का
हार्दिक अभिनन्दन करते हैं !
नेशनल बर्तन स्टोर
हिन्दी बाजार, गोरखपुर
उच्चकोटि के बर्तनों का एक मात्र प्रतिष्ठान

'दीपावली अभिनन्दन'
कलकत्ता क्लाथ स्टोर्स
कपड़े के थोक व्यापारी
७, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता—७
शो रूम
१४, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता—७
—: हमारी विशेषतायें :—
उच्चकोटि की शर्टिंग, पॉपलिन,
दिल्ली क्लॉथ मिल का सब प्रकार का
कपड़ा, केलिको अरगंडी और
खटाऊ वायल
विशाल स्टॉक—उचित मूल्य
परीक्षा प्रार्थनीय
फोन : फोन :
दूकान ३३—७५७० ३३—३१०९

दी पा व ली की शुभ का म ना यें

GG
BRAND
डबलसीम
कनस्तर
तथा हर प्रकार के
डिब्बे
* सादा
* मार्का
* रंगीन

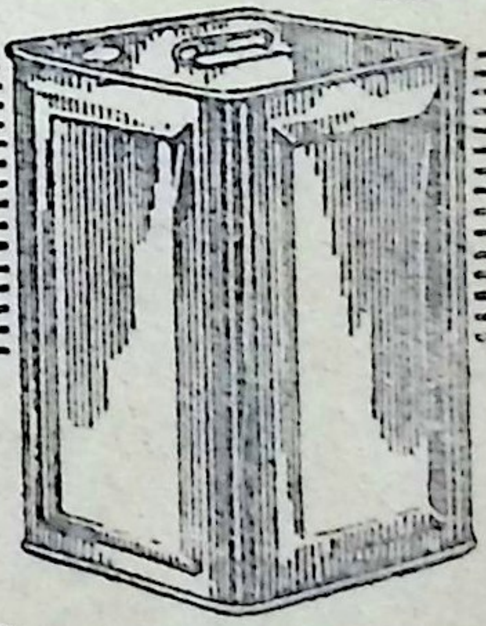

विशेषतायें
लीक प्रूफ
आकर्षक छपाई

निर्माता
जी. जी. इण्डस्ट्रीज़,
आगरा
फोन — ३२७४

बढ़ने दो
लपटों को

हिंसा-अहिंसा के दर्शन को सोने दो
फूलों की गोद में
ऐसे अनेक तर्क-पुंगव मिलेंगे जो
अपने सरकने की राह ढूंढ लेते हैं
सात्विक विनोद में !
किंतु यह सत्य है
होते सुभाष यदि
आँधी प्रचंड एक दौड़ती बिठाकर
समस्त राष्ट्र-शौर्य को
अपने अजेय वेगवत्तम झकोर पर
तैरते तटस्थ वृक्ष हुंकृत हिलोर पर
उड़ते पहाड़ तम-तोम को पछाड़
व्यावहित हिरण्यबाहु, ब्रह्म पुत्र
उठते, उमड़ते पुकारते
पुकारती हर-हर हरशेखरा !
एक-एक कण से अनेक युद्ध-विक्रांत
अर्जुन-प्रताप नर-नाहर अवतार लेते
कलियाँ कराल-विकराल जयघोष से
उद्धत दिशाओं के चंद्र-मुख फोड़तीं
तरुण प्रसून खड्ग वज्र शतधार लेते
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा
फिर से प्रवृत्त करो
सिद्ध करो फिर से कि भारत-वसुंधरा
वीर-सू प्रसिद्ध है, अपरापरण नहीं
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा !

फिर से चलाओ
जलाओ अखंड दीप त्याग, उत्सर्ग का !
मूर्तियां अनंत किंतु आंखों के सामने
आज मूर्ति एक हो
मूर्ति वह स्वदेश की
हमने सदैव इस मूर्ति में निहारा है
अमित-अनन्त सौन्दर्य-ऐश्वर्यमयी
अर्चनीय अमला समर्चनीय कमला को
ताल-ताल हर्षोच्छल उत्पन्न-दल सजला को
परमा पयस्विनी यशस्विनी ज्वलंती को
गरिमा-गिरा को जयंती-वैजयंती को
किंतु आज हिम-शुभ्र अंचल इस मूर्ति का
रोहित है, लोहित है
और सौम्य रूप में रूप हम विलोकते
जन-मन-मानसकी झंझाकुल-वेगिनी हुताशनी हिलोर का
जिस पर मंजीर-चरण पन्नग-नग-वलया-सी
उतर रही कोई अपरिचित भवानी !
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा
करती उद्घोषणा—
सावधान, उतरी है शंकर की शक्ति नई
इस पवित्र भूमि पर !
कह दो वृषांक शूलपाणि से त्रिशल दें
विष्णु, से पुकार कहो, असुर शिरोहर सहस्रार चक्र दें
कह दो विभावसु से शक्ति दें शतघ्नी
मारुत शर-चाप दिव्य यमकाल-दंड दें
रश्मि में दिवाकर महेन्द्र पवि प्रचंड दें
मंगलमय घोर-रव शंख दें वरुण और
धनपति सुवर्ण दें
परशु विश्वकर्मा !
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा
करती उद्घोषणा—
कटने दो लपटों को
बढ़ने दो लपटों को
चढ़ने दो लपटों को
ऊपर हिमालय के ।

—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

DEEPAWALI GREETINGS

From

M/s. KISHORILAL GOVINDRAM

General Merchants, Order Suppliers, Contracts

TEA GARDEN STORES SUPPLIES

AND

Manufacturers, Exporters, Commission Agents

132, COTTON STREET, CALCUTTA-1

Grms--**GUNI KISHOR**

Dial **33-2261 (Guddi)**

22-70.8 (Office)

For Hessian Cloth, Gunny Bags, Jute Twins,
Jute Canvas Cloth Waste,
Jute Webbing, Jute Carpet, Ropes, Tarpulins,
Flex, Canvas etc.,

Please Contact:

GOURI SHANKAR TRADING Co.

132, COTTON STREET

CALCUTTA-1

M.P.A.-60

क्या भारत की सीमाएँ अस्पष्ट हैं?

भारत-चीन सीमा के बारे में दोनों देशों के अधिकारियों में लंबी बातचीत हुई थी और सन् १९६० में इसकी रिपोर्ट पेश हुई। इस रिपोर्ट में भारत के विदेश-मंत्रालय द्वारा प्रकाशित श्वेत-पत्रोंमें सीमाके बारे में बहुत विस्तृत और पुष्ट तथ्य दिए गए हैं, जिनसे हमारे पक्ष का पूरा समर्थन होता है। यहां इसी विशाल सामग्रीमें से कुछ मूलभूत तथ्य प्रस्तुत हैं।

भारत-चीन की २,४०० मील लंबी सीमा, उत्तर पश्चिममें अफगानिस्तान, चीन और भारतके त्रिसंगमसे लेकर पूर्व में बर्मा, चीन और भारतके त्रिसंगम तक धनुषाकार चली गयी है। यह दुनियांकी सबसे बड़ी स्थल-सीमाओंमें है। अमेरिका और कनाडा की ३,१०० मील लंबी सीमा, रूस और चीन की ३,००० मील लंबी सीमा, भारत और पाकिस्तान की २,७०० मील लंबी सीमा और मंगोलिया की २,६०० मील लंबी सीमाके बाद भारत-चीन सीमा का नंबर है। जिस प्रकार रूस-चीन सीमा पर एक स्थान पर मंगोलिया की सीमा भी आकर मिलती है, उसी प्रकार भारत-चीन सीमा परभी एक जगह नेपालकी सीमा आकर मिलती है।

चीनसे भारत की सीमा रेखा सदियों से चली आ रही है और इतिहासमें पूर्णतः प्रतिष्ठित है। यह सीमा उत्तुंग और अचल पर्वतों की श्रेणी है, जो जल-विभाजक श्रेणी भी है, अर्थात् ये पर्वत दोनों देशों के बीच सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित हैं, जिनके एक ओर नदियां भारत की ओर बहती हैं और दूसरी ओर चीन की

डा० के० गोपालाचारी

[ऐतिहासिक विभाग, विदेश मंत्रालय]

ओर। प्राकृतिक दीवार की भांति यह सीमा बिलकुल स्थिर है और अनेकों संधियां इसे स्वीकार करती आई हैं। सीमाके हमारी ओरके क्षेत्रोंमें सदासे भारत का शासन चलता रहा है। इस सीमा को सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं और इसे दोनों पक्षकी सरकारें, सदियों से मानती भी आई हैं। अंतर्राष्ट्रीय कानून और व्यवहारमें यह माना गया

है कि अगर दो देशोंके बीच, परंपरा और व्यवहारसे कोई प्राकृतिक सीमा अर्थात् पहाड़, नदी आदि रही है, तो उसे निर्धारित करने की भी जरूरत नहीं, अंकित करना या खंभे आदि गाड़ना तो दूर रहा।

ऊँचे पहाड़ों की रेखा

चीन-भारतकी सीमा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह १४ हजारसे २५ हजार फुट तक ऊँचे पर्वतोंसे विभक्त है, जो प्रकृतिकी बनाई दीवार है; चीनकी मनुष्य-कृत दीवार नहीं; जिसे एक लोमड़ी भी फांद सकती है। यह पर्वत-श्रेणी जल-विभाजक रेखा है। वाटर-शेड या जल-विभाजक उन पर्वत श्रेणियों को कहते हैं, जो नदियों की दो प्रणालियों को विभक्त करती हैं। कहीं-कहीं यदि कोई नदी इनको काट भी दे, तो इससे जल-विभाजक होने में कोई अंतर नहीं पड़ता। उत्तरमें इस सीमा-रेखा के पर्वत भारतमें सिंधु नदी प्रणाली को, चीनमें यारकंद और तुरगंकश नदियोंके कोठेको अलग करती हैं। इसके आगे दक्षिणमें तिब्बतमें सतलज और भारतमें गंगा का वाटर-शेड या जल विभाजक है। नेपालके पूर्वमें यह हिमालय की पर्वत श्रेणी है जो ब्रह्मपुत्र की उत्तरी सहायक नदियों और सांगपो की दक्षिणी सहायक नदियोंके बीचमें है। यह विस्तृत वाटर-शेड या जल-विभाजक पर्वत श्रेणी लगातार चली गई हैं, यह कहीं टूटी नहीं हैं। ऋग्वेदमें भी कहा है कि हिमालय समस्त पर्वतों का प्रतीक है।

हिमालय की यह जल-विभाजक पर्वत-श्रेणी तिब्बतके पठार का परकोटा है, जिसे 'संसार की छत' का नाम दिया गया है। पूर्वी क्षेत्रमें यह हिमालय की मुख्य पर्वत श्रेणी है और पश्चिमी तथा मध्य-भागमें यह हिमालय की निचली पर्वत-श्रेणी है, जो मुख्य हिमालय पर्वत-श्रेणी के उत्तर और पूर्वमें है। इन पर्वत श्रेणियों को, जो भारत की सीमा हैं, स्थानीय भाषा में मस्तांग, गि, कुएन लुन और जस्कर तथा मुख्य हिमालय की श्रेणी भी कहते हैं।

चीनी दावा निराधार

चीन जिसे अपनी सीमा-रेखा बताता है, उसका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है, और वह मनमाने तौर पर इस चोटी से उस चोटी पर उछलती कूदती नदियों तथा जल विभाजकों को काटती एकदम कृत्रिम रेखा है। इस अचल पर्वत सीमासे ओरिका-कनाडा की सीमा को मिलाइए, जो अधिकांश भागमें ४९वें अक्षांशके अनुसार है, और शेषमें झीलों को काटती हुई और नदियोंके अनुसार गई है, जो अक्सर अपनी धारा बदल देती हैं। रूस-चीन सीमा और चीमिबन-सीमा भी कई स्थानों पर नदियों या गहरे नालोंसे होकर गुजरती है। परंतु वाटर-शेड या जल-विभाजक पर्वत कभी अपना स्थान नहीं बदलता और जो प्राकृतिक दीवार या हदबंदी मानी जाती है।

भारत के सीमा-पर्वत

भारतकी सीमा, कश्मीर की, (जिसमें लद्दाख भी शामिल है) उत्तर और पूर्व सीमासे लेकर पंजाब, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश की पूर्वी सीमासे होती हुई सिक्किम, भूटान और नेफा की उत्तरी सीमासे छूती हुई जाती है। इस चौड़ी सीमा पट्टीमें पुराने समयमें, लद्दाख, स्पिति, बशायर, गढ़वाल, ब्रह्मपुत्र और कामरूप राज्य स्थित थे और भारतके

इन प्राचीन राज्यों की उत्तरी सीमा ही भारत की वर्तमान सीमा-रेखा है।

लद्दाखके राजवंश का, १७ वीं सदी में लिखित इतिहास बताता है कि १० वीं सदीमें इमिस दर्रा लद्दाख और तिब्बत की सीमा पर था और दमचौक गांव जिस पर चीनी आक्रमणकारियोंने २८ अक्टूबर १९६२ को कब्जा किया, लद्दाखकी सीमा में था। इटालियन यात्री इपोलितो लेहसे ल्हासा गया था। देसी-देरी, सन् १७१५ में लेहसे ल्हासा गया था। उसके यात्रा वृत्तांतमें स्पष्ट लिखा है कि लद्दाख और तिब्बतकी सीमा दमचौक और तारागोंग गांवोंके बीच थी। यही हमारी वर्तमान सीमा रेखा बतलायी गयी है। इस प्रदेश से सन् १८७३ के एक भारतीय यात्री नयनसिंहका कहना है कि भारतकी उत्तरी सीमा नियागूज सोते तक है। इसके और उत्तरमें सीमा लानक दर्रे को छूती है। जिसे कैरे (१८८५) और बोअर (१८९१) जैसे यात्रियोंने भी पुष्ट किया है।

चीन को भी बताई गई

ब्रिटिश सरकारने १८९९में चीनी सरकार को कश्मीर की उत्तरी सीमा का जो विवरण दिया था उसके अनुसार यह सीमा ८० डिग्री पूर्वमें जाती है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अक्साई चिन लद्दाखमें है। कैन्टनमें चीनके शाही अधिकारी (इंपीरियल कमिश्नर) ने सन् १८४७ में ब्रिटिश अधिकारियों को एक पत्र लिखा, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लद्दाख और तिब्बतके बीच की सीमा, पुराने जमानेसे मान्य, सर्वविदित और दोनों सरकारों द्वारा स्वीकृत थी। इस पत्रमें चीनी अधिकारीने लिखा "इन क्षेत्रों की सीमा भली भांति और स्पष्ट तौर पर निर्धारित है। अतः इस प्राचीन व्यवस्था को मानना उचित है और इस सीमा को निर्धारित करनेकी कोई और कार्रवाई करना व्यर्थ होगा।

आदि काल से भारत की यह सीमा

"ईसा की ६ठवीं सदीसे अब तकके चीनी नक्शोंसे पता चलता है कि वर्तमान सदी के शुरू तक सिंकियांग का क्षेत्र, कभी भी दक्षिणमें कुएन लुन तक भी नहीं गया, जो अब भी कश्मीरकी उत्तरी सीमा को निर्धारित करता है। डा० जोसप्प चवन्ने ने 'सेन्ट्रल एशियन' नामक जो नक्शा लीपजिगमें सन् १८८०में प्रकाशित किया, उसमें जो सीमा रेखा दिखाई गयी है, वह परम्परागत सीमा-रेखा है। इस बातका भी काफी प्रमाण है कि अति प्राचीन समयसे इस क्षेत्रमें भारतीयोंको जानवर चराने, नमक बनाने, और शिकार करने का अधिकार रहा है।

आजकल पंजाबके कांगड़ा जिलेमें कुल्लु तहसीलमें जो स्पीति घाटी है, वहां भी पुराने समयमें हिंदू राजाओं का राज्य था और बादमें वह लद्दाख में शामिल हुआ। मूरक्राफ्ट (१८१९), गेरार्ड (१८२१) और थामस हट्टन (१८३८) यात्रियोंके वर्णनसे यह सबूत मिलता है कि स्पिति पार जल-विभाजक (वाटरशेड) की भारत की वर्तमान सीमा-रेखा परंपरासे मानी जाती रही है।

बुशहर और तिब्बतके बीच की परंपरागत सीमा पर ही शिपकी दर्रा है, इसका प्रमाण इस प्राचीन कहावत से मिलता है कि "पिमला (शिपकी दर्रा) के ऊपर का प्रदेश तिब्बतके राजा का और नीचेका प्रदेश बुशहर के राजा का,

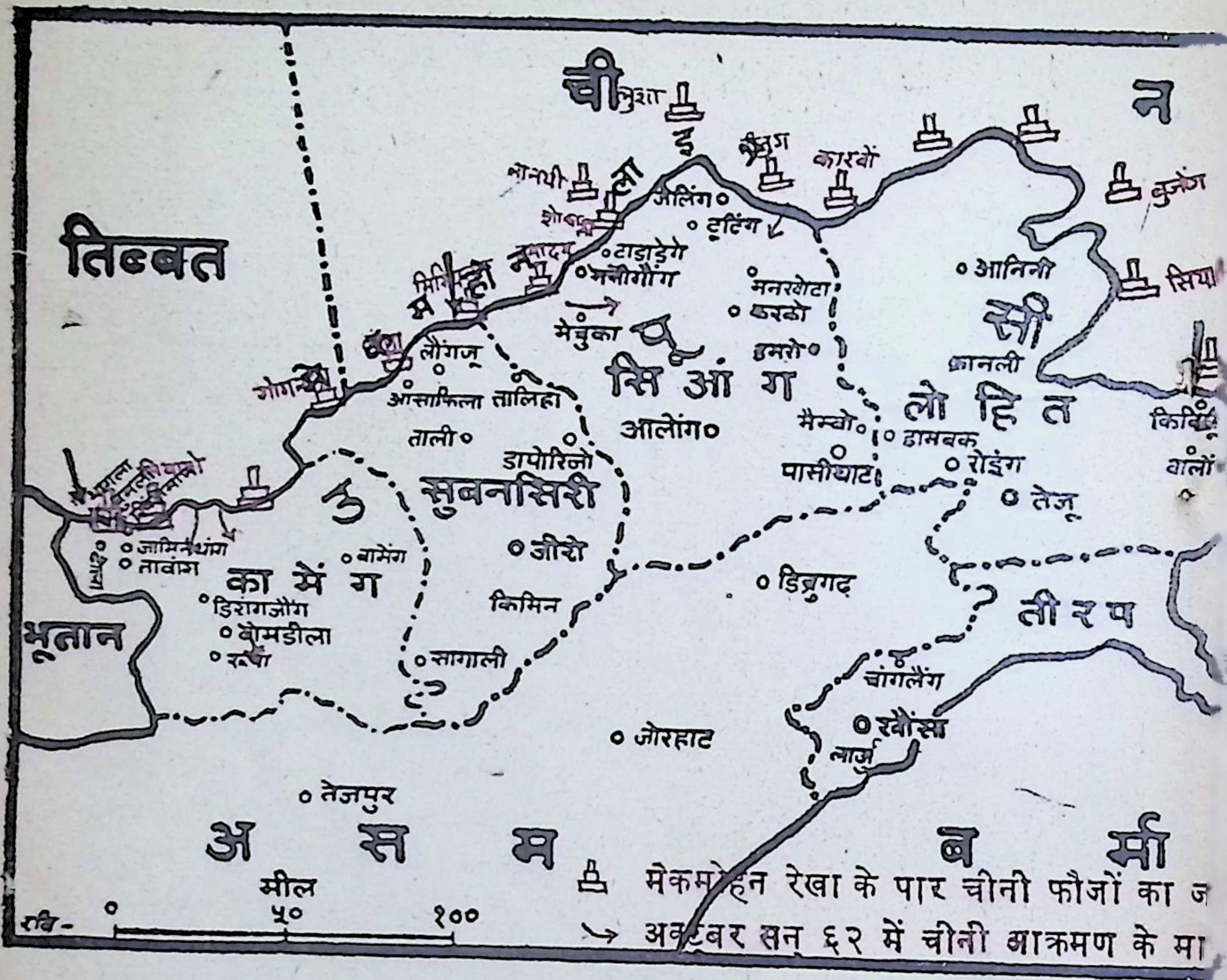

मध्य क्षेत्र

भारत और तिब्बतके नीचे गढ़वाल क्षेत्रमें सतलज-गंगा की जल-विभाजक पर्वत-श्रेणी परंपरासे सीमा मानी गयी है। इसका प्रमाण साहित्यमें भी मिलता है। स्कन्द पुराणमें कहा गया है कि "गंगा की सात सहायक नदियां केदार क्षेत्र में हैं।" चीनी यात्री हुए-न-सांग (जो सन् ६४० में भारत आया) की यात्रा-वर्णन और गढ़वाल तथा कुमायूंके कत्थूरी राजाओंके ताम्र-पत्र भी यही बताते हैं कि गढ़वाल का हिन्दू राज्य सतलज-गंगा के जल-विभाज पर्वतों (वाटर शेड) तक फैला हुआ था।

इतिहासकार फरिश्ताका कहना हैकि यमुना और गंगा का उद्गम गढ़वाल में है। १८ वीं सदीके शुरू—शुरू में चीनी सम्राट कांग-सी ने पश्चिमी तिब्बत का सर्वे करनेके लिए दो लामाओं को भेजा था जिनका कहना है कि "उन पर्वत श्रेणियों के उस ओर गंगा निकलती है।" सन् १८१२में गंगाकी घाटी का सर्वे करने वाले जैम्स वेली फ्रेजर का कहना है कि "उत्तर भारत की कई बड़ी नदियां और वे पांचों नदियां भी, जिनसे मिलकर गंगा बनती है, गढ़वालके पहाड़ोंसे ही निकलती हैं।" सन् १८३६में जूलस क्लाप्रोथ द्वारा पैरिसमें प्रकाशित, "मध्य एशिया का नक्शा" भी इसी वाटर शेड को सीमा मानता है।

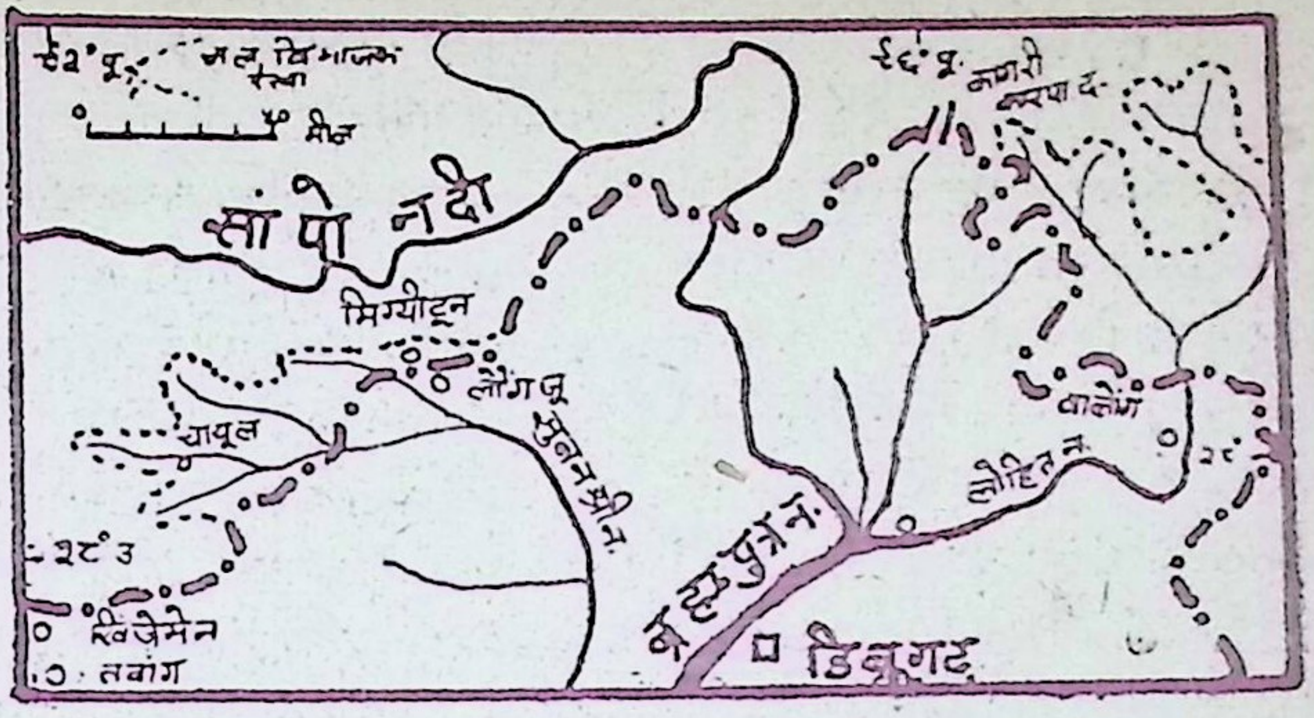

मानचित्र से स्पष्ट प्रतीत होगा कि वास्तविक जल विभाजक रेखा वर्तमान मैकमोहन रेखा के भी उत्तर में है।

पूर्वा क्षेत्र

कल्कि - पुराण, महाभारत और विष्णु-पुराणमें भी यही वर्णन है कि आज कल जो उत्तर पूर्व सीमांत (नेफा) के आदिवासी क्षेत्र हैं, वे पुराने हिन्दू राजाओं के आधीन थे। चीनी यात्री हुएन सांग और ८ वीं सदीके योगिनी-पुराण का कहना है कि कामरूप का हिंदू राज्य हिमालय तक फैला हुआ था, जो आजभी भारत-तिब्बत की सीमा है। १७ वीं सदी में लिखित "आसाम राज्यके राजनीतिक भूगोल" में लिखा है कि असामके आदिवासी अहोम राजाओं को कर देते थे। अंग्रेजों ने १८२६ में अहोमोंसे आसाम जीता और बादमें आदिवासी क्षेत्रों को भी अपने अधीन किया जो अहोम राजाओंकी दुर्बलतासे उनके हाथसे निकल गए थे। टी०टी० कूपर (१८७३) और माइकेल (१८८३) नामक यात्रियोंके वर्णनों और १९ वीं सदी की चीनी पुस्तकों तथा नक्शोंमें भी जिसमें केंटनकी चिआओ चुंग परिषद द्वारा १८९३में प्रकाशित 'तासिंग' नक्शोंमें भी यही कहा गया है कि इस आदिवासी क्षेत्र और तिब्बतके बीच, हिमालय पर्वत ही सीमा थी।

अन्य प्रमाण

प्राचीन भारतीय राजाओं और अंग्रेजों का भी इस परम्परागत पर्वत-सीमा तक अधिकार रहा है जब लद्दाख, कश्मीर की वजारत के सहारे था तबसे इसमें ही अक्साई चिन और चांग चेनमो घाटी पड़ती थी। कश्मीरके मालके कागजों और १८९८ से १८९० तक की वहांके अधिकारियोंके दौरे और जनगणना की रिपोर्टों आदिमें भी तार्क्स, दमचोक और कुर्णाक को लद्दाख का भाग बताया गया है। कश्मीर सरकार चांग चेनमो घाटी और अक्साई चिनसे होकर जाने वाले काफले की देखभाल करती थी। सन् १८७० की संधिके अनुसार अंग्रेजों को पेगोंग झीलके अक्साई चिन होते हुए एक नए रास्तेसे शहीदुला जाने की इजाजत मिली थी। चांग चेनमो घाटी और पेगोंग झील क्षेत्र में शिकार खेलनेके लिए लाइसेंस कश्मीर सरकार ही देती थी।

सर्वे के प्रमाण

लद्दाखके सूबेदारने १८६९ में चांग चेनमो, लिंगजीतंग और अक्साई-चिन क्षेत्रों का दौरा किया तथा लेहके ब्रिटिश कमिश्नर केली (१८७१) और हलियास (१८७४-८४) ने भी इन क्षेत्रोंके दौरे किए। सन् १८६२ में जान्सन ने सीमांत क्षेत्रों का विस्तृत सर्वे शुरू किया। बादमें भी यहां कई सर्वे किए गए। सन् १८७५-८२ में डा० लिडेक्करने भूगर्भ सर्वे किया और उन्होंने श्योक नदीके ऊपरी भाग, स्पंगुर, पश्चिमी चांग चेनमो और लिंगजितंग की पड़ताल की। कश्मीर सरकार की १९४२ की एक सरकारी सूचना से स्पष्ट पता चलता है दमचोक, स्पुंगुर, पेगोंग और चांग चेनमो तक उसका अधिकार था।

सन् १८५१से लगातार ब्रिटिश भारतके बन्दोबस्तमें स्पिति का सारा भाग वाटरशेड तक, शामिल रहा और १९५०, १८७९ आदिमें इस क्षेत्रमें भूमि का सर्वे भी किया गया। दक्षिणमें शिपकी दर्रे तकका क्षेत्र नभगिया-वांग (भारत) में शामिल था और इसका भी कई बार सर्वे हुआ।

उत्तर पूर्व सीमांतमें आदिवासी क्षेत्र पर अंग्रेज अधिकारियोंका ढीला प्रशासन था। वे समय-समय पर इस क्षेत्रमें जाते थे, उपद्रवी आदिवासियोंको दंड देते उनके झगड़े निपटाते तथा शांति बनाये रखते थे। सन १९१२में इसे सदिया और वालीपाड़ा सीमा इलाकों में शामिल किया गया। सरकारी नक्शों में यह भारतका हिस्सा दिखाया गया है। १८८३, १८८५, १९०३ और १९०९के सरकारी नक्शोंमें इस आदिवासी क्षेत्रको साफ अलग रंगमें दिखाया गया है।

चीनी दावों का खोखलापन

भारत-चीन सीमाको कई संधियोंने भी मान्यता दी है। कश्मीरमें तिब्बत और चीनमें सन् १८४२में जो संधि हुई थी उसमें कहा गया है कि प्राचीन समय से लद्दाख और उसके हपेगिपेके क्षेत्रकी जो सीमा चली आती है, उसमें दोनों पक्ष कोई हेरफेर न करेंगे। सिक्किम-तिब्बत सीमा १८९० के एंग्लो-चीनी कन्वेशनमें स्पष्ट की गयी। मार्च १९१४में शिमलामें ब्रिटिश और तिब्बती प्रतिनिधियोंने अपने समझौतेमें, भारतकी उत्तर-पूर्व सीमाका वर्णन किया, जिसे बाद में तिब्बत सरकारने पुष्ट किया। चीनी प्रतिनिधिको नक्शेकी एक प्रति दी गई, पर उसने चीन-तिब्बत सीमाके कुछ भाग पर आपत्ति की। तिब्वत-भारत सीमा पर कोई आपत्ति नहीं की। भारत और चीन में तिब्बतके बारेमें १९५४ के व्यापार समझौतेमें, सतलज-गंगाके जल विभाजक पर्वतोंके ६ दर्रे, सीमाके दर्रेके रूपमें उल्लिखित हैं।

सीमा रेखाके बारेमें भारतका जो दावा है इसके पक्षमें बहुत अधिक लिखित प्रमाण हैं, और तिव्वतने एक-आध जगह बहुत मामूली एतराजके सिवा सीमा पर कोई आपत्ति नहीं की। यह इसका प्रमाण है कि भारतके जिस विशाल क्षेत्र पर चीनने दावा किया है, वह बिल्कुल निराधार और मिथ्या है।*

पाक-चीन दुरभिसन्धि

—राम नरेश सिंह

[मन्त्री उ०प्र० मजदूर संघ]

आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्रके अनुसार किसी पड़ोसी मित्र देश से भी शत्रुके समान सतर्कता बरतनी चाहिए फिर जिन दो देशों को अलग करने वाली ऐसी कोई प्राकृतिक सीमा न हो तथा जहां घुसपैठ करनेमें भी किंचित अड़चन तक न उत्पन्न होती हो, वहां शत्रुता की हजार बातें खड़ी हो जाना तो अत्यन्त सरल ही है। पाकिस्तान, जिसकी उत्पत्ति घृणा व वैमनस्यताके अंकुरसे हुई है और जिसका दुस्साहस 'लड़के लेंगे हिन्दुस्तान' के नारेमें व्यक्त हो चुका है, वह भारत का जन्मजात शत्रु तो रहेगा ही।

उसे काश्मीर चाहिये, त्रिपुरा व आसाम चाहिये, पूर्वी पश्चिमी पाकिस्तान को मिलाने वाला गलियारा चाहिये, पैसा पानी व अन्न चाहिये, इतना ही नहीं उसे तो समूचा हिन्दुस्थान ही चाहिये।

उसने भारतके शासकों की कमजोरी देखी है, लड़ाईके नाम मात्रसे घबड़ाने वाले भारतके कर्णधारों को परखा है, कुर्सी हेतु विशिष्ट वर्ग का वोट प्राप्त करनेके लिये उसकी सदैव खुशामद होती रहेगी, इस बात को पहचाना है। इन प्रमुख कारणोंसे उसका पूर्ण विश्वास है कि शत्रु बनकर ही अपने मन्सूबों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

विरोध में अन्धा शत्रु

इन मन्सूबों की प्राप्तिके लिए पाकिस्तान नीचता की किसी भी सीमा पर उतर सकता है। भारत विरोधमें अन्धा होकर यह विवेक भी भूल गया कि जिन पश्चिमी राष्ट्रोंके बल-पर आज वह जीवित है यदि उन्होंने अपना हाथ खींच लिया तो पाकिस्तान बेमौत मर जायगा। अमेरिका और ब्रिटेनने अपने अनेकों कारखाने पाकिस्तानमें स्थापित कर और सब प्रकार की सामरिक सहायता देकर ही आज पाकिस्तान को जीवित रखा है। पाकिस्तान जो कम्युनिज्मके विस्तारवाद को समाप्त करनेके उद्देश्यसे ही सीटो और नाटो जैसी सैनिक सन्धियोंमें शामिल हुआ वही आज केवल भारत को समाप्त करनेके उद्देश्यसे ही चीन जैसे कम्युनिस्ट देश का दामन पकड़े खड़ा है। पश्चिमी देशों द्वारा भारत को दी जाने वाली सामरिक सहायता को बन्द करानेके सभी प्रयास असफल होनेके बाद यह एक धमकी है।

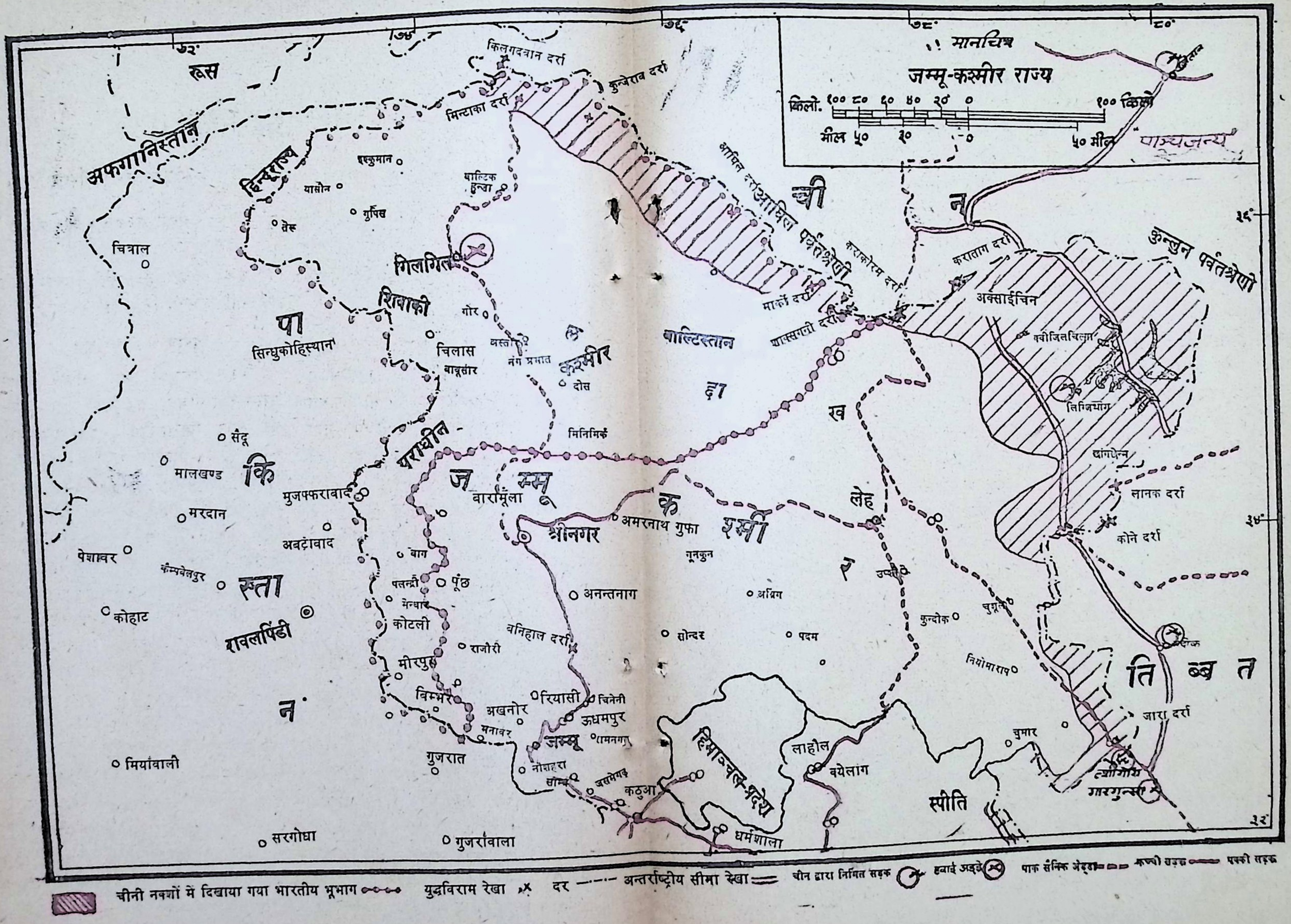

पाक-चीन के नापाक षड्यन्त्रों का शिकार हमारा नन्दन वन कश्मीर

नेफामें हुई भारत की पराजयने जहां एक ओर चीनके हौसले बढ़ाये हैं, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तानके तानाशाहोंमें नई आशा जगाई है। अभी तक पूर्वी पाकिस्तान अरक्षित सा पड़ा है। पाकिस्तानने उसकी सीमा बढ़ाकर सम्पूर्ण असम, त्रिपुरा व मणिपुर को ग्रसनेके लिए अनेक प्रकारसे षड्यन्त्र रच रहा है। पर कुछ लाख पाकिस्तानियों को अवैध रूपसे प्रविष्ट करानेके अतिरिक्त उसे विशेष सफलता न मिल सकी थी। गत वर्ष जब नेफामें चीन की सेनाएं लगातार आगे बढ़ती चली गई तब पाकिस्तान को भी लगा कि ऐसे किसी आक्रमणके समय असम को कब्जेमें करने का अवसर प्राप्त हो सकता है साथ ही चीनसे समझौता कर काश्मीर प्राप्त करनेमें भी मदद मिल सकती है। उधर चीन को भी भारतके विरुद्ध अपना अभियान तीव्र करनेके लिए किसी मित्र की आवश्यकता थी। चोर-चोर मौसेरे भाई की कहावतके अनुसार दोनों ने सन्धि करने का प्रस्ताव किया और वह सन्धि हो भी गई।

विवशता से लाभ उठाने की चेष्टा

स्वाधीनता प्राप्तिके बाद भारतके शासकोंने औद्योगिक विकास की ओर तो ध्यान दिया पर देश की सुरक्षा की उन्होंने उपेक्षा कर दी। राजनीतिके सारे सिद्धान्त भुलाकर उन्होंने शत्रु को तुष्टी-करण एवं मैत्रीके नारोंसे शान्त करने की चेष्टा की। भारतके दुर्भाग्यसे सरदार पटेल जैसा कोई नेता भी सत्तारूढ़ दलमें न हुआ जो पाकिस्तान जैसे शत्रु को उसी की भाषामें उत्तर दे पाता। एक ओर हमने चीन को खुश करनेके लिए तिब्बत की बलि चढ़ाई और दूसरी ओर पाकिस्तान को खुश करनेके लिए, रुपये दिये, जमीन दी, नहरी पानी दिया। दोनों राक्षस हमारा ही सम्बल पाकर आज उन्मत्त हो उठे हैं और राहु-केतु की तरह भारत को ग्रसने का षड़यन्त्र कर रहे हैं। विरोधी दलों द्वारा बार-बार चेतावनी देने पर भी भारतके शासक इन दोनों दुश्मनोंके षड़यन्त्रों को समझनेसे इन्कार करते रहे आज उसी भूल का भारत को प्रायश्चित करना पड़ रहा है।

पाक और चीनकी साज़िशको भारतके शासक उस समय समझनेके लिए बाध्य हुए जब ३ मई सन् ६२ को चीन सरकारने यह घोषित किया कि चीन और पाकिस्तानकी सरकारोंने अपने बीचकी सीमा को निर्धारित करनेके लिए समझौता किया है। तब लोगोंको इस नापाक दुरभिसन्धि के बारेमें जाननेकी उत्सुकता उत्पन्न हुई। पाकिस्तान और चीन दोनों राज्योंके बीच कोई सीमा न रहने पर भी उसका यह समझौता स्पष्ट ही था कि जम्मू-काश्मीर को भारतका अंग न मानकर पाकिस्तान का अंग मानना है। चीन सरकारने ३१ मई सन् ६२ को भारत सरकारके पत्रके उत्तरमें लिखकर इस बातकी पुष्टि भी की कि काश्मीर पर भारत की प्रभुसत्ताको चीनने पूरी तरह कब माना ? इतना ही नहीं उसने आगे लिखा कि चीनमें आये हुए भारतके राजनयिक अधिकारीने स्वयं अपने मनसे यह घोषणा कर दी कि चीनने जम्मू - काश्मीर पर भारतका अधिकार स्वीकार किया है। पत्रमें उसने यह भी लिखा कि चीन और पाकिस्तान दोनों सार्वभौम देश हैं और चीनके सिंकियांग प्रदेश तथा पाकिस्तान अधिकृत प्रदेशकी सैकड़ों किलोमीटर तककी सीमा मिली है,

उसके सम्बन्धमें बातचीत करनेसे कौन रोक सकता है ?

झूठ तेरा ही नाम चाऊ एन लाई है

१६ मार्च, ५६ को पेकिंगमें भारतके राजदूतसे स्वयं चाऊ एनलाई ने कहा था कि 'काश्मीरके लोग अपनी इच्छा जाहिर कर चुके हैं।' इतना ही नहीं भारतके विदेश मंत्रालयके महासचिवसे पुनः अपनी सफाई पेश करते हुए १६ जुलाई ६१ को चाऊ एन लाईने कहा कि 'क्या आप ऐसा कोई कागज दिखा सकते हैं जिसमें हमने कभी भी कहा हो कि काश्मीर भारतका अंग नहीं है।' पर कुटिल मस्तिष्कको विगत बातोंकी परवाह ही क्या? ३१ मई, ६२ के पत्र में चीनने इसी बातको ठीक उलटकर प्रस्तुत किया कि 'क्या आप ऐसा कोई कागज दिखा सकते हैं, जिसमें हमने कभी माना हो कि काश्मीर भारत का अंग है?'

प्रत्याक्रमण करना आवश्यक

चीनने काश्मीरके मामलेमें हस्तक्षेप न करनेकी नीतिको छोड़कर अपने खूनी साम्राज्यवादी मन्सूबोंको और अच्छी तरह प्रकट किया है। पाकिस्तान बहुत दिनों तक इस सन्धि पर मौन धारण किये रहा और अपने घृणित सोदेबाजीके लिये परदा डालता रहा। पर अधिक दिनों तक वह बात छिप न सकी और २६ दिसम्बर, ६२ को रावलपिण्डीके एक समाचार द्वारा इस संधिके बारेमें पुष्टि की गई कि "रावलपिंडी एवं पेकिंगमें एक साथ चीनके सिंकियांग प्रदेश और पाकिस्तान अधिकृत काश्मीरकी सीमा निर्धारित करनेके बारेमें संधि हुई है।" एक ओर काश्मीरके प्रश्न पर भारत और पाकिस्तानके मध्य बातचीत चल रही है और दूसरी ओर पाक और चीन आपसमें मिल 'बहेलिया' बन बांट रहे हैं। पाक और चीनकी इस दुरभिसन्धिमें भारतके इतिहासमें उज्ज्वल पृष्ठ भी जुट सकते हैं, बशर्ते भारतकी सरकार स्वप्निल दुनियामें उड़ना छोड़, धरतीमें अपने ठोस कदम रखकर चलना प्रारम्भ कर दे।*

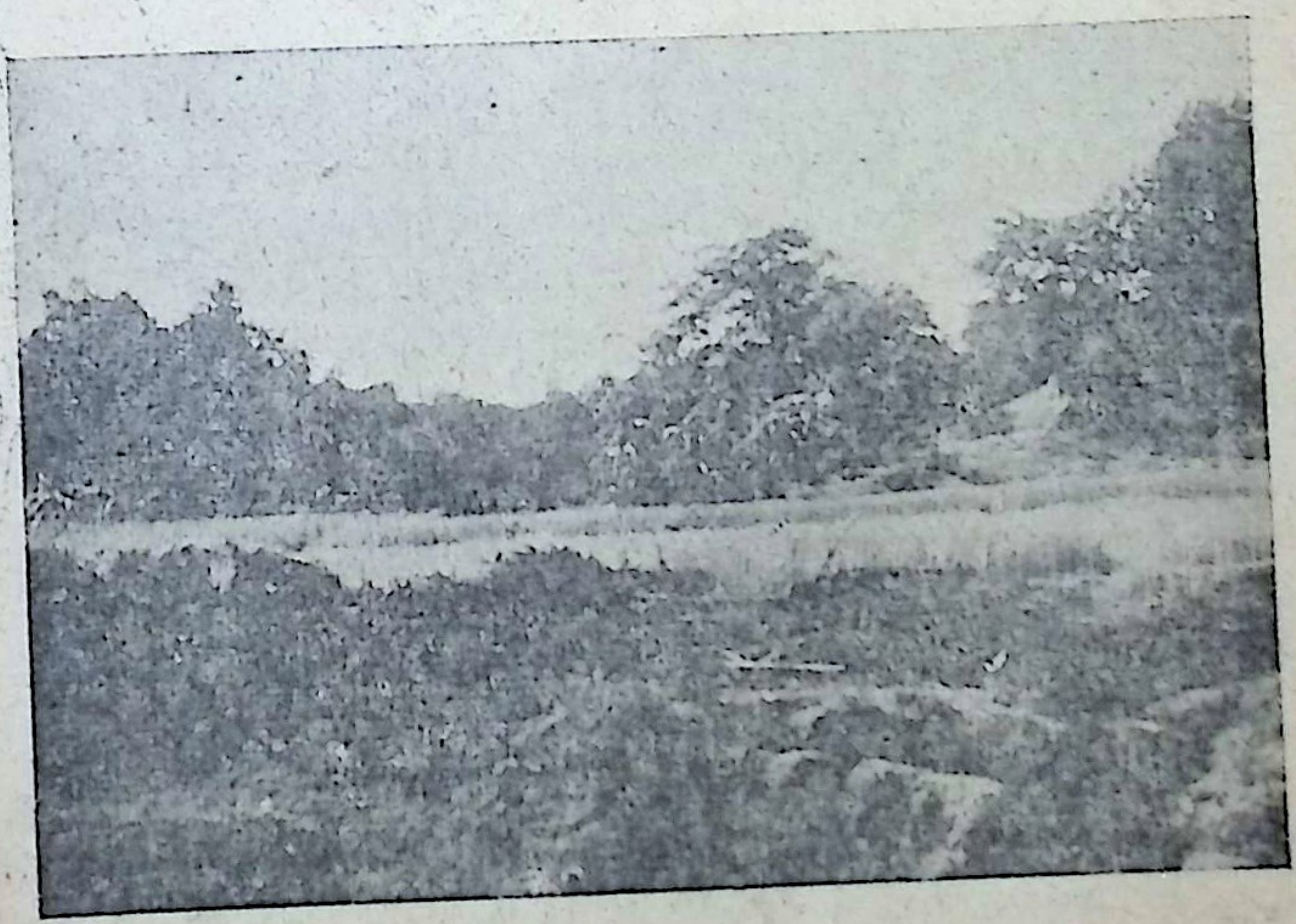

असम की सीमा पर स्थित लाटीटीले के इस क्षेत्र पर पाकिस्तान ने अभी हाल में ही बलात् कब्जा किया है।

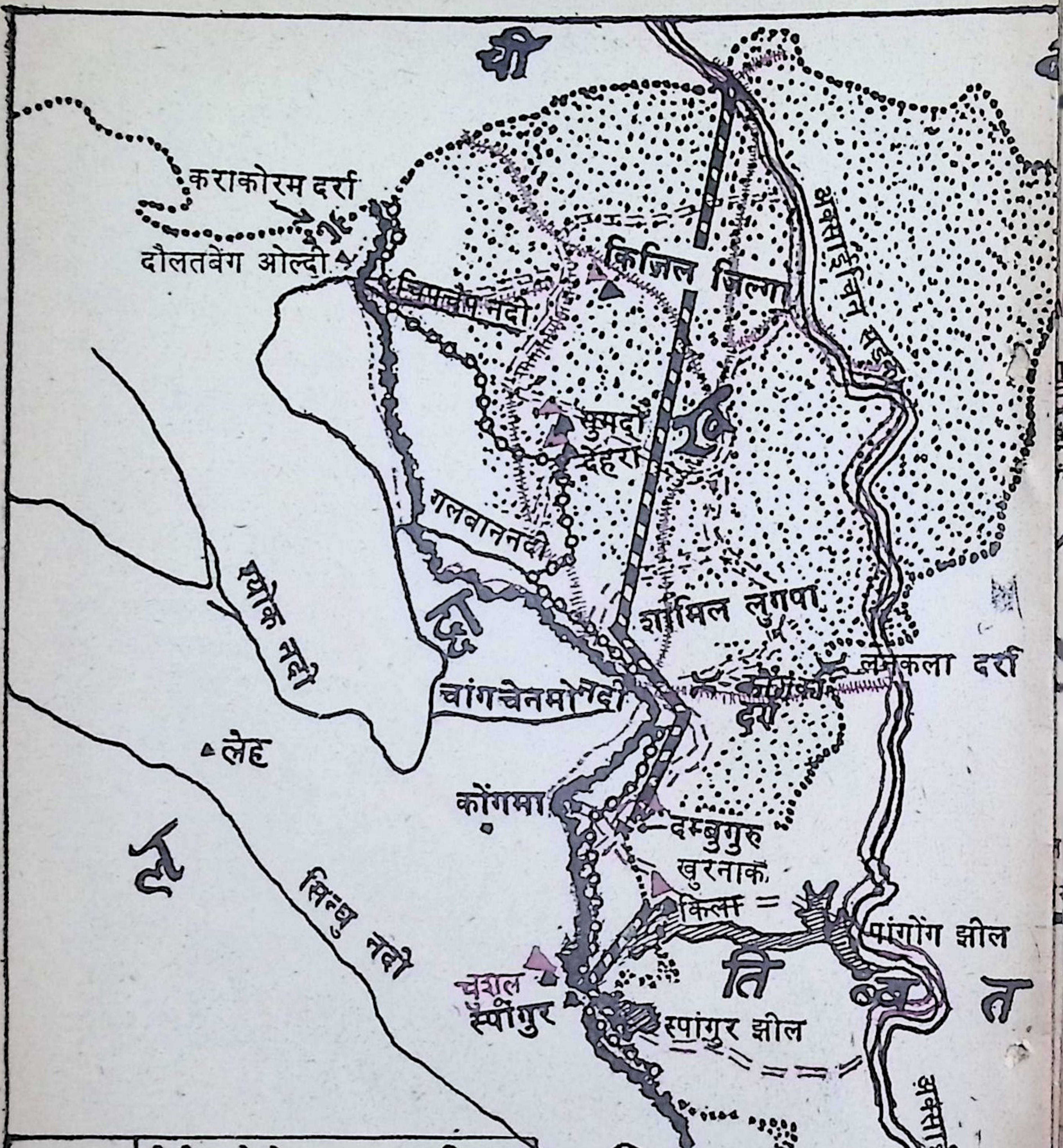

काराकोरम दर्रा
दौलतबेग ओल्दी
किजिल जिला
अक्साईचिन सड़क
चिपचेप नदी
सुमदो
देहरा
गलवान नदी
श्योक नदी
शामिल लुगपा
लनकला दर्रा
चांगचेनमो नदी
लेह
कोंगमा
दम्बुगुरु
खुरनाक
किला
पांगोंग झील
चुशूल
स्पांगुर
स्पांगुर झील
सिन्धु नदी
अक्साईचिन सड़क
कांगला दर्रा
जारा ल दर्रा
दमचोक
चीनी दावे के अनुसार ७ सितम्बर सन् '५९ की नियन्त्रक रेखा
चीनियों द्वारा बनाई गई सड़कें
पुरानी कच्ची सड़कें
७ सितम्बर सन् ६२ की स्थिति रेखा।
७ नवम्बर '५९' में जहां तक चीनी चौकियां थीं।

चीनी आक्रमण कारण और उद्देश्य ?

एन० राघवन पिल्लई
भूतपूर्व महासचिव, विदेश मंत्रालय

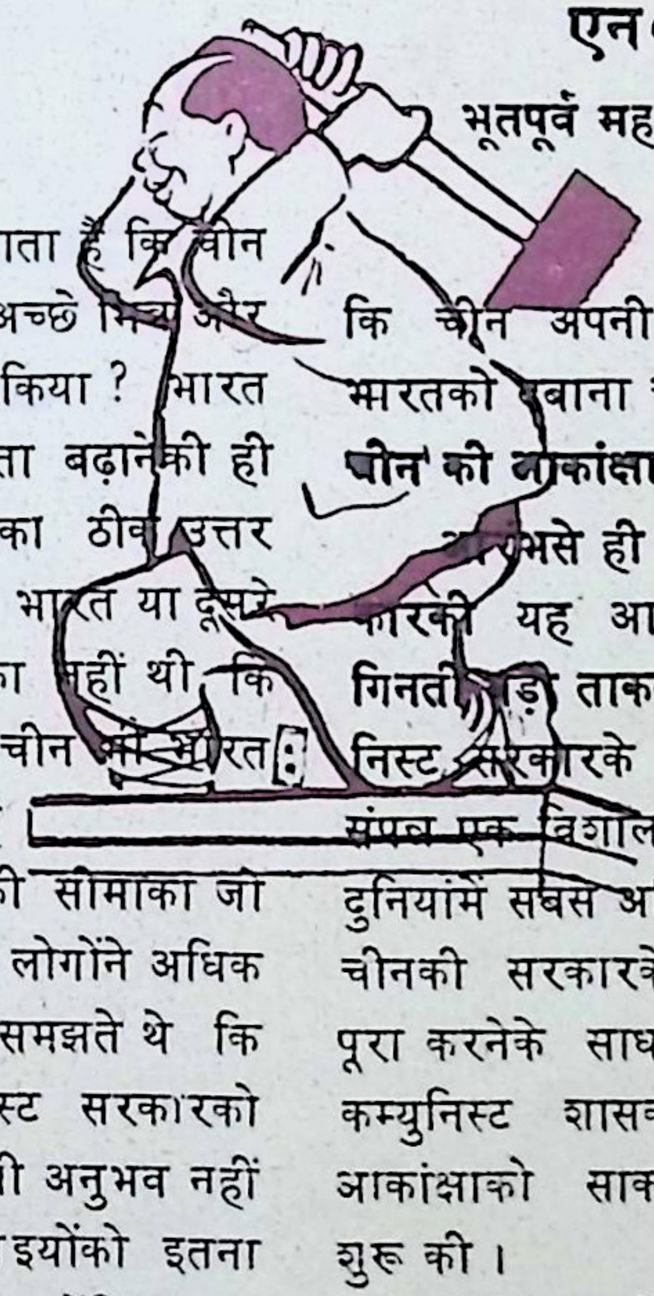

अक्सर यह पूछा जाता है कि चीन ने भारत जैसे अच्छे मित्र और पड़ोसी पर आक्रमण क्यों किया ? भारत ने तो सदासे चीनसे मित्रता बढ़ानेकी ही कोशिश की। इस प्रश्नका ठीक उत्तर कोई नहीं दे पाता क्योंकि भारत या दूसरे किसी भी देशको आशंका नहीं थी कि दोस्तीका दम भरनवाला चीन भी भारत पर आक्रमण कर सकता है।

पहले चीनने भारतकी सीमाका जो अतिक्रमण किया, उस पर लोगोंने अधिक ध्यान नहीं दिया। लोग समझते थे कि चीनकी क्रांतिकारी कम्युनिस्ट सरकारको अंतर्राष्ट्रीय मामलोंका अभी अनुभव नहीं है। चीनकी इन कार्रवाइयोंको इतना खतरनाक नहीं समझा गया, क्योंकि भारत और चीनके लोगोंमें भाई-चारेका संबंध कायम हो रहा था। लेकिन जब भारत की सीमा पर एक के बाद एक अतिक्रमण होने लगा तो चीन सरकारके असली इरादोंका पता चला। और पिछले वर्ष चीनने भारत पर जो भारी आक्रमण किया, उससे तो साफ जाहिर हो गया कि चीन अपनी पूरी ताकत लगाकर भारतको दबाना चाहता है।

चीन की आकांक्षा

शुरूसे ही चीनकी कम्युनिस्ट सरकारकी यह आकांक्षा थी कि उसकी गिनती बड़ी ताकतोंमें हो। चीनकी कम्युनिस्ट सरकारके पास विशाल साधनोंसे संपन्न एक विशाल प्राकृतिक भू-भाग और दुनियांमें सबसे अधिक जनसंख्या भी थी। चीनकी सरकारके पास महत्वाकांक्षाको पूरा करनेके साधन मौजूद थे। चीनके कम्युनिस्ट शासकों ने सदियों पुरानी आकांक्षाको साकार करनेकी कोशिश शुरू की।

यूरेशियाके विशाल क्षेत्रमें तीन बड़े देश; रूस, चीन और भारत हैं। ये तीनों देश एक दूसरे से लगे हुए हैं। जब बड़े देश पड़ोसी हों, तो उनकी आकांक्षाओंमें टकराहटकी संभावना रहती ही है। इसलिए चीनने सोचा होगा कि शुरूमें ही प्रतिस्पर्धी पर हावी हो जाना चाहिए। परन्तु इससे चीन बोलनेकी हिम्मत न

कर सकता था क्योंकि वह दुनियाका दूसरा सबसे बड़ा शक्तिशाली राष्ट्र था। इसके अलावा रूस और चीन, दोनों कम्युनिस्ट देश थे और इस कारण उनमें विशेष संबंध था। साथ ही, चीन अपने विकासके लिए भी सोवियत संघकी मदद पर निर्भर था। इन इन सब बातोंके कारण रूससे रार मोल लेना चीनने उचित न समझा। परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि उनके बीच कोई मतभेद या विरोध नहीं था या आगे भी नहीं उत्पन्न हो सकता। लेकिन रूससे झगड़ा मोल लेनेके लिए चीनको अभी बहुत तैयारी करनी पड़ेगी।

भारत एक बड़ा प्रतिद्वंदी

भारतकी बात अलग थी। चीनके बाद जनसंख्यामें भारतका ही स्थान है। वह चीनसे भी अधिक प्राचीन सभ्यता और संस्कृति संपन्न देश है। दोनोंकी सभ्यता और संस्कृति दूर-दूरके देशों तक फैली और एक-दूसरेके संपर्कमें भी आई। पुराने जमानेमें दोनों देशोंके बीच मित्रता और शांति रही लेकिन आगेके लिए यह बात नहीं कही जा सकती। दोनों देश पश्चिमी साम्राज्यवादके शिकार हुए। फर्क इतना है कि भारत पर विदेशी राज्य स्थापित और हुआ किन्तु चीन पर विदेशी राज्य स्थापित नहीं हो पाया, यद्यपि शोषित और प्रताड़ित वह भी हुआ।

चीनमें कम्युनिस्ट सरकारकी स्थापना के दो वर्ष पहले ही भारत स्वतंत्र हो गया और उसने अपने आर्थिक विकासके लिए लंबी योजना बनायी। ब्रिटेन और राष्ट्र-मंडलसे संपर्क बनाए रखनें और पश्चिमी देशोंकी उदार राजनीतिक विचारधारासे प्रभावित होनेके बावजूद भारतने अंतर्राष्ट्रीय मामलोंमें तटस्थताकी नीति अपनाई और देशमें लोकतंत्रकी स्थापनाका लक्ष्य रखा। भारतने चीनसे भी दोस्ती रखी और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें उसका साथ दिया।

चीन की नीयत भारत को नीचा दिखाने की

परतु इन सब बातोंका चीनके लिए ज्यादा महत्व न था। उसका इरादा तो भारत को नीचा दिखाना था। क्योंकि वह भारत को अपना प्रतिस्पर्धी मानता है। भारत चाहे पूंजीवादी हो या समाज-वादी गुटोंमें शामिल हो या गुटोंसे अलग हो, अपनी बढ़ती हुई ताकत और विशालता के कारण, वह चीन की राहमें काँटा है, दुनियामें बड़ी ताकत बनने की महत्वा-कांक्षामें भारत चीनका प्रतिद्वंदी है। इसी कारण अपनी तैयारी पूरी करते ही और इसके पहले कि भारत अधिक शक्तिशाली बन जाए, और सावधान हो पाए चीन भारतको दबा देना और उसकी प्रतिष्ठा और सम्मान पर आघात करना चाहता था। अपने इस उद्देश्यकी पूर्तिमें कम्यु-निस्ट चीनको नीति-अनीति, दोस्ती-कृत-ज्ञता किसी का विचार नहीं हो सकता था

यह मानी हुई बात है कि अंत-र्राष्ट्रीयताका ढोंग रचने के बावजूद, कम्युनिस्ट, उसे अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए राष्ट्रवादका सहारा लेनेसे नहीं चूकते। अस्तु चीनके कम्युनिस्ट शासनने चीनी जनताको चीनके पुराने साम्राज्यके सपने दिखाकर चीनके खोए गौरवके पुनरुद्धारके नाम पर दूसरे देशों पर आक्र-मण करने को तैयार किया।

अनेक वर्षोंसे चीनी नक्शोंमें भारत के बड़े भागको चीनकी सीमामें दिखाया जाता रहा है। चीनकी कम्युनिस्ट सरकार

ने इन्हीं नक्शोंके आधार पर भारतीय इलाके पर अपना दावा किया और अपनी तरफसे इन नक्शोंमें और भी विस्तार किया। चीन इस तरह दो लक्ष्य सिद्ध करना चाहता था। एक भारतके उत्तरी प्रवेश-द्वारों पर कब्जा करना और राज्य का विस्तार करना तथा दूसरा भारतको हराना और नीचा दिखाना।

चीन के प्रचारक

हमारे देशमें कुछ लोग कहते हैं कि चीनने भारत पर इसलिए हमला किया कि उसे यह भ्रम है कि भारतको पश्चिमी देशोंसे सहायता मिलती है, इसलिए वह पश्चिम गुटमें शामिल है। यह बिलकुल गलत धारणा है। चीनी नेताओंको ऐसा कोई भ्रम नहीं है। और हमारे यहाँ जो लोग ऐसा कहते हैं वे न केवल चीनका समर्थन करते हैं, बल्कि अपने देशवासियों में भी यह धारणा फैलाते हैं कि चीनके साथ संघर्षमें हमारा भी दोष है।

जानबूझ कर भारत पर आक्रमण

यह ठीक है कि चाऊ-एन-लाईको छोड़कर चीनके दूसरे नेताओंका दूसरे देशोंसे अधिक सम्बन्ध नहीं रहा है लेकिन चीनके सभी नेता, बुद्धिमान, अनुभवी अंतर्राष्ट्रीय मामलोंके अच्छे जानकार हैं। अंतर्राष्ट्रीय विषयोंमें भारतका क्या रुख रहा और उसने चीनका कितना समर्थन किया, यह बात चीनी नेताओंको अच्छी तरह मालूम है। इसके बावजूद चीन जानबूझ कर भारत पर पश्चिमी देशोंके पिछलग्गू होनेका झूठा आरोप लगाता है क्योंकि वह भारतसे लड़ाई मोल लेना चाहता है और इस इरादेको जाहिर नहीं होने देना चाहता।

सीमाके बारेमें बर्मा, नेपाल और पाकिस्तान (अधिकृत-कश्मीर) से भी चीनका विवाद था और ये सभी देश पश्चिम से मदद लेते हैं। पाकिस्तान तो अमेरिकाके फौजी गुटमें भी है। फिर भी इन सबसे चीनकी दोस्ती है।

इस तरहसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पश्चिमसे मदद लेनेके कारण ही चीन, भारतसे नाराज है यह बात सही नहीं। अगर भारत कम्युनिस्ट भी बन जाए तो भी चीन भारतीय इलाके पर अपना दावा नहीं छोड़ेगा। हाँ उस हालत में झगड़ा कम्युनिस्ट पंचायतमें पेश होता और भारतको दबा कर अपना-अपना इलाका चीनको देनेको बाध्य किया जाता। जैसे पोलैंड और रूमानियाको रूसको अपना इलाका देनेको बाध्य किया गया।

जल विभाजक सिद्धांत स्वीकृत और अस्वीकृत

हमें धोखेमें रख कर चीनने नेपाल से जल-विभाजक पर्वतों को सीमा मानने के सिद्धांतके आधार पर समझौता कर लिया, लेकिन भारतके साथ उसने इस सिद्धांतको माननेसे इंकार कर दिया।

भारतको सबसे अलग करनेके लिए ऐसा किया गया। भारत ही एक ऐसा देश है, जो चीनकी टक्कर का है। साथ ही चीन दूसरे देशोंको अपनी न्यायप्रियता का नमूना भी दिखाना चाहता था। अब पाकिस्तानसे भी उसने इसी नीयतसे समझौता कर लिया है।

ये सब देश यह नहीं समझते कि जब चीन भारतसे धांधली कर सकता है, तो उनके साथ इन समझौतों का क्या मूल्य है ?

अमेरिकी मदद

चीनने भारत पर धोखेसे आक्रमण

किया। काफी पहलेसे तैयारी करनेके बाद चीनने भारत पर हमला किया और उल्टा हम पर आक्रमण करनेका आरोप लगाया। इतना ही नहीं, उसने यह भी प्रचार किया कि अमेरिका से अधिक सहायता पानेके लिए ही भारतने आक्रमण किया। चीनने यह प्रचार इसलिए किया कि भारतीय जनता, पश्चिमी देशोंसे सैनिक सहायता लेनेके बारेमें दुविधामें पड़ जाए। इस प्रकार भारतको पश्चिमी देशोंकी सैनिक सहायता स्वीकार न करनेके लिए मजबूर करके चीन अपनी शर्तोंको मनवाना चाहता है।

अगर यह बात न होती तो तटस्थताकी नीति मानने वाला कोई भी देश अपनी रक्षा नहीं कर सकता है।

यूगोस्लावियाका उदाहरण हमारे सामने है। स्टालिनके विरुद्ध हो जाने पर प्रेसीडेन्ट टीटोने अमेरिकासे सैनिक सहायता ली। लेकिन चीन और अल्बानियाको छोड़कर और कोई यह नहीं कह सकता है, कि यूगोस्लाविया अब कम्युनिस्ट देश नहीं है।

दूसरी बात यह है कि तटस्थताकी नीतिका पूरा पालन करते हुए किसी मित्र देशसे अनुकूल शर्तों पर खरीद कर,

प्रतिहिंसा क्यों ?

आक्रमण और हिंसाके सामने आध्यात्मिक पुरुष की शांत और निष्क्रिय स्थिति संसार की प्रचंडशक्तियों की प्रतिहिंसा को उत्तेजित करती है। बुराई का प्रतिनिधित्व करने वालों को यदि दूसरोंको रौंदने की खुली छूट दे दी जाय, तो वे अपने ऊपर एक ऐसे भयानक विनाश को उतार लायेंगे जो हमारी कल्पना से भी परे होगा। उसके प्रहार का परिणाम उन्हें बलपूर्वक रोकने से भी कहीं अधिक भयंकर होगा। उससे संघर्ष और विनाश का विधान संसार से नहीं मिट सकेगा। मानवजाति के अन्दर इसकी जो जड है उसे ही विनष्ट करना होगा।

विदेशी सहायता और तटस्थता

यह शंका की जाती है कि बिना पूरा दाम चुकाये दूसरे देशोंकी सहायता लेना तटस्थता नीतिके खिलाफ है।

इसके उत्तरमें पहली बात तो यह है कि तटस्थताका मतलब है सैनिक या ऐसे ही दूसरे गुटोंसे अलग रहना, जिससे किसी भी अन्तरराष्ट्रीय मामले पर स्वतन्त्र रूपसे विचार किया जा सके और उस गुटके विचारोंका समर्थन न करना पड़े। आत्मरक्षाके लिए मित्र राष्ट्रोंसे बिना शर्त हथियारोंकी मदद लेना, तटस्थाकी नीतिके खिलाफ नहीं है।

हथियार लिए जा सकते हैं।

वर्तमान संकटमें हम तटस्थताके बारे में इस तरहकी किताबी बहसमें नहीं पड़ सकते। हमारी नीयत साफ है। बर्बर आततायीको खदेड़नेके लिए हमें अत्यन्त आधुनिक हथियार चाहिए और हम अपने मित्र देशोंसे इन्हें लेंगे। अगर दुश्मनोंके झूठे प्रचारसे डर कर हम नये हथियारोंसे अपनेको सुसज्जित नहीं करेंगे तो न केवल भारतकी आजादी ही नष्ट हो जायगी बल्कि तटस्थताकी नीति भी खाकमें मिल जाएगी। ●

(ईस्टर्न इकानामिस्टसे साभार)

पाक-चीन के षड्यन्त्रों से असम की रक्षा करें

—नानाजी देशमुख

अपनी मातृभूमिके किसी भी सीमा प्रदेशको सुरक्षित नहीं कहा जा सकता। उसमें भी असम प्रदेशकी स्थिति असामान्य है। गत १६ वर्षोंकी कांग्रेसी शासनकी नीति के कारण इस प्रदेशका अस्तित्व खतरेमें पड़ा हुआ है।

पश्चिम व दक्षिणसे इसे ग्रसनेके लिए पूर्वी पाकिस्तानने अपने खतरनाक बाहु-पाश फैला रखे हैं। पूरब में अपना ही नवनिर्मित नागालैण्ड व ब्रह्मदेश है। नागा-लैंडमें व्याप्त विद्रोह अभी तक शांत नहीं हो पाया है। इन विद्रोही नागाओंको अंग्रेज मिशनरियोंका सहारा है तथा पाकिस्तान इन्हें गुरिल्ला पद्धतिकी लड़ाई की शिक्षा व आधुनिक शस्त्रास्त्र दे रहा है। पाकिस्तान का खूनी पंजा असमको हड़पनेके लिए इस प्रकार पूरब तक पहुंच रहा है। महान् आश्चर्यकी बात है कि गुरिल्ला युद्ध की शिक्षा पानेके लिए विद्रोही नागाओं की टुकड़ियां भारत होकर पाकिस्तान आती जाती हैं। हमारी सरकार इसे रोकनेमें असमर्थ हो रही है। ब्रह्मदेशका असमसे सटा हुआ अधिकांश भाग अरण्यमय है। इस क्षेत्रमें ब्रह्मदेशका प्रशासन बहुत ढीलाढाला है। कम्युनिस्ट चीन इसका लाभ उठानेमें जुटा हुआ है। यद्यपि आज इस ओरसे विशेष संकट दिखाई नहीं पड़ता किन्तु इस सीमाको भी हम सुरक्षित नहीं कह सकते। भविष्य-कालीन संभावनाओं की कल्पना कर इस सीमा पर भी सुरक्षाकी सुदृढ़ व्यवस्था करनी होगी।

चीन की तैयारियां

असमकी उत्तरी सीमा के सम्बन्धमें तो विशेष कहनेकी आवश्यकता ही नहीं है। गत वर्ष अक्तूबर-नवम्बरमें कम्युनिस्ट चीनने इस क्षेत्रमें आक्रमण किया था। उस समय हमारी कितनी दुर्दशा हुई यह किसीसे छिपा नहीं है। किन्तु उस दुर्द-शाकी इतिश्री वहां ही नहीं हुई। उत्तरी सीमा पर कम्युनिस्ट चीन अधिक जोरों से सैनिक सिद्धता करनेमें जुटा हुआ है। गत आक्रमणके समय उसने इस सीमापर अपनी ग्यारह डिवीजन सेना जुटा ली थी

किन्तु अब प्रधानमंत्री पं० नेहरूका कहना है कि इस समय कम्युनिस्ट चीनकी सोलह डिवीजन सेना उत्तरी सीमा पर आ पहुंची है। इसके अतिरिक्त उसने सीमा पर कई सड़कें बना ली हैं। बहुत अधिक मात्रामें युद्ध सामग्री भी जुटा रखी है। इस प्रकार असम प्रदेश चारों ओरसे दो खतरनाक शत्रुओंके चक्रव्यूह में फंसा हुआ है।

शासनकी अदूरदर्शिता

असम की इस संकटमय परिस्थिति का कारण वर्तमान शासनकी अदूरदर्शिता व अव्यावहारिकता है। न वह पाकिस्तान के इरादोंको समझ पाया है न कम्युनिस्ट चीनके। जिस प्रकार अपना असम सब ओरसे घिरा हुआ है उससे अधिक मात्रामें पूर्वी पाकिस्तान भारतसे घिरा हुआ है। किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि वह ही हमारे लिए खतरा बनकर खड़ा है। और हमारे शासक स्वयंको असहाय स्थिति में पा रहे हैं।

पूर्वी पाकिस्तान की स्थिति

पूर्वी पाकिस्तानके निवासियोंके मन में पश्चिम पाकिस्तानके नेतृत्वके प्रति कभी आत्मीयता अनुभव नहीं हुई। कभी कभी तो उसके विरुद्ध उग्रभाव भी प्रगट हुआ। पूर्वी पाकिस्तानियोंने उर्दू भाषा का सतत विरोध किया। बड़े संघर्षके बाद बंगाली भाषाको ही उन्होंने मान्यता प्राप्त करवा ली। इन सब बातोंका लाभ भारतके शासक उठा सकते थे। इस दिशा में यदि हमारे शासकोंने कूटनीतिक प्रयास किए होते तो आज पूर्वी पाकिस्तान असम के अस्तित्वके लिए खतरा बनकर खड़ा न हुआ होता।

तुष्टीकरणका परिणाम

१९५०में नेहरू-लियाकत अली समझौता हुआ। भारतके लिए इस अपमान-कारक समझौतेसे सभी स्वाभिमानी नागरिकोंको हार्दिक दुख हुआ। पं० नेहरूकी मुस्लिम तुष्टीकरणकी भावना पाकिस्तान (मुस्लिम राज्य) तुष्टीकरणके रूपमें प्रगट हुई। पाकिस्तानके शासकोंने इसका पूर्ण लाभ उठानेकी दृष्टिसे पग बढ़ाने प्रारंभ किए।

उसने देखाकि यदि असम को हम बिना युद्ध किए ही हड़प सकते हैं तो व्यर्थ में लड़ाई के झगड़े में क्यों पड़ें। अतः उसने असम व त्रिपुरा को मुस्लिम-बहुल क्षेत्र बनानेकी चाल चली। १९५० तक पूर्वी पाकिस्तानसे हिन्दुओंका ही बहुत बड़े प्रमाण पर निष्कासन हो रहा था। इन विस्थापितोंकी समस्याने बंगाल, असम व त्रिपुराका आर्थिक जीवन झकझोर डाला। हिन्दुओंका यह निष्कासन आज भी बन्द नहीं है।

१३ लाख पाकिस्तानियों का अवैध प्रवेश

पाकिस्तानने नेहरू-लियाकत अली समझौतेके उपरान्त पाकिस्तानी मुसलमानोंको योजनाबद्ध रीति से असम व त्रिपुरामें भेजना प्रारंभ किया। उसने अपने पाप को छिपानेके लिए दुनियाँ भरमें प्रचार चालू रखा कि हिन्दुस्तानसे मुसलमानोंको निष्कासित किया जा रहा है। और इसी प्रचारकी आड़में पूर्वी पाकिस्तानसे मुसलमान इस सीमा प्रदेशमें घुसने लगे। पाकिस्तानकी इस खतरनाक चालको हमारे शासक समझ नहीं पाये। परिणाम यह हुआ कि इस समय असम में तेरह लाखके ऊपर पाकिस्तानी मुसलमान घुसे हुए हैं और उनका प्रवेश अभी भी सतत जारी है।

पंचमांगियों का जाल

पाकिस्तानी तत्वोंने पूरे प्रदेशमें योजनाबद्ध रीतिसे अपना जाल फैला रखा है। प्रदेश भरमें जितने भी रेलवे जंक्शन हैं उनके अड़ोस-पड़ोसमें आसामकी जो तेल पाइप लाइन है उसके किनारे-किनारे सैनिक छावनियोंके आसपास इन्होंने अपनी बस्तियां बनाई हैं। सैनिक छावनियोंमें दूध पहुंचानेका, पासमें होटल चलानेका व कुछ लोगोंने तो छावनियोंमें अन्य सामान सप्लाई करनेका ठेका लेकर नियमित धंधा भी चला रखा है। नदियोंमें नाव चलानेके कार्यमें, रोड ट्रांसपोर्टमें अब यही लोग अधिकांश दिखाई पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त साधारण पाकिस्तानी मुसलमान परती पड़ी सरकारी जमीन पर बिना रोंक-टोंकके खेती कर रहे हैं। इन सब धंधोंके साथ पाकिस्तानके लिए जासूसीका काम भी यही लोग करते हैं।

दोहरा खतरा

गत वर्ष अक्तूबर-नवम्बर में कम्युनिस्ट चीन ने इस प्रदेश पर उत्तर से भयानक आक्रमण किया था। उस समय इन पाकिस्तानी तत्वों ने इस प्रदेश की उत्तरी सीमा में फैले हुए देशद्रोही चीन समर्थक कम्युनिस्टों का खुलकर और पूरी शक्ति के साथ सहयोग किया। उसी समय पाकिस्तान-चीन की मैत्री का वातावरण बना। चीन ने अनुभव किया कि पाकिस्तान पश्चिमी राष्ट्रों के सैनिक गठबंधनमें भले ही सम्मिलित रहे पर वह भारत के विरुद्ध अपना भी पूर्ण रूप से सहायक हो सकता है। यह आसाम का सौभाग्य मानना पड़ेगा कि कम्युनिस्ट चीन के गतवर्ष के आक्रमण के समय चीन पाकिस्तान का गठबंधन नहीं था। अन्यथा हमारी सरकार की जो दशा हो रही थी, उसमें आसाम को बचाए रखना असंभव हो जाता।

चीन व पाकिस्तान के नवनिर्मित गठबंधन के कारण इस प्रदेश के लिए संकट बहुत बढ़ गया है। चीन व पाकिस्तान की घुसपैठ व युद्ध की सम्मिलित नीति की पृष्ठभूमि में ही हमें इस प्रदेश की सुरक्षा का विचार करना पड़ेगा।

नैसर्गिक रम्य प्रदेश

असम! एक निसर्ग रम्य, खनिज व वनसंपदासे भरपूर, अत्यंत उपजाऊ व विशाल खेतों वाला, धान की फसल से से हराभरा, विभिन्न फलों से लदा हुआ, चाय की बागानोंसे सुशोभित, कलाकृतियों से सुसज्जित, तेल भंडारों से युक्त तथा सुपारी के पतले-पतले सुन्दर पेड़ों से व फुलवारियों से घिरे हुए छोटे-छोटे लुभावने ग्रामों वाला यह नयन मनोहर असम प्रदेश स्वतंत्र भारतके वर्तमान शासकों की असावधानी के कारण अंतर्बाह्य संकटों से आज जर्जरित है।

आन्तरिक स्थिति

१९६१ की जनगणना के अनुसार इस प्रदेश की कुल आबादी १ करोड़ १८ लाख ७२ हजार ७७२ है। इस्लाम मतावलंबियों की जनसंख्या असामान्य रूप से बढ़कर (पाकिस्तानी मुसलमानों के अवैध प्रवेश के कारण) अब २७ लाख ६५ हजार ५०९ तक पहुंची है। यह पूरे समाज के २३.२९ प्रतिशत है। कई सीमावर्ती क्षेत्रों में तो इनकी आबादी आधे से भी अधिक पहुंच गई है। इसी प्रकार ईसाइयों की आबादी ७ लाख ६४ हजार ५५३ है। पर्वतीय लोगों की आबादी ३ लाख ७५ हजार १७२ है। इन सब लोगों

को अर्थात् ३९ लाख ५ हजार २३५ को- जो कुल आवादी के ३२.८९ प्रतिशत है-- विदेशी ईसाई मिशनरी व पाकिस्तान के पंचमांगी राष्ट्रभक्ति की भावना से अलग रखने में दिन-रात संलग्न हैं। इसके अतिरिक्त फैले समाज में कम्युनिस्टों की गतिविधियां अवाधित रूप से चल रही हैं। सरकारी मशीनरी में घुसे हुए पाकिस्तानी तत्व इन कम्युनिस्टों के लिए भी सहायक सिद्ध हो रहे हैं। ऐसी है चारो ओर से शत्रुओं से घिरे अपने असम प्रदेश की आंतरिक स्थिति।

युद्ध विराम से हानि

हमारी इस आन्तरिक दुरावस्था का लाभ उठाकर चीन व पाकिस्तान की युद्ध के लिए मोर्चेबंदी हो रही है। गत आठ नौ महीने से इन दोनों देशों में हिन्दुस्थान के विरुद्ध चलने वाली सामरिक सिद्धता एक दूसरे की पूरक है। यह इनके सम्मिलित जासूसी कार्यवाहियों से स्पष्ट होता है। चीन ने गत युद्ध में नेफा प्रदेश पर लगभग पूरा अधिकार कर लिया था। यह पूरा प्रदेश पर्वतीय है। इसके बाद ही ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी प्रारंभ होती है। अत: असम की दृष्टि से नेफा के पर्वतीय क्षेत्र का अतुलनीय सामरिक महत्व है। यह क्षेत्र जिसके अधिकारमें रहेगा वह ही आसाम पर अधिकार रख सकता है। चीन ने गत २९ नवम्बर को अपनी योजनानुसार युद्ध बंद किया। उसके बाद उसने इस क्षेत्र से अपनी प्रत्यक्ष सेना हटा ली है। किन्तु इतने से सामरिक दृष्टि से हमें कोई खास लाभ नहीं हुआ है। कारण, इस लड़ाई के पूर्व नेफा में तिब्बत की सीमा तक हमारी सैनिक चौकियां थी व हम चाहें जब नेफा के किसी भी क्षेत्र में अपनी सेना पहुंचा सकते थे। किन्तु चीन ने अपनी सेना इस क्षेत्र से हटाते समय यह धमकी दे रखी है कि यदि नेफा में भारत सैन्य भेजेगा तो हम फिर से युद्ध छेड़ देंगे व भारतीय सेना को नेफा से खदेड़ देंगे।

चीन की मोर्चेबन्दी

दुर्भाग्य है कि हमारी सरकार चीन के धौंस का जवाब देने के लिए तैयार नहीं है। अपनी सेना नेफा की इन पर्वत-मालाओं के चरणों तक ही अपना दायरा बनाकर बैठी है। चीन नेफा की उत्तरी सीमा पर सम्पूर्ण सैनिक शक्ति के साथ डटा हुआ है। जब कभी वह उचित अवसर समझेगा। उसे नेफा को लांघकर मैदान में पहुंचने में किसी प्रकार की बाधा नहीं होगी। इसी प्रकार चीन युद्ध की दृष्टि से गतवर्ष के लड़ाई के बाद अपने लिए अत्यंत लाभदायक मोर्चा बना लेने में सफल हुआ है।

सामरिक महत्व

पाकिस्तान से हुए गठबंधन के बाद चीन, सिक्किम व भूटान के बीच में चुंबी घाटी का जो क्षेत्र है उसमें अपनी सेना का जमाव बढ़ा रहा है। चीन का यह कदम युद्ध की दृष्टि से आसाम के लिए अत्यंत खतरनाक है। कारण चुंबी घाटी के दक्षिण की सीमा व पूर्वी पाकिस्तान की उत्तरी सीमा में भारत का केवल पचासी मील का चौड़ा भाग है। इसी एक पतले से भूभाग से असम भारत के शेष भाग से जुड़ा हुआ है। पाकिस्तान ने भी अपनी इस सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण सीमा पर पूरी सैनिक सिद्धता कर रखी है। इसी जगह पर भारत का दूसरा भी अति नाजुक भाग है। कारण

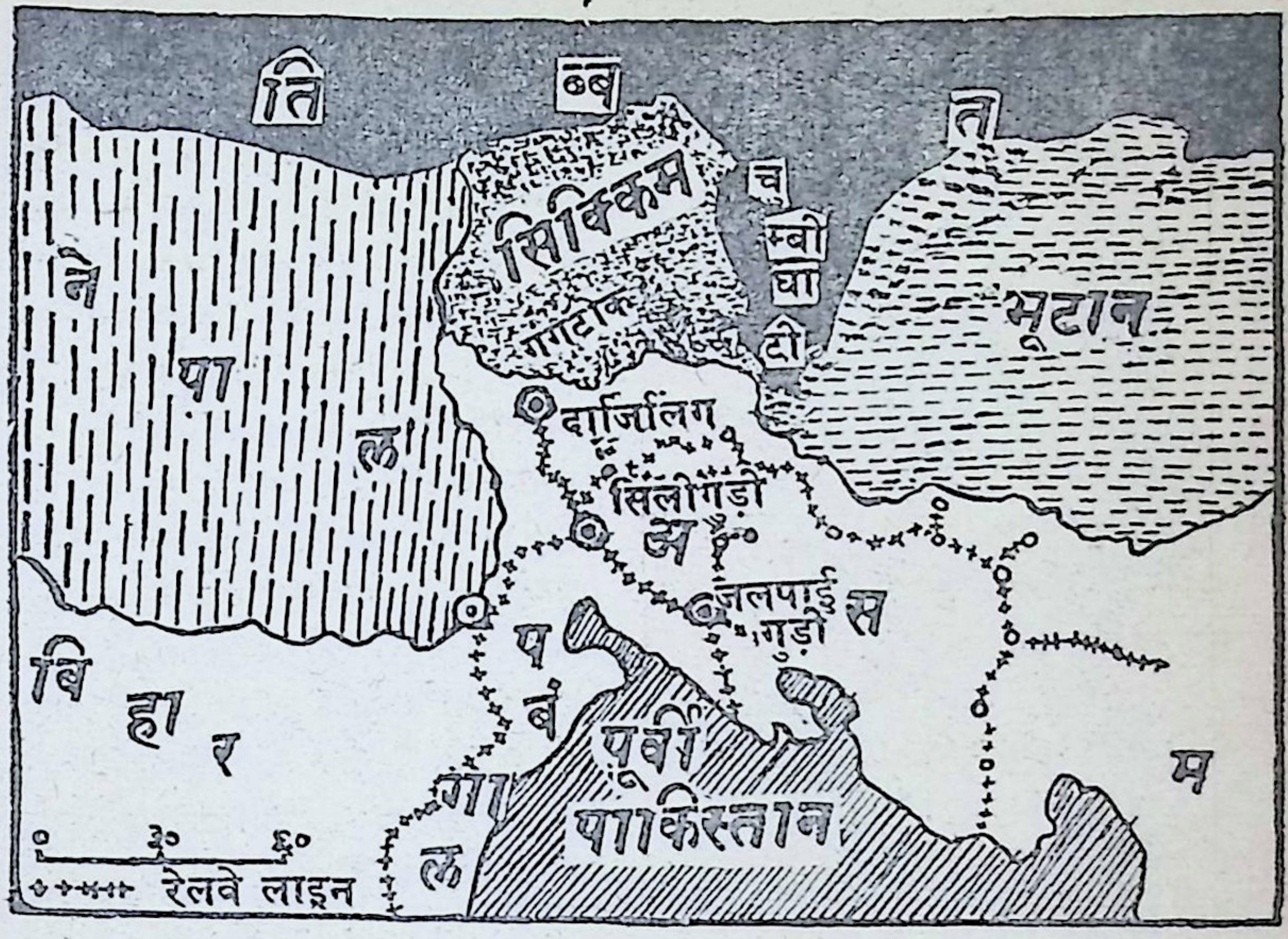

नेपाल का पूर्वी दक्षिणी भाग व पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी भाग के बीच में आमाम को जोड़ने वाला भारत का केवल अट्ठाइस मील चौड़ा भू-भाग हैं। यह अपना अहोभाग्य है कि गतवर्ष की लड़ाई के बाद नेपाल से अपने सम्बन्ध बहुत अच्छे हुए हैं व उस दिशा से खतरे की संभावना घटी है। किन्तु चीन व पाकिस्तान का गठबंधन व दोनों की इस महत्वपूर्ण किन्तु पतले से भू-भाग के दोनों ओर सब प्रकार से सिद्ध सैनिक शक्ति हमारे लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। इससे भविष्यकाल की सामरिक संभावनाओं की सहज कल्पना की जा सकती है। इधर पाकिस्तान ने ढाका के साथ ही सिलहट व चटगांव के हवाई अड्डों को विशाल रूप देना प्रारंभ किया है। वह आसाम की सीमा पर जगह-जगह सेना का एकत्रीकरण व लड़ाईकी पूर्ण सिद्धता कर रहा है।

आसाममें स्थित खासी जयंतिया पर्वत व पथरिया व लुशाई पहाड़ हमारे लिए सामरिक दृष्टिसे महत्वके हैं। पाकिस्तान को यह बराबर खलता रहा है। १९५८-५९में उसने पथरिया पहाड़ियोंके सम्बन्ध में झगड़ा खड़ा किया व सामरिक दृष्टिसे पूर्णतः अनभिज्ञ रहने वाली भारत सरकारने १९५९में यह पथरिया पहाड़ोंका महत्वपूर्ण भाग पाकिस्तानको दान कर दिया। ये पहाड़ आज सामरिक दृष्टि से हमारे लिए ही खतरा बनकर खड़े हो गए हैं। इन पहाड़ियों पर पाकिस्तानने पूरी सैनिक सिद्धताकी है। वह इसके सहारे दक्षिण आसाम पर अपने खूनी पंजे गड़ाकर किसी भी समय उसे विदीर्ण करके उसपर अपना अधिकार स्थापित करनेके लिए स्वप्न देख रहा है।

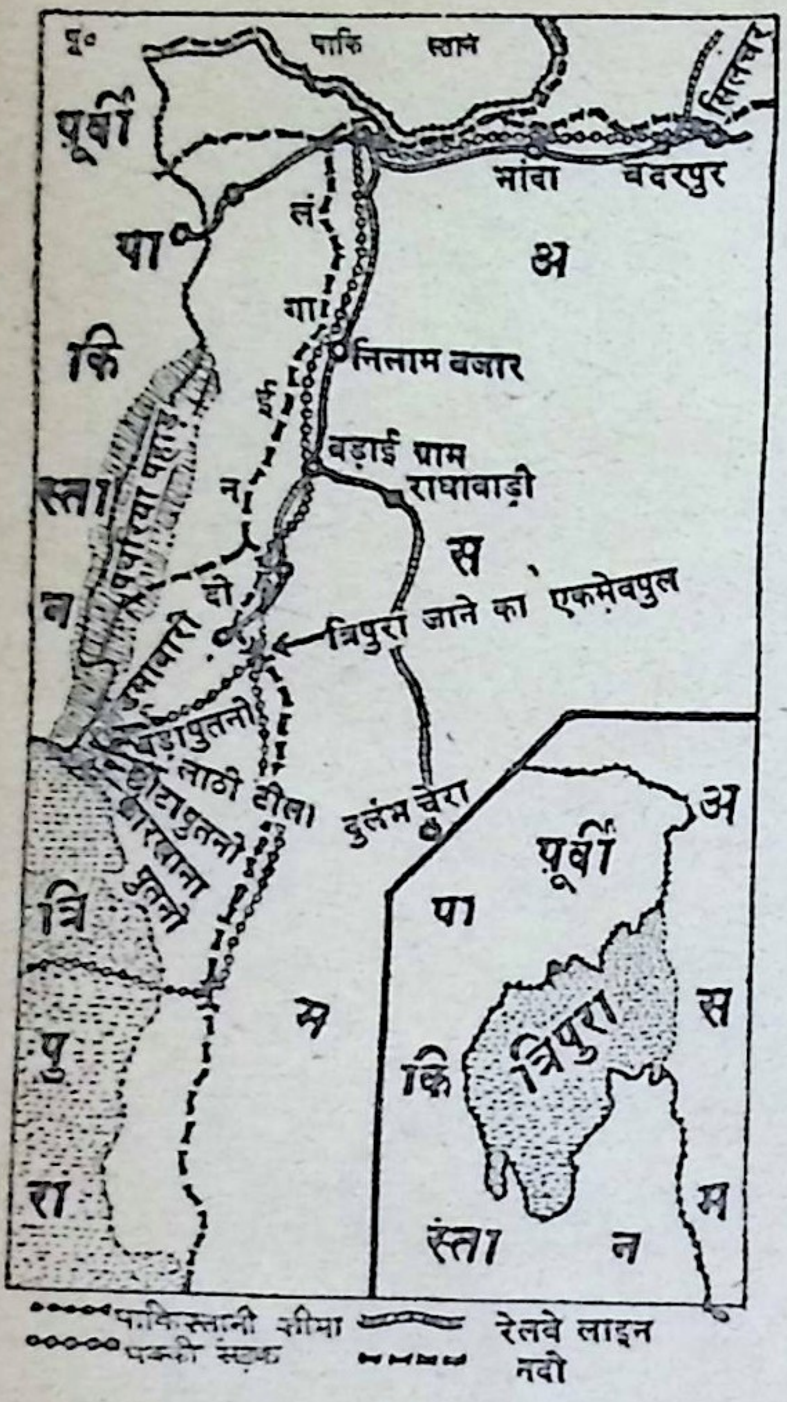

त्रिपुरा को निगलने के इरादे

इस समय पाकिस्तान पथरिया जंगल की दक्षिणकी दोनों छोटी-छोटी शाखाओं को जो अभीभारतके अधिकारमें हैं; अपने अधिकारमें करने का प्रयास कर रहा है। इससे वह आसामको त्रिपुरासे संबंधित करने वाली एकमेव सड़क पर जब चाहे अधिकार जमा सकेगा और त्रिपुराको भी हजम कर पावेगा। साथ ही इस क्षेत्र पर अधिकार करनेसे उसे लुशाई पहाड़ोंकी ओर बढ़नेमें सुविधा होती है। लुशाई पहाड़ भारतके पास रहने पर उसे डर है कि भारतसे युद्ध छिड़ने पर भारत पूर्वी पाकिस्तानके दक्षिण भागके लिए संकट उपस्थित कर सकता है। इन्हीं सब बातोंको ध्यानमें रखकर १५ सितम्बरसे २० सितम्बर तक लाठीटीला व डुमाबारीके क्षेत्रमें ६० हजारसे अधिक राउण्ड गोलियां चलाकर पथरिया पहाड़ोंकी दक्षिणमें फैली हुई पश्चिमकी ओरकी शाखापर उसने अधिकार कर लिया है। लाठीटीला ग्राम व उसका अधिकांश क्षेत्र आज पाकिस्तानके अधिकारमें चला गया है। इस प्रकार उसने डेढ़ फर्लांगसे छः फर्लांग चौड़े व लगभग ढाई मील लम्बे भाग पर नए सिरेसे कब्जा कर रखा है। इस भारतीय क्षेत्रमें पाकिस्तानने लड़ाई लड़नेके लिए आवश्यक खाइयाँ खोद ली हैं व बंकर्स तैयार कर लिए हैं। उसे संभवत: विश्वास है कि चीनसे हुई मित्रताके कारण यहांकी चकचकने कोई गम्भीर रूप धारण कर भी लिया तो भी उसे हानि नहीं उठानी पड़ेगी और इसी संभावनाके आधार पर वह शीघ्र ही बलपूर्वक डुमावारी, कारखाना पुतनी तथा छोटी व बड़ी पुतनी नामक चार स्थानों व विशाल पुतनी के चायबगानको अपने अधिकारमें कर सामरिक दृष्टिसे स्वयंको अधिक अच्छी स्थितिमें बना लेना चाहता है। यह कार्य पूरा करनेके बाद वह त्रिपुरा व लुशाई पहाड़ियोंकी ओर अपने कदम बढ़ानेका इरादा रखता है।

प्रभावी नीति अपनायें

अत: असमकी रक्षाके लिए विशेषकर पाक षड्यन्त्रसे उसे बचानेके लिए हमें प्रभावी नीति अपनाकर बड़े प्रमाण पर सामरिक तैयारी करनी होगी। हमारी पूर्ण सामरिक सिद्धता रहनेपर पाकिस्तानको अपने षड्यन्त्रोंसे स्वयं ही विरत होनेकी प्रेरणा मिलेगी क्योंकि उस अवस्थामें संपूर्ण पूर्वी पाकिस्तानका अस्तित्व भारतकी सद्भावना और दयापर ही निर्भर रहेगा। ● ●

विश्व में भारत की स्थिति
एक
भू-राजनैतिक अध्ययन

प्रो० नित्यानन्द

भू-राजनैतिक दृष्टिसे किसी भी देश का विचार निम्नलिखित तत्वों के आधार पर किया जा सकता है :—

१. आकार २. आकृति ३. यातायात की सुगमता ४. स्थिति ५. सीमा ६. सागर तक पहुंच ७. धरातल का स्वरूप ८. कच्चा माल ९. जलवायु १०. जनसंख्या।

संक्षेपमें सभी तत्वोंकी दृष्टिसे भारत की स्थितिका विचार करना यहां अयुक्ति-संगत न होगा……

१. आकार—देशकी विशालता पर उसकी सुरक्षा निर्भर रहती है। छोटे-छोटे देश तो एक ही आक्रमणमें धराशायी हो जाते हैं। रूस व चीन अपनी विशालताके ही कारण जर्मन व जापानी आक्रमणके समय पीछे हटकर अपनी रक्षा कर सके थे। सौभाग्यसे भारतका आकार भी विशाल है।

२. आकृति—देशोंकी आकृति पर भी सुरक्षा निर्भर होती है। चिली व नार्वे जैसे देशोंको अपनी सम्पूर्ण लम्बाईमें सुरक्षाकी व्यवस्था करनी पड़ती है। देशकी आकृति सम्यक (लम्बाई व चौड़ाई प्राय: बराबर) होनी चाहिये; लम्बी व संकरी आकृति हानिकारक होती है। भारतकी आकृति अति सम्यक है। उसकी लम्बाई-चौड़ाईमें विशेष अन्तर नहीं है। इस दृष्टि से पाकिस्तान जैसा अभागा देश विश्वमें कोई नहीं है। पाकिस्तान दो भागोंमें विभक्त है। पूर्वी पाकिस्तान तो तीन ओर से भारतसे घिरा हुआ है। चीनसे गठ-बन्धन करके ही उसने अपनी स्थिति दृढ़ की है। इस गठबन्धनका उत्तर भारत व राष्ट्रवादी चीनकी सैनिक संधि ही हो सकती है।

३. यातायातकी सुगमता—सुरक्षाकी दृष्टि युद्धकालमें सेनाओं व युद्ध सामग्रीको अत्यंत तीव्र गतिसे एक स्थानसे दूसरे पर पहुंचाने की आवश्यकता होती है। वायुमार्गसे तो सीमित मात्रामें ही स्थानान्तरण किया जा सकता है परन्तु इस दृष्टिसे रेलमार्ग व सड़कें सबसे अधिक सहायक होती हैं। रेलमार्गों की लम्बाईकी दृष्टिसे भारतका विश्वमें चौथा और एशियामें प्रथम स्थान है। सड़कों व रेलमार्गोंका घना जाल भारतमें चीनकी अपेक्षा अधिक विकसित

शुभ दीपावली

पर

हार्दिक शुभ कामनायें

for **DURABILITY**

and **QUALITY**

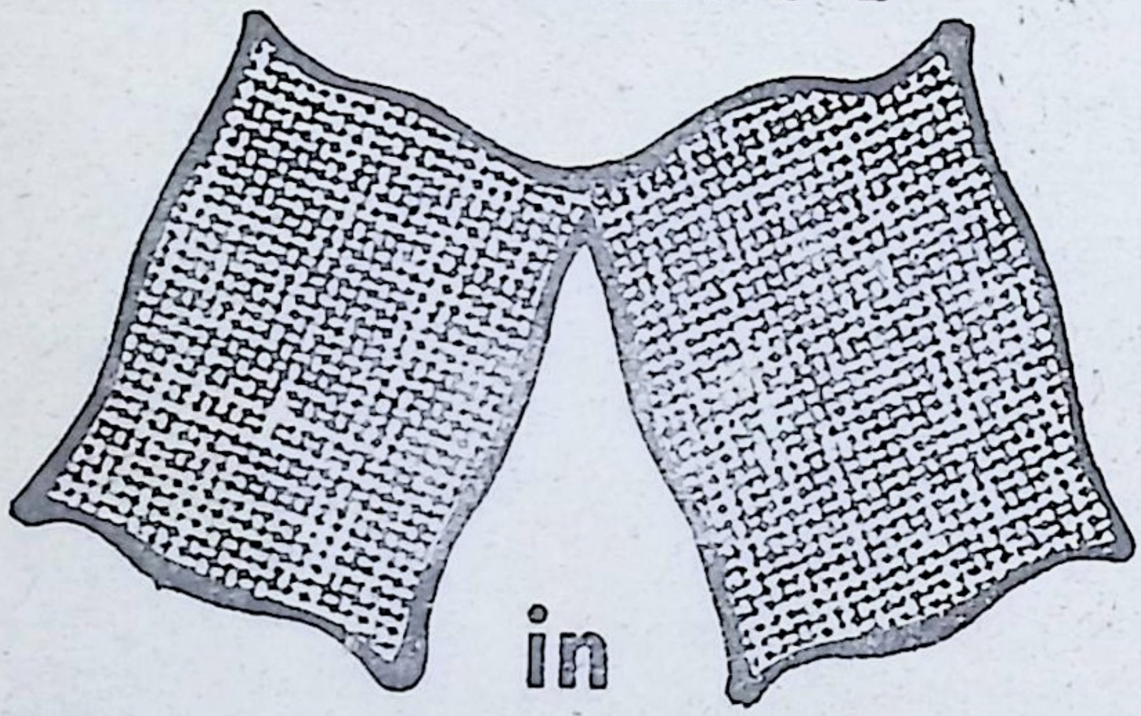

in

HESSIAN & BAGS

use **PREMCHAND**

PRODUCTS

Manufactured by

KANORIA COMPANY LIMITED

9, Brabourne Road, Calcutta.

Phone : 22-9121 (6 lines)

हुआ है। सीमावर्ती पर्वतीय क्षेत्रमें सड़कों के निर्माणकी उपेक्षा तो अदूरदर्शितापूर्ण विदेश नीति व सुरक्षा नीतिका ही परिणाम है।

४. **स्थिति**—पूर्वी गोलार्द्धमें भारत की अत्यन्त मध्यवर्ती स्थिति है। यह आस्ट्रेलिया, पूर्वी अफ्रीका व एशियाके मध्यमें स्थित है। जलवायुकी दृष्टिसे भारतका कोई भी ऐसा बड़ा भाग नहीं है जो अत्यधिक शीतके कारण बेकार हो। बहुत थोड़ा ही क्षेत्र ऐसा है जो बसनेके उपयुक्त नहीं है।

५. **सीमा**—सीमाओंको तलवारकी ऐसी धार कहा गया है जिनके ऊपर राष्ट्रों के भाग्य कच्चे धागेसे लटके रहते हैं। दो देशोंके बीच सबसे अधिक स्थायी व निश्चित सीमा समुद्रतट व पर्वत बनाते हैं। अखण्ड भारतकी सम्पूर्ण सीमा पर या तो पर्वत थे या समुद्र। इस प्रकारकी आदर्श सीमाएँ विश्वमें बहुत कम देशोंको प्राप्त हैं। खंडित भारतका सबसे बड़ा अभिशाप भारत-पाकिस्तान सीमा है, जहां या तो खिसकती हुई नदियां बहती हैं या कृत्रिम रेखा अंकित है। ऐसी सीमाओं पर सदा संघर्षके लिये गुंजाइश रहती है।

६. **सागर तक पहुंच**—यदि किसी देश की पहुंच सागर तक नहीं है तो उसे अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारके लिये किसी अन्य देशकी दया पर निर्भर रहना पड़ता है। स्विट्जरलैण्ड, आस्ट्रिया, जैकोस्लोवेकिया, बोलिविया, अफगानिस्तान, तिब्बत आदि ऐसे ही देश हैं। भारत एक प्रायद्वीप है और अति प्राचीन कालसे उसने समुद्री यात्राओं व व्यापारके द्वारा सुदूर देशोंसे भी सम्बन्ध स्थापित किये थे। यही कारण था कि यह महासागर हिन्द महासागर कहलाया था।

७. **धरातलका स्वरूप**—अत्यधिक पर्वतीय या कटा-फटा क्षेत्र होनेके कारण देशकी आर्थिक प्रगतिमें बाधापड़ती है। उन्नतकृषि वप्रगतिशील उद्योग ही देशकी शक्तिके मूल आधार हैं। सौभाग्यसे भारतमें पर्याप्त समतल मैदान हैं जहाँ शस्य-श्यामला भूमि सदासे सोना उगलती रही है।

८. **कच्चा माल**—कृषि उपज व खनिजों की दृष्टिसे भारत विश्वके धनी देशोंमें से एक है। लौह भण्डार, मैंगनीज, अभ्रक यूरेनियम, थोरियम, टिटेनियम, बौक्साइट व जलशक्तिकी दृष्टिसे भारत विश्वमें एक प्रमुख स्थान रखता हैं। भारत के खनिजोंकी विविधता चीनसे भी अधिक है। कृषि उपजकी दृष्टिसे समस्या केवल उपज प्रति एकड़ बढ़ानेकी है। प्राकृतिक साधनोंकी दृष्टिसे भारत इतना धनी है कि यथोचित विकास होनेके उपरान्त उसकी गणना विश्वके तीन प्रथम राष्ट्रों में हो सकेगी।

९. **जलवायु**—वर्षाकालके तीन मास छोड़कर भारतकी जलवायु शारीरिक व मानसिक परिश्रमके लिये हर प्रकारसे उपयुक्त है। यह जलवायु की ही कृपा है कि बहुत से क्षेत्रोंमें वर्षमें तीन-तीन फसलें उगाई जाती हैं।

१०. **जनसंख्या**—जनबल किसीभी देशकी सबसे बड़ी पूंजी होता है। देशकी सुरक्षा व आर्थिक, प्रगति, वीर सैनिकों, योग्य वैज्ञानिकों व कुशल तथा सस्ते श्रमिकों पर निर्भर रहती है। विश्वमें भारतका जनसंख्याकी दृष्टिसे दूसरा स्थान है। इस जनबलका उचित उपयोग करना बहुत कुछ अंशोंमें शासनसत्ता पर निर्भर रहता है।

दीपावली की शुभ कामनायें

हैन्डलूम हाउस

मायाबाजार, गोरखपुर

हाथ करघे के धोती, साड़ी, बेड शीट, पिलोकवर के निर्माता

N.K.S —32

दीपावली

के

शुभ पर्व पर हम

अपने ग्राहकों, संरक्षकों व शुभचिंतकों को हार्दिक बधाई देते हैं।

न्यू सायकिल स्टोर्स, हिन्दी बाज़ार, गोखरपुर

हर प्रकार की सायकिलों तथा रिक्शा के लिए एक मात्र विश्वसनीय प्रतिष्ठान

N. K. S —20

जब गोरखपुर पधारिये

सुखप्रद एवं सुविधाजनक नए रूप साजसज्जायुक्त ठहरने

के

एकमेव स्थान

श्री गणेश होटल एवं जलपान गृह

गोलघर, गोरखपुर

में अवश्य पधारिये

(शुद्ध घी की मिठाई)

चाट, नमकीन, डोसा एवं विविध प्रकार के

स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लीजिये !

N·K.S. —19

तारः—बथवाल   दीपावली के पावन पर्व पर   फोनः—५७६

हार्दिक शुभकामनायें

भारतीय ग्रामोद्योग भवन

दीवान दयाराम (काली बाड़ी)

गोरखपुर

(कर्घा वस्त्र निर्माता एवं विक्रेता)

N.K.S.—18

महान राष्ट्रके सभी गुण विद्यमान

उपर्युक्त तथ्योंके आधार-पर भारत की स्थितिका मूल्यांकन किया जाय तो स्पष्ट होगा कि यह विश्वकी चार बड़ी संभावित शक्तियोंमें से एक है और वे शक्तियाँ हैं—अमरीका, रूस, भारत व चीन। ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली व जापान आदि देशों में बड़ी शक्ति बननेके लिये सभी आवश्यक तत्व विद्यमान नहीं हैं।

भारत और अन्तर्राष्ट्रीय गुट

विश्वमें अन्तर्राष्ट्रीय गुटोंका निर्माण कोई नवीन घटना नहीं है। ब्रिटेनके विद्वान हैल्फोर्ड मैकिण्डरने विश्वको दो बड़ी शक्तियों में विभाजित किया था। ये शक्तियाँ हैं समुद्रीय शक्ति व स्थलीय शक्ति, जिनमें सतत संघर्ष चलता रहता है। जलशक्तिका प्रतिनिधित्व उस कालमें ब्रिटेन करता था और स्थल शक्ति का जर्मनी। इसी संघर्षका विवेचन करते हुए मैकिण्डरने 'ज्योग्रेफिकल पिवट आफ हिस्ट्री' (इतिहासकी भौगोलिक धुरी) शीर्षक लेख १९०४ ई० में लिखा।

उसने भविष्यवाणी की थी कि :—

"जो पूर्वी यूरोप पर शासन करता है वह हृद्‌देशका स्वामी बनेगा; जो हृद्‌देश पर शासन करता है वह विश्व द्वीपका स्वामी बनेगा; जो विश्वद्वीप पर शासन करता है वह विश्वका स्वामी बनेगा।"

पूर्वी योरोप पर रूसी प्रभुत्व विश्व संकट का कारण

द्वितीय महायुद्ध कालमें जर्मनीने पूर्वी यूरोप पर अधिकार कर हृद्‌देशका स्वामी बनना चाहा था परन्तु वह असफल हुआ और उसके स्थान पर मित्र राष्ट्रोंकी अदूरदर्शिताके कारण रूस पूर्वी यूरोप व हृददेशका स्वामी बन बैठा है और उपर्युक्त भविष्यवाणीके अगले चरणको पूरा करने का प्रयास कर रहा है। उत्तरमें शीत-प्रधान आर्कटिक महासागर, दक्षिण व पूर्व में अलंघ्य पर्वत तथा दक्षिण पश्चिममें मरुस्थलसे घिरा होनेके कारण हृद्‌देश सुरक्षाकी दृष्टिसे विश्वमें सबसे अधिक महत्वका क्षेत्र है। इसकी सीमासे १००० मील दूरी पर कैरो, अन्कारा, इस्तानबुल, दक्षिण पश्चिमी एशियाके तैल क्षेत्र, करांची, दिल्ली, कलकत्ता, जापान- अलास्का आदि स्थित हैं। हृद्‌देश पर रूस व चीनका अधिकार है और एक ही उड़ानमें एक घण्टेसे कम समयमें वे इन क्षेत्रों पर हवाई आक्रमण कर सकते हैं। यही कारण है कि यू. एस. ए. सामरिक संधियोंके द्वारा टर्की, ईरान, पाकिस्तान, थाईलैण्ड, द० वियेटनाम, फारमूसा, जापान आदिमें अपने अड्डे स्थापित कर साम्यवादी आक्रमणके प्रतिरोधका प्रबन्ध कर रहा है। हृद्‌देश की सीमाकी सबसे अधिक लम्बाईको घेरने वाला देश भारत है और यही ऐसा देश है जो अपनी सुरक्षाके लिये एक वर्ष पूर्व तक सबसे अधिक उदासीन था। अन्य देशोंने युद्ध विशारदोंकी भविष्यवाणीके अनुरूप अपनी व्यवस्थाएं करनेका प्रयास किया है। अमेरिकाके विद्वान स्पाकमैनके अनुसार जो तटीय प्रदेश पर नियंत्रण रखता है वह विश्वके देशोंके भाग्यका नियमन करता है। इसी प्रकारके विचारोंसे प्रेरितहोकर अमरीका ने सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्थाएं की हैं।

विश्व के विभिन्न गुट एवं भारतकी गुट-निरपेक्षता

आजका विश्व अनेक प्रकारके गुटोंके निर्माणमें संलग्न है। ये गुट या तो राज-नैतिक आधार पर गठित हैं या आर्थिक

With Best Compliments
From

EAST INDIA METAL SYNDICATE

9, Waterloo Street,
CALCUTTA-1.

GURANTEE BROKERS
of
M/S TATA IRON & STEEL CO., LTD.
and
M/S HINDUSTAN STEEL LTD.
(*UNIT* : DURGAPUR, ROURKELA, & BHILAI)
for
WEST BENGAL, BIHAR, ORISSA,
MADHYA PRADESH & ASSAM.

M. P. A.-11.

समस्त ग्राहकों संरक्षकोंएवं शुभचिन्तकों को
''दीपावली'' शुभकामनायें

B. D K.-8

आधार पर। कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं जिनमें धर्म व जातिके आधार पर गुटोंका निर्माण किया गया है। केनेडाको छोड़कर अमेरिकाके प्राय: सभी देश पैन-अमेरिकन यूनियनके रूपमें संगठित हैं। इस संगठन का ध्येय अमेरिकन देशोंमें परस्पर सहयोग की भावनाएं बनाये रखकर उनको बाहर के हस्तक्षेपसे मुक्त रखना है। इन देशों पर अमरीका का प्रभाव है परन्तु साम्य-वादी गुट अपना प्रभाव प्रसारित करनेका भरसक प्रयास कर रहा है। क्यूबामें रूस को सफलता भी प्राप्त हुई है।

दूसरा संगठन यूरोपमें आर्थिक दृष्टि से 'यूरोपियन कॉमन मार्केट'के नामसे गठित हुआ है। कॉमन मार्केटके द्वारा यूरोप पारस्परिक सहयोगसे अपने आपको आर्थिक संकटसे बचाना चाहता है। सैनिक संगठनकी दृष्टिसे विश्वमें नाटो, सेंटो मीडो आदि अनेक सन्धियाँ ऐंग्लो अमेरिकन गुट से प्रभावित और पूर्वी योरोपके देशोंके साथ वारसा पैक्ट आदि रूससे प्रभावित सन्धियां हैं। देखिये मानचित्र पृष्ठ ५४

भारत इसके किसी भी गुटका सदस्य न होते हुए भी कामनवेल्थका सदस्य है।

धार्मिक आधार पर भी गुट बन्दी

बीसवीं शताब्दीमें भी धर्म या जाति के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय गुटोंके निर्माण का प्रयास होता है। ईसाई मतके प्रचार के द्वारा यूरोपियन देशोंने पिछली शता-ब्दियोंमें ही अपने उपनिवेशों व साम्राज्य का प्रसार किया वे आज भी भारत के कुछ क्षेत्रोंमें स्वतंत्र ईसाई राज्यके निर्माणका प्रयास कर रहे हैं। करोड़ों रुपया इस कार्य पर व्यय होता है। इस कार्यकी दृष्टिसे २३ अगस्त १९४८में ४४ ईसाई देशोंने मिलकर एम्स्टर्डममें 'वर्ल्ड कौंन्सिल ऑफ चर्चेज' की स्थापना की। यह कौंसिल विश्वमें ईसाईयतका प्रचार करने वाली संस्थाओंमें परस्पर सहयोग स्थापित करती है।

मिस्र नेतृत्व कर रहा है अरब देशों का जो धर्म व जातिके आधार पर 'संयुक्त अरब गणराज्य'के रूपमें संगठित है। इस का एक रेडियो स्टेशन केवल इस्लामके प्रचारका ही कार्य करता है। अफ्रीकामें द्वितीय महायुद्धके पश्चात् धीरे-धीरे अनेक देश स्वतंत्र होते जा रहे हैं। इन लोगोंका अपना कोई विकसित धर्म नहीं है। मिस्र इन देशोंमें इस्लामके प्रचारका विधिवत् प्रसार कर रहा है।

भारतकी अदूरदर्शी नीतिका परिणाम

आज विश्वके राजनैतिक क्षेत्रमें प्रवृत्ति तो यह है कि अनेक देश मिलकर किसी न किसी आधार पर अपना गुट निर्माण कर अपनी शक्तिका विस्तार करते हैं। भारतने तो गुटोंसे अलग रहनेकी ही शपथ नहीं खाई है वरन् अपने आन्तरिक क्षेत्र में भी विघटनका द्वार खोल दिया है। नये-नये राज्योंका निर्माण इसका उदा-हरण है। विश्वमें धर्मानुयाइयोंकी संख्या में भारतका दूसरा स्थान आता है। ईसा-ईयोंकी संख्या ८५ करोड़ है और हिन्दू व मुसलमानोंकी संख्या ३६-३६ करोड़ है। यदि बौद्धोंको सम्मिलित किया जाय तो हिन्दू व बौद्ध मिलकर ५६ करोड़ हो जाते हैं अर्थात् मुसलमानोंसे २० करोड़ अधिक। सब दृष्टिकोणोंसे भारतकी विश्व में स्थिति अत्यन्त दृढ़ है परन्तु धर्म निर-पेक्षता तथा दोषपूर्ण विदेश व सुरक्षा नीतियोंके कारण भारत विश्वमें अपना एक प्रभावी गुट निर्माण नहीं कर सका है। धर्मनिरपेक्ष होनेके कारण सहधर्मियोंको

स्थापित : १९०१

मेले, प्रदर्शनी, सम्मेलन तथा विवाह आदि के लिये

डेरे, शामियाने, छोलदारी, पंडाल तथा मण्डप आदि के निर्माता

विक्रेता तथा किराये पर देने वाले

गिरधारी लाल केदारनाथ सिंघल

सुभाष बाजार, आगरा

फोन : ३३७७ ग्राम : टेण्टवाला

शाखायें—

किशनपोल बाजार, जयपुर, फोन : २८३४

साटा बाजार, इन्दौर, फोन : ५३७९

N.K.S.

अपने सभी कृपालु ग्राहकों,

तथा

एजेन्टों को

दीपावली के शुभ अवसर पर हम अपनी शुभकामनाये अर्पित करते हैं

काँच का सामान (ग्लास वेयर) के श्रेष्ठ निर्माता

सी० बी० ग्लास वर्क्स

एतमाद्दपुर—आगरा (उ० प्र०)

NK

आकर्षित नहीं किया जा सकता, धर्मका प्रसार करना तो बहुत दूरकी बात है। तटस्थताकी नीति साम्यवाद-विरोधी मोर्चा बनानेमें बाधक होती है। ये दोनों नीतियां पिछले १६ वर्षोंसे भारतके हितों पर चोट कर रही हैं। बीस वर्षोंके युद्धोंसे जर्जरित, पिछड़ा हुआ, जनसंख्याकी समस्यासे पीड़ित चीन उठ खड़ा हुआ और आज उसका क्षेत्रफल पिछले १४ वर्षोंमें १५ लाख वर्गमीलसे बढ़कर ३६ लाख वर्ग-मील हो गया है। दूसरी ओर भारत है जो अपनी हजारों वर्गमील भूमि तटस्थता व विश्वशांति की वेदी पर भेंट चढ़ा चुका है।

यह नीति बदली जाय

आज अवसर है कि एक शक्ति सम्पन्न राष्ट्रवादी नीतिका अवलम्बन किया जाय तिब्बत, ब्रह्मा, कोरिया, जापान, फोरमूसा थाई लैण्ड, बाली आदि देश हमारे सह-धर्मी हैं, उनको अपने निकट लानेका प्रयास किया जाना आवश्यक है। इसी प्रकार ४४ लाखके करीब प्रवासी भारतीय हैं जिनकी अभी तक उपेक्षा हुई है। नीचे दी हुई तालिकासे स्पष्ट हो जायेगा कि मौरीशस, फिजी और ब्रिटिश गायनामें हिन्दुओं की ही संख्या सबसे अधिक है। लंका, मलाया व ब्रह्मामें भी भारतीयोंकी संख्या बहुत अधिक है; परन्तुवहां दिन पर दिन भारतीयोंके अधिकारों पर चोट हो रही है और अभी तक भारत सरकार कोई प्रभावी कदम नहीं उठा पाई है। जिन क्षेत्रोंमें भारतीयोंने कठिन व प्रतिकूल जलवायु में जंगल साफ कर बागान बनाये, रेल व सड़कें बिछाईं और अपना ख़ून-पसीना एक कर उन्हें समृद्ध बनाया, क्या आज उन्हें वहाँ सम्मानका जीवन व्यतीत करनेका भी अधिकार नहीं है? क्या आज जहाँ भारतीय बहुसंख्यक हैं वहां भारतीयोंका प्रभुत्व नहीं होना चाहिए? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका हल हमें ढूंढ़ना होगा अन्यथा कुछ वर्षोंमें ही प्रवासी भारतीय निर्वासित होंगे और भारतीय सरकारको फिरसे पुनर्वास मंत्रालय खोलना पड़ेगा।

भारतकी स्थितिका उपर्युक्त विवेचन स्पष्ट करता है कि भारतकी महानता सुप्त है और उसकी महानता की संभावनाओंको साकार करनेके लिये साहसपूर्ण राष्ट्रीय नीतियोंकी आवश्यकता है।

प्रवासी भारतीयों का विश्व में वितरण

देश का नाम	प्रवासी भारतीयोंकी संख्या	कुल जनसंख्या में भारतीयों का अनुपात
मौरीशस	४०८,०००	६७.०
फिजी	१८४,०९०	४९.२
ब्रि० गायना	२५८,०४०	४७.७
डचगायना	६४,०००	२६.०
लंका	१,६१०,५६१	१७.६
ट्रिनिडाड	१२६,३४५	१६.१
मलाया	६९५,९८५	११.३
सिंगापुर	१३४,६००	८.७
कीनिया	१६९,९००	६.६
नैटाल	१६४,९००	६.६
ब्रह्मा	७४८,८००	३.९

●

दीपावली
के
पावन पर्व
पर
शुभ
कामनायें

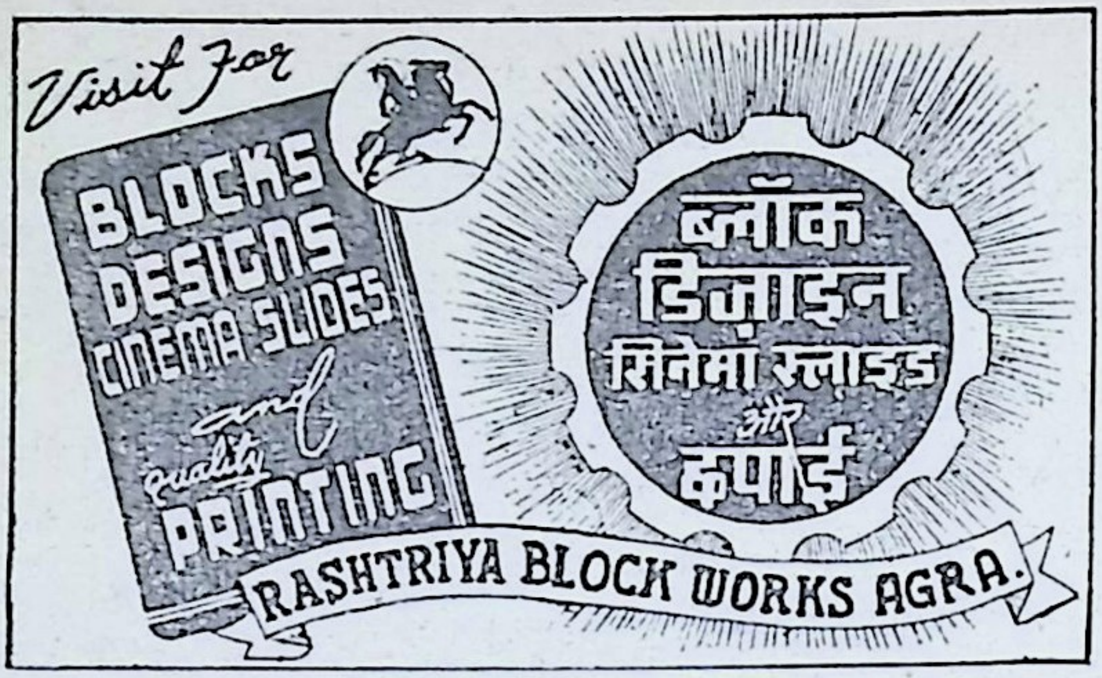

निःशुल्क परामर्श

कठिन व पुराने रोगों के निदान एवं चिकित्सा के लिये आज ही लिखिये,
पत्रोत्तर के लिये लिफाफा या जवाबी पत्र भेजिये !
चन्द्र रसायन कार्यालय (औषधालय) (रजिस्टर्ड)
जलालाबाद, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

दीपावली - अभिनन्दन

विनयकृष्ण उमेशचन्द्र

अनाज व तिलहन के आढ़तिया

४२, काली कृष्णा टेगोर स्ट्रीट

कलकत्ता-७

फोन : ३३-१६६४ तार : ग्लोरियस

M.P.A.-79

Rajkumar Brothers

75, Clive Street, (Raja Katra)

CALCUTTA-7

Dial 33-3688 *Gram*-Bagarwala

Manufacturers & Order Suppliers for All kinds of Wire Nails, Panel Pins, Barbed wires & H. B. Wire,
ENQUIRY SOLICITED

M.PA-78

कर्नल रामस्वरूप

दुश्मन भी जिसके शौर्य का लोहा मानते हैं—

हमारी विजयशालिनी स्थल सेना

कई बार लोगोंके मनमें यह प्रश्न उठता है कि आजके वैज्ञानिक युगमें, जब प्रक्षेपणास्त्रों की मारसे सम्पूर्ण विश्व का संहार करने की अद्भुत शक्ति और कौशल्य कुछ देशोंने प्राप्त कर लिया हैं, स्थल सेना की क्या आवश्यकता रह जाती है ? किसी समय किसी राष्ट्र की सैनिक शक्ति का मापदण्ड उसके स्थल सैनिकों की संख्या माना जाता था। पर क्या आजभी सैनिकोंकी संख्याउसकी शक्ति का मापदण्ड बन सकती है ?

स्थल सेनाकी आवश्यकता

प्रश्न जितना कठिन मालूम पड़ता है वास्तवमें वह उतना कठिन नहीं है। कारण जिन राष्ट्रोंने मानव मात्र के संहारके प्रभावी अस्त्र शस्त्रों का आविष्कार कर लिया है वे भी आज बड़ी भारी स्थल सेना रखते हैं और उस परकरोड़ों रुपया व्यय करते हैं। यदि प्रक्षेपणास्त्रों की उपलब्धिके बाद स्थल सेना का कोई महत्व न होता तो ये राष्ट्र इतनी विशाल स्थल सेना रखते ही क्यों ? जब अण्वास्त्रों को बनाने वाले राष्ट्रों को स्थल सेना की इतनी आवश्यकता और महत्ता अनुभव होती है तब भारत जैसे देश को अपने रक्षार्थ स्थल सेना पर ही विशेष रुपसे निर्भर रहना पड़े तो आश्चर्य भी क्या ? सच बात तो यह है कि युद्ध चाहे आकाशमें लड़ा जाय या समुद्रमें, वह लड़ा जाता है स्थल विशेष की प्राप्ति अथवा रक्षाके लिए ही। अत: अन्तिम और निर्णायक युद्ध तो स्थल सेना को ही लड़ना पड़ता है। विजयके प्रतीक अपने झण्डे को गाड़ने का सौभाग्य भी स्थल सेना को ही मिलता है।

प्रधान सेनापति श्री चौधरी

प्राचीनकाल की स्थल सेना

स्थल सेना का इतिहास भी वायु अथवा नौ-सेनासे पर्याप्त प्राचीन है। यहां तक कि ऋग्वेद में आर्यों की स्थल-सेना का विस्तृत विवरण उपलब्ध है। आर्यों की सेनामें पैदल और घुड़सवार सैनिक रहते थे। इन दोनों को मिलाकर स्थल सेना

का निर्माण होता था। घुड़सवारीके अतिरिक्त सेनापति और अन्य युद्ध संचालक, रथोंका भी उपयोग करते थे। उस समय उनके प्रमुख शस्त्र थे लोहेके भाले व खड्ग तथा हिरनके सींगोंके बाण।

महाभारत कालमें स्थल सेना का और विकास दृष्टिगोचर होता है। उसमें स्थल सेनाके चार प्रमुख अङ्ग बताये गये हैं, यथा-पैदल, अश्वारोही गज सेना तथा रथ सेना। भारतमें लड़े गये बादके युद्धों में भी स्थल सेना का यही स्वरुप अधिक निखरे रुपमें दिखाई देता है। हाँ, हथियारोंमें अवश्य ही नये अविष्कार होते रहे हैं। आज प्राचीन कालके हथियार पूर्णत: निरुपयोगी हो चुके हैं। खड्ग और बाण का स्थान अब बन्दूकोंने ले लिया है। तोप खाना आज की स्थल सेना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अङ्ग है। बन्दूक व तोपके अविष्कारसे संहारक शक्ति भी पहले की तुलनामें पर्याप्त बढ़ गई है।

स्थल सेना का गठन

स्थल सेनाके प्रमुख अंगो का गठन और कार्य इस प्रकार रहता है।—

कोर (अनीकिनी)—सामान्यत: सम्पूर्ण स्थल सेनाको तीन खण्डोंमें विभाजित किया जाता है। इन खण्डो को कोर या अनीकिनी कहते है। इसका संचालन लेफ्टिनेन्ट जनरल करता है——

डिवीजन (चमू)—विभिन्न देशों में डिविजनके सैनिकों की संख्या में कुछ अन्तर रहता है। सामान्यत: एक डिवीजनमें १२ हजारसे लेकर २० हजार तक सैनिक रहते हैं। इसका संचालन मेजर जनरल करता है।

ब्रिगेड (पृतना)—इसका संचालक ब्रिगेडियर अथवा पृतनापति कहलाता है। तीन ब्रिगेड मिलाकर एक डिवीजन की रचना होती है। ब्रिगेड एक स्वयंपूर्ण लड़ाकू विरचना है। किसी स्थान पर सैनिक कार्रवाई करनेके लिए यह पर्याप्त है। इसमें प्रशासनिक सेना और आर्टिलरी (तोपखाना) भी सम्मिलित रहता है। सामान्यत:४ से५ हजार सैनिक एक ब्रिगेड में रहते हैं। अमरीकामें इसको 'रेजिमेन्टल कम्बेटटीम' कहते है।

बटालियन (वाहिनी)—सभी श्रेणी के ४०० से ८ सौ सैनिकों की यह रचना सामान्यत: पैदल लड़ाकू सैनिकोंसे बनती है। इसका संचालन लेफ्टिनेन्ट कर्नल करता है।

कम्पनी (गण)—चारसे लेकर ६ कम्पनियों को मिला कर एक बटालियन बनती है। कम्पनीमें सैनिकों की संख्या सामान्यत: ८० से लेकर १२० तक रहती है।

प्लैटून (गुल्म)—एक प्लैटूनमें सामान्यत: २५—३० सैनिक होते हैं। तीन या चार प्लैटून मिलाकर एक कम्पनी की रचना होती है।

सेक्शन—यह सेनाकी सबसे छोटीरचना है। इसमें ८ से१२ तक सैनिक होते है। तीन या चार सेक्शन मिलाकर एक प्लैटून बनता है। इसका संचालन एक सीनियर नान-कमीशंड आफिसर करता है।

अन्य विभाग

स्थल सेनाके इन अङ्गोंके अतिरिक्त आर्टिलरी विभाग, सिगनल विभाग तथा इञ्जिनियरिंग विभाग भी कम महत्व के नहीं होते। आर्टिलरी विभाग तोपों से हमला करने, सिगनल विभाग संचार साधनों तथा तार व टेलीफोन की व्यवस्था करने तथा इञ्जिनियरिंग विभाग

शत्रु का खून पीनेवाली ये बन्दूकें अब अपने देश में पर्याप्त मात्रामें बनने लगी हैं।

आवश्यक सड़कों, पुलों, सुरंगों हवाई पट्टियों आदिके निर्माणके लिए उत्तरदायी रहता है। सेनाके लिए जल आदि की व्यवस्था भी इञ्जिनियरिंग विभाग ही करता करता है।

व्यूह रचना और शिक्षा

स्थलसेनाकी व्यूहरचना और शिक्षा भी युद्धके विभिन्न स्वरूपोंको ध्यानमें रखकर करनी पड़ती है। अब पहले जैसे धर्म-युद्ध तो होते नहीं, जब दोनों ओर की सेनायें किसी निर्धारित समयमें निश्चित मैदानमें आकर अपने शौर्य और पराक्रमका निपटारा कर लें। अब तो युद्ध कहीं भी हो सकता है और किसी भी समय हो सकता है। अत: सैनिकोंको सब प्रकार की परिस्थितिमें शत्रुका मुकाबला करनेके लिए सिद्ध रहना पड़ता है। मैदानी इलाकोंमें तथा पर्वतीय प्रदेशोंमें युद्ध का स्वरूप बिल्कुल ही भिन्नप्रकारका होता है। पर्वतीय-युद्धमें विजय पाने के लिए छापामार पद्धतिका अवलम्बन करना पड़ता है। कोकंणके पर्वतीय प्रदेशमें विशाल मुगल सेनाओंकी पराजय और मराठोंकी छोटी-मोटी सैनिक टुकड़ियोंकी विजय का रहस्य भी छापामार युद्ध कलामें ही छिपा हुआ है।

साज-सज्जा और हथियार

युद्धके इन विभिन्न स्वरूपोंके अनुसार ही सैनिकोंकी साजसज्जा और शस्त्रास्त्रों का भी चयन करना पड़ता है। यदि इस चयनमें कोई भूल हो जाय तो कुशलसे कुशल सेनाकी भी पराजय अवश्यम्भावी हो जाती है। विशेषकर पर्वतीय इलाकोंमें लड़नेके लिए हलके हथियारोंकी आवश्यकता पड़ती है। बड़ी-बड़ी तोपें वहां बेकार सिद्ध होती हैं। पर्वत यदि बर्फीले

हों तो सैनिकों को विशेषप्रकारके कपड़ोंसे सुसज्ज करना पड़ता है। यदि ठण्डसे उनकी रक्षा न की जा सकी तो बेमौत मरने के लिए वाध्य हो जायँगे।

भारतीय जवानों का पराक्रम

जहां तक भारतीय सैनिकोंके शौर्य और पराक्रमका प्रश्न है, संपूर्ण विश्व उनका लोहा मानता है। पुराने समयकी बातें यदि हम छोड़ भी दें तो वर्तमान युगमें भी प्रथम व द्वितीय महायुद्धमें तथा तत्पश्चात् भारतके स्वाधीनता प्राप्तिके बाद कश्मीर, कोरिया तथा कांगोमें भारतीय सैनिकोंने जिस शौर्य और चातुर्यका परिचय दिया है उसे देखकर विश्वके बड़े-बड़े राष्ट्र और उनके सेना-विशेषज्ञ चकित रह गये हैं। लेफ्टिनेन्ट जनरल हेण्डरसन ब्रुक्सने भारतीय सैनिकोंके पराक्रमसे अभिभूत होकर अपनी डायरीमें लिखा कि "The Indian soldier is not only the servent of the people, but is second to none amongst the fighting men in the armies of the world."

प्रथम महायुद्धमें फ्रांस, वेल्जियम, पैलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, मेसोपोटामिया, ईडन आदि स्थानों पर अतुलनीय पराक्रम के विशेष पुरस्कार पाने वाले भारतीय सैनिकों की संख्या दस-बीस न होकर बारह हजार नौ सौ आठ थी जो किसी भी अन्य देशसे अधिक थी। द्वितीय महायुद्धमें भी भारतके लाखों जवानोंने देश-विदेशके कोने-कोनेमें अपने लहूसे भारतीय शौर्यकी अमिट गाथायें लिखकर भारतको गौरवान्वित किया था। इन भारतीय सैनिकोंके शौर्यका वर्णन करते हुए लंदन के प्रमुख पत्र इविनिंग स्टैण्डर्ड ने लिखा था कि—

"The victories gained by the Indian troops in the bloody battle of Barentu, Amara, Mashawa and Karen have won for them everlasting glory and name and lifted their country to the loftier pedestal of honour. The mighty valour, indomitable courage and macthless spirit of sacrifice exhibited by fighting men of India in the battle of Tunisia shall ever live in the pages of history."

सुप्रसिद्ध इतिहासकार सर कॅम्पटन मैकेनने तो यहां तक लिखा कि द्वितीय महायुद्ध में तुलनात्मक दृष्टिसे भारतीय सैनिकों के शौर्य के मुकाबलेमें अन्य देश पर्याप्त पीछे पड़ जाते हैं।

संक्षेपमें, अति प्राचीनकालसे आधुनिककाल तकका इतिहास भारतीय स्थल सेनाके शौर्य और पराक्रमसे भरा पड़ा है। अयोग्य मार्गदर्शन एवं साजसज्जाकी कमीके कारण गतवर्ष नेफाके मोर्चें पर उसे भले ही पराजयका सामना करना पड़ा हो पर उससे उसके कर्त्तृत्वमें कोई कमी नहीं आई। आज भी प्रत्येक जवान उस अपमानका वदला लेनेके लिए व्याकुल दिखाई देता है। उपयुक्त अवसर आनेपर वह अपने शौर्य से उस पराजयके कलंक को धोकर भारतके स्वाभिमानका झण्डा हिमालयके उत्तुंग शिखरों पर फहरायेगा, इसमें संदेह नहीं। * *

यही समय है जब देशके उद्योग अपने आपको आधुनिक बनाएं और अपने ढाँचेमें परिवर्तन करें। यह व्यवस्थापकों और मजदूरोंके मेल-जोल से ही सम्भव है। सौभाग्यसे इस समय देशमें ऐसे मेल-जोलका उचित वातावरण है। हमें यह अनुभव करना चाहिए कि आज हम अपने रक्षा और विकासके प्रयत्नोंमें एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं।

*

देश रक्षा में उद्योगों का महत्व

सी० सुब्रह्मण्यम्
उद्योग मन्त्री, भारत सरकार

पिछले एक वर्ष से भारत एक महत्त्वपूर्ण दौरसे गुजर रहा है। इस दौरान भारतमें जैसा जन-जागरण हुआ वैसा देशके इतिहासमें कभी नहीं देखा गया। देश-प्रेमकी एक महान् लहर आई जो भारतके स्वतंत्रता संग्रामके दिनोंकी याद दिलाती है। इस स्थितिमें जनताका उत्साह भी प्रशंसनीय है। जनताके जोशमें क्षोभ नहीं, बल्कि देशके लिए मर मिटने की भावना के दर्शन होते हैं। जनताने लोकतंत्रको अपना लिया है और उसमें अपना दायित्व समझने लगी है। यह हमारी महान् सफलता है। अपनी कमजोरियोंके बावजूद भी हम एक नए समाजका निर्माण कर रहे हैं और जन-जनके हृदयमें भारतीयताकी नई भावना फूंक रहे हैं।

चुनौती के दो पहलू

भारतीय जनतंत्रको यह चुनौती दो प्रकारकी है। इसका एक पहलू तो स्पष्ट है और वह अपेक्षाकृत कम अवधिका है। वह है सैनिक खतरेका सामना। यह सैनिक नीतिका प्रश्न है। लेकिन हमें अपनी सैनिक शक्ति मजबूत करनेके लिए भी अपने आपको आर्थिक दृष्टिसे मजबूत करना होगा, निस्सन्देह, आजके युगमें सेनाको मजबूत औद्योगिक आधारकी जरूरत है। उद्योग भी आधुनिक किस्मके होने चाहिए। औद्योगिक शिल्प और विज्ञानकी प्रगति पर ही सैनिक साज सामानका विकास निर्भर है और इनका आपसमें गहरा सम्बन्ध है। कभी-कभी तो युद्ध कालमें ही नए उद्योगों और शिल्पोंका जन्म होता है। आधुनिक युगमें, सैनिक दृष्टिसे वही देश बलवान समझा जाता है जो औद्योगिक क्षेत्रमें असाधारण प्रगति करे और अपने शत्रुसे आगे निकल जाय। उदाहरणके लिए एटम बम का आविष्कार करनेकी दौड़में जो देश आगे निकले वही शक्तिशाली कहलाए। अन्तरिक्ष अनुसंधानकी दौड़में भी सैनिक शक्ति काम कर रही है। अर्थात् युद्धसे पहले, युद्धके

—अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

चीन व पाकिस्तान की सम्मिलित शक्ति से

क्या भारत लोहा ले सकता है

?

गत वर्ष नेफामें सेनाकी पराजय और तत्पश्चात् चीन और पाकिस्तानके गठबन्धनने भारतीय मानस में जो सबसे बड़ा प्रश्न उपस्थित किया है वह यही है कि क्या भारत, पाक और चीनकी सम्मिलित शक्ति से लोहा ले सकता है ? यद्यपि चीन और पाकिस्तान में न कोई सैद्धान्तिक साम्य है और न कोई खूनका ही रिश्ता है पर भारत को नीचा दिखानेके लिए पाकिस्तान चीन की सब प्रकारकी मदद देनेके लिए सिद्ध है। ऐसा करते समय स्वयं उसका भी अस्तित्व खतरेमें पड़ सकता है, इस बातकी उसे तनिक भी चिन्ता नहीं। चिन्ता केवल एक बात की है कि भारत का अनिष्ट कैसे हो ?

आदर्शों की स्पष्टता

चाहे दुर्बुद्धि और द्वेषके ही कारण क्यों न हो जब पाकिस्तान चीनसे मिल ही गया है तो भारतको भी दोनों की सम्मिलित शक्तिका मुकाबला करनेकी तैयारी करनी होगी। युद्धकी तैयारी वास्तवमें शान्तिकालमें हुआ करती है। यह काम महीनोंका नहीं, वर्षों का हुआ करता है। युद्ध योजनाका निर्माण, युद्ध-शास्त्रीय और अर्थ शास्त्रीय दोनों दृष्टियों से करना पड़ता है। शत्रु कौन है ? उनके लड़ने के हथियार क्या हैं ? कहांसे लड़ना होगा, और किन-किन से लड़ना होगा ? शत्रु सेना की प्रकृति क्या है ? इन सब बातोंके आधार पर ही तैयारीके स्वरूपका निर्धारण किया जाता है। अत: किसी भी युद्धके लिए आवश्यक है कि राष्ट्रके आदर्श और उद्देश्य स्पष्ट हों। उसीके आधार पर ही सेनाका निर्माण और युद्धनीतिका निर्धारण किया जाता है।

भौगोलिक स्थिति का महत्व

साथ ही किसी युद्धके निर्णायक तत्वों में देशोंकी भौगोलिक स्थिति भी पर्याप्त

महत्व रखती है। उत्तरी सीमा पर पाक और चीनकी साजिश भारतके लिए संकट का कारण है, इसमें सन्देह नहीं। साथ ही पूर्वकी ओर पूर्वी पाकिस्तान और चीन अधिकृत चुम्बीघाटी इतनी नजदीक और सामरिक दृष्टिसे इतनी महत्वपूर्ण है कि उस ८५मील चौड़े भागपर यदि दोनों मिल-कर कब्जा करलें तो सम्पूर्ण असम प्रदेशसे भारतका सम्बन्ध ही विच्छेद हो जाय।

तस्वीर का दूसरा पहलू

पर यह तो तस्वीरका केवल एक ही पहलू है। इसका दूसरा पहलू कम महत्व का नहीं। पूर्वी पाकिस्तान तीनों ओरसे भारतसे घिरा हुआ है। वह पश्चिम पाकि-स्तान से इतनी दूर है और कटा हुआ है कि प्रत्यक्ष युद्धकी स्थितिमें कराची उसकी रक्षाके लिए धाये इसके पूर्व ही उसका स्वतन्त्र अस्तित्व भी समाप्त किया जा सकता है। यह भी स्मरणीय है कि पूर्व पाकिस्तान अभी तक पश्चिम पाकिस्तान के साथ भावात्मक ऐक्य प्रस्थापित नहीं कर पाया है। उसकी स्वतन्त्र होनेकी सदैव इच्छा रही है। ऐसे किसी निर्णायक युद्धके समय यदि वहांकी जनता भी विद्रोह कर बैठे तो कोई आश्चर्य नहीं।

जहां तक उत्तर पश्चिममें चीन और पाकिस्तानके गठजोड़से उत्पन्न संकटका प्रश्न है--वह यद्यपि गंभीर स्वरूपका है तथापि उन दोनोंकी भी स्थिति निरापद नहीं है। तिब्बत व सिक्यांग प्रदेश चीनके चंगुल से मुक्त होनेके लिए छटपटा रहे हैं। यदाकदा उनके विद्रोह की खबरें भी आती रहती हैं। उधर अफगानिस्तान पाकिस्तानका उतना ही कट्टर दुश्मन है, जितना पाकिस्तान भारतका। पूर्वमें फारमोसामें राष्ट्रवादी चीन है जो बेसब्री से उस घड़ीका इन्तजार कर रहा है जब मौका पाते ही वह कम्युनिस्ट चीन पर कब्जा कर सके।

उपरोक्त स्थितिसे स्पष्ट है कि यदि भारत पाक और चीनसे घिरा है तो स्वयं पाक व चीन भी शत्रु राष्ट्रों और प्रदेशों से घिरे हैं। शत्रु का शत्रु अपना मित्र होता है, राजनीतिके इस सिद्धान्तके अनु-सार यदि अफगानिस्तान और फारमोसा सरकारसे उचित सम्बन्ध निर्माण कर भारत सिक्यांग और तिब्बतकी स्वाधीनता में रत वहांके विद्रोहियोंको अपनी ओर मिलाने और उन्हें सहायता प्रदान करनेमें सफल हो सका तो चीन और पाकिस्तानको भारतके विरुद्ध किसी निर्णायक समरमें, लेने के देने पड़ जायेंगे।

शत्रु-मित्र विचार

पाकिस्तान से लड़ाई हो तो वह मैदान में होगी। पाकिस्तान तीसरे दर्जे का राष्ट्र है। दूसरी ओर चीन पहले दर्जे का राष्ट्र है। उससे लड़ने के वास्ते सारे राष्ट्र की सम्पूर्ण शक्ति का संकलन (मोबिलाइजेशन) करना अपेक्षित होगा। सारे राष्ट्र को युद्ध के वास्ते तैयार करना हंसी खेल नहीं। चीनके साथ अकेला पाकिस्तान ही नहीं है। बर्मा और हिन्देशिया भी हैं। सिलोन आदि अपने को तटस्थ कहते हैं। परन्तु भारत के साथ नहीं है यह निश्चित है। इसी प्रकार पाकिस्तान के विरुद्ध ब्रिटेन और अमेरिका भारत की सहायता कभी न करेंगे। जो कुछ देंगे अल्प मात्रामें देंगे जिससे उनका यश कलंकित न हो।

रूस पर निर्भर रहना घातक

इसी प्रकार रूस भी चीन के विरुद्ध कभी न जायगा। क्योंकि दोनोंके उद्देश्य

तानाशाह मार्शल अयूब खां

एक हैं। दूसरे रूस चीन के परस्पर लड़ने से अमेरिका की शक्ति बढ़ जाएगी। यह दोनों को अपेक्षित नहीं। इसीलिए भारत को न केवल चीन से अपितु पाकिस्तान बर्मा और हिन्देशिया से भी लड़ना पड़ेगा। हिन्देशिया से लड़ाई समुद्र में होगी या आकाश में होगी। दस करोड़ आबादी का देश आज एशिया भरमें सर्वाधिक शक्तिशाली नौ बेड़े का मालिक है। हवाई दल भी इसका बलवान है। डा० सुकर्णो का यह केवल दर्प ही नहीं है। सोवियत रूस उसको बराबर मदद दे रहा है। उसके वैज्ञानिक भारत में शिक्षा पाते है व हैनान (चीन) में गुरिल्ला युद्ध करना सीखते हैं। भारत को सहायता थाईलैण्ड और मलएशिया देना चाहे भी तो कुछ दे नहीं सकते। क्योंकि वे दोनों कमजोर राष्ट्र हैं। अत: हमें मानना चाहिए कि चीन, पाकिस्तान, हिन्देशिया की संयुक्त शक्ति से जल-थल-नभ में भारत को अकेले ही लड़ना पड़ेगा। जो सहायता मिलेगी वह निर्णायक रूपकी न होगी।

आंग्ल-अमेरिका किधर ?

ट्रान्समीटर करार समाप्त हो गया। बोकारो में इस्पात का प्लान्ट लगानेमें अमेरिका मदद देगा, यह बात सात साल तक आशा करने के बाद खत्म हो गई। एफ १०४ विमान तो उसने देने से ही इन्कार कर दिया। अमेरिका के इस रवैया को देखते हुए उससे सहायता पाने की आशा करना क्या दूरदर्शितापूर्ण-नीति होगी ? ब्रिटेन ने चीन के वायकाउन्ट विमान दिएं हैं और अणुवमों का परीक्षण जारी रखने के लिए आवश्यक सामग्री दी है। अतः इन दोनों की मदद का विश्वास करना अपने को धोखे में रखना है। भारत एक प्रबल राष्ट्र है। आग्नेय एशिया में उसकी तूती बोले जैसे यह चीन और हिंदएशिया नहीं चाहता उसी प्रकार एग्लो अमेरिकाभी नहीं चाहते।

मिस्र बनाम भारत

इस देशमें एक वर्ग है जो खुल्लम-खुल्ला कहता है कि हमें रूस से अधिकाधिक मदद लेनी चाहिए और वह रूसी पेट्रौल और तेल को इण्डियन आयल का नाम देकर सगर्व बेचता है। किन्तु मिग-२१ आज तक भी एक दर्जन नहीं पहुंचे हैं। मिग–२१ बनाने की तैयारी है, मिग २५ नहीं जो अद्यतन रूसी विमान है। इसीलिए रूसी सहायता पर भरोसा करके भारत युद्धकी तैयारी नहीं कर सकता। हमको देखना चाहिए कि मिस्र ने संकल्प किया और बिना किसी सहायता के पनडुब्बी बनाने लगा है। उसने किसी से इसके बारे में सहायता नहीं मांगी, किसी से बुद्धि भी उधार नहीं ली और पनडुब्बी बनाने

लगा। वह राकेट और मिसाइल भी तैयार करता है। औद्योगिक दृष्टि से मिश्र प्रथम पंक्ति का राष्ट्र नहीं है। यदि वह मिसाइल राकेट व पनडुब्बी बना सकता है तो भारत क्यों नहीं? संकल्प और आत्मविश्वास की आवश्यकताभर है।

जनशक्ति ही सब कुछ नहीं

चीन पाकिस्तान और हिन्देशियाकी सम्मिलित जनसंख्या लगभग एक अरब होगी। इसके मुकाबलेसे भारतकी ४५ करोड़ है। जनशक्तिके इस अन्तरको देखकर कौरव पाण्डव की ११ और ८ अक्षौहिणी सेनाका स्मरण करना चाहिए। संख्या बल दहशत अवश्य पैदा करता है। पर विजय नहीं देता। यदि संख्याबल ही युद्धका निर्णायक तत्व होता तो बाबर कभी विजेता न हो सकता और न स्पेनिश, मैक्सिको विजय कर सकते। विजय मिलती है युद्ध प्रणालीसे और शस्त्र बलसे। जापान उध्वस्त हो गया क्योंकि उसके पास अमेरिकाके समान अणुबम नहीं था। मित्र-सेना फ्रेन्च तट पर उतरनेमें सफल हुई, क्योंकि जर्मनी का हवाई दल मित्रोंके हवाई दलसे कमजोर था। हिटलर यदि अणुबमका प्रयोग करता तो क्या मित्र-सेना पश्चिमी तट पर उतर सकती?

पाक को अमरीकी सहायता

पाकिस्तानको १९५४ के बादसे अमेरिका प्रतिवर्ष लगभग ५ अरब रु० की सैनिक सहायता दे रहा है। पाकिस्तान को अब तक अमेरिका ५० अरब रु० की सैनिक सहायता पिछले १० वर्षोंमें दे चुका है। पर पाकिस्तान के सैनिक उन अद्यतन शास्त्रास्त्रोंको चलाना भी जानते हैं; यह संदिग्ध है। अन्यथा एफ–१०४ के दो स्क्वेड्रन पाकर भी पाकिस्तान और दो की मांग न करता, अमेरिकी वैमानिक पाकिस्तानमें न रहते।

भारी तैयारी आवश्यक

अमेरिकाने पाकिस्तानके मझोले और हल्के टैंक, थल-जलगामी क्राफ्ट-टैंक, जल-थल-नभगामी क्राफ्ट, वोल्गा नदी पार करने योग्य जल-संचारी शस्त्रास्त्र, पोत आदि दिए हैं। पाकिस्तानके इन शस्त्रास्त्रोंसे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि लड़ाई, संकल्प, दृढ़ निश्चय और अन्तिम दम तक डटे रहनेके शक्तिके बल पर लड़ी जाती है। यदि आज दक्षिणी अफ्रीकाके मुट्ठी भर गोरे सारे अफ्रीकासे लड़ाई लड़नेका साहस करनेको तैयार हैं, इजराइल सम्पूर्ण अरब राष्ट्रोंके वैरके मध्य जीवित है तो भारत भी चीन, पाकिस्तानसे लड़नेकी तैयारी कर सकता है और इनकी संयुक्त शक्तिको पराजित कर सकता है। निस्सन्देह भारी तैयारी करनी पड़ेगी।

परम्परागत शस्त्रास्त्रों का महत्व

अणुयुगमें भी, राकेटों, मिसाइलोंके निकल आने पर भी, अग्निवाण और प्रक्षेपास्त्रोंका चलन शुरू हो जाने पर भी, परंपरागत-हथियारोंका महत्व आज भी कम नहीं हुआ। तोप, बन्दूक आज भी लड़ाईके लिए निरुपयोगी नहीं हुए। पारम्परिक शस्त्रास्त्रोंकी विनाशक शक्ति अणु बमों, प्रक्षेपास्त्रों और अग्निवाणोंसे कम है, परन्तु इसकी शक्ति मर्यादित होते हुए भी इनका उपयोग आज भी है। चीन ने भारतके विरोधमें सन् १९६२ में पारम्परिक शस्त्रोंका ही उपयोग किया था। भारतीय सैनिक लड़ाकू हैं और चीनी सिपाहीसे सौगुना अधिक योग्य है, यह

कहनेकी आवश्यकता नहीं है। नेफाकी पराजय सैनिकोंके कारण नहीं, अपितु राजनीतिज्ञोंकी भ्रामक राजनीतिके कारण मिली। उनकी दुविधा आज भी जारी है। चीनसे लड़ाई होना अनिवार्य है। यह मानते हुए भी वह आज भी सन्धि-चर्चाकी आशा लगाये हुए हैं। उनकी यह आशा और भ्रान्त-चिन्तना ही पराजयका मूल कारण है।

शस्त्रास्त्रों में पीछे नहीं

भारतके पास ऐसी तोपें हैं जिसकी मार या पल्लो ५० मील दूर तक की है। इसका अर्थ है कि चीनी सेना मैदानमें लड़ती तो वह रुईके समान उड़ जाती, लेकिन ५० मील दूर मार करने वाली तोपें भारी होती हैं, उनको ऊपर ले जाने के लिए भारी टैंकर चाहिए। अत: यह अच्छी पक्की सड़कों पर ही ले जाए जा सकते हैं। रास्ता जहाँ ठीक नहीं मार्ग पहाड़ी है, वहां इनका कोई उपयोग नहीं। अत: लड़ाईका स्थान और वहां की जलवायु एवं परिस्थितिके अनुकूल ही शस्त्रास्त्र चाहिए।

चीनसे लद्दाख, नेफा और हिमालय प्रदेशकी हिमरेखा एवं मैकमोहन पंक्तिके साथ ही साथ उत्तर प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू और कश्मीर में भी हमें लड़ना होगा। इन प्रदेशोंमें अच्छे रास्तोंका अभाव है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिन हथियारोंको ले जाने के वास्ते प्रशस्त-पथ चाहिए, वे शस्त्रास्त्र

यहां पर उपयोगी सिद्ध न होंगे। अभी हम उनको वहां ले भी न जा सकेंगे। अत: हमें चीनसे लड़ने के लिये कम भार के, हल्के वर्षा और हिम वर्षा दोनोंमें एक समान रूपसे कार्यक्षम हथियार चाहिए। ऐसे बहुगुणी हथियार पारम्परिक हथियार ही है। रायफल, स्वयंचालित बंदूक, मध्यम मशीनगन, हल्के टैंक, पर्वतीय तोपें, विभिन्न प्रकार के गोले। १९६२के संग्राममें चीनियोंने इनको ही बरता था और आगे भी इनको ही बरतेंगे। अत: जहां तक शस्त्रास्त्रों का प्रश्न है, भारतके पास चीनसे लड़ने की शक्ति है। यदि चीन की लड़ाई करनेकी शक्ति नष्ट हो गई तो उसके मित्रों की हिम्मत भी लड़नेकी न होगी। इसका यह अर्थ नहीं कि हमको शस्त्रास्त्रों का संग्रह न करना चाहिए या उनकी दुरुस्ती या मरम्मत करनेकी व्यवस्था न करनी चाहिए। चीन प्रक्षेप्यास्त्र बरत सकता है। इस सम्भावनाके लिए भारत को तैयार रहना चाहिए।

हिन्देशिया किधर ?

जहाँ तक हिन्देशिया का प्रश्न है वह १००० द्वीपोंका पुंज है। उससे समुद्र और आकाशमें ही लड़ना होगा। भारतके झण्डे का अपमान करने वाला हिन्देशिया भारतका मित्र नहीं, चीनका मित्र है, यह स्मरण रखना चाहिए। वह भी सोचता है कि १० नहीं तो २०-२५ साल में सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया उसका हो जाएगा। १० करोड़ जनसंख्याका वह देश है, जब कि मलएशिया एक करोड़का और फिलीपीन ३ करोड़ का है। उसका इस क्षेत्रमें एक मात्र विरोधी भारत है। इस वास्ते भारतके प्रति उसका भाव बदला हुआ है।

सैनिक स्थिति

कुल जनसंख्याका एक दशांश सेनामें लिया जा सकता है। १८ साल या २० सालसे ४० सालके ऊपरके प्रत्येक

व्यक्तिको सैनिक सेवाके वास्ते बुलाया जा सकता है। अत: चीनी सेनामें ७०-८० लाख सैनिक अधिकसे अधिक हो सकते हैं। चीन और चीनके मित्रोंकी संयुक्त शक्ति एक करोड़ हो सकती है। परन्तु यह सारी सेना एक जगह एकत्र होकर भारतसे न लड़ेगी। चीनको मार्शल चांगकाई शेक का भी भय है। पेकिंग्का राजनीतिक अस्तित्व भी सुरक्षित नहीं। मंचूरियासे कजाकिस्तान तककी सीमा पर उसको पहरेदार रखने होंगे। अत: चीन हिमालय पार कर ६ से १० डिवीजन सेना ही भेज सकता है। भारत के समान चीनके सामने भी यातायातकी विकट समस्या है यद्यपि उसने बहुत सी सड़कें बनाली हैं। वे तिब्बती पठार पर सन् १९५० से हैं। सिंकियांगसे अक्साई चिनमें आनेके वास्ते उनको कुनसुन पर्वत पार करना होता है। वहां उनके पास सब मौसमोंके योग्य सड़कें हैं। पर्वतीय स्थिति भी चीनके अधिक अनुकूल है। इस कारण वे जल्दी रण-सामग्री रण क्षेत्रमें ला सकते हैं। लद्दाख और भारतीय सीमाके साथ-साथ चीनने सड़कें बना ली हैं। इसके बल पर पुराया (सप्लाई) डीपोंकी एक श्रृंखला उन्होंने बना ली है। अत: वे यथावकाश कुमुक ला सकते हैं। परन्तु सिंकियांग और तिब्बतमें चीनी अड्डे मुख्य नहीं हैं। यहां भी सब सामग्री पेकिंगसे आती है। यदि तिब्बतमें चीनके १४-१६ डिवीजन हों अर्थात् २,२५,००० सैनिक हों तो इसके वास्ते प्रतिदिन ३ भारी गाड़ियों और १००० ट्रकोंकी आवश्यकता होगी। यह कार्य सरल नहीं है। अत: चीनकी लंबी लड़ाई बहुत अधिक दिन तक नहीं रह सकती। वह लड़ाई छिड़ते ही आनन-फानन लड़ाईका फैसला करना चाहेगा। हां यदि चीनी रेलगाड़ी, ल्हासा, जीयांग्त्से (तिब्बत) या यारकन्द खोतान (सिंकियांग) तक ले आया तो स्थिति बदल जायेगी। किन्तु इसके लिए समय चाहिए। भारतको सब रण-सामग्री और रसद विमानोंसे ही पहुंचानी होगी। दो इंजिन वाले विमानोंका कार्य उत्तम रहा है। रूसी एन-१२ और अमेरिकी सी-१३० भारवाही विमानोंका कार्य इस बातका प्रमाण है कि भारतके पास यदि इस ढंग के विमान हों तो सेनाको ठीक समय सब प्रकारकी युद्ध सामग्री निरंतर मिलनेमें कोई कठिनाई न होगी। हमारे वैमानिकों ने यह कार्य बहुत प्रशंसनीय रीतिसे किया है। इसलिए निराशाका कोई कारण नहीं। हमको केवल अपनी तैयारीका वेग बढ़ाना है। लड़ाईमें जैसे क्षिप्रता, तीव्रता और वेग एक आवश्यक गुण है, उसी प्रकार उसकी तैयारीका भी एक आवश्यक गुण है। चीनकी ६ से १० लाख सेनासे लड़नेके लिए पर्वतीय युद्ध-शिक्षा प्राप्त ६ से १० लाख भारतीय युवकोंकी कमी न होगी। हिमालय प्रदेशमें रहने वाले गोरखों, गढ़वालियों, कुमायूं लोगोंको पर्वतीय युद्धकी अनिवार्य शिक्षा देनेसे पर्वतीय सैनिकोंकी कभी कमी न होगी। इस प्रदेशके लोगोंको अपना पुराना धंधा भी प्राप्त होगा।

जनशक्ति, शस्त्रास्त्रोंकी शक्ति, यातायातके साधन तथा परिवहनके उपकरणों की दृष्टिसे विचार करने पर ज्ञात होगा कि पाक चीन व हिन्देशिया की तुलनामें हम पीछे नहीं। आवश्यकता है संकल्पकी और उद्देश्योंके स्पष्टता की। इनकी पूर्ति करने पर भारत की विजयमें सन्देह नहीं हो सकता।*

यह तुंग हिमालय किसका है ?

यह तुंग हिमालय किसका है ?
उत्तुंग हिमालय किसका है ?
भारत का यौवन गरज उठा
जिसमें पौरुष है, उसका है ?

फण काढ़े सापों के सर पर
जो राह बनाये उसका है—
जो बैरी मस्तक काट-काट
अम्बार लगाये उसका है।

वर्बर वैरी के घर-घर में
जो आग लगाये उसका है ;
जो वज्रनाद के भी ऊपर
आवाज लगाये उसका है।

पत्थर से ईंटों का जवाब
जो दे के गरजे शान रखे
लोहे की दृढ़ता से लोहा
जो ले के, माँ का मान रखे

जो सीने पर गोली खाये
पर कदम-कदम बढ़ता जाये
जो महामृत्यु को भी ढकेल
अरि मस्तक पर चढ़ता जाये

इनसे उनसे दबने वाले
यह नहीं दबैलों का गिरीन्द्र
यह सिंहों की स्वच्छन्द भूमि
दुर्द्धर्ष अड़ैलों का गिरीन्द्र

जिसकी भुजंग सी बाहों में
फुफकार भरी है, शक्ति भरी
जिसकी गज भर की छाती में
जनता की है अनुरक्ति भरी

जो मर कर भी जीने वाला
जनता हित विष पीने वाला
संगर में प्रलयंकर बनकर
नर मुण्डमाल सीने वाला

जो नहीं शत्रु को जान सका
जो नहीं मित्र पहचान सका
उससे गिरिराज घृणा करता
जो बैरी को दहला न सका

जो पंच—मांगियों के मस्तक
निर्भीक उड़ाये उसका है
जो पाँवों की गम्भीर धमक से
धरा हिलाये उसका है ?

जिस धरती का रस पिये
और उस धरती को बदनाम करे
बाहर स्वदेश का भक्त बने
भीतर कैंची का काम करे

गद्दारों के सीने में जो
संगीन घुसाये उसका है
जो अपनी माँ के स्वाभिमान पर
प्राण गँवाये उसका है ?

—श्यामनारायण पाण्डेय

With Best Compliments

From:

Amer Dye Chem Ltd.

MANUFACTURERS
OF
COAL-TAR DYES

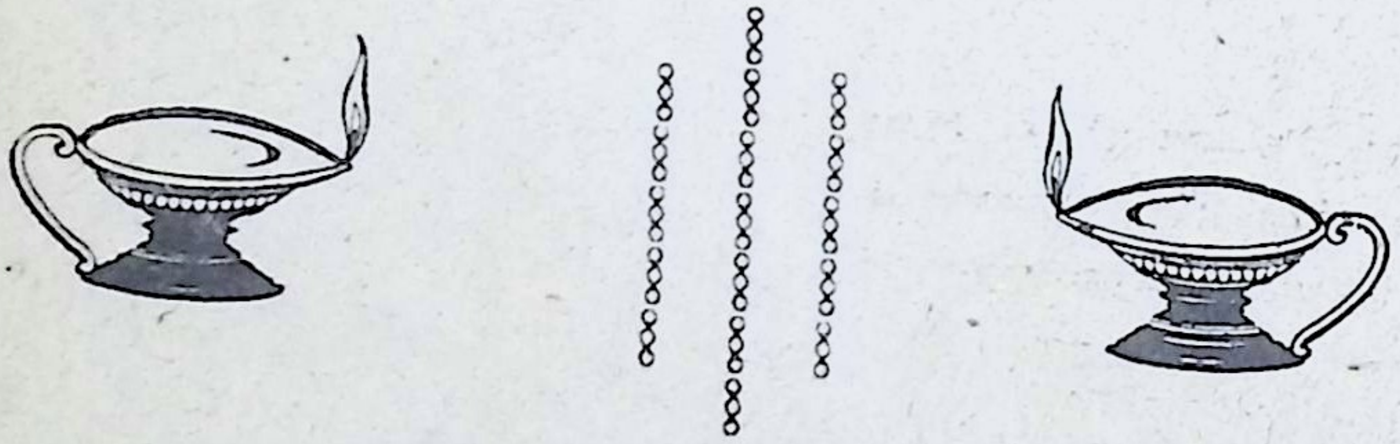

Regd. Office :

RANG UDYAN

SITAL DEVI TEMPLE ROAD

POST BOX NO, 6471

MAHIM

BOMBAY-16

Gopi
VANASPATI
गोपी
वनस्पति
CONTAINS
VITAMINS A & D
گوپی وناسپتی
4 Kg Net
MADE FROM VEGETABLE OILS ONLY
केवल वनस्पति तेलों से बनाया हुआ
PRAG VANASPATI PRODUCTS, ALIGARH

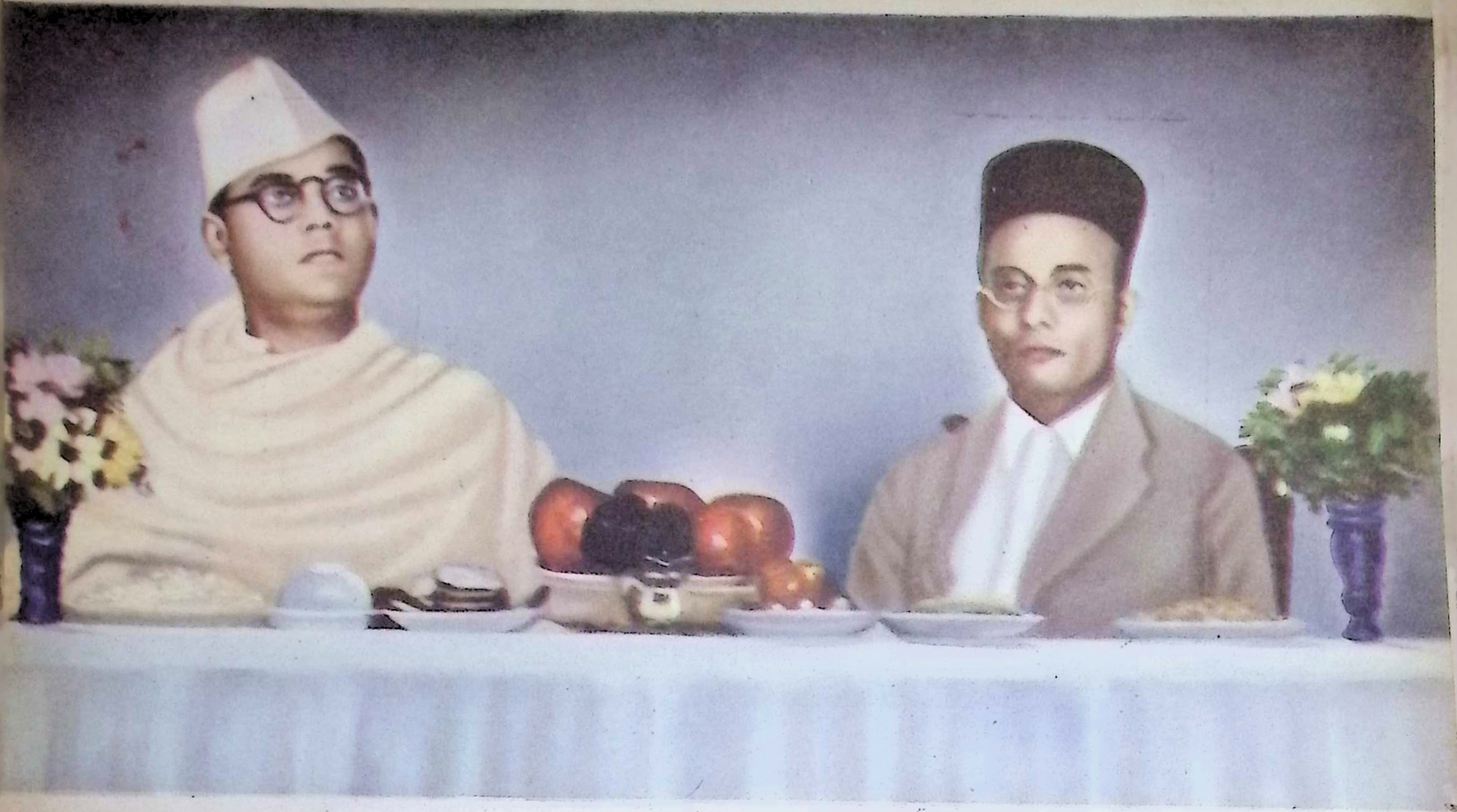

दो महान क्रांतीकारी

बोलो सुभाष ! बोलो सावरकर !!

वचनेश त्रिपाठी

किसलिये अहिंसा नहीं, तुम्हें बम-बन्दूकें ही भायीं ?
बोलो सावरकर ! भारत की आजादी पूछ रही है !
सत्याग्रह से क्यों विरक्ति, 'आजाद हिन्द सेना' क्यों ?
बोलो सुभाष ! भारत की आहत सीमा पूछ रही है !
किसलिए शांति को नहीं, शक्ति को तुमने साधन माना ?
बोलो सुभाष ! संसद की विस्मृत शपथें[1] पूछ रही हैं !

क्यों इस सवाल से लन्दन का दिल कांप उठा थर-थर ?
क्यों परदेशी सागर में फिर तूफान भर उठा है ?
क्या सावरकर के सिन्धु[2]-संतरण की स्मृति जागी ?
क्यों इस सवाल से अण्डमानका अन्तस् सिहर उठा है ?
किसलिए कांग्रेस–मञ्च न, काली काल कोठरी भायी ?
बोलो सावरकर ! लद्दाखी चट्टानें पूछ रही हैं !

क्यों लोट गयी लन्दन के आगे लाश 'वाइली'[3] की ?
क्यों 'मदनलाल धींगरा' पुनः पिस्तौल ले उठा है ?
फांसी के फंदे आज हवा में हिल उठते हैं क्यों ?
यह कौन शहीदी जोश लिए हुंकार भर उठा है ?
किसलिए खुशामद नहीं, बगावत की राहें ही भायीं ?
बोलो सावरकर ! काश्मीर की किस्मत पूछ रही है !

यह लाल किला क्यों ऊब उठा शासनके आश्वासन से ?
क्यों वज्रानल के गर्जन से 'इम्फाल'[4] भर उठा है ?
दे दो सेना की तोपों में फिर बारूदी बत्ती,
आजाद हिन्द-सेनानी का स्वर उग्र हो उठा है !
विनय नहीं, हो शस्त्र-पाणि, क्यों रिपु से भिड़ना भाया ?
बोलो सुभाष ! तिब्बत-नेफा की लाशें पूछ रही हैं !

परदेशी के द्वार रोज ही कर्ज मांगने वालो !
स्वाभिमान के आंगन में आक्रोश भर उठा है।
युद्ध-काल के बीच शस्त्र की भीख मांगने वालो !
काशी के चौराहे पर 'रोहतास' रो उठा है !
शांति-स्वप्न के हरिश्चन्द्र ! पेकिंग को पुचकारो मत,
दुश्मन की फौजें 'शैव्या' को किरचें कोंच रही हैं !

नये अशोको ! कूटनीति से छले न जाओ यों,
अणु बम फूट रहे, अम्बर में धुवां भर उठा है !
समझौते की जगह, शीश पर कफन सजाने वाले !
आओ सुभाष ! यह देश पुनः आह्वान कर उठा है।
रणोच्चार पूरित स्कन्धावार बने भारत,
लोहित ले वेणी बांध, वाहिनी कूच कर रही है!

१—प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने भारतकी इन्च-इन्च भूमि चीनियोंसे मुक्त कराने की शपथ संसदमें ली थी।

२—वीर सावरकर जहाज से कूद कर फ्रांस के समुद्र में कई मील तैरकर निकल गये थे।

३—सावरकर के क्रांतिकारी शिष्य मदनलाल धींगरा ने लंदनकी भरी सभा में कर्जन वाइली को गोली से उड़ा दिया था।

४—इम्फाल के मोर्चे पर सुभाषचन्द्र बोस की सेना ने अंग्रेजोंके छक्के छुड़ा दिये थे।

युद्धकालीन अर्थनीति

"एक ओर बढ़ती हुई मंहगाई व अत्यधिक करभार से जनता की रीढ़ टूट रही है तो दूसरी ओर सरकार की फिजूलखर्ची और सुरक्षा के प्रति की अब तक की उदासीनता, देशमें आशा, उत्साह और विश्वास का वातावरण बनाने में बाधक सिद्ध हो रही है। समय की मांग है कि राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोपरि महत्व देकर भारत सरकार अपनी अर्थ-नीति में आमूलाग्र परिवर्तन करे तथा उसे युद्ध-कालीन अर्थ-व्यवस्था के ढांचे में ढाले।"

— दीनदयाल उपाध्याय

—महामन्त्री, भारतीय जनसंघ

आज जब देश चीनी संकटसे घिरा है और ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है कि चीनसे लड़ाई टाली नहीं जा सकती, उस समय देशके लिए योजनाएं बनाते समय सुरक्षाको सर्वोपरि स्थान देना होगा और यह विचार करना होगा कि इससे हमारी सुरक्षा-व्यवस्थाको कैसे बल मिले। गत वर्ष अक्टूबर मासमें चीनी हमला होनेके बाद सरकारका भी ध्यान देशकी सुरक्षाकी ओर अधिक तेजीसे आकृष्ट हुआ। सुरक्षा सम्बन्धी कुछ योजनायें भी बनाई गयीं वे कितनी कारगर हुई इसकी चर्चा यहां व्यर्थ होगी।

देशकी सुरक्षा और अर्थ-नीतिमें जो घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है, चीनी हमलेसे पहले उसका भी ध्यान नहीं रखा गया था। किन्तु अब सेना जुटाने, तथा सेनाके लिए पैसा जुटानेकी ओर तेजीसे सरकार का ध्यान गया है।

सुरक्षा बनाम अर्थ-व्यवस्था

देशकी अर्थ-व्यवस्था तथा देशकी सुरक्षा एक दूसरे पर निर्भर (Interdependent) रहती है। यदि देशकी सुरक्षा अक्षुण्ण रहेगी तो देशकी अर्थ-व्यवस्था भी चलती रहेगी और अर्थनीति के असफल होने पर देशकी सुरक्षा कदापि नहीं हो सकती।

दो पहलू

देशकी सुरक्षाका हमें दो पहलुओंसे विचार करना होगा—एक तो अल्पकालीन सुरक्षा व्यवस्था तथा दूसरी दीर्घकालीन सुरक्षा व्यवस्था। सम्भव है चीन भारत पर पुन: आक्रमण कर दे। यदि चीनी हमला होता है तो उसे रोकने तथा उसके निराकरण सम्बन्धी उपाय हमें करने

होंगे। फिर आज केवल चीनका ही खतरा देशके लिए नहीं है, पाकिस्तानका भी है। चीन और पाकिस्तानमें मेल हो गया है जिससे हमारे सामने दोहरा संकट आ उपस्थित हुआ है। गत वर्षका चीनी हमला एक बहुत मामूली हमला था। पर उस समय ही हमारे सामने छोटी-छोटी चीजोंकी समस्या खड़ी हो गई थी। हम अपनी आवश्यकताके शस्त्रास्त्र कपड़े व जूते भी तैयार नहीं कर पाये। यदि कल हमें हवाई हमलेका सामना करना पड़ा तो उसके लिए हमें अभी.. व्यवस्था करनी होगी। जिस तेजीसे आज संकट घिरता आ रहा है, उसकी दृष्टिसे यह सत्य है कि आज हम केवल अपने ही सहारे देशको सवल नहीं वना सकते और अगर चीन हवाई हमला नहीं भी करता तो भी हमें इस बातकी आवश्यकता पड़ सकती है कि हम स्वयं विमानों का प्रयोग करें और चीनकी पूर्ति-व्यवस्था (Supply Line) तिब्बत स्थित सैनिक केन्द्रोंको ध्वस्त कर दें। इसके लिए देशकी वायुसेना को बलवती एवं समर्थ बनाना होगा। पर थोड़ी देरके लिए यह मान कर चलें कि इस थोड़ेसे समयमें इतनी शक्ति संचय नहीं की जा सकती और हमें दूसरों पर निर्भर रहना होगा। भारत मित्र राष्ट्रोंसे कैसे अधिकसे अधिक सैनिक सहायता प्राप्त कर ले, यह हमारी विदेश नीति पर निर्भर है। देशकी सुरक्षाके लिए हमें अपनी विदेश नीति, गृह-नीति, समाज-नीति तथा अर्थ-नीति पर विचार करना होगा। वर्तमान संकटकालीन स्थितिमें अपनी पुरानी असफल नीतियों को त्यागनेकी मनोभूमिका होनी चाहिए। पर अन्ततः हम अपनी सुरक्षाके लिए विदेशों पर सदाके लिए निर्भर नहीं रह सकते। एक तो यह लज्जाकी बात होगी, दूसरे सम्भव भी नहीं है। राजनीतिक दृष्टिसे विश्वमें नित्य नये-नये परिवर्तन हो रहे हैं। जो मित्र राष्ट्र आज हमारी सहायता कर रहे हैं, कल वे इंकार भी कर सकते हैं। यदि अमेरिकाकी विदेश नीतिमें कोई परिवर्तन हो जाये तो वह भारतकी सहायता बन्द कर सकता है। चीनके भाग फारमोसामें अमरीकाके बल पर आज च्यांग-काई-शेकका राष्ट्रवादी शासन कायम है। परिस्थितबश पूरे चीन पर कहीं राष्ट्रवादी च्यांग-काई शेक का आधिपत्य स्थापित हो जाय तो उस समय भारत-चीन विवादमें क्या अमरीका भारतकी सहायता करेगा?—यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस समय चीनमें साम्यवादी शासन स्थापित है। उसके साथ ही वह विस्तारवादी भी है। यदि साम्यवादी शासनके स्थान पर राष्ट्रबादी शासन आ गया तो यह मानना असंगत है कि भारतका संकट समाप्त हो जायगा। चीनका राष्ट्रवादी शासन न तिब्बतको मुक्त करेगा और न "मैकमोहन रेखाको" ही मान्यता देगा। जिन चीनी नक्शोंमें चीनकी सीमा बढ़ा-चढ़ा कर दिखाई गयी है वे राष्ट्रवादी च्यांग-काई-शेकके शासन कालके ही हैं।

इस सम्बन्धमें एक बात और ध्यान देनेकी है। पाकिस्तान और अमरीकामें पुरानी दोस्ती है। आज संकटके समय वह पर्याप्त सैनिक सहायता मुक्त हाथोंसे नहीं कर पा रहा है। साथ ही वह भारत पर पाकिस्तानसे सम्बन्ध सुधारनेका दबाव डाल रहा है। वह चाहता है कि भारत पाकिस्तानको खुश करके उससे

मेल कर ले। पाकिस्तानने भारत पर हमला किया है। वह आक्रमणकारी है। यदि भारत एक आक्रमणकारीके आगे आज झुक गया तो कल वह दूसरेके सामने भी झुक सकता है। यह ठीक ऐसी स्थिति होगी कि 'इधर भी खोया, उधर भी खोया, पाया कुछ भी नहीं।' रूस भी जो सहायता कर रहा है वह भी 'प्रतीकात्मक ही है।

दीर्घकालीन योजना चाहिए

अत: आवश्यकता इस बातकी है कि देशमें दीर्घकालीन सुरक्षा योजनायें बनायी जायें। इसके साथ-साथ ऐसा प्रबन्ध भी किया जाय कि उन योजनाओंको व्यवहार रूपमें लानेमें कोई कठिनाई न हो। सुरक्षा योजनाके साथ देशके विकासका भी विचार करना होगा। विकास और सुरक्षाकी बात सरकार भी करती है। यदि वर्तमान संकट १-२ मासके लिए होता तो देशकी जनता अपना सब कुछ दाँवपर लगा देती, बाकी बातें बादमें देखती। पर संकट लम्बे काल तक चलने वाला है। देशकी बाह्य-सुरक्षाके साथ-साथ देशकी आंतरिक सुरक्षाका भी प्रबन्ध करना होगा। बाह्य-संकटके समय देशके अन्दर विद्यमान पंच-मांगी कम्युनिस्ट आंतरिक विद्रोह न करें, इसकी भी व्यवस्था करनी होगी। पर विकास करते समय इसका विचार नितांत अनिवार्य है कि किन चीजोंका विकास पहले किया जाय। इसके लिए हमें युद्ध-कालीन-अर्थव्यवस्था (War Economy) को दृष्टिमें रखना होगा।

खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता

युद्धकालमें जो सबसे बड़ी तथा पहली आवश्यकता होती है खाद्यान्न सम्बन्धी आत्मनिर्भरता। भारतमें आज आवश्यकता

विद्वान लेखक

के अनुसार खाद्यान्नोंका उत्पादन नहीं हो पा रहा है। विदेशोंसे खाद्यान्न मंगाना पड़ता है। कुछ दिन पूर्व चीन और लंका में समुद्री-मार्ग सम्बन्धी समझौता हुआ है। अन्य समुद्र-स्थित टापुओंसे वह (चीन) समझौता करनेका प्रयत्न कर रहा है। हिन्देशिया उसका खुल्लंमखुल्ला पक्ष लेनेमें संकोच नहीं करता। यदि युद्ध छिड़ा तो चीन इन समझौतोंके कारण भारतके समुद्री मार्गोंकी नाकेबन्दी कर सकता है। उस समय हमारे मित्र देश जो खाद्यान्न सहायता हमें भेजेंगे भी, वह भी हमें न मिल सकेगी। हमारा निर्यात भी प्रभावित होगा। अन्न, हथियार या अन्य सहायता मंगानेमें भी हमें कठिनाई हो जायेगी। इसलिए हमें खाद्यान्नोंके लिए शीघ्र ही आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है। इंग्लैण्डमें जब लड़ाई छिड़ी थी तो उस समय सालमें केवल २१ दिनके लिए अनाज पैदा किया जाता था पर जब चारों ओरसे बमबारी होने लगी तो साल में ४१ दिनके लिए अनाज पैदा किया जाने लगा। यदि सैनिकको भोजन न मिला तो उसके हाथमें हथियार चलाने

का सामर्थ्य ही नहीं रह जायेगा। रसद की कमीके कारण ही पानीपतके तीसरे युद्धमें भारतीयोंकी पराजय हुई थी। यदि देशमें अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गयी और 'खाद्य-विद्रोह' (Food revolts) होने लगे तो देशकी सुरक्षा असंभव हो जायगी।

विकल्पों की व्यवस्था

युद्धकालमें अनेक आवश्यक वस्तुओंको नागरिक उपभोग (Civil consumption) से हटाना भी पड़ता है। लोहा, यातायातके साधनों, विद्युत आदिको नागरिक क्षेत्रसे हटाकर सेनाके उपयोगमें लगाया जाता है। नागरिकोंके लिए उस समय 'राशन व्यवस्था' लागूकी जाती है। पर इसनियंत्रणसे नागरिक-जीवनमें कोई अवरोध न आने पाये, इसके लिए इन वस्तुओं का कोई 'विकल्प' (Substitute) ढूंढ़ना चाहिए। लड़ाईके कालमें जब वस्तुओंका अभाव हो जाता है उस समय यदि उनका कोई 'विकल्प' रहा तो जन-जीवन अव्यवस्थित नहीं होता। द्वितीय विश्व युद्धके कालमें कपड़ेकी कमी पूरी करनेके लिए एक 'स्टैन्डर्ड-क्लाथ' बनाया गया था। साथ ही यह व्यवस्थाकी गयी थी कि वह सस्ते और ठीक दामपर जनताको मिल सके। उस समय 'हैंडलूम' वस्त्रकी भी काफी बिक्री हुई। इसी प्रकार 'आलपिन' के विकल्पके रूपमें बबूलके कांटोंका प्रयोग किया गया। इन 'विकल्पों' के सम्बन्धमें पर्याप्त विचार करना आवश्यक है। एक वस्तुके स्थान पर दूसरी जो वस्तु प्रयुक्त हो सकती है वह कहां-कहां और कितनी मिल सकती है इसकी जानकारी रखनी होगी। सन् १९५३-५४ तक इस प्रकार की जानकारी रखी जाती रही है पर उसके बाद इस प्रकारकी जानकारीको भुला दिया गया है। सुरक्षा विभागको देशकी सुरक्षासे सम्बंधित ४५ हजार प्रकारकी वस्तुयें खरीदनी पड़ती हैं। वे वस्तुयें कहांसे कितनी-कितनी मात्रामें प्राप्त होंगी इसका हिसाब रखना होगा। सैनिकोंके लिए इन वस्तुओंकी उपलब्धि और युद्धके समय इसके विकल्पके रूपमें अन्य वस्तुओंकी व्यवस्थाका विचार शांति कालमें ही करना पड़ता है।

व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण

युद्धकालमें नागरिक जीवनके उपयोग के लिए देशमें छोटे-छोटे उद्योग-धंधोंको विकसित करना आवश्यक है। लड़ाईके समय नागरिक उपयोगको पूरा करनेके लिए लघु उद्योग व स्वदेशी उद्योग सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होते हैं। यदि देश के बड़े-बड़े सैनिक केन्द्रों, व्यापारिक केन्द्रों (यथा कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली, कानपुर आदि) पर बमबारी हुई तो उस समय देशकी क्या दशा होगी? दैनिक जीवनके उपयोग की वस्तुयें कहां से प्राप्त होंगी? ऐसे समयमें अर्थ-व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण ही लाभदायक एवं सहायक होता है। रूसने भी पिछली लड़ाईके बाद विकेन्द्रीकरण किया है। युद्धकालमें वह अपने औद्योगिक केन्द्र यूराल पर्वतके पीछे ले गया था। भारत को भी अपनी अर्थ-व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण करना होगा। गांव-गांवमें तेजीसे अपने उपयोग की छोटी-छोटी वस्तुओंके उत्पादन की व्यवस्था करनी होगी। युद्धकालमें यातायात पर बोझ कम करना होगा जिससे उनका अधिकतम उपयोग सैनिक क्षेत्रमें हो सके। पेट्रोल, डीजल आदि का भी अधिक उपयोग उस समय सैनिक क्षेत्रमें होगा। यदि विदेशोंसे हमारे

बंदरगाहों तक सामान आ भी गया तो उसे अन्य स्थानों पर पहुंचानेमें कठिनाई हो सकती है। अतः अर्थ-व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण करना उपयोगी सिद्ध होगा। सामान्य जीवनके उपयोग की वस्तुओंका 'विकल्प' ढूंढ़ निकालना नागरिक जीवन में स्थैर्य उत्पन्न करता है।

संकट कालमें जिस एक चीज की बहुत अधिक विचार करने की आवश्यकता है, वह है रुपये की कीमत न गिरने देना। देश की सुरक्षा का सबसे बड़ा शत्रु 'मुद्रा-स्फीति' Inflation (रुपये का मूल्य घटना) और शत्रु की घुसपैठ है। जर्मनीमें १९१४ के प्रथम विश्वयुद्धके समय रुपये का मूल्य गिर गया था। वहां यह स्थिति उत्पन्न हो गयी थी कि युद्धसे पहले नोट लेकर बाजार जाने पर झोला भर साग लाया जा सकता था। पर 'मुद्रा स्फीति, होने पर झोला भर नोटके बदलेमें थोड़ा-सा साग मिलता था। चांगकाई-शेकको भी भ्रष्टाचार एवं मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ा था। उस काल में एक समय का भोजन मिलता था तथा ५, ६ रुपयेमें एक सिगरेट का पैकेट। 'मुद्रास्फीत' का सबसे बड़ा कारण होता है जब सरकार अपने खर्च की कमी पूरी करनेके लिए अधिक नोट छाप देती है। अतः देशमें यह संकट न उत्पन्न हो, इसके लिए आवश्यक है कि सरकार अपने बजटमें, योजनाओंमें परिवर्तन करे। आयसे अधिक व्यय न करे और अपने खर्च कम करे। सरकारके खर्चमें कमी न आने पाये इसके लिए दो रास्ते हैं। पहला यह कि सरकार अपने खर्च कम कर दे। दूसरे यह कि सरकार खर्च करे पर जनतासे वापस ले ले। पर दूसरे उपायमें कठिनाई है। जनताको जब पैसा दिया जाता है और जब लिया जाता है तो उसमें अन्तर आ सकता है। अगर ऐसा हो सके कि जिस 'जेब' में रुपया डाला जाय उसीसे निकाला जाय तब तो ठीक है पर होता यह है कि पैसा जाता एक 'जेब' में है और निकाला दूसरी 'जेब' से जाता है। इससे मुद्रा की क्रय-शक्ति घटती है और महंगाई बढ़ती है। इसका यह भी परिणाम होता है कि जनताके एक वर्ग की क्रय-शक्ति दूसरे वर्गके हाथमें इतनी चली जाती है कि अभावके कारण उसकी कार्यक्षमता (Efficiency) भी समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थितियोंमें यही उपयुक्त है कि सरकार अपने खर्च कम करे।

२० लाख सेना आवश्यक

अनापशनाप खर्च करना ठीक नहीं। पर सेना पर, सेना को सबल बनाने पर खर्च करना ही होगा। शांतिकालमें जो फिजूलखर्ची चलती रहती है और आज भी चल रही है वह रोकनी होगी। अब तक सरकारने देश की सुरक्षा तथा सेना हेतु पर्याप्त धन खर्च नहीं किया है। इस समय हमारे पास २० लाख सेना होनी चाहिए थी। पर हमारी सेना कम है। पाकिस्तानके राष्ट्रपति अयूब खांने जो भी सेना की संख्या बतायी है यद्यपि उसने बढ़ाचढ़ा कर कहा है। वह ११ लाख है। पर हमें अपनी सेनाको २० लाख तक पहुँचाना पड़ेगा। तभी देश की सुरक्षा संभव होगी। सरकारने सुरक्षाके लिए ७॥ करोड़का बजट रखा है। पहले ५। करोड़ रुपयेका था। इस प्रकार सुरक्षा बजटमें कुल २, २॥ करोड़ मात्रकी वृद्धि हुई है। यह कहा जा सकता है कि जब केवल २, २॥ करोड़की वृद्धिकी गई तो सरकारको जो कर लगाने पड़े उन्हींसे

जनताकी कमर टूट रही है तो सेनाको २० लाख तक पहुंचाने पर जनता पर कितना अधिक कर भार पड़ेगा? इसके लिए सरकारको ठीकसे कार्य करना होगा बहुत सा पैसा सरकारके पास आने वाले पैसोंसे ही निकाला जा सकता है। सरकारकी आयमें जो वद्धि हुई है उसका ठीकसे उपयोग किया जाय। सन ६०-६१ के स्तर पर खर्च लाया जाय, आगे खर्च बढ़ाया न जाय। यदि सरकार अपने व्यय बढ़ाती जायगी तो देशकी अर्थ-व्यवस्था गड़बड़ हो जायगी। सरकार मितव्ययिता द्वारा तथा योजनाओंमें कांट-छांट कर और भी बचत कर सकती है। जब सरकार जनतासे बचत कराती है तो जनता भी तो सरकारसे बचत करनेकी आशा करती है। सरकार भी अपनी आयमें कमसे कम ३ प्रतिशतकी बचत करे। बकाया कर वसूल करे, टैक्सोंकी होने वाली चोरीको रोके। यदि सरकार यह सब करनेमें सफल हो सकेगी तो नये कर लगानेकी जरुरत न होगी और आवश्यकतापूर्तिके लिए पर्याप्त धन एकत्र हो हो जायगा।

वस्तुओंके मूल्यमें आज १५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सरकारकी योजनाओंके 'यस्टीमेट' भी बढ़े हैं। जो १८० करोड़ का घाटा है वह और बढ़ेगा इससे अर्थ-व्यवस्था गड़बड़ हो जायगी।

युद्धकालमें बड़े पैमाने पर देशकी तथा सामानकी हानि होती है। उसके लिए बड़े 'संग्रहकी' आवश्यकता रहती है। पर युद्धकी तैयारीके कालमें उत्पादन की चीजोंके अतिरिक्त अन्य वस्तुओंका भी प्रबन्ध करना पड़ता है। लड़ाई शुरू हो जाने पर वस्तुओंका बाजारमें आना कम हो जाता है, मंहगाई बढ़ती है, कारखाने आदि बन्द हो जाते हैं। उस समय कोई अव्यवस्था उत्पन्न न हो इसके लिए सरकारको तेजीसे अपने बढ़ चढ़े खर्चेमें कमी करनी पड़ती है। आजसे कुछ वर्ष पूर्व बम्बईमें एक सर्वेक्षण किया गया था जिससे पता चला था कि २००० रु० तक आय वालोंकी बचत —१५० रु० (ऋण १॥ सौ) था। अब तो यह और भी बढ़ा होगा। वर्तमान अर्थ-व्यवस्थाकी गड़बड़ीके कारण आज जनतामें चिन्ताका भाव जग गया है। मंहगाई बढ़नेसे 'कन्ट्रोल' होता है जिसमें नौकरशाहीके हाथोंमें अधिकार सिमट जाते हैं। भ्रष्टाचार पनपता है। इस भ्रष्टाचार का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि चीनी हमलेके समय जो सुरक्षाकेन्द्र बनवाये गये उनमें भी सीमेन्टकी मात्रामें गड़बड़ी कर दी गयी। देशमें 'कन्ट्रोल' कमसे कम हो इसके लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। कई बार सरकार की गलत नीतियोंसे कृत्रिम अभाव उत्पन्न हो जाता है और फिर सरकार कन्ट्रोल लगा देती है।

युद्धकालीन अर्थनीतिके उपरोक्त पहलुओंकी कसौटी पर भारत सरकार की वर्त्तमान अर्थनीति खरी नहीं उतरती। एक ओर बढ़ती हुई महंगाई व अत्यधिक कर-भारसे जनताकी रीढ़ टूट रही है तो दूसरी ओर सरकारकी फिजूलखर्ची और सुरक्षाके प्रति अब तककी उदासीनता देशमें आशा, उत्साह और विश्वासका वातावरण बनानेमें बाधक सिद्ध हो रही है। समयकी मांग है कि राष्ट्रीय सुरक्षाको सर्वोपरि महत्व देकर भारत सरकार अपनी अर्थनीतिमें अमूलाग्र परिवर्तन करे तथा उसे युद्धकालीन अर्थ-व्यवस्थाके ढांचेमें ढाले। ●

सुरक्षा की कमजोर कड़ियाँ—

सिक्किम-भूटान

—वीरेन्द्र आइ० के० सरीन

हिमालयकी गोदमें अवस्थित अनंत-काल तक विश्व संघर्ष से दूर, प्राकृतिक सुषमा स्थली भूटान और सिक्किमका नाम बहुत बड़े काल तक भूत के गर्भमें विलीन रहा। किन्तु १९५०में तिब्बत पर लाल चीनके नृशंक आक्रमण के उपरांत हिमालयकी पहाड़ियोंके स्वामी इन छोटे-छोटे राज्योंका अस्तित्व भी संसारके प्रकाशमें आया। गत वर्ष २० अक्टूबरको नेफा एवं लद्दाख पर चीनके निर्लज्ज आक्रमणके उपरांत तो सिक्किम भूटान और नेपालकी ओर न केवल संसार की आंखें केन्द्रित हुई अपितु ये राज्य-भारत और चीनके मध्य चल रहे शीत एवं ग्रीष्म युद्धके एक महत्वपूर्ण सामरिक मोहरे बन गये।

सामरिक महत्व

चीन द्वारा दुनियाकी छत, तिब्बत पर पूर्णतया अधिकार करनेके उपरांत अपनी सीमाओंके विस्तारके निमित्त असम तथा बंगालके मैदानी क्षेत्रमें प्रवेशका अभियान जो शुरु किया गया उसी समय से इन हिमालय स्थित राज्योंका सामरिक महत्व बढ़ता गया। भारत, तिब्बत और चीनके मध्य अवस्थित ये राज्य अन्तस्थ देश हैं। इनमें तथा इनके पास अवस्थित दर्रोंके द्वारा ही तिब्बत और चीन जाने का मार्ग है। इस प्रकार ये छोटे-छोटे राज्य भारतकी सुरक्षाकी बहुत ही महत्व-पूर्ण कड़ी हैं। किंतु दुर्दैवसे भारत सरकार की भ्रमित कूटनीतिके कारण चीनी आक्र-मणके सबल मार्ग बनाने वाले ये देश कभी तिब्बतके पृथक् अस्तित्वके कालमें भारत और तिब्बतके मध्य 'अंतस्थदेश'का कार्य करते थे जैसे तिब्बत, भारत और चीनके मध्य करता था। पर आज छोटे भाई तिब्बतको चीनी नृशंसोंके हाथों सौंप भारतकी सुरक्षाकी इन महत्वपूर्ण कड़ियों की सीमाओं पर चीनी दानव अपना पंजा फैलाये मौकेकी ताकमें बैठा है।

सुरक्षा की महत्वपूर्ण कड़ी

वस्तुत: १९५४की भारत-चीन संधि, जिसके अनुसार भारतने तिब्बत पर न केवल चीनकी प्रभुसत्ता ही मान ली अपितु ब्रिटिश राज्यसे विरासतमें प्राप्त सभी अधिकार चीनके हवाले कर दिया, भारतकी कूटनीतिक पराजय और लालचीन की कूटनीतिक विजयकी द्योतक है। अतीत

में तिब्बतके साथ चीनके, तथा नेपाल, भूटान, सिक्किमके साथ संबंधोंके निर्धारणमें भारतका भी हाथ होता था किन्तु इस संधिके उपरान्त चीन अपनी सीमाएँ भारतकी सीमा तक बढ़ानेमें सफल हो गया। फलतः ये छोटे-छोटे स्वतंत्र किन्तु निर्बल देश भारतकी सुरक्षाकी महत्वपूर्ण कड़ी बन गये हैं और आज ये देश भी साम्राज्यवादी भेड़िये लाल चीनके खूनी पंजोंके चपेटमें आनेकी आशंकासे ग्रस्त हैं।

सिक्किम की भौगोलिक स्थित

सिक्किम––भारतका सुरक्षित राज्य सिक्किम २८०० वर्गमील क्षेत्रमें स्थिति एक छोटा सा राज्य है। जिनकी १६५००० जनसंख्यामेंसे १ लाखके लगभग नेपाली हैं। शेषमें लेपचा, भोटिया और तिब्बती सम्मिलित हैं। सिक्किमका राज परिवार तिब्बती वंशवटका है। उत्तरमें तिब्बत, पश्चिममें नेपाल, पूर्वमें भूटान तथा दक्षिण में पं० बंगालके दार्जिलिंग जिलेकी सीमाओं से लगा हुआ सिक्किम, विश्व-विजयके कम्युनिस्ट अभियानके पुरस्कर्ता कामरेड लेनिनके सपनेके ऐतिहासिक मार्गके मध्य अवस्थित है। ज्ञातव्य है कि लेनिनने कहा था, 'कम्युनिज्मका मास्कोंसे पेरिस जाने का मार्ग पीकिंग और कलकत्ता होकर है; लेनिन के इसी विश्व विजय के स्वप्नके साकार करनेके लिए ही माओ-चाओने भारत पर आक्रमण किया है। यही कारण है कि १९५०में तिब्बत पर अधिकार करनेके उपरांतसे ही इस संपूर्ण ८०० मील लंबी सीमा पर चीन लगातार फौज़ोंका जमाव करता चला आ रहा है।

पश्चिमीमें **सिगल्जी** ला पहाड़ियाँ सिक्किम तथा नेपालके मध्य सीमा निर्धारित करती हैं। सिक्किम तथा नेपालके मध्य **छिपमंजनला** नामक महत्वपूर्ण दर्रा अवस्थित है। सिक्किमकी उत्तरी सीमा भारत तथा तिब्बतके प्रांत ऊ के बीच स्थित जल विभाजक रेखा है। पूर्वकी ओर कोल पहाड़ियां हैं जो डोंकी ला तक फैली हुई हैं और तीस्ता एवं आम चू तथा सिक्किमके मध्य जल विभाजक रेखा

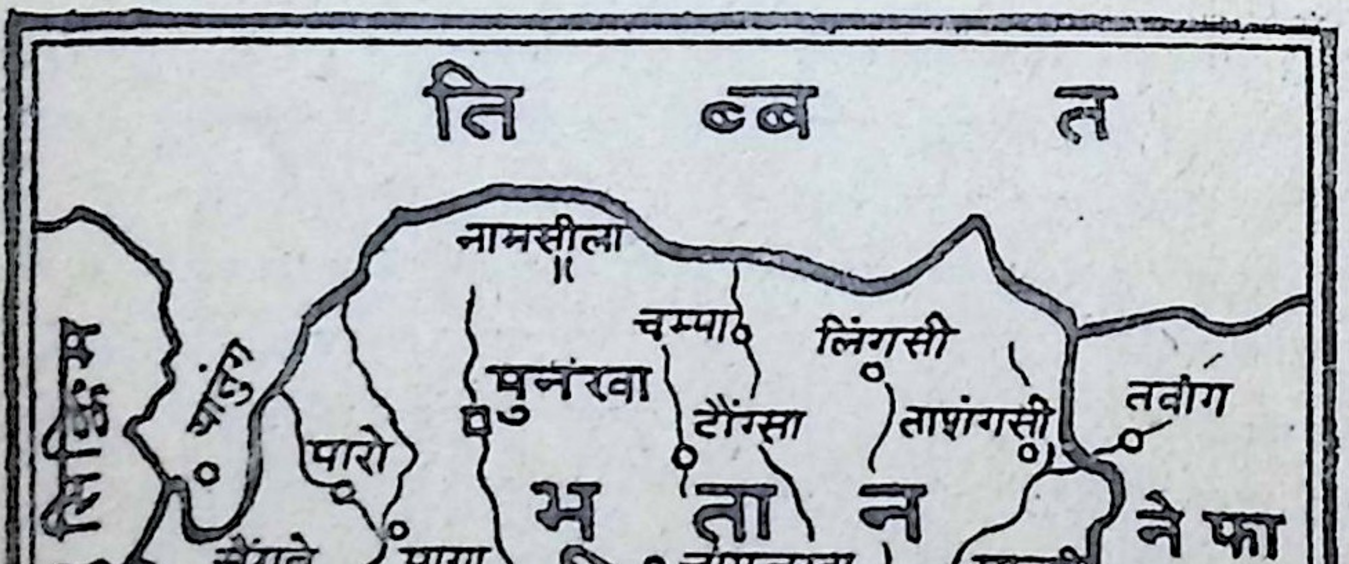

ही सीमा निर्धारित करती हैं। कोला पहाड़ियोंमें, कोला, माकला, सीवू ला, थांकाला ऐसे ला आदि अनेक दर्रें हैं; किन्तु इन में सामरिक दृष्टिसे सबसे महत्वपूर्ण दर्रें नाथुला और जेलप-ला हैं। इन दर्रोंकी महत्वपूर्ण स्थितिको ध्यानमें रखकर ही सिक्किममें अंतिम ब्रिटिश राजनैतिक अधिकारी श्री बी० जे० गोल्डने लिखा है—"पूर्वसे पश्चिमकी ओर तिब्वत जानेके लिए नाथुला, जेलपला एवं सेबू ला जैसे व्यवस्थित मार्ग अवस्थित होनेके कारण सिक्किमका बहुत बड़ा सामरिक एवं राजनैतिक महत्व है।"

पाक-चीन दुरभिसंधि के कारण तो सिक्किमका सामरिक महत्व और भी बढ़ गया है। यदि एक बार सिक्किम पर चीन अधिकार कर ले तो चीन और पाकिस्तान दोनों मिलकर असमको शेष भारत से मिलाने वाले मार्गके उस सकरे २८ मीलके भागको, जिसके एक ओर दक्षिण पूर्वी नेपाल, उत्तर पश्चिमकी दूसरी ओर पूर्वी पाकिस्तान अवस्थित है तथा उत्तरी बंगालका सिलीगुड़ी नामक नगर जिसे स्पर्श करता है, एक संयुक्त सामरिक अभियान के दौरान काट दें तो नेफा सहित पूरे असम का शेष भारतसे संबंध विच्छेद हो सकता है।

राजनैतिक स्थिति

यद्यपि कुछ लाखकी आबादीके राज्य सिक्किममें अनेक राजनैतिक दल विद्यमान हैं किंतु इतने पर भी सिक्किमकी राजनीति में अभी भी शून्यता विद्यमान है। इस छोटे से राज्यमें ६ छोटी-छोटी राजनैतिक संस्थायें चलती हैं किन्तु इनके पास कोई कार्यक्रम नहीं है। वर्षमें एक बार सम्मेलन करके प्रस्ताव पारित करना ही इन पार्टियों का मुख्य कार्य है। इस प्रसंगमें सिक्किम नेशनल कांग्रेस तथा सिक्किम स्टेट कांग्रेस ने भारत सरकार पर महाराजासे मिलकर षडयन्त्र रच लोकतन्त्रीय सरकारके निर्माणमें बाधा डालनेका आरोप लगाया है। भारत सरकारने सर्वदा ही सिक्किम के आंतरिक मामलोमें हस्तक्षेप करने से इनकार किया है। सिक्किम राज परिवार तिब्बती वंशपदका होनेके कारण पालियों से घृणा करता है और उन्हें विदेशी मानता है तथा सिक्किमको भोटियालेपचा जातियों के वास स्थान के रूपमें चित्रित करने का प्रयास करता रहा है।

जन असंतोषका एक अन्य कारण सिक्किमका संविधान-विहीन नृप तंत्रीय प्रशासन भी है। एक समयमें तो सिक्किम स्टेट कांग्रेस तथा सिक्किम राज्य प्रजा सम्मेलनने सिक्किमको पूर्णत: भारतमें विलीन करनेकी मांग की थी। यह मांग अनेक बार की गई; किन्तु हर बार भारत सरकारने इसे ठुकरा दिया। फलत: भारतीय सहायताके अभावमें ये आंदोलन ठप पड़ गए तथा उनके हृदयमें भारतके प्रति कटुता बढ़ती गई। अब उनका भारत समर्थक दृष्टिकोण धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है जो कभी भी भारत विरोधी रूप धारण कर सकता है।

भूटान—भूटान क्षेत्रफलमें सिक्किमसे बड़ा है तथा इसके मूल निवासी तिब्बती नस्लके हैं। किन्तु उनमें उत्तरी असम निवासियोंका भी मिश्रण है। वैसे अनेक वर्षोंसे नेपाली वहां जाकर बस गए हैं और भूटान स्टेट कांग्रेसके अनुसार तो कुल जन संख्याके ६४ प्रतिशत नेपाली हैं। भूटानी यद्यपि नेपालियोंकी संख्या काफी कम बताते हैं किन्तु वे भी कुल जनसंख्या

में २५ प्रतिशत नेपालियोंका होना स्वीकार करते हैं।

भूटानकी भौगोलिक दशा

भूटान तिब्बतके दक्षिणमें अवस्थित है; जिसकी पूर्वी सीमा असमके नेफा संभागके दिरांग जिलोंको स्पर्श करती है। पश्चिममें सिक्किम तथा उत्तरी वंगालका कुछ भाग अवस्थित है। भूटानकी उत्तरी सीमा ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। तिब्बत पर चीनी अधिकारके वादसे तो इसका महत्व और भी बढ़ गया है। किंतु यह सीमा कभी भी सरकारी तौर पर निर्धारित नहीं की गई। सर्वप्रथम सिक्किम तथा भूटानके लिए नियुक्त राजनैतिक अधिकारी श्री ह्वाइटने दोनों देशोंके ..व्य प्रथम बार सीमाका निर्धारण किया और इस संबंधमें एक संधि बादमें १९ वीं शताब्दिके उत्तरार्द्धमें हुई, जिसे बादमें सरचार्ल्स बालने ऐंग्लों भूटानी संधिके अंतर्गत स्वीकार कर १९१० में कानूनी मान्यता प्रदान की।

राज्य-शासन

भूटानके युवराज जिग्मीदोरजी कांगचक लोकप्रिय अवश्य हैं; किंतु फूंक-फूंक कर कार्य करने वाले हैं। दूसरी ओर महाराजा अलोकप्रिय हैं किंतु सुदृढ़ प्रधान मंत्री जिग्मी दोरजीके माध्यमसे राज्यका प्रशासन चलाते हैं। भूटानका शासन आज भी मध्ययुगीन शासनका स्मरण कराता है। प्रशासकीय अनुभवसे शून्य तथा निरक्षर भट्टाचार्य १३० जिला अध्यक्ष भूटान सरकारका गठन करते हैं।

भूटान-भारत सम्बन्ध

भारत तथा भूटानके संबंध भारत सिक्किमके संबंधोंसे एकदम भिन्न हैं। सिक्किम भारतका एक संरक्षित राज्य है जब कि भूटान हिमालय में अवस्थित एक स्वतंत्र राज्य है, जिसे न केवल आंतरिक प्रशासनमें स्वतंत्रता प्राप्त है अपितु जिसकी विदेश नीति अस्थायी रूप से भारत सरकार नियंत्रित करती है। विदेशीनीतिके नियंत्रणके संबंधमें अस्थायी शब्दके प्रयोगका मुख्य कारण है कि भारत भूटान संधिमें इस मुद्दे पर कुछ भी स्पष्ट रूपसे नहीं कहा गया है। केवल 'भारत के परामर्श' से भूटानकी विदेश नीति चालित होगी ऐसा अस्पष्ट निर्देश मात्र है। इसी आधार पर एक ओर भारत सरकार भूटानकी विदेश नीति पर नियंत्रण रखने का अधिकार जताती है तो दूसरी ओर भूटानका कहना है कि भारतको इस संबंधमें परामर्श देनेका अधिकार तो है किंतु नीति निर्धारणमें वह स्वतंत्र है। अत: भारनके परामर्शको स्वीकार करने के लिए वह बाध्य नहीं है।

भूटान सिक्किमकी तुलनामें बहुत ही कम विकसित है। किंतु भारत सरकारकी १८.५ करोड़की सहायतासे भूटानमें विकास-कार्य प्रारम्भ किए गए हैं। बाह्य संसारके लिए अछूते भूटानी अंचलोंमें सड़कें बनाई जा रही हैं तथा उन्हें महत्व पूर्ण राजमार्गोंसे जोड़ा जा रहा है। भारतने भूटान में तकनीकी जानकार भी भेजे हैं। भारतका भू-गर्भ विभाग भी वहांकी खनिज संपत्तिका सर्वेक्षण कर रहा है।

भारत द्वारा जितना मित्रता का हाथ बढ़ाया जाता है उतना ही भूटान १९४९ की भारत-भूटान संधिके अंतर्गत किए गए बादों से मुकरना चाहता है। यद्यपि भारतके प्रधान मंत्री भूटानको भारत द्वारा संरक्षित राज्य घोपित कर चुके हैं'

किंतु भूटान इसे स्वीकार ही नहीं करता है।

इसी आधार पर भूटानने चीनी आक्रमणसे भूटानकी सुरक्षा के लिए भी भारतीय सेना को भूटान में प्रविष्ट होना अस्वीकार कर दिया है, जबकि चीन भूटान सीमा पर काफी बड़ी संख्यामें सैनिक तैनात कर रहे हैं। पश्चिम भूटान में जमोलासे मुश्किलसे १० मीलकी दूरी पर फारीजांगमें चीनियोंने १८००० सैनिक तैनात कर रखे हैं। फारी हवाई अड्डे पर बहुसंख्याका चीनी जेट बमवर्षक विमान भी सन्नद्ध हैं जो थोड़ीसे देरकी सूचना पर एकदम हमला बोल सकते हैं। इस प्रकार चीन द्वारा आक्रमण करने पर भूटानकी सेना उनका किसी भी प्रकारसे मुकाबला नहीं कर सकती। उच्च सैन्य अधिकारियोंका कथन है कि यदि भूटानको पहले ही चीनी हमलेसे बचानेकी व्यवस्था न की गई तो उत्तरसे चीनियों का प्रत्यक्ष आक्रमण होने पर भूटानका अधिकांश प्रदेश बीहड़ होनेसे आने वाले इस पीले आक्रमणसे उसे बचाना असंभव ही होगा।

भूटानकी महत्वाकांक्षा

चीनी आक्रमणकी इस विभीषिका से ग्रस्त भूटान एक स्वतंत्र सार्वभौमके रूपमें प्रकट होनेके स्वप्न देख रहा है। २७ अगस्त १९५९ को भूटान सरकारके एक प्रवक्ताने घोषणा की थी कि 'ऐसा प्रतीत होता है कि संसारको यह पता नहीं है कि भूटान एक सार्वभौम स्वतंत्र राज्य है। अतः संसारके किसी भी देशसे संबंध स्थापित करनेके अपने अधिकारको जतानेके लिए संभव है कि यह आवश्यक हो जाय कि भूटान अन्य देशोंसे स्वतः संबंध बनाये।' ७ सितंबर १९५९ को जब भूटान के प्रधान मंत्री जिग्मी दोरजी दिल्ली आए तब उन्होंने भारत सरकार तथा प्रधान मंत्री पं० नेहरू पर इस बातके लिये दबाव डाला था कि भूटानको संसारके किसी भी देशसे स्वतः संबंध स्थापित करनेकी छूट दी जाय। १९६० में भूटानी संसदने, भारत-भूटान संबंध पर विवादके समय यह निश्चय किया था कि भारत सरकार को एक पत्र लिख कर यह निवेदन किया जाय कि वह अपने मानचित्रों में सुधार करे तथा भूटान एवं भारतके मध्य सीमा को प्रादेशिक सीमा मात्र अंकित न करके उसे अंतर्राष्ट्रीय सीमाके रूपमें प्रदर्शित करे। इस निर्णयसे भी भयंकर संसदमें दिए गए वे भाषण थे जिनमें तिब्बतसे संबंध स्थापित करने तथा १९४९ की भारत-भूटान संधिमें परिवर्तन करनेकी बात कही गई थी।

इस प्रसंगमें यह भी ज्ञातव्य है कि गत वर्ष भारत पर चीनी आक्रमणके उपरांत चीन द्वारा तिब्बतमें एक कठपुतली भूटान सरकार बनाये जानेका समाचार प्रसारित हुआ था। उसी बीचमें दिल्लीमें वार्ताके लिए आए हुए भूटानी प्रधान मंत्री श्री दोरजीने एक वक्तव्यमें अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहा था कि तिब्बत में महाराणा परिवारके एक वंश हैं; जो संभवतः महाराणाके भाई हैं, चीनने उन्हें फांस रखा है और गद्दीका हकदार करार देकर उन्हींके अधीन कठपुतली सरकार बन गई है। स्मरणीय है कि भूटानी राणा परिवार तिब्बती वंशपदका है।

चीनकी कुशल समर नीति

तिब्बतको बहुत बड़े सैनिक केन्द्रके रूप में प्रतिष्ठित करनेके उपरांत लाल चीनने भारतके विरुद्ध विशाल कूटनीतिक एवं

सैनिक अभियान प्रारंभ कर दिया है। इस अभियानके दो उद्देश्य हैं। एक तो है अफ्रेशियाई देशोंके मस्तिष्कसे भारत की प्रतिमा और उसके स्वरूपका पूर्णतया विनाश तथा दूसरा है विकासशील पिछड़े राष्ट्रोंमें भारत सरकारके प्रभावको समाप्त कर उन पर हावी हो उनके योग्य विधाता बनना।

चीन की चाल

भारतके लद्दाख एवं नेफा क्षेत्र पर विगत चीनी आक्रमण का उद्देश्य तो सैनिक मात्र था जिसके अनुसार चीनको लद्दाखके सामरिक महत्वके स्थानों पर अधिकार करना था। इसके साथ ही एक दूसरा मनोवैज्ञानिक उद्देश्य भी इस आक्रमण के पीछे चीन का था और वह था कि चीन इस शक्ति प्रदर्शन द्वारा सिक्किम और भूटानके प्रशासकों पर अपना आतंक और धाक जमाना चाहता था। इस संदर्भमें यह स्मरणीय है कि चीनने सिक्किम तथा भूटानके साथ विशिष्ट संधियोंसे परिचालित भारतके विशेष संबंधोंको मान्यता देनेसे इनकार कर दिया था।

चीनने तो अपने संरक्षणमें हिमालय में अवस्थित नेपाल, भूटान, सिक्किम, नेफा तथा नागालैन्डको मिलाकर पर्वतीय राज्यों की एक स्वतंत्र संघ बनानेकी योजना भी प्रचारित की है। चीनी दृष्टिकोण के अनुसार तो उसे अपने इस प्रस्ताव के संबंधमें उत्साहजनक परिचय भी प्राप्त हुआ है। चीन संबंधित देशों पर विभिन्न रूपोंमें विभिन्न स्तरों पर इस प्रस्तावको रोकनेका सतत प्रयास कर रहा है। इसके अतिरिक्त इन देशोंके लिए ल्हासा के आकाशवाणी केन्द्रसे लगातार समाचार प्रसारण भी किया जाता है। इसके साथ ही चीन इन देशोंके सरकारी अधिकारियों राजनैतिक नेता तथा कम्युनिस्ट पार्टियों से बराबर संबंध रखता रहा है।

सौभाग्यसे सिक्किम तथा भूटानके अधिकारियों तथा अधिकांश जनसमुदायने चीनकी इस योजनाको नापसंद ही किया है। इस चीनी योजनाके विरोध के मूलमें पर्वतीय राज्योंके इस संघमें नेपालका ही प्रभुत्व होनेकी कल्पना तथा उक्त संघके पास आवश्यक सैन्य शक्तिका अभाव जो चीन अथवा भारतके संभावित आक्रमणसे संघकी रक्षा कर सके यही दो कारण हैं।

कुछ दिनों पूर्व चीन ने भूटानसे प्रत्यक्ष वार्ता करनेका भी प्रयास किया था। यह घटना, हिमालयकी सुरक्षाके भारतीय प्रयासोंमें व्याप्त खतरोंके संबंधमें पर्याप्त प्रकाश डालती है। इस प्रकार चीन एक झटकेमें ही भारतसे सैनिक, कूटनीतिक एवं सामाजिक सुविधायें प्राप्त करनेका इरादा रखता है जो वह अभीतक वार्ता एवं धमकियोंसे प्राप्त करनेमें असमर्थ रहा है। इसका एक त्रिसूत्री तात्कालिक चीनी उद्देश्य भी है। इसके साथ ही ३०० मील लंबी भूटान तिब्बत सीमांत अन्य सीमांतसे भिन्न है। भूटान एक चावल उपजाऊ प्रदेश है जबकि तिब्बत एक अनुपजाऊ प्रदेश है। चीन भूटानपर अधिकार करके सीमाके पार तैनात अपने अधपेट सैनिकों की क्षुधा पूर्तिके लिये पर्याप्त मात्रामें भूटानी चावल प्राप्त करने की आशा करता है। साथ ही भूटानसे प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करके चीन सुविधा-पूर्वक भूटानका उपयोग असम तथा पश्चिमी बंगालके चाय बगान तथा तेलके मैदानी

क्षेत्रकी ओर कूच करनेके लिये कर सकता है। इस संवंध में चीनका तीसरा उद्देश्य मैकमोहन रेखाके दक्षिणमें स्थित भूटानके दो जिलोंपर कब्जा करना है। इस दिशामें अपना अधिकार जताते हुये चीनने अपने २६ दिसंबर, १९५९ के विरोधपत्रमें कहा, "चीन और भूटान ही सीमाके संवंध में मैकमोहन रेखाके दक्षिण में स्थित प्रदेशके संवंधमें मानचित्रोंमें थोड़ीसी गड़बड़ी है।" चीन अपने इस दावेको हाल ही में भूटान तथा असममें प्रसारित चीनी मानचित्रोंमें पुनः दोहराया है।

सिक्किम के मोर्चेपर चीनने आतंक उत्पन्न कर सिक्किम की हिम्मत तोड़ने का अभियान चालू कर रखा है। चीन चाहता है कि सिक्किमकी स्थिति दुविधापूर्ण बनी रहे ताकि भविष्यमें वह अवसर हाथ लगनेपर इस स्थितिका लाभ उठा सके। भूटानके सदृश ही, चीन, भारत-सिक्किम संवंधको और कम कर सिक्किम द्वारा भारतकी उपेक्षा करा कर उसका पृथक अस्तित्व कायम रखना चाहता है।

भारत का कर्तव्य

परिस्थितिकी यह मांग है चीनकी इस चुनौतीका सामना करनेके लिये भारत न केवल जागरूक रहे अपितु सतत् तैयारी भी करता रहे। सम्पूर्ण सीमांत पर इसके साथ ही पूरी चौकसी रखने की भी आवश्यकता है। आवश्यक तो यह भी है कि सिक्किम तथा भूटानमें व्याप्त अनेक बुराइयोंको, जो इन राज्योंकी राजनीति और अर्थनीति पर दूषित प्रभाव डालती है, इन्हीं प्रदेशोंकी सरकारों द्वारा ही दूर कराया जाय और इस प्रकार जन असंतोषको शांत कर इन राज्योंकी जनतामें भारतके प्रति खोया हुआ विश्वास पुनः प्रस्थापित किया जाय। साथ ही इस प्रकार की सैनिक व्यवस्था और तैयारी की जाए ताकि इन राज्योंको यह विश्वास हो सके कि भारत उनका संरक्षण करनेमें समर्थ है। ●

प्रतिहिंसा क्यों ?

आक्रमण और हिंसा के सामने आध्यात्मिक पुरुष की शांत और निष्क्रिय स्थिति संसार की प्रचंड शक्तियों को प्रतिहिंसा के लिए उत्तेजित करती है। बुराई का प्रतिनिधित्व करने वालों को यदि दूसरों को रौंदने की खुली छूट दे दी जाय तो वे अपने ऊपर एक ऐसे भयानक विनाश को उतार लायेंगे जो हमारी कल्पना से भी परे होगा। उसके प्रहार का परिणाम उन्हें बलपूर्वक रोकने से भी कहीं अधिक भयंकर होगा। हमारे हाथ साफ रहें और हमारी आत्मा निष्कलंक रहे केवल इतने से ही संघर्ष और विनाश का विधान संसार से नहीं मिट जायगा। मानव जाति के अन्दर उसकी जो जड़ है उसे ही विलुप्त होना होगा। —श्री अरविन्द

सभी प्रकार के ब्लाक निर्माता एवं विशेषज्ञ

राजपूत कम्पनी

गौतमबुद्ध मार्ग (बांसमण्डी) लखनऊ—१

परीक्षा प्रार्थनीय है।

नोट—भारतीय महापुरुषों के ब्लॉक तैयार मिलते हैं।

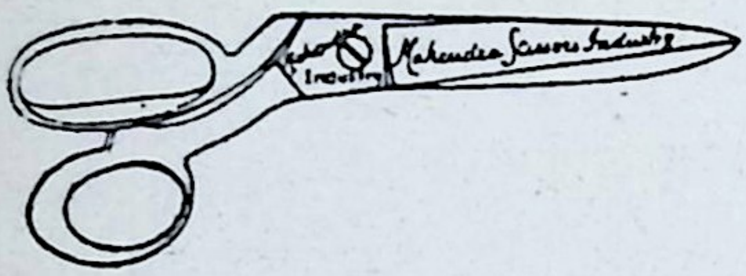

"दादा ले पोता बरते"

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त श्रेष्ठ रेती की कैंचियों, उस्तरे, मशीन व नाखून कटर के एक मात्र निर्माता

निर्माता : **महेन्द्र कैंची उद्योग**

सदर, मेरठ—१७ S.D.A—122

प्रेरणापूर्ण संग्रहणीय प्रकाशन

* **पुराण कथा कौमुदी** :—सम्पूर्ण पौराणिक वांङ् मय के ५२ ग्रंथों से चुनी हुई कथायें जिनमें आपको युद्धकला के साथ-साथ राजनीति, इतिहास, धर्म तथा आचार से सम्बन्धित अनेक अनमोल ग्रंथ हाथ लगेंगे!
सम्पादक एवं अनुवादक : पं० रघुनाथ दत्त "बन्धु" ··· मूल्य १०·००

* **समर्थ जीवन दर्शन** :—राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के लिये आदर्श, वीरता साहस, त्याग और बलिदान का मंत्र फूंकने वाले समर्थ गुरु रामदास के जीवन पर प्रकाश डालकर उनकी विचार धारा और कार्यप्रणाली का दिग्दर्शन कराने वाला हिन्दी में अनूठा ग्रंथ। —लेखक : म०तु० कुलकर्णी ··· मूल्य ४·००

* **आल्हा** :—जननी जन्मभूमि पर सब कुछ निछावर कर देने वालों की जीती जागती कहानी और आक्रमणकारियों की धज्जियाँ उड़ा देने वाला सिंहनाद। — लेखक : नर्मदाप्रसाद गुप्त ··· मूल्य ५.००

* **अपनी धरती** :—मां का दुलार और पत्नी का प्रेम छोड़कर मोर्चे पर जूझने वाले सैनिक की कहानी पर प्रभावशाली अभिनेय नाटक।
— लेखक : रेवती सरन शर्मा। ··· मूल्य २·५०

रु० ५·०० के आर्डर पर आधा डाक व्यय व १० रु० या इससे अधिक के आर्डर पर पूरा डाक व्यय मांफ! अन्य प्रकाशनों के लिये सूचीपत्र की मांग करें!

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

चन्द्रलोक, जवाहर नगर दिल्ली—६

S.D.A.-116

"यदि किसी बात को संघर्ष से सुलझाना हो तो शक्ति की आवश्यता पड़ती है पर उसे वार्ता से सुलझाना हो तो दुगुनी शक्ति चाहिये।"

*

भारत अणुबम बनाए

*

प्रो० राजेन्द्र सिंह
अध्यक्ष—भौतिक-शास्त्र विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

मानव सभ्यताके प्रारम्भसे ही झगड़े सुलझानेके दो मार्ग रहे हैं—एक तो शत्रुको समझाने और मनानेका और दूसरा अपनी शक्ति के बल पर उसे सही रास्तेपर लानेका। प्रथम मार्गमें शत्रुसे भी कुछ अपेक्षायें हैं—वह सभ्य और बुद्धिमान चाहिए। दूसरेमें ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है। बलवान व्यक्ति और राष्ट्रोंको बात समझानेसे समझमें आ जाती हैं। सभ्य शत्रु मानवीय पृष्ठ-भूमि रखने के कारण परिणामोंको समझता है—और बुद्धिमान शत्रु बलको पहचाननेके कारण दुष्परिणामोंको जानता है। शत्रु यदि दुर्बल है और बुद्धिमान होनेके कारण इसको जानता भी है, तो हमारी संघर्ष टालनेकी भाषा उसकी समझमें आ सकती है। हिटलरने अपने साथियोंको एक बार एक बड़े मार्के की बात बताई थी। उसने कहा था कि यदि किसी बात को संघर्षसे सुलझाना है तो शक्तिकी आवश्यकता है, और यदि वार्तासे, तो दुगनी शक्ति की। अर्थात् बातें उसीकी समझमें आती हैं जिसके बलके विषयमें कोई सन्देह नहीं है।

समझौता वार्ता कब और किससे ?

ऐसी अवस्थामें यदि हमारा राष्ट्र इतना सबल हो कि हमारी शांतिकी भाषा किसीकी भी समझ में आ जाए तो वार्ता करके हल निकालनेमें कोई आपत्ति नहीं। परन्तु यदि हमारे शत्रुमें न तो मानवताकी पृष्ठभूमि हो और न वह हृदय जिससे वह मानव हानिसे हिचके, और न उसको हमारे बाहुबलका, छटीका दूध याद कराने वाला कोई भय हो, तो इस वार्ता मार्गसे हम

कहीं पहुंच पायेंगे इसमें सन्देह है। इसी पृष्ठ भूमिमें हमें अपना चीनके साथ आजके युद्धका विचार करना है।

करैला—वह भी नीम चढ़ा

चीनी वैसे ही स्वभावसे क्रूर तथा मानवताकी दया-भावनासे अलिप्त है। उसका सभी प्रकारके प्राणी-जगतको भोज्य बनाना और उसमें रस लेना प्रसिद्ध है। अब तो करैला नीम चढ़ गया—साम्यवाद के आगमनसे जो कुछ भी दया मया थी वह भी शुद्ध बुर्जुआ भावनाके नाम पर रद्दी की टोकरीको समर्पित कर दी गई। क्या रूस, क्या चीन? साम्यवादने अपने ऊल-जलूल सिद्धांतोंके परीक्षणमें लाखों की नर-बलि चढ़ानेमें कोई संकोच नहीं किया। रूससे साम्यवादके नाम पर और चीनमें भी कम्यून स्थापन करते समय अब तक जो नर संहार किया गया है, उसकी अधिकृत संख्या ९६ लाख तक पहुंच चुकी है। ऐसे चीनी साम्यवादी केवल संघर्षकी ही भाषा समझ सकते हैं, जो प्रत्येक जड़वादीकी समझमें आती है। हमारी पंचशील, मानवता और शांतिकी भाषासे एक तो वे अनभिज्ञ और दूसरे उनके ताजे अनुभवोंने उनको उन्मत्त भी बता दिया है। जिन सिद्धांतोंकी हम दुहाई देते हैं उनकी रक्षा करने वाला राष्ट्र भी तो हमारा ही है—उसका जीवित रहना इन सिद्धांतोंके जीवित रहनेके लिए नितान्त आवश्यक है।

'शठे शाठ्यम्' में केवल नीतिका ही उल्लेख नहीं है वरन् साधनोंके लिए भी संकेत है। आज जब हमने संघर्षके लिए कमर कसी है तो फिर साधनोंके विषयमें नानच करना कोई बुद्धिमानी नहीं है। महाभारतको टालनेकी अन्तिम कोशिश व्यर्थ सिद्ध होने पर फिर तो एक ही उद्देश्य श्रीकृष्णके सम्मुख रहा कि धर्मराज की जयमें ही धर्मकी जय है। पग-पग पर झिझक, शंकायें प्रकट करना, निर्णयोंमें आनाकानी करना हमारी गहराईके विषय में, हमारे निश्चयके विषयमें, लोगोंको सशंकित करता है।

* आज चीनने स्वचालित बन्दूकका प्रयोग किया, हमको भी उसके निर्माण के लिए तथा उससे अपने सैनिकोंको सुसज्ज करनेके लिए बाध्य होना पड़ा। क्या हम हर बार यही प्रतीक्षा करते बैठेंगे कि वे कौन सा प्रयोग प्रथम करते हैं, और फिर उसकी तैयारी में जुटेंगे? 'पहिले मारे सो मीर' के अनुसार हम इस पद्धतिसे केवल मार खानेके ही विशेषज्ञ बनकर रह जायेंगे या अधिक से अधिक क्यों मार खाई इसका विश्लेषण करने वाले विशेषज्ञ? *

हमें अणुबम रखना ही होगा

चीनने बहुत स्पष्ट शब्दोंमें घोषणा की है कि वह अणुबम बनानेके लिए बड़ी गतिसे खोज कर रहा है। उसके प्रयोगमें उसे कोई नैतिक आपत्ति नहीं है। माओ ने कहा है कि यदि इन बमोंका उपयोग हुआ तो भले ही अन्य लोग नष्ट हो जायें ६० करोड़ वाला चीन तो विश्वमें बचा ही रहेगा, फिर वही चीनका आधिपत्य करेगा। अणुबमकी तकनीक भी आज ऐसी नहीं रही कि २-३ वर्षोंके प्रयत्नमें वह उस तक न पहुंच पाए। ऐसी अवस्थामें भारतको इस विषयमें क्या नीति अपनानी चाहिए यह स्पष्ट है। भारत उसको भले ही उपयोगमें न लाए परन्तु आत्मरक्षाके लिए उसे अपने पास

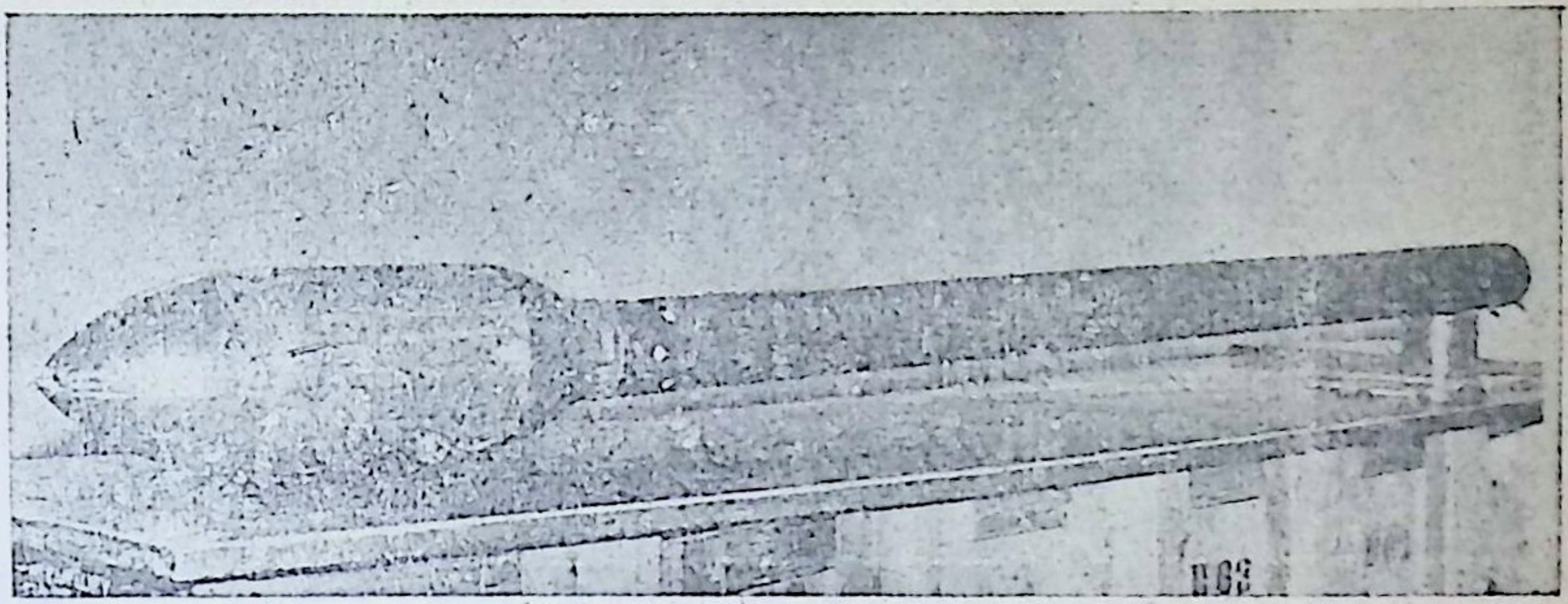

अणु बम रखना ही होगा । आज भी रूस को अणु बमों का उपयोग करनेसे रोकने वाला सबसे बड़ा कारण पश्चिमी राष्ट्रों के पास उससे भी अधिक प्रभावी मारक अस्त्रों की विद्यमानता ही है । आत्मरक्षाके लिए कोई भी अस्त्र-शस्त्र रखना अनैतिक नहीं हो सकता । नैतिकता या अनैतिकता का प्रश्न उसके उपयोग या दुरुपयोग पर अवलम्बित रहता है । क्या हमें अपने ऊपर इतना भी विश्वास नहीं कि अणुबम या अन्य किसी भी अस्त्र-शस्त्र का उपयोग हम अपनी रक्षा और मानव कल्याणार्थं ही करेंगे ?

हम एक वर्ष में ही अणुबम बना सकते हैं

भारतमें अणु भट्ठियों का काम पिछले कई वर्षों से चालू हो गया है । प्रारम्भमें केनेडा तथा अमरीकी सहायता से ये भट्टियाँ लगी और अब तो स्वतंत्र रूपसे स्वयं की भट्टियाँ चालू करने की भारत की स्थिति है । यूरेनियम, थोरियम आदि इस दष्टिसे आवश्यक पदार्थ भारतमें पर्याप्त हैं—उनका पर्याप्त मात्रा में निर्यात होता रहता है । हमारे देशके नए-नए निकलने वाले वैज्ञानिक भी आज संस्थानमें सर्वाधिक लगे हुए हैं । देशके प्रमुख वैज्ञानिक प्रो० कृष्णन्ने कई वर्ष पूर्व कहा था कि भारतमें अणु बम बनाने की स्थिति २ वर्षमें आ सकती है । आज तो वह स्थिति १ वर्ष में ही आजानी चाहिए । यह राष्ट्र की सुरक्षाके लिए एक अति आवश्यक कड़ी है । इस नाते अगर विचार करें तो कम धन और कम समयमें वैज्ञानिक इसको प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी दशामें इस ओर योग्य विचार करना और अपनी तैयारी करना उचित ही कहा जायेगा । हम बार-बार शस्त्रोंके लिए दूसरेके सामने हाथ फैलाते रहें यह एक दुर्भाग्य नहीं तो क्या है ?

अणुशक्ति के विविध उपयोग

युद्ध की तैयारीमें वैज्ञानिक प्रगति भी बड़ी तीव्र गतिसे होती है—और अणु शक्तिके विषयमें यदि हमारे वैज्ञानिकों की सारी शक्तियां लगीं जो आज भिन्न-भिन्न प्रकारकी Fundamental research में लगी हुई है तो कोई आश्चर्य नहीं कि हम उस प्रकारकी छोटी अणु-भट्ठियों का भी निर्माण कर सकें जो हमारे पर्वतीय क्षेत्रोंमें विद्युत उत्पादनमें और इधर से उधर सामान ले जा सकनेके लिए उपयुक्त हों । आज पेट्रोल को पहाड़ों पर पहुंचाना अत्यन्त कठिन है, जिसका उपयोग उपरोक्त कार्योंके लिए होता है । इस प्रकार राष्ट्र की सुरक्षा की तैयारीमें हम कुछ क्षेत्रोंमें पिछड़ेपन को दूर करने में भी समर्थ हो सकेंगे ।

महाराज राजेन्द्रसिंह

जनरल थिमैया

हमारी पूरी उत्तरी सीमा पर तिब्बतमें न केवल चीनी सेनाकी संख्यामें ही काफी वृद्धि हुई है, वरन् इन सेनाओंका अधिकांश भाग हमारी सीमाके इतने पास फौजी महत्वके ठिकानों पर जमा है, जितना पहले कभी नहीं था। हमारी सरहदोंके पास फौजी सामग्री और रसदका निरन्तर जमाव हो रहा है और बैरिकें तथा तोपोंके मोर्चे बनाए जा रहे हैं। सामानके भण्डार स्थापित किए जा रहे हैं और सड़कें तथा हवाई अड्डे बनाए जा रहे हैं। यह जानना कठिन है कि चीनियोंका क्या इरादा है, लेकिन सैनिकों और सामग्रीका यह जमाव भारत पर फिरसे आक्रमण करनेके काम आ सकता है।

पाकिस्तान भी पीछे नहीं

यद्यपि पाकिस्तानके नेता इस बातको भलीभांति जानते हैं कि हमारी रक्षाकी तैयारियां हमारी उत्तरी सीमा के खतरेसे बचावके लिए हैं, फिर भी वे यह निराधार प्रचार कर रहे हैं कि हमारी तैयारियों से पाकिस्तानको खतरा है। हालमें आसाम और पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पर पाकिस्तानी फौजों की हलचलें भी बढ़ गई हैं।

तत्परता आवश्यक

हमने बार-बार यह स्पष्ट कर दिया है कि हम

जनरल थोरट

प्रधान सेनापति श्री चौधरी

किसी भी देशसे लड़ाई करना नहीं चाहते और हम अपने पड़ोसियोंके साथ सभी झगड़े शांतिपूर्वक निपटाना चाहते हैं । लेकिन दुश्मनी और तनाव की मौजूदा स्थितिको देखते हुए, और अनुकूल स्थिति पैदा होने पर शांतिपूर्वक बातचीत द्वारा अपने विवाद निपटानेके इरादे पर कायम रहते हुए भी, हमें बाहरी हमलेसे अपनी मातृभूमिकी रक्षाके लिए आवश्यक उपाय करना है,

प्रतिरक्षा मन्त्री
श्री यशवन्तराव चौह्वाण

अब हम भी तैयार हैं

खासकर जब हम देख चुके हैं कि पिछले साल किस प्रकार हमारे उत्तरी पड़ोसीने हमारे ऊपर अचानक, बिना किसी कारण जबर्दस्त हमला किया था ।

पहाड़ी डिवीजन

हमारी रक्षाकी तैयारीका पहला काम अपनी सेनाओंका विस्तार करना है । हमने सेनाके ६ डिवीजन और खड़े

जल सेनाध्यक्ष श्री सोमण

नभ सेनाध्यक्ष श्री इञ्जीनियर

करनेका कार्यक्रम बनाया था। इनमें से तीन डिवीजन हमने खड़े कर लिए हैं। बाकी तीन डिवीजन भी यथाक्रम बनाए जा रहे हैं। दो और नए पहाड़ी ड्विीजन बनानेका निश्चय अभी हाल में ही किया गया है।

इन डिवीजनोंको खड़ा करनेके लिए हमें बड़ी संख्यामें अफसरों और सैनिकों को भर्ती करना पड़ा है। सैनिकोंकी भर्ती का काम निर्धारित क्रमसे जारी है, और बहुत ही सन्तोषप्रद रहा है।

गत एक वर्ष में ३,१७५ सैनिक अफसर नियुक्त किए जा चुके हैं, साथ ही २,६७७ अफसर और, कमीशन पानेके लिए तैयार हो चुके हैं। अगले वर्षके आरम्भ तक ८ हजारसे अधिक अफसर सेनामें नियुक्त हो चुकेंगे।

इन्जीनियर एवं डाक्टर

सेनाकी इन्जीनियरी और डाक्टरी आदि टेक्निकल शाखाओंमें अफसरोंकी भर्तीमें काफी कठिनाई हो रही है। १९६३-६४ में हमें सेनाके लिए जितने डाक्टर अधिकारियोंकी आवश्यकता है, उसके ४० प्रतिशत भर्ती किए जा चुके हैं। अभी इन्जीनियरी अफसरोंकी भर्ती सन्तोपजनक नहीं हो पाई है। उस दिशामें अभी हमें और प्रयत्न करने होंगे।

टेक्निकल पदोंकी भर्तीमें कुछ कठिनाईको छोड़कर सेनामें भर्ती और ट्रेनिंग का कार्यक्रम सन्तोपजनक रहा है।

अफसरों की शिक्षा का प्रबन्ध

सेनाका तेजीसे विस्तार करनेमें सैनिकों और अफसरोंकी ट्रेनिंगका इन्तजाम भी बढ़ाना पड़ा है। पिछले अक्तूबर-नवम्बरमें देहरादूनकी 'इन्डियन मिलिटरी अकादमी' में १,८०० अफसर-शिक्षार्थियोंकी ट्रेनिंगकी व्यवस्था थी। अब ३,२०० शिक्षार्थियोंको शिक्षाकी व्यवस्था हो गई है। संकटके बाद हमने पूना और मद्रासमें दो अफसर-ट्रेनिंग स्कूल खोले, जिसमें प्रत्येकमें ४५० अफसरोंकी ट्रेनिंग की व्यवस्था थी। अब प्रत्येकमें १,५०० अफसरोंकी ट्रेनिंगका प्रबन्ध हो गया है। नौगांवके आर्मी स्कूलमें जूनियर कमीशन अफसरों और सैनिकोंमें से तरक्की पाकर होने वाले अफसरोंकी ट्रेनिंग होती है। इसमें २३९ शिक्षार्थी लिए जाते थे, अब इसमें ६५० शिक्षार्थियोंको लेनेकी व्यवस्था हो रही है। इससे अधिक संख्यामें जूनियर कमीशन अफसरों और सैनिकोंको अफसर पद पर तरक्की पानेका मौका मिलेगा और सेनाको भी अनुभवी, प्रशिक्षित अफसर मिल सकेंगे। हमने बड़ौदा में फौजी इन्जीनियरीका नया स्कूल खोला है। इसमें ८०० विद्यार्थी पढ़ेंगे। हाई आल्टीच्यूट वारफेयर स्कूल (ऊंचे स्थानों पर लड़ाई) में भी भर्तीकी संख्या गतवर्ष की गतिसे दुगनी कर दी गई है।

सैनिकोंकी ट्रेनिंगके लिए भी १५ नये ट्रेनिंग केन्द्र खोले गए हैं। साथ ही पहलेके ट्रेनिंग केन्द्रों में भी स्थान दुगने कर दिए गए हैं।

मैंने केवल थोड़ेसे संस्थानों का नाम लिया है, जहां ट्रेनिंग का विस्तार किया गया है। वास्तवमें स्थल-सेना और नभ-सेनाके सभी ट्रेनिंग संस्थानों का इसी तरह विस्तार किया गया है। अपनी जरूरतके अनुसार ट्रेनिंगको और संक्षिप्त तेज भी किया गया है।

स्थल सेना का पुनर्गठन

स्थल सेना को जो काम सौंपा गया है उसके अनुसार वह अपने संगठन को भी सुधार रही है। पैदल डिवीजनों की रचना इस ढंगकी बनाई जा रही है कि युद्धमें वह स्थितिके अनुसार कुशलतासे काम कर सके और उसकी प्रहार शक्ति (फायरिंग पावर) भी बढ़ जाये। एक नया सेण्ट्रल कमान भी बनाया गया है। सेना-मुख्यालय का भी कुछ पुनः संगठन किया गया है। विभिन्न श्रेणीके सेना-नायकों को उनकी जिम्मेदारी का बोध कराया गया है, ताकि कमांडकी श्रृंखला विना किसी गड़बड़ीके काम कर सके।

नेफा पराजय से शिक्षा

नेफा पराजयसे शिक्षा ग्रहण कर हमने अपने सैनिकों और अफसरों को बताया है कि चीनी लोग किस तरीकेसे लड़ते हैं और क्या चाल चलते हैं। हमने अपने आदमियों को इसका अभ्यास भी कराया है कि यदि चीनी दुवारा हमला करें तो उनका किस प्रकार सामना करना चाहिए और उनकी फौजी चालों का कैसे काट करना चाहिए। सेना को लड़नेकी यह शिक्षा व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूपोंसे तेजी और जोरोंसे दी जा रही हैं।

शस्त्रास्त्रों का उत्पादन

जहां तक अस्त्र-शस्त्र का प्रश्न है, केवल नये सैनिकों को ही नहीं, सारी सेना को आधुनिक हथियारों और पहाड़ी लड़ाईके अन्य साधनोंसे विदेशी मुद्राकी कठिनाई और औद्योगिक क्षमता को देखते हुए, सज्जित करना है। यद्यपि कुछ चीजोंकी अब भी कमी है, फिर भी हथियार, गोली बारूद, सामान, कपड़ा, बर्फके लायक कपड़ा, कम्बल, बूट और अन्य चीजोंकी स्थितिमें काफी सुधार हुआ है। देशमें इन चीजों को बनानेकी व्यवस्था बराबर बढ़ रही है। इसके साथ ही अत्यन्त ऊंचे पहाड़ों पर लड़नेमें जिन कठिनाइयों का सामना सैनिकों को करना पड़ता है उनका वैज्ञानिक अध्ययन और उपायकी खोज भी जोरोंसे चल रही है।

हमारे देशके अंदर जितना अस्त्र-शस्त्र बनता है, वह हमारी तात्कालिक जरूरत के लिए पूरा नहीं है। इसलिए बाहरसे हथियार और फौजी सामग्री लेना जरूरी था। बहुतसे मित्र देशोंने तत्परतासे हमारी सहायताकी। संयुक्त राज्य अमरीकाकी सरकारने हमें जितना सामान देनेका वादा किया था उसका आधासे अधिक आ चुका है और शेषका अधिकांश भी जल्दी आ जायगा। इसी तरह ब्रिटिश सरकारने जो सामान देने को कहा था उसका बड़ा भाग हमें मिल चुका है। हमें सोवियत संघ, आस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, इटली, न्यूजीलैंड, रोडेशिया, पश्चिम-जर्मनी और यूगोस्लावया से भी विविध रूपमें सहायता मिली है।

आयुधों का दूना उत्पादन

अन्तमें अपनी सेना को सज्जित करने का भार हमें ही उठाना है। इसके लिए हमें अपने फौजी कारखानों को बढ़ाना और आधुनिक बनाना होगा। इस सम्बन्धमें, तीन चार खास दिशाओंमें हमने सफल प्रयास किये हैं।

हमने अपने आयुध कारखानों का उत्पादन बढ़ानेकी बहुत कोशिशकी है। संकटके पहले इनमें जितना सामान तैयार

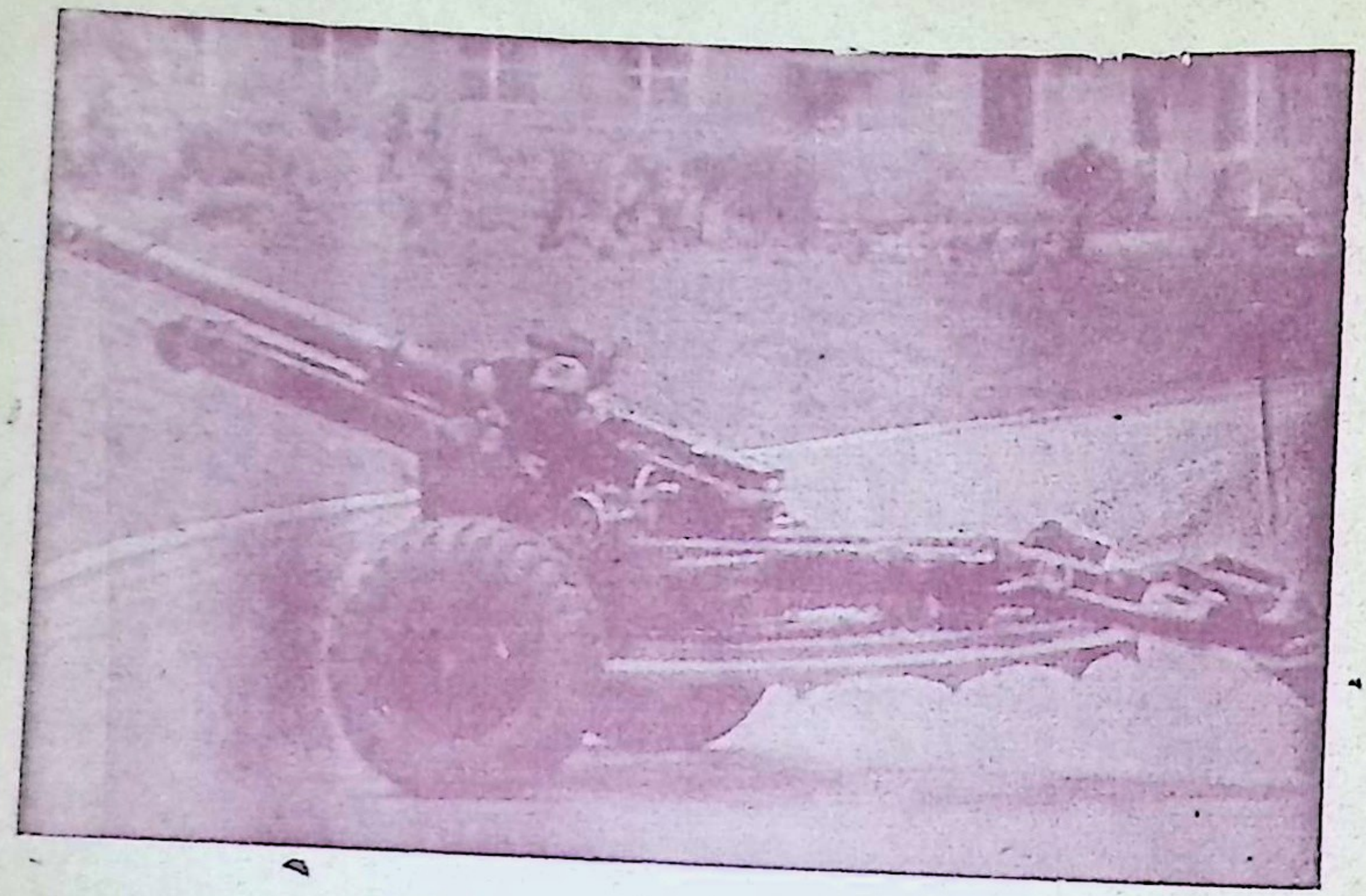

होता था, इस समय उसके दुगनेसे भी अधिक बन रहा है। इसका बहुत श्रेय हमारे आयुध कारखाने के कर्मचारियोंके देशप्रेम को है, कि उन्होंने अपने निर्धारित समयसे अधिक काम करके ज्यादासे ज्यादा सामान बनाया।

हमने अपने आयुध कारखानों की मशीनों का भी निरीक्षण किया है और पुरानी तथा जीर्ण मशीनों को बदलने का प्रबंध किया। हमने अपने औजार-खानोंका आधुनिकीकरण किया है और सामान को उठाने धरनेके प्रवन्धको सुधारा है। इन कारखानोंमें कुछ नया सामान बनाना भी शुरू किया गया है।

हमने इच्छापुर रायफल फैक्टरीमें सेमी-आटोमैटिक राइफलों को बनाना शुरू किया था। इस फैक्टरीके अफसरों और कर्मचारियों तथा और भी अनेक लोगोंकी कड़ी मेहनत और लगनसे अब हमने ऐसा हथियार तैयार कर लिया है, जो चलानेमें पूरी तरह संतोषदायक है।

वास्तवमें, हमने जो राइफल बनाई है वह अन्यत्र बनी इस प्रकारकी राइफलसे कई बातोंमें अच्छी है।

नये कारखाने

हमारी मुख्य आवश्यकता सेनाको ऐसे हलके हथियार देनेकी है जो ज्यादा कड़ी मार कर सकें। इसके लिए हमने मित्र देशोंकी मददसे ६ नए हथियार कारखाने लगानेकी योजना बनाई थी। इन कारखानोंके लिए जमीन लेने, इमारतका नक्शा बनाने और बिजली, पानी व अन्य बातोंका प्रबंध करनेका काम हो रहा है। हमें छोटे हथियारोंके गोली-बारूदके कारखानेकी मशीनोंके लिए संयुक्तराज्य अमरीकाकी सरकारसे आश्वासन मिला है। अभी ही हमें एक और कारखानेकी मशीनों के लिए ब्रिटेनकी सरकारसे आर्थिक सहायताका आश्वासन मिला है। अन्य चार कारखानोंके लिए भी मदद हासिल करने की कोशिश हो रही है और यदि पूरी

* शेष पृष्ठ १५८ पर

युद्धाग्नियां टकराती हैं

... लेफ्टिनेन्ट ज. थोराट

लेखक

ले० जनरल थोराट

युद्ध सम्बन्धी कथाएँ मनोरंजक होती हैं। अतएव अधिकांश लोग युद्ध की कथाएं सुनते हैं या पढ़ते रहते हैं। लेकिन अपनी आंखोंसे युद्धको देखने का मौका बहुत कम लोगों को ही मिल पाता है।

आक्रमण का नक्शा बनाने की प्रक्रिया

कल्पना कीजिये कि आपके सामने १०-२० फुट ऊंची तथा आधी मील लम्बी एक पहाड़ी है। इस दुर्गम पहाड़ीपर पहुंचनेके लिए एक ही रास्ता है। इसी रास्तेसे दुश्मनको रसद पहुंचती है। इसी रसदको काटकर दुश्मनको पूरी तरह असहाय करनेकी दृष्टिसे आपने इस स्थानपर हमला कर उस मोरचेपर कब्जा करने का निश्चय किया है। अर्थात् दुश्मन भी आपके इस इरादेसे थोड़ा बहुत परिचित है और इसीलिए उसने भी जगह-जगह खाइयां खोदकर अपनी मोरचेबन्दी की है।

इन परिस्थितियोंमें उस प्रदेशकी पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करना हमारे हितकी दृष्टिसे अत्यन्त आवश्यक है। उस प्रदेशके हवाई चित्र लेनेका काम आप अपने हवाई दलको सौंप देंगे, लेकिन दुश्मनके प्रदेशमें घुसकर उस प्रदेशके फोटो खींचना इतना आसान नहीं है, क्योंकि दुश्मन भी चौकन्नी दृष्टिसे आपकी प्रत्येक गतिविधिपर नजर रखता है। अगर कहीं वह आपके फोटो उतारनेवाले हवाई-दलको देख ले तो खैर नहीं। वह क्षेप्यास्त्रोंके सहारे आपके विमानको नीचे गिरानेकी कोशिश करेगा। इसीलिए फोटो उतारने-वाले विमानके साथ रक्षक-विमानोंकी एक टुकड़ी भी साथ- साथ चलती है। कल्पना कीजिये कि हमारी हवाई टुकड़ी दुश्मनके हवाई जहाजों पर आक्रमण करती है और उन्हें मार गिराती है। अब हमारे हवाई फोटो उतारनेवाले वायु-यान को काफी ऊंचा उड़ाकर बहुत कम समयमें फोटो लेनें पड़ते है और फौरन अपनी मुख्य चौकीपर आना पड़ता है।

फोटो लेकर अब हमारा हवाई जहाज वापस आ गया है। फिल्म धो ली गयी है। विशेषज्ञ उन फिल्मोंकी सहायतासे युद्धकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण सामग्री इक्ट्ठा करते है। इस सामग्रीसे दुश्मनकी चौकियोंकी लम्बाई-चौड़ाई तथा विस्तार मालूम होता है। दो चोकियोंके बीचका अन्तर मालूम होता है। उन्हें जोड़नेवाली सड़कोंकी जानकारी प्राप्त होती है। उसी प्रकार उस प्रदेशकी भौगोलिक स्थितपर भी प्रकाश पड़ता है। यह सामग्री मिलिटरी कमांडरके पास भेजी जाती है। कमांडर परिस्थितिका अच्छी तरहसे विचार करता है तथा उसके अनुसार हमें क्या साध्य करना है, इस बातको ध्यानमें रखकर, उस भू-प्रदेशकी स्वाभाविक रचना दुश्मनकी शक्तिका तुलनात्मक विचार तथा समय इत्यादि बातोंका विचार करते हैं। इसके बाद दुश्मन किन-किन रास्तों से हमला कर सकता है या हमला रोंक सकता है इस बातका भी कमांडर विचार करता है और तब हमलेका नक्शा तैयार किया जाता है।

हमले का निश्चित स्वरूप

अब नक्शा तैयार हो गया है। उसके अनुसार एक टुकड़ी सुरक्षित रखकर बाकी दो टुकड़ियोंकी सहायतासे दुश्मनके मोर्चे पर हमला करनेकी योजना है। हवाई फोटोके जरिये कमांडर को दुश्मनकी मोर्चेबन्दीका भी अन्दाजा लग गया है। अब अपने अभीतकके अनुभवके आधारपर कमांडर दुश्मनकी ताकतके बारेमें कल्पना कर सकता है कि उसके पास कितनी तोपें होंगी, कितना गोला बारूद होगा इत्यादि। आमने-सामनेके युद्धमें दुश्मनके गोला बारूदसे अपने जवानोंकी सुरक्षित रखनेकी योजना भी उसके पास रहती है। दुश्मनको सुरक्षित स्थानकी आड़में खड़े रहकर लड़नेकी सुविधा है, किन्तु हमारे सौनिकोंको खुलेमें रहकर लड़ना है। ऐसी हालत में दुश्मनकी चौकींपर लगातार बमवर्षा कर उसे हमला करनेसे विमुख कर देना चाहिए। इसके लिए हमे तोपखाना, मध्यम श्रेणीके मशीनगन तथा टैंकोंकी सहायता लेनी पड़ेगी। सम्भव है, ये सभी साधन अकेले कमांडर के अधीन न हों। अत: उसे प्रत्येक विभाग के प्रमुखको लिखकर इनके यूनिट सहायतार्थ मांगने होगे। दलका प्रमुख अपने सहकारियोंकी अपनी योजना समझाता है और फिर उसे अन्तिम रूप देकर निश्चित किया जाता है।

प्रत्यक्ष आक्रमण

अब उस पहाड़ीपर हमला करना है। दो टुकड़ियां आगे तथा पीछे एक टुकड़ी सुरक्षित रखकर हमला करना है। उस पहाड़ीके कल्पनिक विभाग कर लिये गये हैं। दलका प्रमुख उन दोनो विभागोंपर अधिकार करनेकी आज्ञा देता है। हमला करनेसे दस मिनट पूर्व वह अपने हवाई दलकी सहायतासे दुश्मनकी चौकीपर अग्निवर्षा करता है। उद्देश्य यही रहता है कि दुश्मनके सौनिक घबरा जांय, उनका अपरिमित नुकसान हो तथा दुश्मन सर न उठा सके। इस आक्रमणके खतम होते-होते लम्बी नालियोंवाली तोपें आग उगलना शुरू करतीं हैं। इतना होते ही हवाई दल तथा तोपखानेका कुछ भाग दुश्मनके संरक्षक दलके पीछेके तोपखानेपर आग उगलना शुरू कर देगा और उन्हें निष्क्रिय बनाने का प्रयत्न करेगा। इसमें कितनी सफलता मिलेगी यह आपके

तोपखानेकी क्षमतापर निर्भर करता है। इसीलिए साथ-साथ मशीनगनसे गोलियां बरसायी जातीं हैं। उद्देश्य यही है कि जब वास्तव में हमला हो तो दुश्मन बचावका रुख अख्तियार करे। अब हमारा सेना प्रमुख निश्चित करता है कि हमला किस समय करना है और फिर उसके अनुसार सहकारी अधिकारियोंको कड़ी आज्ञाएं दी जातीं हैं।

व्यूह रचना

अब सेनाके अधिकारी भूमिपर भी व्यूह रचना करते हैं। अपनी-अपनी टुकड़ियोंको कहाँ रखना है, किस स्थानपर एक साथ हमला करना है, गोला-बारूद का उपयोग कर आखिरी हमला किस प्रकार करना है, इसकी योजना तैयारकी जाती है। इसी समय सेनाके अधिकारी मृत सैनिकों की व्यवस्था, घायल सैनिकों के उपचारकी व्यवस्था, गोला-बारूद-रसद इत्यादि बातोंका विचार करते हैं। इतना होनेके बाद सेनाके प्रत्येक विभागके अधिकारीको आज्ञाएं दी जाती हैं तथा किस समय क्या करना है इसकी पूरी जानकारी प्रत्येकको दी जाती है। अगर कहीं ऐसा न हो तो ऐन समय गड़बड़ मचनेकी संभावना रहती है। व्यूह रचनाके समय सैनिक कुछ पीछे रहते हैं। वे अपने हथियारों और गोला-बारूद इत्यादिका निरीक्षण करते हैं और फिर गरम-गरम भोजन भी कर लेते हैं। पता नहीं, फिर कब खाना मिले।

अग्नि वर्षा के समय…

उधर देखिये, मेरी बायीं ओरकी पहाड़ीपर दुश्मनकी चौकी है और दाहिनी ओर जो मैदान दीख रहा है, वहीं हमला होनेवाला है। हमारे सभी यूनिट अपनी कार्रवाइयाँ छिपे ढङ्ग पर कर रहे हैं। वे हमलेकी तैयारी कर रहे हैं। अलग-अलग गुटों में आगे बढ़ रहे हैं। दुश्मन के हवाई जहाज जब आसमानमें घिर जाते हैं तो वे जमीनपर लेट जाते हैं। उनकी वर्दियोंका रंग वातावरणके अनुकूल होनेके कारण उन्हें पहचानना कठिन हो जाता है।

देखिये! अब वे छोटे-छोटे गुटोंमें छिप कर आगे बढ़ रहे हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि उनके भाग्यमें शायद कलकी सुबह नहीं लिखी है। फिर भी किसीके चेहरेपर भय या विषादके चिह्न नहीं हैं। विजय तथा बलिदान यही दो भावनाएं उनके चेहरेपर नाच रहीं हैं।

हमला शुरू होनेमें अब केवल बीस मिनटकी देर है। दूसरे ही क्षण आसमान हवाई जहाजों से ढंक जाता है। ईश्वरकी बड़ी कृपा है, हवाई जहाज हमारे ही हैं। देखिये, वे नीचे तिरछे जाकर बमवर्षा कर रहे हैं। गोला-बारूदके छूटनेकी आवाज आ रही है। समस्त वायुमण्डलमें धुआँ उठ रहा है। धुएंके साथ-साथ धूल भी उड़ रही है। दुश्मनकी तोपें हमारे हवाई जहाजों पर आग बरसानेका प्रयत्न कर रही हैं। लेकिन हमारे विमान-चालक कम उस्ताद नहीं है। वे दुश्मन को धोखा देकर पीछे हटते हैं और पुनः आग बरसाते हैं। देखा, अभी-अभी आसमानमें विस्फोट हुआ और वह हवाई जहाज उसकी लपेट में आ गया। अब वह दम तोड़ रहा है और जमीनकी ओर आ रहा है। एक साथी काम आ गया। इससे अन्य साथी डगमगाये नहीं बल्कि उन्होंने दुगने जोशमें आग उगलना शुरू कर दिया है।

इसी अग्निवर्षाके बीच पैदल सैनिकों की टुकड़ी आगे बढ़ रही है। वे बिखर

परम्पराओं का मूल्य

पिछले महायुद्ध में क्रीट में स्थल सेना घिर जाने से जल-सेना को सहायता की सूचना आई। जल सेना अधिकारी बड़े असमंजस में पड़ा क्योंकि जर्मन वायुयानों के कारण इस सहायता में जलपोतों के डूबने का भय था। उसने अपने उच्चतम अधिकारी से आदेश माँगा। उसे अत्यन्त प्रसिद्ध उत्तर मिला 'जलपोत के निर्माण में तीन वर्ष लगते हैं और सैनिक परम्परा के निर्माण ३०० वर्ष' 'It takes three years to build a battleship and three hundred to build a tradition.'

गये हैं। इससे दुश्मनकी गोलाबारीका उनपर विशेष असर नहीं होगा। दुश्मनने अपनी तोपें दागना शुरू कर दिया है। बमके गोले आगे तथा पीछे गिरकर फूट रहे हैं। जवान घायल हो रहे हैं। कुछ बहादुर जवान लड़ाईमें काम आ गये हैं। फिर भी दूसरे सैनिकोंपर इसका कोई असर नहीं होता। अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए वे कटिबद्ध हो उठे हैं। वे आगे बढ़ रहे हैं। दुश्मनकी चौकी अब केवल सौ गजकी दूरी पर है। अब हमारा तोपखाना बन्द हो गया है, क्योंकि अब उससे अपना ही नुकसान हो सकता है।

आगेकी पैदल टुकड़ी अब केवल अपने बल-बूतेपर ही आगे कूच करती है। छोटे-छोटे आटोमेटिक राइफल तथा अन्य शस्त्रों के साथ पैदल टुकड़ी आगे बढ़ रही है। जब दुश्मनकी ओरसे गोलियाँ बरसती हैं वे जमीनपर लेटकर घिसट-घिसटकर आगे बढ़ते हैं......कुछ जवान शहीद हो गये हैं लेकिन अन्य सैनिक आगे बढ़ रहे हैं।

हर-हर महादेव

अब आखिरी हमलेका क्षण आ गया है। दुश्मनने गोलियोंकी बारिश शुरू कर दी है लेकिन देशभक्तिकी प्रेरणासे पागल हुए जवानोंको अब दुनियांकी कोई भी ताकत पीछे नहीं हटा सकती।

और यह क्या ? यह कैसी आवाज है ? शिवाजी महाराजकी जय...हरहर महादेव, तो हमारे जवानोंने आखिरी हमला बोल ही दिया।

हिंदके इन वीर रणबांकुरोंका साहस देखकर दिल बाग-बाग हो उठता है। इन वीरोंने अब रणचण्डीका रौद्र रूप धारण कर लिया है। संगीनोंसे वे दुश्मन के पेटकी अंतड़ियाँ बाहर निकाल रहे हैं और बन्दूकके कुंदेसे उनके सरकी धज्जियाँ उड़ा रहे हैं। हमारे भी कुछ जवान घायल होकर नीचे पड़े हैं, लेकिन उन्हें पानीकी नहीं, दुश्मनके खून की प्यास है।

विजय के पश्चात......

लड़ाईका स्वरूप अब धीरे-धीरे बदल रहा है। कभी जीत, कभी हार मालूम होती है। पर अब दुश्मन हार गया है। हमारे बहादुर सैनिकोंका मुकाबला करना उन्हें मुश्किल हो गया है।

हमारी सेनाके प्रमुखने पिस्तौलका घोड़ा दबाकर विजयका संकेत दे दिया। सिग्नलर इस शुभ संवादको मुख्य चौकी तक पहुंचायेंगे।

लड़ाईमें जो बहादुर काम आये हैं या घायल हो गए हैं वे अभी तक वहीं पर पड़े हुए हैं। हमारे सैनिक अब विजित प्रांत में अपनी सुरक्षा चौकियाँ बना रहे

हैं। संभव है दुश्मन फिर से वापस लौट आए और यह बात असंभव भी नहीं है। अब आराम करनेकी फुर्सत कहाँ? कामोंका पहाड़ तो अभी सामने खड़ा है, मृत सैनिकोंकी अंतिम व्यवस्था करनी है, घायल सैनिकोंको दवादारूके लिए रेडक्रास यूनिटके सुपुर्द करना है। गोला-बारूद फिरसे सुसज्जित करना हैं, नई खाइयाँ बनानी हैं। थके-मांदे तथा भूखे-प्यासे जवान काममें जुट गए हैं। हर क्षण मूल्यवान है। इसी समय स्ट्रेचरधारी सैनिक घायल सैनिकोंको उठाकर ले जा रहे हैं। किसीका हाथ टूट गया है तो किसीका पैर ही बेकार हो गया है।

कुछ क्षण पूर्व जिस पहाड़ीके आस-पास रणचंडी अपना तांडव कर रही थी, जहाँ खूनकी नदियाँ बह रही थीं वहाँ अब शांति छा गई है। अब हमारे सैनिक दुश्मनके जवाबी हमलेकी तैयारीमें जुट गए हैं। पहली लड़ाईमें उन्होंने बड़ी बहादुरी दिखलायी। उसमें उनके अनेक साथी काम आ गए, लेकिन साथ ही उन्होंने अपनेसे दुगुने सैनिकोंको मौतके घाट उतार दिया। सूर्य अब अस्ताचलकी ओर बढ़ रहा है और हमारे वीर मोर्चा बांधकर खाइयोंमें बैठे हुए हैं।

उन्हें भूख सता रही होगी। प्यास पीड़ित कर रही होगी। लड़ाईमें काम आए अपने बहादुर साथियोंके लिए वे मन ही मन आँसू बहा रहे होंगे। लेकिन... लेकिन मुझे उनकी तेजस्वी आँखोंमें विजय की उत्कंठा साफ दीख रही है। यही उत्कंठा उनके बाप-दादाओंकी आँखोंमें भी थी। अभिमानके साथ मेरा मस्तक अपने आप नत हो जाता है और मैं मन ही मन उनके मंगलके लिए ईश्वर से प्राथना करता हूँ।*

सेनानी और चाय

प्रातःकाल ६ बजेका समय था, भारतीय सेना आगे बढ़ती जा रही है। इधर, वायुयानके अफसरोंके जलपानका समय हो रहा है। टेबिलों पर डबलरोटी, मक्खन रखा जा रहा है। कुछ अफसर कुर्सियों पर बैठ चुके हैं। केवल भारतीय एयर वाइस मार्शल श्री पिंटोकी प्रतीक्षाकी जा रही है। इसी समय श्री पिंटो आये और बोले "साथियो मैं अभी आकर चाय पीता हूँ, जरा घूम आऊँ।"

इतना कह कर पिंटो एक बमवर्षक विमानमें जा बैठे और उसे ले उड़े। पांच मिनटमें वे गोवाके दबोलिन हवाई अड्डे पर थे।

चायको जाते समय उन्हें संदेश मिला था कि दबोलिन हवाई अड्डे से गोवाका पुर्तगाली गवर्नर अपने विमानमें भाग जाने वाला है। इस-लिए, श्री पिंटो ने यह कार्रवाई की।

हवाई अड्डे पर उन्होंने एक चक्कर लगाया, जिससे नागरिकोंको बच निकलनेका अवसर मिल जाय। भारतीय बमवर्षकको देख लोग भागकर इधर-उधर हो गये। इतनेमें श्रीपिंटो अपने विमानको दूसरी बार हवाई पट्टीके ऊपर लाये और एक बम छोड़ दिया। हवाई पट्टीमें ६ फीट गहरा एक गड्ढा हो गया। श्री पिंटोका उद्देश्य पूरा हो गया। अब वहांसे कोई जहाज उड़ नहीं सकता था। श्री पिंटो लौटकर अपने अड्डे पर पहुँच गये। इस काममें उन्हें केवल १० मिनट लगे। उन्होंने अपने साथियोंके साथ जाकर चाय पी। तब तक उनके साथी उनकी प्रतीक्षा करते रहे।

* शेष पृष्ठ ५२ का

सहायता न मिल सकी तो हमें अपने सीमित टेकनिकी और आर्थिक साधनोंको ही इसमें लगाना होगा।

मिग विमान

मिग विमान बनानेके कारखानोंके लिए जमीन ले ली गई है और बिजली, पानी, रेलवे साइडिंग और शिल्पिक कर्मचारियोंकी ट्रेनिंग आदिका काम काफी आगे बढ़ चुका है। ये कारखाने सोवियत विशेषज्ञोंके सहयोगसे लगाए जा रहे हैं। हमने अपनी आवश्यकताके अनुसार मिग २१ में कुछ सुधार भी सुझाए हैं।

प्रतिरक्षा-सामग्री निर्माणके अन्य क्षेत्रों में भी हम विस्तार और आधुनिकीकरण कर रहे हैं।

यातायात की प्रगति

अग्रिम मोर्चे पर अपनी सेनाको रसद आदि पहुंचानेके लिए हमें यातायातके प्रबंधको बढ़ाना है। इन क्षेत्रोंमें सेनाको आवश्यकतानुसार सड़कें बनाई जा रहीं हैं। अधिकांश सड़कें सीमांत सड़क निर्माण बोर्डके द्वारा बनाई जा रहीं हैं। जून, १९६३ तक बोर्डने करीब १६०० मील सड़कोंके लिए जमीन काटी थी, ६०० मील सड़कें बनाई थी और २७०० मील की पड़तालकी थी। बोर्डने हालमें ३००० मील नई सड़कें बनाने, ३००० मील वर्तमान सड़कोंकी मरम्मत और सुधार करने और करीब ३०० मीलको पक्का करनेका कार्यक्रम बनाया है।

यन-चालकों की बहादुरी

फिलहाल अग्रिम इलाकोंमें हमारी सेनाको बहुत कुछ सामान विमानोंसे पहुंचाया जाता है। जैसे बीहड़ इलाकोंमें विमानोंकी पट्टियाँ और सामान गिरानेकी जगहें हैं, उसे देखते हुए वायु सेनाके नवजवानोंकी बहादुरी और कुशलताकी तारीफ करनी होगी, जिन्होंने मौसमकी खराबी, इलाकेकी दुर्गमता और अन्य कठिनाइयों की परवाह न करके सेनाको रसद पहुंचाने का काम जारी रखा है। सीमा क्षेत्रोंमें अपनी सेनाको सामान पहुंचानेके लिए हमें अपने परिवहन विमानोंकी संख्या बढ़ानी पड़ी है और हमने इसके लिए सं० रा० अमरीका, सोवियत संघ और कनाडासे विमान प्राप्त किए हैं।

जवानों का दृढ़ संकल्प

अंतमें मेरा निवेदन है कि रक्षाकी तैयारीमें मनोवल और धीरताका भी बड़ा महत्व है। पिछले महीनोंमें मैं अग्रिम क्षेत्रोंमे जाकर अपनी स्थल और नभ-सेना के सैनिकोंसे मिला हूँ। हमारे सैनिक अत्यंत दुर्गम इलाकोंमें तैनात हैं और अत्यंत खरा आवोहवामें रहते हैं। हारे वायु-सैनिक बड़े साहसी काम कर रहे हैं। मुझे गर्व है कि जहाँ कहीं भी मैं गया मैंने अपने जवानोंको अडिग धैर्य, संकल्प, आत्मविश्वास और उत्साहसे काम करते देखा। हम तो यहाँ केवल अपने वीर सिपाहीका वाहुबल बढ़ानेकी कोशिश मात्र कर रहे हैं जो बर्फीले पहाड़ोंपर खड़ा दिन-रात सीमाका पहरा दे रहा है और जिसे आक्रमण होने पर शत्रुसे लोहा लेना होगा। उसे यह जानकर बहुत बल और उत्साह मिलेगा कि उसके देशवासी उसकी शक्ति और मनोवल बढ़ानेके लिए सब कुछ कर रहे हैं।

(संसदके अभिभाषणके आधारपर)

कैसा ही बोझा
कैसा ही पथ

मयूर खरीदें–यह आपकी उपयुक्त सेवा करेगी, अधिक टिकाऊ, प्रत्येक पथ पर अधिक से अधिक बोझे के साथ तेज भागने वाली। यह विशेष फौलाद एवं उच्च इंजीनियरिंग श्रम से निर्मित है।

*

अपने डीलर से कहें कि एक **मयूर** दिखायें। आप इस पर सदैव प्रसन्नता से जावें।

卐

MAYUR
AN
EVEREST PRODUCT

MAYUR
Bicycles

एवरेस्ट साइकिल लिमिटेड

साइकिलों एवं साइकिल पार्ट के निर्माता

कमरपट्टी, गौहाटी

जिंदगी रण में प्रतीक्षा कर रही है

लाला जगदलपुरी

मौतसे कह दो कि अब वह लौट जाये,
जिन्दगी रणमें प्रतीक्षा कर रही है !

शौर्यके सूरज चमकते आ रहे हैं,
साँझ उनके व्योम पर आती नहीं है;
आरतीके दीप जलते जा रहे हैं,
आँधियोंकी जीत हो पाती नहीं है;

नींदसे कह दो कि करदे शिविर खाली,
चेतना अब जागरण-स्वर भर रही है।
मौतसे कह दो कि अब वह लौट जाये,
जिन्दगी रण में प्रतीक्षा कर रही है।

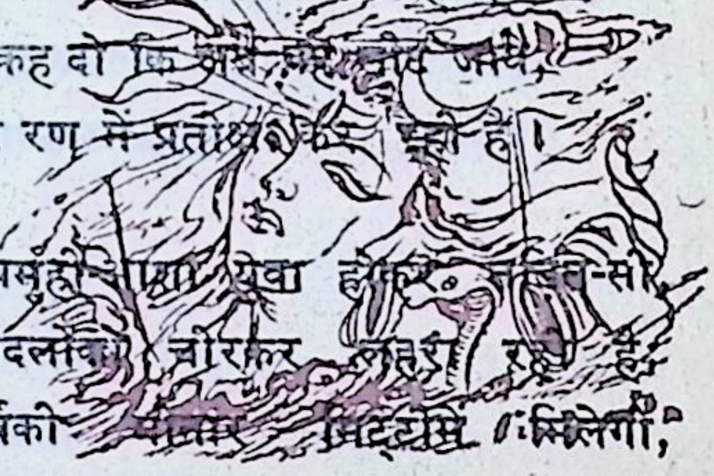

दुधमुँही आशा युवा होकर तड़ित-सी,
बादलोंको चीरकर लहरा रही है,
गर्वकी मीनार मिट्टीमें मिलेगी,
पुनः पौरुष की ध्वजा फहरा रही है ;

रात से कह दो कि वह लोरी न गाये,
भूमि भैरव-राग पर निर्भर रही है।
मौतसे कह दो कि अब वह लौट जाये,
जिन्दगी रण में प्रतीक्षा कर रही है।

त्याग का हिमगिरि गगन-चुम्बी खड़ा है,
स्वार्थके बौने चुनौती दे रहे हैं ;
सत्यकी, ईमानकी स्रोतस्विनीको,
प्यासके छौने चुनौती दे रहे हैं ;

हृदयसे कह दो कि साहस की विजय है,
किरण-बाणोंसे तमिस्रा मर रही है।
मौतसे कह दो कि अब वह लौट जाये,
जिन्दगी रणमें प्रतीक्षा कर रही है।

"सेना तो अपना काम करेगी ही, किन्तु यदि नीति विफल होगी तो सेना किसी देशके भाग्य को नहीं बदल सकती।"

★

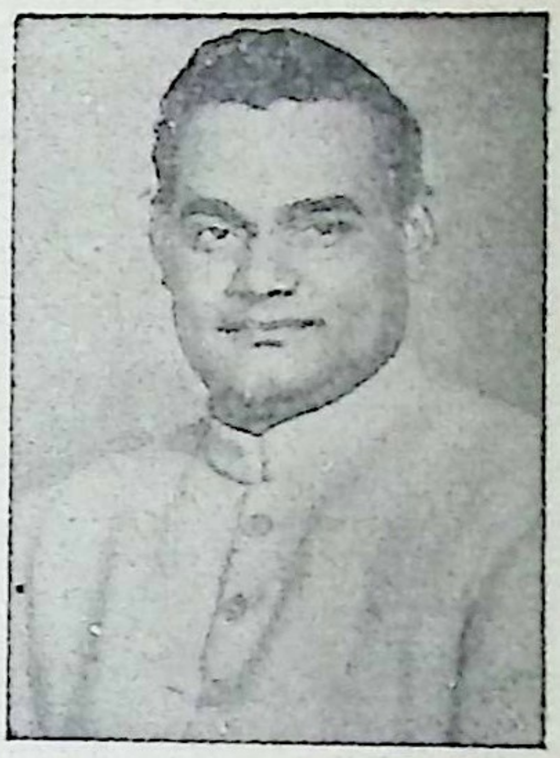

अटलबिहारी वाजपेयी

[संसद सदस्य]

नेफा पराजय का कलंक

चीनी आक्रमण के पश्चात् प्रधान मन्त्रीने यह आश्वासन दिया था कि सैनिक पराजयके कारणों की पूरी जांच की जायेगी और तथ्यों को संसद और जनताके सामने लाया जायेगा किन्तु जो रिपोर्ट आई है उससे उनका वादा पूरा नहीं होता। सुरक्षा मन्त्री यह कहते हैं कि वे किसीके पीछे नहीं पड़ना चाहते 'विचहंटिंग' नहीं करना चाहते। ठीक वैसे ही कोई भी 'विचहंटिंग' नहीं चाहता है। लेकिन यदि हम 'विचहंटिंग' नहीं करना चाहते तो लीपापोती भी नहीं करना चाहते। सैनिक पराजय के लिये जो जिम्मेदार हैं उनकी जिम्मेदारी को नियत करने और अगर वे अपने कर्त्तव्यपालनमें विफल रहे हैं तो उस विफलताके लिये उन्हें दण्ड देनेसे इन्कार नहीं किया जा सकता।

अपराधियों को दण्ड दिया जाय

चोरी का केवल माल बरामद करना ही काफी नहीं होता, भविष्य में चोरियां न हों इसकी व्यवस्था करना ही जरूरी नहीं है, चोर को सजा देना भी आवश्यक है। चोर साहूकार बनकर चला जाये और हम यह दावा करें कि उसका चोरीमें कोई हाथ नहीं था, यह तो न्याय के सामान्य सिद्धान्तों के भी अनुकूल नहीं होगा। जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है वह बड़ी भयंकर है और उन लोगों के लिये आंखें खोल देने वाली होनी चाहिये जो 'बायें और दायें' के मतभेद के नामपर अपने कर्त्तव्य का पालन न करनेवाले राजनैतिक नेताओं और सैनिक अफसरों के पापों पर पर्दा डालना चाहते हैं।

तैयारी न करने का रहस्य।

जांच कमेटी की रिपोर्ट वर्तमान सरकार की अदक्षता की, अक्षमता की, राजनैतिक अदूरदर्शिता की और सैनिक असावधानी की जीती-जागती तस्वीर है। किन्तु सैनिक पराजयके मूलमें जो कारण हैं वे और अधिक भयानक हैं। आखिर सेना को चीनके हमलेके लिये तैयार क्यों नहीं किया गया ? क्या इसका कारण यह है कि सरकार समझती थी कि चीनसे लड़ना नहीं पड़ेगा? क्या इसका कारण यह है कि सरकार समझती थी कि चीन ने उर्वशीयं में तो वचन दिया है कि वह सीमा को तोड़कर भारत में नहीं घुसेगा और जहां तक अक्साई चीन का सवाल है, सरकार कुछ ले देकर चीन के साथ शर्मनाक समझौता करने की तैयारी कर रही थी ? यह मेरा आरोप नहीं है, यह कम्युनिस्ट पार्टी के चेयरमैन कामरेड डांगे कहते हैं। और अभी तक उनके इस आरोप का खण्डन नहीं किया गया है।

इस वक्तव्य का खण्डन किया जाना चाहिए। आखिर राजनैतिक नेतृत्व क्यों विफल हुआ ? चीन के इरादों, सैनिक तैयारियों और अनेक वर्षों से होने वाले अतिक्रमणों का गलत अर्थ क्यों लगाया गया ? शासन में लड़ने का संकल्प क्यों नहीं था ? किन्तु अब प्रश्न है कि क्या सोचने का तरीका वदल गया ? क्या सरकार इस बात को समझ रही है कि अब चीन से शान्तिपूर्ण तरीके से समस्या का समाधान होना सम्भव नहीं है और हमें लड़कर अपनी भूमि वापस लेनी होगी। यदि नहीं तो यह कथन कोई अर्थ नहीं रखता कि सरकार ने और सेनाने अपनी पराजय से शिक्षायें ली हैं. भविष्य के लिये कुछ पाठ पढ़े हैं।

यंत्र और भावी महायुद्ध

पश्चिमी जर्मनीकी सीमा पर लगे अमरीकी रडारके पर्दे पर अचानक कुछ चित्र दिखाई देने लगे। उन अस्पष्ट चित्रोंसे ऐसा लगा कि पचासों विमान रूसकी ओर से उड़े चले आ रहे हैं। क्षण भरमें अमरीकी बमवर्षक अणुबमके साथ आकाशमें पहुंच गये और प्रतीक्षा करने लगेअपने राष्ट्रपति के आदेशकी। इसी बीच वे चित्र स्पष्ट होते गये। पता चला कि वे जहाज न होकर वगुलों का एक बड़ा झुंड था। अमरीकी बमवर्षक संकेत पाकर वापस आगये और यंत्रकी एक साधारण भूलसे आनेवाला एक भयंकर संकट टल गया। इन यंत्रोंकी भूलसे भी कभी-कभी भावी महायुद्ध हो सकता है।

सेना को तैयार नहीं किया गया

जब चीनी सेनायें हमारा दरवाजा खटखटा रहीं थीं तब हमारे पुराने सुरक्षा मन्त्री आक्रमणकी गम्भीरताको कम कर के बतानेकी कोशिश कर रहे थे। हमारे प्रधान मन्त्री बार-बार कहते थे कि लद्दाख में हमारी स्थिति कमजोर हो सकती है मगर नेफामें हम मजबूत हैं, पूरी तरह तैयार हैं। मगर हमारी पराजयका इतिहास नेफाकी पहाड़ियों पर हमारे जवानों ने अपने रक्तसे और देशकी जनताने आंसुओंसे लिखा है। जो बहादुर सेना विदेशियोंके अन्तर्गत संसारकी हर लड़ाई के मैदानमें अपनी विजयकी गाथायें लिखती थी वह सेना परास्त हो गई। इसलिए नहीं कि हमारे जवान लड़नेमें

कम थे, इसलिये भी नहीं कि वे जान पर खेलना नहीं जानते थे। लेकिन इसलिए कि उस सेनाको सरकारने तैयार नहीं किया। क्या आज सेनाको तैयार किया जा रहा है? हमारे सुरक्षा मन्त्री कहते हैं, हम ८००० अफसर नये रख रहे हैं, तीन डिवीजन्स और तैयार कर रहे हैं, आर्डिनेन्स फैक्ट्रियां ८ में से दो लगानेके लिये ब्रिटेन और अमरीकासे आश्वासन मिल गया है। मगर शेष आर्डिनेन्स फैक्ट्रियां कहा लगायेंगे, किसके सहयोगसे लगायेंगे, इसका पता नहीं है। ६ डिवीजनोंकी वृद्धिसे चीनके साथ हमारा सैनिक सन्तुलन कायम नहीं होगा। हमें कमसे कम २० लाख सेना और ३ हजार लड़ाकू विमान जुटाने होंगे। चीन और पाकिस्तानके गठबन्धनको ध्यानमें रख कर सैनिक सन्तुलन बनाना होगा।

चीनी खतरे की उपेक्षा

कहा जाता है सेना इसलिये हारी थी कि चीनियोंने, 'लहर पर लहर' भेजी। यह चीनियोंकी लड़ाईका तरीका नया नहीं था। कोरियामें कम्युनिस्ट चीन इसी तरीकेसे लड़ चुका था। मगर दिल्लीके देवता, आंखोंमें पंचशीलकी पट्टी बांध कर, बैठे रहे। पुराने सुरक्षा मन्त्री चीनी आक्रमणसे देशको बेखबर रखनेका पाप करते रहे और इसका नतीजा यह हुआ कि चीन सीमा पर सेनायें अड़ाता रहा और हमने अपनी सेनाओंको चीनके लड़ाईके तरीकोंका शिक्षण देना तो दूर रहा, शिक्षण के लिये पर्याप्त सामान तक नहीं दिया। सेनाको यह भी बताया नहीं गया कि उसे चीनी आक्रमणका सामना करना होगा। पुराने सुरक्षा मन्त्री तो सदैव

इतनी ही तैयारी से काम नहीं चलेगा, चाव्हाण जी!

पाकिस्तानकी रट लगाते थे और समझते थे कि चीन हमला करेगा ही नहीं।

भू० पू० प्रतिरक्षामंत्रीको दंडित किया जाय

क्या इसके लिये पुराने सुरक्षा मन्त्री को जवाबदेह नहीं ठहराया जाना चाहिये? क्या इस पराजयकी जिम्मेदारी तय नहीं की जानी चाहिये? क्या जो दोषी व्यक्ति हैं उन्हें दण्डित नहीं किया जाना चाहिये? इस रिपोर्टकी पंक्ति-पंक्तिसे जो दो चेहरे झांक रहे हैं एक गौर वर्णका और एक श्यामवर्णका उन चेहरोंको देशकी नजरों से ओझल नहीं किया जा सकता है।

सुरक्षा के साथ जानबूझकर खिलवाड

संसदने सुरक्षाके लिये आवश्यकतासे अधिक धन दिया किन्तु मन्त्रालय उसे खर्च नहीं कर सका। एक अरब अत्तीस करोड़ रुपया बिना खर्चके वापस कर दिया गया। यही नहीं तो जो रुपया दिया गया और खर्च किया गया, वह भी ठीकतरहसे खर्च नही किया गया। क्या हथियार बनानेके कारखानोंका काम काफी परकुलेटर तैयार करना है? स्वचालित बन्दूककी जगह बाथटब बनाना है?

गोलियोंकी जगह फोटो लेनेके यंत्र बनाना है ? यदि चीनी आक्रमणका खतरा अनुभव किया गया होता तो पुराने सुरक्षा मन्त्री देशकी सुरक्षाके साथ इस प्रकार खिलवाड़ कैसे करते ? चीनका प्रथम अतिक्रमण १९५४ में हुआ था। बादमें लद्दाख पर उसका खूनी पंजा फैला। पुराने सुरक्षा मन्त्रीकी आंखें फिर भी नहीं खुलीं। क्या उनकी देखनेकी शक्ति नष्ट हो गई थी या उन्होंने जान-बूझ कर चीनके इरादों और सैनिक तैयारियोंसे देशको अन्धेरेमें रखा। जो कुछ हुआ उस का तीसरा उत्तर नहीं हो सकता।

विदेशी दूतावासों द्वारा जासूसी

जांच कमेटी की रिपोर्टमें मिलिटरी इन्टेलिजेन्स की विफलताके बारेमें बहुत कुछ कहा गया है। सुरक्षा-मन्त्रीने आश्वासन दिया है कि सैनिक गुप्तचर विभाग का पुर्नगठन हो रहा है। लेकिन पुर्नगठन के लिये जो पग उठाये गये हैं वे पर्याप्त नहीं हैं। हमारे सैनिक रहस्य शत्रुके पास अभी भी पहुंच रहे है। इस बात पर प्रकाश डाला जाय कि जब चीनी आक्रमण चल रहा था और मित्र देशोंके एयरमिशन भारतमें आये हुये थे तो उनकी सुविधाके लिये उनको दिखानेके लिये विदेश मन्त्रालय और सुरक्षा मन्त्रालयने सीमावर्ती क्षेत्रोंके कुछ नक्शे तैयार किये थे। क्या यह सच नहीं है कि वे नक्शे नई दिल्ली स्थित एक विदेशी राजदूतावासमें पहुंच गये ? क्या यह सच नहीं है कि उस विदेशी राजदूतावासमें काम करने वाले एक भारतीय कर्मचारीने उन नक्शों की फोटो कापियां लाकर सरकार को दीं ? क्या यह सही नहीं है कि उस विदेशी राजदूतावासके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई ? क्या यह सच नहीं है कि उस विदेशी राजदूतावासने चीन और पाकिस्तानके साथ मिलकर भारतमें गुप्तचरों का जाल बिछाया हुआ है और उस जाल को तोड़नेके लिए कोई कोशिश नहीं की गई है ? अभी पाकिस्तानके एक गुप्तचर पकड़े गये हैं। जासूस केवल पाकिस्तानके ही नहीं है, चीन के भी है, और चीनके साथ दक्षिण पूर्वी एशिया का एक राजदूतावास भी है; जिसकी गतिविधिके बारेमें सरकार को जानकारी है। किंतु कोई कदम नहीं उठाती जिसका नतीजा यह हुआ कि आपत्तिजनक कार्यवाही आज भी जारी है।

असफल गुप्तचर विभाग

हमारी सेनाके कुछ अफसर ऐसे विदेशी तत्वोंसे सम्पर्क रखते हैं जिनका आचरण संदिग्ध है। बराबर हमारे गुप्त सैनिक समाचार शत्रुओंको पहुँच रहे हैं। क्या सुरक्षा-मन्त्री सुरक्षाके रहस्योंको गुप्त रख पा रहे हैं ? संसदको अन्धेरेमें रखा जा सकता है, देश की जनता को विश्वासमें नहीं लिया जा सकता लेकिन जो तथ्य शत्रु को मालूम नहीं होने चाहिये, वे शत्रु को मालूम होते रहे हैं ? मिलिटरी इन्टेलीजेन्स की विफलताके लिये जो मिलिटरी इन्टेलिजेन्स डायरेक्टर हैं, क्या उन्हें कोई सजा दी गई ?

सैनिक गुप्तचर विभागमें अवांछनीय तत्व

डायरेक्टर आफ मिलिट्री इन्टेलीजेंस में अभी तक चीनके कुछ नागरिकों को चीनी भाषामें आने वाली सामग्रीका अनुवाद करनेके लिए रखा गया है। वे चीनी नागरिक हैं और पार्ट टाइम काम करते हैं, उनके हाथोंमें अनुवाद जैसा आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य है। क्या हम इस बातके लिए भारतीय नागरिक नहीं रख

सकते ? क्या यह सच नहीं है कि चीनी भाषा जानने वाले अफसरोंका जो चयन होता है वह चीनी नागरिकोंकी रायसे होता है? क्या यह सच नहीं है कि पब्लिक सर्विस कमीशनमें जो चीनी भाषामें इम्तहान लिया जाता है उसका निर्णय चीनी नागरिक करते हैं ? क्या सच नहीं है कि एक ऐसा चीनी राष्ट्रवादी हमारे देशमें रहता है जिसका एक लड़का पीकिंग में फौज में कार्य करता है और जिसका छोटा लड़का डायरेक्ट्रेट आफ मिलीटरी इन्टेलीजेंसमें काम करता है ? इन चीनियोंकी निष्ठा किधर है, यह पता नहीं। क्या चीनी भाषा जानने वाले, चीनी भाषाका अनुवाद करने वाले भारतीय हम सैकड़ों की संख्या में तैयार नहीं कर सकते ? हांगकांग में, पीकिंग में चीन के अखबार क्या लिखते हैं, उनकी छानबीन करनेके लिए, आने वाले संकेतोंको समझाने के लिए, उनकी सही सूचना सरकारको देनेके लिए हमें बहुतसे कर्मठ कार्यकर्ता चाहिगे। किंतु हांगकांग खाली है पीकिंगमें हमारे राजदूत कर्मचारी बन्दी के समान हैं। हमारे राजदूतावासके जो मिलिटरी अटैची है, उनके वारे में कुछ न कहना ही अच्छा है।

गलत राय किसने दी ?

स्पष्ट है सिविल तथा मिलिटरी दोनों इन्टेलीजेंस विफल हो गई और शायद इसीलिए प्रधानमन्त्रीने स्थिति को बिना समझे सेना को आदेश दे दिया कि चीनियों को बाहर निकाल दो। हमने उनकी घोषणाका बड़ा स्वागत किया था। प्रधानमन्त्रीका उस समय ऐसा रूप प्रकट हुआ था जिसका हम अभिनन्दन करते हैं। लेकिन नतीजा क्या हुआ ? चीनी सेना कितनी इकट्ठी हुई है, उसके पास कैसे हथियार हैं, एक मोर्चे पर कितनी शक्ति मैदानमें ला सकते हैं इसका सरकारको पता नहीं था। प्रधानमन्त्रीको चीनियोंको निकाल बाहर करनेकी राय किसने दी, यह स्पष्ट होना चाहिए। संभवतः पुराने सुरक्षा मन्त्रीकी यह कारगुजारी रही होगी और अगर नहीं तो बताया जाय कि आखिर प्रधानमन्त्रीने किसीसे पूंछा या बिना पूंछे ही घोषणा कर दी ?

सेना भाग्य नहीं बदल सकती

चीनने हमला कर दिया तो उसकी पहली खबर नई दिल्लीमें हमारे सूत्रोंसे नहीं आई, मिलट्री इन्टेलीजेंससे नहीं आई। उसकी पहली खबर बी० बी० सी० से आई। यह एक ऐसी तस्वीर है जिसे देख कर लज्जासे सिर झुक जाता है। यह राजनैतिक मतभेदों का सवाल नहीं है। सुरक्षा का प्रश्न शासन और विरोधी दल का सवाल नहीं है। ● देश हार गया तो एक पार्टीके माथेपर कलंकका टीका नहीं लगा, सारे भारतकी जनता लज्जा के कीचड़में कंठ तक धंस गई। हम इस कलंकको मिटाना चाहते हैं। हम इस पराजयका बदला लेना चाहते हैं। लेकिन यह तब तक संभव नहीं है जब तक दिल्लीके नेताओंके दिमागमें यह साफ न हो जाये कि हमारा राजनैतिक उद्देश्य क्या है। ● सेना तो एक हथियार है। सेनाको नीति संबंधी निर्देश देना सरकारका काम है। किस शत्रुका मुकाबला उसे करना है, यह बताना सरकारका काम है। सेना अपना काम करेगी, किन्तु यदि नीति विफल होगी तो सेना किसी देशके भाग्यको नहीं बदल सकती। ●

FOR

DYED, BLEACHED, PRINTED CLOTHES
OF ALL DISCRIPTIONS

Contact :

East India Cotton Manufacturing
Co. [Private] Limited

Largest Processors of Powerloom and Handloom Cloth in India.

Regd. Office:—
38, Neta ji Subhas Road,
CALCUTTA-1.

Head Office:—
49/1/1, Cotton Street
CALCUTTA-7.

FACTORIES AT :—
1. FARIDABAD , 2. CALCUTTA

M. P. A.-

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

The Indian Smelting & Refining Co. Limited

Industry House
CHURCHGATE RECLAMATION
BOMBAY—1

MAKERS OF :

NON FERROUS, & SHEETS, STRIPS
COILS, ALLOYS & MACHINED CASTINGS.

J.P.C.—36

नेफा पराजय के लिए—

सेना नहीं, नेता उत्तरदायी

किशोरीदास वाजपेयी

हमारी जो प्रथम ऐतिहासिक पराजय हुईहै, वह छिपाने की चीज नहीं रही है—जग-जाहिर हमारा अपमान है। इसके अनेक कारण हैं; पर मेरी समझ में एक बड़ा कारण हमारी सैनिक भावना को दबा देना है।

अंग्रेजकी मानस-दास कांग्रेसका बल

सन् १८५७ की सैनिक-क्रांति अनेक कारणोंसे सफल न हो पाई; पर उसने अंग्रेज शासकोंके दिल दहला दिए थे। आगे फिर वह स्थिति न आए, इसके लिए अंग्रेजने चेष्टाकी। एक आई० सी० एस० अंग्रेज (मि० ह्यूम)ने इस देशको 'प्रेरणा देनेके लिए' एक अखिल भारतीय संगठन बनाया—'ऑल इंडिया नेशनल कांग्रेस' देशके बड़े-बड़े आदमी इसमें समवेत हुए; क्योंकि देशका अभ्युत्थान करना इसका उद्देश्य घोषित किया गया था। परन्तु उपायोंकी भी घोषणा साथ-साथ थी—'शान्तिपूर्ण और वैध उपायों द्वारा देशका अभ्युत्थान'। 'शान्तिपूर्ण' और 'वैध' (कानूनी) उपाय आगे स्पष्ट हुए, जब सूरत-कांग्रेस (१९०६ के दिसम्बर) में लोकमान्य तिलक और उनके सहयोगी लाला लाजपतराय आदिको अवज्ञापूर्वक कांग्रेससे निकाल दिया गया। और आगे चल कर 'शांतिपूर्ण तथा वैध उपायों' को और स्पष्ट कर दिया गया, जब उनकी जगह 'सत्य और अहिंसा' ने ले ली। जो लोग अपना सिर हथेली पर लिए 'सरफरोशीकी तमन्ना' में वन-वन भटक रहे थे, उनकी निन्दा 'नेशनल कांग्रेस' के मंच से बार-बारकी गई। उन्हें 'गुमराह' कहा गया और कहा गया कि 'ये लोग स्वराज्यको पीछे धकेल रहे हैं।'

अहिंसावाद बनाम सैनिकवाद

और आगे चलकर अहिंसावादमें और सैनिकवादमें तब खुला संघर्ष हुआ, जब श्री सुभाषचन्द्र बोस दुबारा कांग्रेस-अध्यक्ष चुन लिए गए। अहिंसावादने देखा कि मंच छिन रहा है—अहिंसावादको विदा किया जा रहा है।

कांग्रेस द्वारा नेताजीको 'गद्दार'की संज्ञा

श्री सुभाषचन्द्र बोसको अध्यक्ष-पद छोड़ना पड़ा। फिर उन्हें कांग्रेससे ही निकाल दिया गया; जैसे कि पहले लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय आदिको निकाला गया था। कांग्रेस-अध्यक्ष (बाबू राजेन्द्र प्रसाद) के नामसे एक आज्ञापत्र कांग्रेसियोंके नाम निकाला गया कि "कोई भी कांग्रेसी श्री सुभाषचन्द्र बोसका भाषण सुनने कहीं न जाए।" दिल्लीके कांग्रेस-समर्थक दैनिक पत्र 'हिन्दुस्तान' के प्रमुख 'सम्पादकीय' में देशद्रोही 'सुभाष' शीर्षकसे बहुत गन्दा लेख निकला। प्रधान सम्पादक श्री सत्यदेव

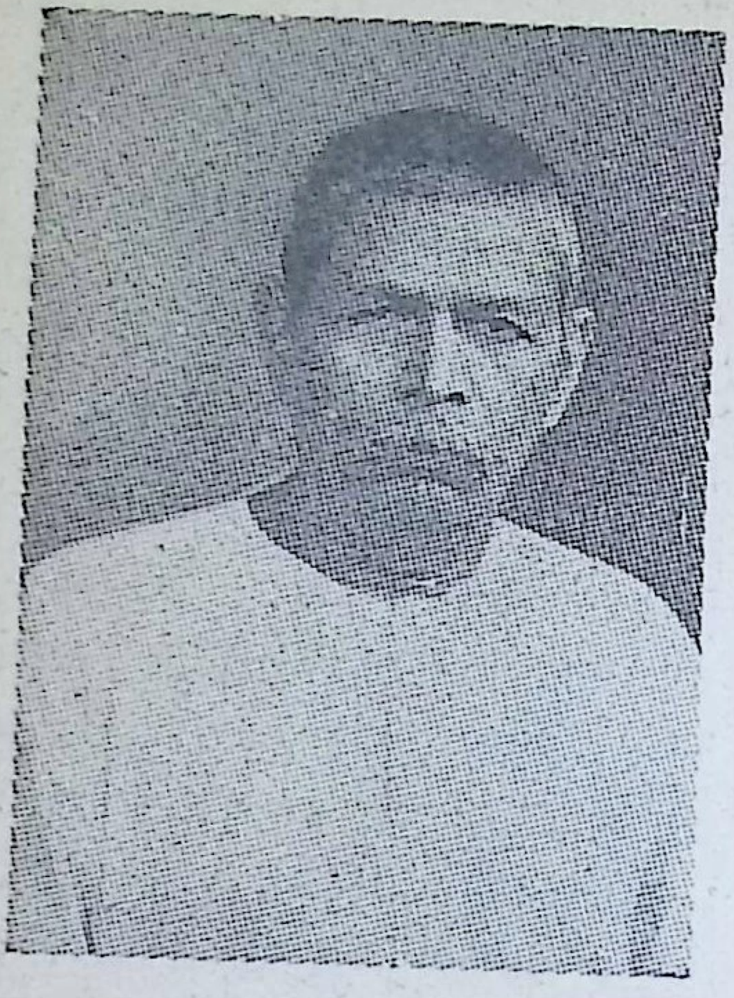

लेखक

विद्यालंकारने 'सुभाष' को 'देशद्रोही' कह कर अपनी देशभक्ति प्रकटकी। मैनेजिंग डाइरेक्टर थे श्री देवदास गांधी। पूरे देश में यही हाल था। कारण, वोस पक्के अहिंसावादी न रहे थे। उनको देश छोड़ वाहर निकल जाना पड़ा और इस तरह देश द्वारा अवज्ञात शक्तिने फिर वह सब किया। अपनी छीछालेदर पर श्री सुभाष चन्द्र बोसको कैसी मर्मान्तिक पीड़ा पहुंची थी; यह उन्हींके शब्दोंमें पढ़िए—"उस समय बार-बार मेरे मनमें आया कि आत्म-हत्या कर लूं; परन्तु देशको स्वतंत्र करनेकी जो प्रवलतम आकांक्षा मनमें थी, उसने ऐसा न करने दिया।"

'स्वतंत्र भारत में वीरत्व की उपेक्षा

देश स्वतंत्र होने पर भी वीर भावना को जागृत न होने दिया गया। बार-बार यह प्रस्ताव हुआ कि दिल्लीमें लालकिलेके सामने श्री सुभाषचन्द बोसकी (सेनानी-रूपकी) एक सुविशाल प्रतिमा स्थापितकी जाय; पर सरकारने न सुना! इसलिए कि वीर पूजाका भाव जागृत हो गया, तो चरखा-वीरोंकी ओरसे लोगोंका ध्यान हट जायेगा।

वीरता की जीवित प्रतिमा का अपमान

वीरताकी जीवित-जागृत प्रतिमा (मृत्युञ्जय सावरकर) की उपेक्षाकी जा रही है! शासक दलसे उनके विचार नहीं मिलते, तो शासकीय तंत्रमें वे न रहें; रहनेकी स्थितिमें भी वे नहीं हैं; परन्तु उन के अनुरूप महान् और अद्वितीय राष्ट्रीय सम्मान तो सरकारी तौर पर मिलना चाहिए न! वे जर्जर अवस्थामें, अज्ञात रूपसे एकान्तमें पड़े हैं। मानों कुछ हैं ही नहीं। स्वतंत्र भारत पर कृतघ्नता ऐसी लदी हुई है; तब सिर ऊँचा कैसे हो! उनकी बात भी कोई नहीं सुनता!

सैनिकों का दुरुपयोग

हमारी दुर्दान्त सेनाको जो सम्मान मिलना चाहिए था, वह भी नहीं मिला! उलटे, सैनिकोंसे (साधारण स्थितिमें भी) शहरकी सड़कों पर नावें खिचवाई गई। गोमतीका पानी लखनऊकी सड़कों पर आ गया, तो बुलाओ सैनिकोंको; नावें खींचने के लिए! लाला छदम्मी मल नावमें बैठे सिगरेट पी रहे हैं, और सैनिक नाव खींच रहे हैं। पुलिस वाले तमाशा देख रहे हैं—मुस्कुरा रहे हैं 'लायल' महकमा है न! लाला लोग सड़कों पर पानी मझाते हुए कैसे चलते! उनसे वोट लेना है न! क्या लखनऊमें नाव खींचने वाले मजदूरों का अभाव था? कांग्रेस के सेवाभावी सदस्य और स्वयंसेवक भी न थे? मामूली बातोंमें सैनिकोंको बुलाकर उनसे यह काम लेनेमें सैनिक भावना दबती है और इसका परिणाम कभी न कभी सामने आता है। ●

"शुरू से ही भारत की विदेशनीति यथार्थता को कठिन धरती पर न टिककर पं० नेहरू के अयथार्थवादी और कम्युनिस्ट समर्थक हृदय की भावना का प्रतीक मात्र बनती चली गई।"

• प्रो० बलराज मधोक

हमारी विदेश-नीति कसौटी पर

जिस समय भारत स्वतंत्र हुआ विदेशी मामलोंमें कुछ संबंध और समस्यायें तो ब्रिटिश राजसे मानो विरासतमें मिली ओर कुछ नयी समस्यायें देशके अस्वाभाविक विभाजनके कारण सामने आयीं।

जो संबंध ब्रिटिश राज्यने स्थापित किये थे और जो भारत सरकार को ब्रिटिश सरकारका उत्तराधिकारी होनेके रूपमें मिले उनमें सबसे महत्वपूर्ण संबंध वे थे जो ब्रिटिश सरकारने तिब्बतके साथ अपनी उत्तरी सीमाकी रक्षाकी दृष्टि से स्थापित किए थे।

पाकिस्तानसे भारतकी सुरक्षाको खतरा

विभाजनके फलस्वरूप विदेश-नीति की दृष्टिसे जो सबसे महत्वपूर्ण परिस्थिति सामने आयी वह थी पाकिस्तानकी भारत के प्रति जन्मजात शत्रुता। यह अनपेक्षित नहीं था। स्वर्गीय डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जीने अगस्त १९४४ में ही, जब महात्मा गांधीने सी० राजगोपालाचार्यकी विभाजन योजना (सी० आर० फारमूला) को अपना आशीर्वाद दिया था उन्हें वर्धा जाकर कहा था कि यदि पाकिस्तान बन गया तो इसकी विदेश नीति निश्चित रूप में भारतकी विदेशनीति की उलटी होगी और इससे सुरक्षाकी कई नई समस्यायें भी खड़ी होंगी।

इसके अतिरिक्त ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के अन्य देशों, संयुक्त राज्य अमरीका और राष्ट्रवादी चीन, जिन्होंने भारतकी स्वतन्त्रतामें योगदान दिया था, के साथ मित्रतापूर्ण संबंध भी भारतको विरासत में ही मिले थे। उस समय पाकिस्तानके अतिरिक्त जिस एक देशका रवैया भारत के प्रति स्पष्टत: उपेक्षापूर्ण था, वह कम्युनिस्ट रूस था। कम्युनिस्ट रूस और उसके भारतीय एजेन्टोंने स्वतन्त्रता प्राप्तिके बाद भी भारतको साम्राज्यवादियोंका पालतू कुत्ता कहनेमें शर्म महसूस नहीं की। स्वाभाविक रूपमें कम्युनिस्ट रूसके साथ स्वतंत्र भारतके संबंध अधिक निकटताके नहीं हो सकते थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतके राष्ट्रहित मांग करते थे कि वह ऐसी विदेशनीति अपनाये जो उसके पूर्व और पश्चिम

स्थापित सं० : १९००　　दीपावली के सुअवसर पर　　फोन नं० ५४९०

भीमसेन बैजनाथ

दाल मोठ वाले

किनारी बाजार, आगरा

आगरे के दालमोठ व पेठा के लिये प्रसिद्ध

(देशी घी व देशी खांड के प्रयोग की गारंटी)

दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभ कामनायें

इण्डियन सिरेमिक हाउस (पॉटरीज)

लंगड़ा की चौकी, आगरा

आकर्षक

प्याले, तश्तरी व टी सेट

के

प्रमुख निर्माता

स्थापित सन् १९१९ ई०　　फोन : २७०२

दीपावली

के

शुभ अवसर पर हार्दिक शुभ कामनायें

चन्द्र भान सूरज भान

हैन्डलूम दरी, निवाड़, कालीन एवं सरकारी क्वालिटी मार्क दरी

के प्रमुख निर्माता

अमर मार्केट, जौहरी बाजार आगरा

N.K.S.

"कोल्हू" छाप, शुद्ध पीली सरसों का तेल स्वास्थ्य व स्वादिष्ट भोजन के लिये अति लाभदायक है ।

आधुनिक भवनों की सजावट के लिये विभिन्न प्रकार के सूती गलीचों के

निर्माता : **भारतीय उद्योग धन्धे, गुलर रोड, अलीगढ़**

N.K.S

में नव-उदित स्वतन्त्र परन्तु शत्रु पाकिस्तानकी शरारत करनेकी शक्तिको बढ़ने न दे, उत्तर में अपनी लम्बी सीमा की सुरक्षाकी दृष्टिसे तिब्बतकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करे और उसके साथ अपने मित्रतापूर्ण सम्बन्धोंको और दृढ़ करे, समुद्री सीमाकी सुरक्षाकी दृष्टिसे और परम्परागत सांस्कृतिक सम्बन्धोंको ध्यानमें रखते हुए दक्षिण-पूर्वी एशियाके देशोंके साथ घनिष्ठताके सम्बन्ध स्थापित करे और संयुक्त राष्ट्र अमरीका तथा ब्रिटेनके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखे ताकि भारतके नवनिर्माणकी दृष्टिसे उनसे आर्थिक तथा अन्य सहायताप्राप्त होती रहे।

इस प्रकार उस समय संयुक्त राष्ट्र अमरीका और उसके साथियों तथा कम्युनिस्ट चीन और उसके द्वारा नियन्त्रित देशोंमें चल रहे शीतयुद्ध से अलग रहना भारतके हितमें था।

तटस्थताकी कसौटी

यदि उन्नीसवीं शताब्दीमें अमरीका की तरह कुछ वर्ष तक भारत पूर्णतया अन्तर्मुख होकर अपने आपको उन सब विवादोंमें जिनका भारतके साथ सीधा सम्बन्ध नहीं था अलग रहते हुए केवल अपनी शक्ति जुटानेको ही अपनी विदेश-नीतिका एक मात्र उद्देश्य बनाकर काम करता तो निश्चय ही वह चंद वर्षोंमें जापान और पश्चिमी जर्मनकी तरह इतना बलवान हो जाता कि उसे न पश्चिमी राष्ट्रोंकी अधिक परवाह रहती और न कम्युनिस्ट गुट की। वह आंतरिक शक्ति ही भारतकी वास्तविक तटस्थता का आधार बन सकती थी। क्योंकि जैसा कि चाणक्यने अर्थशास्त्रमें लिखा है 'वही राज्य यथार्थमें तटस्थ रह सकता है कि जो नदी के तट पर स्थित चट्टान की तरह इतना बलवान हो कि उसे न किसी की मित्रता की परवाह हो और न शत्रुता की।" इस प्रकार की शक्ति का सम्पादन किये बिना तटस्थता की रट आत्मवंचना मात्र थी।

राष्ट्रहित की उपेक्षा

परन्तु भारतकी परराष्ट्र नीतिके एकमेव निर्माता और संचालकके रूपमें विदेश नीति के इन आधारभूत सिद्धान्तों अथवा राष्ट्रहित चिन्तन की अपेक्षा अपने आप को शान्ति का अग्रदूत कहलाने और इतिहासमें अपना नाम कमानेकी चिन्ता अधिक थी। इसमें उनकी वैचारिक मनोभूमिकाने जलतीमें तेल का काम किया। अपने विद्यार्थी काल से ही रूसी क्रान्तिसे प्रभावित जवाहरलाल नेहरू का भावुक और अयथार्थवादी हृदय तथा मस्तिष्क वैचारिक दृष्टिसे कम्युनिस्टोंके पास गिरवी पड़ चुका था। इसके विपरीत पश्चिमी राष्ट्रोंके प्रति उनके मन में एक विद्रोह का भाव था। फलस्वरूप उनकी शान्ति और तटस्थता की रट कम्युनिस्ट शान्तिवादियों की रटसे मेलखाती थी। स्वाभाविक रूप से शुरूसे ही भारत की विदेश नीति यथार्थता की कठिन धरती पर न टिक कर पं० नेहरूके अयथार्थवादी और कम्युनिस्ट समर्थक हृदय की भावना का प्रतीक मात्र बनती चली गयी। परिणामस्वरूप भारत ने अपने राष्ट्र हितों की ही नहीं अपितु च्यांगकाई शेक के प्रति अपनी कृतज्ञताकी भी अवहेलना करके चीनमें नव स्थापित कम्युनिस्ट सत्ताको सबसे पहले मान्यता दी

तिब्बत का लाल चीन को समर्पण

इतना ही नहीं वरन् मान्यता देनेसे पहले हमने कम्युनिस्ट चीनसे तिब्बत के

दीपावली
के
शुभ पर्व पर

समस्त ग्राहकों, संरक्षकों व शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

अपना जीवन साथी

बचपन में

नाजुक बच्चों पर गर्मी के मौसम का बुरा असर होता है। उन की चमड़ी में जहां-तहां जलन होती है और बदन में गर्मी। हाजमा खराब होता है और वे दुबले हो जाते हैं। इन कष्टोंसे बचाने के लिए...

जवानी में

गर्मी का मौसम और बोझिल आधुनिक जीवन, इन दोनों के कारण नवयुवक काफी परेशान हो जाते हैं। गर्मी के कारण वे थक जाते हैं और उन का दिमाग भी थक जाता है। नयी शक्ति-स्फूर्ति के लिए...

वृद्धावस्था में

बुढ़ापे में अंग- अंग कमजोर होने लगता है। ऐसी स्थिति में वे स्वस्थ रहें, खास कर के उन का हाजमा ठीक रहे इसलिए...

P.N.2/63

शीतल और स्वास्थ्य - वर्द्धक टॉनिक **पर्ल काढा**

उन्हें दीजिये। सभी केमिस्टों के यहाँ मिलता है। **पर्ल एंड कंपनी** बम्बई-२७

संबंधमें किसी प्रकार का आश्वासन लेना भी उचित नहीं समझा।

दुश्मन बढ़े, मित्र घटे

कम्युनिस्ट चीनके प्रति हमारे इस रुख के कारण और पं० नेहरू की समय-कुसमय पश्चिमी राष्ट्रोंको उपदेश देने अथवा झाड़ देने की आदतके कारण जो राष्ट्र १९४७ में हमारे अत्यधिक निकट थे उनके मनोंमें हमारे प्रति सन्देह और अविश्वास पैदा होने लगा।

'आप मरो धर्म करो' की घातक नीति

चीन द्वारा तिब्वतको हड़प कर लिये जानेके बाद भीभारत के कर्णधारों को यह समझमें नहीं आया कि कम्युनिस्ट चीन एशिया के सबसे बड़े लोकतंत्री देश भारत का स्वाभाविक शत्रु और प्रतिस्पर्धी है मित्र कदापि नहीं। इसलिये, तदुपरान्त भी हमारी विदेश नीति चीन की हमें हानि पहुंचाने की क्षमता को कम करनेके बजाय उसे और बल तथा अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र में मान्यता दिलवाने की ही बनी रही।

चीनके साथ २९ अप्रैल १९५४ को तिब्बत संबंधीकी गयी तथाकथित पंचशील सन्धि इसका सबसे ज्वलन्त उदाहरण है।

पूर्वी एशिया की उपेक्षा

पूर्व एशियाके छोटे देश, जिनके सांस्कृतिक और आर्थिक हित हमारे साथ मेल खाते थे और जो कम्युनिस्ट चीनकी अपेक्षा निश्चित ही भारतके अधिक निकट थे, के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने के बजाय हमने पश्चिमी एशियाके मुस्लिम देशों की मित्रता की अधिक चिन्ता की और उसकी कीमतके रूपमें इसराइल, जोकि पश्चिमी एशियामें एक मात्र लोकतन्त्री देश है और जिसके हित बहुत सी बातोंमें हमारे हितों के साथ मेल खाते हैं, के साथ हमने अभी

लेखक

तक दौत्य संबंध भी स्थापित नहीं किये।

मित्र-विहीन बने

अपनी इस अदूरदर्शी और अयथार्थवादी विदेश नीतिके फलस्वरूप स्थिति यह बनी कि स्वतंत्रता के समय के हमारे अधिकांश मित्र हमसे दूर चले गये और नये मित्र हम कोई बना नहीं पाये। कहने को तो संसारके सभी राष्ट्र हमारे मित्र थे परन्तु वास्तव में हम मित्रविहीन होते जा रहे थे। पूर्व और पश्चिममें पाकिस्तान तो शत्रु था, उत्तरमें चीन की शत्रुता भी खुल कर सामने आने लगी। हिन्द महासागरके लगभग सभी देश भी अपनेसे दूर जाने लगे।

भारत चीन का भक्ष्य बना

इस प्रकार विदेश नीतिको निर्धारित करने वाले मूल सिद्धान्तों की उपेक्षा करके केवल विश्वशान्ति, सब से मित्रता और तटस्थता की रट लगाने वाले पं० नेहरूकी विदेश नीति ने भारतको वास्तवमें एक मित्र-विहीन दुर्बल और पंगु देश बना दिया। यही कारण है कि कम्युनिस्ट चीनने अपनी प्रसारवादीनीति की पूर्तिकेलिये भारतको ही अपना शिकार बनाने का

समय का हो ज्ञान, है ऐसी जरूरत आ पड़ी।
फिर क्यों न दें, उपहार में एक सुन्दर घड़ी॥
हमारे यहाँ हर प्रकार की घड़ियाँ उचित मूल्यों में प्राप्य हैं
आज ही पधारें:— **टाइम एण्ड सर्विस** (फोन:–२२९९८)
वाच मेकर्स
३०, हलवासिया मार्केट, लखनऊ
हेड आफिस :— **मे० रूपानी ब्रादर्स** (घड़ियों के राजा)
हजरतगंज, लखनऊ (फोन:–२३६१९)
नोट:—मरम्मत हमारी विशेषता है।
P.S.—1

गारण्टीयुक्त
१४ कैरेट सोने और शुद्ध चांदी के आभूषणों के लिए पधारें
खुन खुन जी, ज्वेलर्स
मे० गुलाब राय गोविंद प्रसाद, चौक, लखनऊ
P.N.S.

गृह उपयोगी बर्तनों के लिये सदैव याद रखिये
हमारे उत्पादन : परात, हंडा, कुंडा, डेकची, डब्बा, चलनी व मटकी आदि
श्री पीतल पात्र निर्माता सहकारी समिति लि०
पटनी बाजार, उज्जैन (म० प्र०)
रजि० नं० ६१७ दिनांक १९. १२. ५७.

स्वास्थ्य सम्बन्धी श्रेष्ठ मासिक
आरोग्य
प्रति मास पढ़ें
एक प्रति ४५ न० पै० : वार्षिक ५ रु०
पता:–"आरोग्य"
पो० आरोग्य मन्दिर
गोरखपुर (उ० प्र०)
P. S–2

दीपावली के शुभ पर्व पर
अपने ग्राहकों, संरक्षकों व शुभचिन्तकों
को
बधाई देते हैं
सत्यनारायण भगवती प्रसाद
१७१ खूनीपुर
गोरखपुर
हैण्डलूम के उच्चकोटि के वस्त्रों के
प्रमुख निर्माता तथा वितरक
N.K.S–22

कुंज लाल
बनवारी लाल
लक्खी चौतरा
वाराणसी

रेशमी साड़ी, दुपट्टा, शर्टिंग, कोटिंग, चादर, अन्डी
आदि
काशी सिल्क के निर्माणकर्ता
तथा
थोक व फुटकर विक्रेता
N.K.S.--22

साहस किया। उसे दक्षिणी पूर्वी एशिया के पश्चिमी राष्ट्रोंसे सम्बद्ध किसी छोटे राष्ट्र पर हमला करने की हिम्मत न हुई। क्या हमारी विदेश नीति की असफलता का यह सबसे बड़ा प्रमाण नहीं है।

तटस्थ राष्ट्रों ने भी मुँह फेरा

चीन का हमला होने पर वे सब देश जिनको पं० नेहरू अपने तटस्थ साथी समझते थे और जिनकी खातिर उन्होंने भारत के बहुतसे अपने मित्रोंके साथ शत्रुता मोल ली थी; चीनके विपक्षमें एक शब्द भी कहनेसे घबराने लगे। "घाना" ने ब्रिटेन द्वारा भारतको शस्त्र देनेका विरोध किया तो बरमा ने चीनी सेनाओं को अपने क्षेत्र में से होकर भारतमें घुसने दिया। मिश्र के नासिरने शाब्दिक-सहानुभूति तो दिखाई परन्तु क्रियात्मक रूपमें कुछ नहीं किया। कम्युनिस्ट रूस ने तो साफ कह दिया कि मित्र भारत और भाई चीनमें उसकी सहानुभूति चीनके साथ ही हो सकती है। पहले की सन्धिके मुताबिक दिये जाने वाले २९ मिग विमान भी उसने रोक लिये। बहुत ले-देकर उसने ३ मिग विमान समुद्र के रास्ते भेजे परन्तु शर्त लगा दी कि उनका प्रयोग चीनके विरुद्ध न किया जाय। इसके विपरीत पश्चिमी राष्ट्र तथा मलाया इत्यादि उनसे संबद्ध देश तुरन्त हमारी सहायता को आये।

खोटी विदेश-नीति

इस प्रकार चीनके हमलेने नेहरू द्वारा संचालित भारतकी विदेश नीतिकी कसौटी पर कसकर बता दिया कि यह नीति खोटी और देशहितके प्रतिकूल थी। पं० नेहरू ने यह कह कर कि "हम अपने मन से बनायी हुई काल्पनिक एवं कृत्रिम दुनियामें रह रहे थे–" उस समय इस तथ्य को स्वीकार किया था। यह दुखका विषय है कि चीन द्वारा युद्धबन्दी होते ही वे पुनः उसी कृत्रिम संसारमें चले गये और आज भी अपनी पुरानी और असफल विदेश नीति को चालू रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु वे और उनके कम्युनिस्ट साथी जो आज भी तटस्थता की रट लगा रहे हैं, इस बात को भूल रहे हैं कि चीनी आक्रमणके पूर्व की परिस्थिति और आज की परिस्थितिमें जमीन आसमान का अन्तर पड़ चुका है। उस समय हम अपने आपको रूसके कम्युनिस्ट गुट और अमरीकाके बीच चलने वाले शीत युद्धमें तटस्थ कहते थे चाहे वास्तवमें हम तब भी दयानतदारी से तटस्थता की नीति का पालन नहीं करते थे। परन्तु आज जब भारत का एक कम्युनिस्ट देशके साथ प्रत्यक्ष संघर्ष चल रहा ह हमारे तटस्थ होने का प्रश्न खत्म हो चुका है। अब तो अन्य देशों को फैसला करना है कि वे इस सघर्ष में हमारा साथ देंगे या चीन का साथ देंगे अथवा तटस्थ रहें। जो देश हमारी सहायताको आये हैं हम उनके साथ संबद्ध (aligned) हैं और जो चीन की सहायता को गये वे उसके साथ aligned हैं। चीनके साथ अभी युद्ध समाप्त नहीं हुआ। चीनकी सैनिक तैयारियां चल रही हैं तिब्बतमें उसका सैनिक जमाव पहले से भी अधिक है और पाकिस्तानके साथ उसका गठजोड़ हो चुका है। इन हालातमें भारत का सुरक्षाके दृष्टिकोण से अपनी विदेश नीति पर पुनर्विचार करना और मित्र और शत्रु को पहचान करके मित्रों को अधिक समीप लाना अत्यावश्यक है। ●

दीपावली के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभ कामनायें

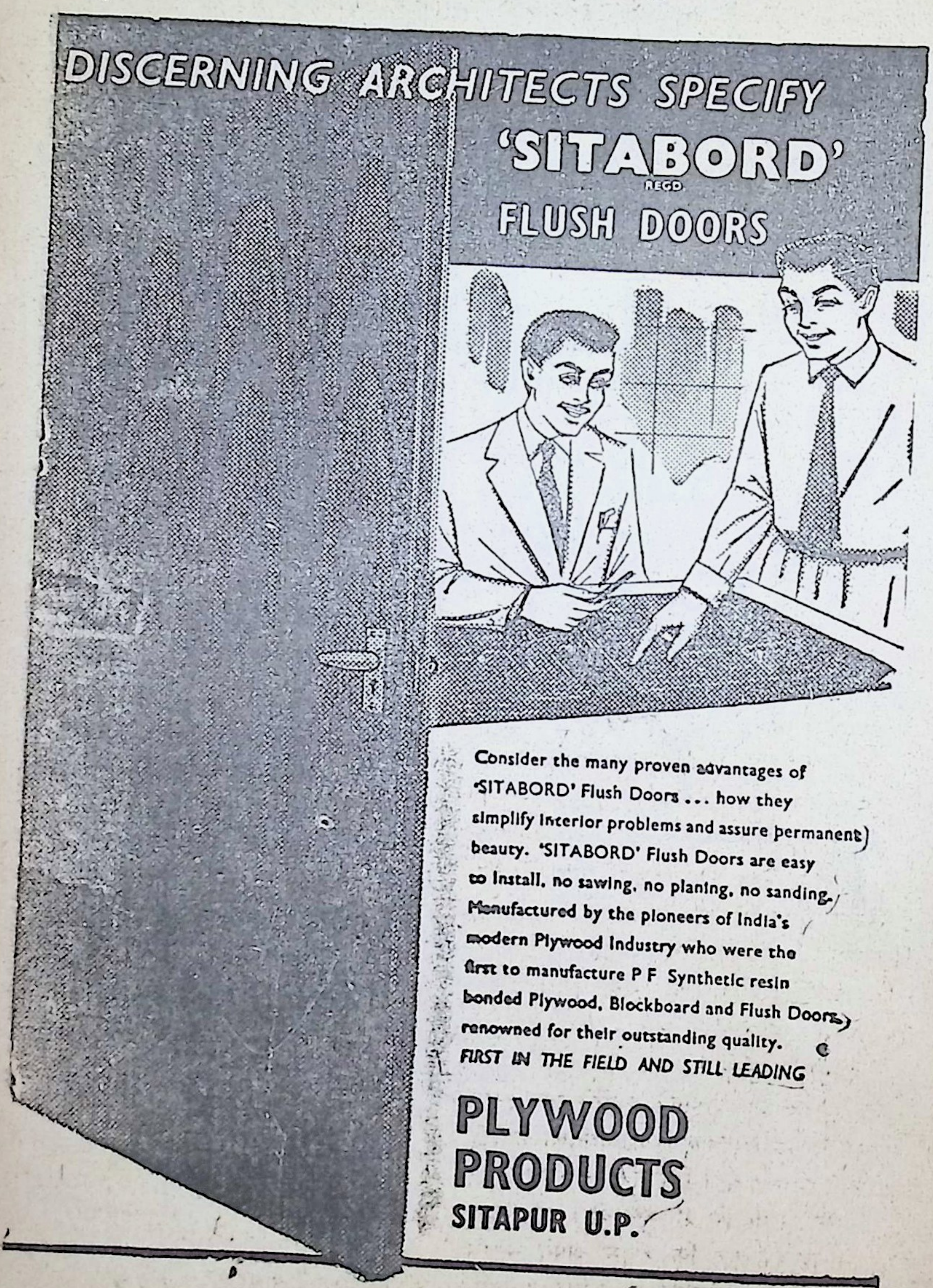

दीपावली के शुभ पर्व पर

समस्त ग्राहकों, संरक्षकों व शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

अध्यक्ष

सर हरगोविन्द मिश्र, नाईट, ओ.बी.ई.

जनरल जे. एन्. चौधरी

अपने बहादुर जवानों पर मुझे गर्व है !

जनरल करियप्पा

भूतपूर्व प्रधान सेनापति

नेफा क्षेत्रमें हमारी दुर्भाग्यपूर्ण पराजय हुई और भारतीय सेनाओं को नेफाके पश्चिमी क्षेत्रसे पीछे हटकर असममें आना पड़ा। परन्तु जिन लोगोंसे मैं अबतक मिला उसमें से किसीने भी सेलादर्रा और बोमडिलाको छोड़कर तीसरे स्थानका नाम नहीं बताया जहां हमको पराजय सहनी पड़ी हो। यथार्थत: यही दो नाम सभीके मस्तिष्कमें भी थे जिनसे मेरी मुलाकात हुई। बहुतसे लोगोंने अपनी सेना पर यह गम्भीर दोषारोपण किया कि उसने अपनी समस्त युद्ध सामग्री खो दी। कुछ लोगोंने तो इस तरहके अनर्थक (अनर्गल असंगत) सुझाव तक दे डाले कि भारतीय सेनाओंके संचालनके लिए बाहरसे कुछ अच्छे उच्च सैनिक अधिकारी बुलाए जांय। जबकि हमारे पास स्वयं पर्याप्त अधिकारी हैं जो जवानोंको प्रशिक्षित कर सकते हैं और उनका संचालन कर सकते हैं।

शौर्यका सही मूल्यांकन करें

हमारी सेनाकी इस आंशिक पराजय के आधार पर, जो युद्धमें कोई असामान्य घटना नहीं है—कतिपय आलोचकोंने उन भारतीय अधिकारियों और जवानोंकी असंदिग्ध योग्यताओं और उनकी शूर वीरता पर ही पानी फेरनेकी कोशिश की जिनके कारण हमारी सेना शताब्दियोंसे प्रसिद्ध रही है और जिसके सूरमा सदा ही संसारके सिपाहियोंमें श्रेष्ठतम माने जाते रहे हैं। लद्दाख और वोलांगकी सीमाओं पर भारतीय जवानों द्वारा दिखाई गई किसी खास बहादुरीका उल्लेख भी शायद ही कहीं किया गया हो। २ दिसम्बर १९६२के सेनफ्रांसिस्कों इक्जामिनर (संयुक्त राज्य अमेरिका) में लिखते हुए मिस्टर मार्शलने बड़ी अभद्रतासे कहा कि भारतीय सेनाओं की पराजयका कारण कमजोर शस्त्र सज्जा नहीं अपितु जवानोंमें सैनिकोचित बहादुरी का अभाव है। क्या मिस्टर मार्शल यही उपाधि मित्र राष्ट्रकी सेनाओंको गत विश्व युद्धके सिलसिलेमें दे सकेंगे ? जिसमें इन सेनाओंने लगातार अनेक युद्धोंमें अनेक बार भीषण पराजय, यूरोपकी सीमाओं

उत्तरी अफ्रीका, बर्मा और कोरियामें बर्दाश्त की थी। मुझे मजबूरन यह विश्वास करना पड़ता है कि मार्शलका भारतीय सिपाहियोंकी युद्ध-क्षमताका मूल्यांकन यत्र-तत्र सुने-सुनाये सूत्रों पर ही आधारित है जिनका भारतसे अच्छा सम्बन्ध नहीं है।

हमारे अधिकारियों और सिपाहियोंमें सैनिकता, और युद्ध करनेकी पात्रता और गुणोंका अभाव नहीं है। वे आज भी उतने ही शूरवीर और योद्धा हैं जितने कि कभी भी थे। उनमें कुछ अयोग्य हों यह संभव है पर यह अपवाद केवल भारतीय सेनाके लिए ही नहीं है। इस ढंगके अयोग्य व्यक्ति दूसरे देशकी सेनाओंमें रहे हैं और अब भी होंगे ही। मेरी समझमें नहीं आता कि हमारी इतनी अच्छी सेनाको इस कदर और इतनी छोटी सी बातके लिए यह कहकर क्यों बदनाम किया जाता है कि इसका एक भाग नेफामें अपना मोर्चा कायम रखनेमें असफल रहा। मैंने यह इस लिए नहीं लिखा कि मैं इस असफलताकी वकालत करना चाहता हूँ वरन् मैं यह अनुभव करता हूँ कि कुछ ऐसे अज्ञात और दुर्भाग्यपूर्ण कारण हैं या कि होने चाहिए जिससे हमें पराजयका धक्का सहना पड़ा अन्यथा अपना एक इतना प्रमुखदस्ता जो इस क्षेत्रमें संघर्ष कर रहा था निश्चय ही शत्रुके विरुद्ध बाजी मार लेता। भविष्यमें जब इतिहास लिखा जायगा यह समस्या अधिक स्पष्ट हो सकेगी। हालमें ही नेफामें अपनी पराजयके कारणोंका पता लगाने वाली जांच समितिकी जो रिपोर्ट (नेफा-रिपोर्ट) आई है वह सर्व सामान्यके लिए उपलब्ध नहीं; पर उससे यह पता चला है कि इस क्षेत्रमें लड़ रहा उक्त प्रसिद्ध दस्ता वस्तुतः और पूर्णतः वही प्रसिद्ध दस्ता नहीं था।

नीतियों में समन्वय आवश्यक

मैं प्रायः कहता हूँ कि किसी देशकी शक्ति उसका संगठन और सेनाकी सुसज्जता उस देशकी विदेश नीतिसे निश्चितकी जाती है और जिस प्रकारका प्रजातंत्र भारतमें है और सर्वदा रहेगा भी, एक सैनिक सरकारको सैनिक मामलों के विषयमें सहज सुझाव मात्र दे सकता है।

हमारे सेनापतियोंका दायित्व सरकारको सैनिक मामलोंमें सलाह देना मात्र है। इन सलाहोंको सुनना, उस पर विचार करना अथवा उसका परित्याग करना सरकारके हाथोंमें है। सफलताके लिए विदेशनीति और सैनिक युद्धनीति, युद्ध-रचना, संव्यूह-रचना आदि का समुचित समन्वय आवश्यक है। केवल राजनीतिक उपयोग अथवा राजनीतिक औचित्यके लिए सेनाको सैनिक कार्रवाईके लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा किया गया तो असंभाव्य रूपसे कुछ भयानक और दुखद परिणाम सामने आयेंगे। भावी इतिहासकार यह उल्लेख करेंगे कि किस हद तक हमारी राजनीति ने हालकी सैनिक कार्रवाइयोंको प्रभावित किया। नेफाकी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाके लिए भारतीय सेनाकी आलोचना करनेवाले उन सभी देशी और विदेशी आलोचकोंसे मैं यह कहूंगा कि वे नेफामें की गई कार्रवाइयोंको उक्त 'पहलू' के संदर्भमें देखें।

पराजय का मूल कारण

हमारे सैनिक अधिकारी और जवान न केवल दिल दहला देनेवाले उन बहु-संख्यक दुश्मनोंके खिलाफ जमे रहे, जिन्होंने

१९५० में तिब्बतको हड़पनेके बाद घोर सैनिक प्रशिक्षण हासिल किया था, बल्कि अपने देशके पंचमांगियोंका भी सामना किया जो अत्यन्त कृतघ्नतापूर्वक हमारी शक्ति और तैयारियोंकी सूचना हमारी सैनिक कार्रवाइयोंके दौरान शत्रुओंको देते रहे। हमारी सेना मैदानमें कम संख्यामें थी, किन्तु उसने पूर्णसाहस का परिचय दिया है। भारतीय सेना प्राय: एक 'हरी लकीर' सी दिखाई पड़ती थी जो चीनी सिपाहियों की एक पर एक उठने वाली तरंगों का मुकाबला कर रही थी। यह केवल संयोग और दुर्भाग्य ही था कि चीनी हमलेके दौरान

● हमारे अनेक श्रेष्ठ योग्य और अनुभवी सेनापतियोंको सामान्य अवकाश-अवस्था प्राप्तिके नाम पर सेवामुक्त होने दिया गया जो कि इन क्षेत्रों से अच्छी प्रकार परिचित थे। नये उन्नति प्राप्त सेनापतियोंका अनुभव इस क्षेत्रमें उन परिपक्व सेनापतियों के सदृश कदापि नहीं था जिनका स्थान उन्होंने लिया। इस पराजय के लिए यह परिवर्तन भी जिम्मेवार है। मुझे शंका है कि कुछ राजनीति भी सेनामें घुस आई थी; जिसने उच्च श्रेणीके सैनिक अधिकारियोंकी वफादारी और अनुशासन की भावना को प्रभावित किया और जिस का असर निम्न अधिकारियों और जवानों पर भी पड़ा। वह किसी भी कीमत पर नहीं होने देना चाहिए था। ●

तुलनाओंसे द्वेष और घृणा उत्पन्न होती है परन्तु द्वितीय विश्व युद्धके प्रारम्भिक वर्षों में यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, वर्मा और उसके बाद कोरियामें पराजित होनेवाली मित्र राष्ट्रोंकी भव्य सेनाको जिसका संचालन उस समयके अनेक श्रेष्ठ सेनापतियोंने किया था—'असैनिकोचित-स्तरकी' कहना युक्ति संगत होगा? म्यूनिख और डंकर्क जैसे अनेक 'नेफा' हो चुके हैं जो सर्वश्रेष्ठ भारतीय सेनाके इतिहासमें नहीं अपितु और भी सेनाओंके इतिहास में आये हैं।

मैं आत्मविश्वास और निश्चयसे कह सकता हूं कि भारतीय सेनाका एक-एक जवान युद्ध निपुणता और बहादुरीमें २० चीनी सिपाहियोंके बराबर है। परन्तु उन्हें एक ऐसे शत्रुसे लड़ना था जिनके नेताओंकी दृष्टिमें मनुष्यके जीवनका कोई मूल्य नहीं उनको मारनेमें हमारे जवानों की युद्ध सामग्री समाप्त हो गई। उन्हें पीछे हटना पड़ा। 'जो लड़ता और जिन्दा बच जाता है वह अगले दिन लड़नेके लिये होता है। इसे ध्यानमें रखते हुए हमारी सेनाको तैयार होना है, एक सुदीर्घकालीन चलने वाले युद्धके लिये, जिसकी चेतावनी हमारे प्रधानमन्त्री आये दिन प्राय: राष्ट्रको देते रहते हैं।

सेना को राजनीति से अलग रखें

● आज इस बातकी आवश्यकता है कि युद्ध उपयोगिता, औचित्य और—दक्षताके अतिरिक्त दूसरा कोई कारण हमारे नेताके चुनाव को प्रभावित न करे। राजनीति अथवा अन्य वैयक्तिक कारण कभी भी नेताके चुनाव पर प्रभाव न डालें। केवल अधिक दिनों की सेवा ही इस चुनावमें प्रमुख नहीं मानी जानी चाहिये।) ●

गत दस वर्षों की अवधिमें हमने चार बार अपने स्थल सेनाके प्रधान बदले हैं और पांचवां आज काम कर रहा है। इस

—शेष पृष्ठ १८३ पर

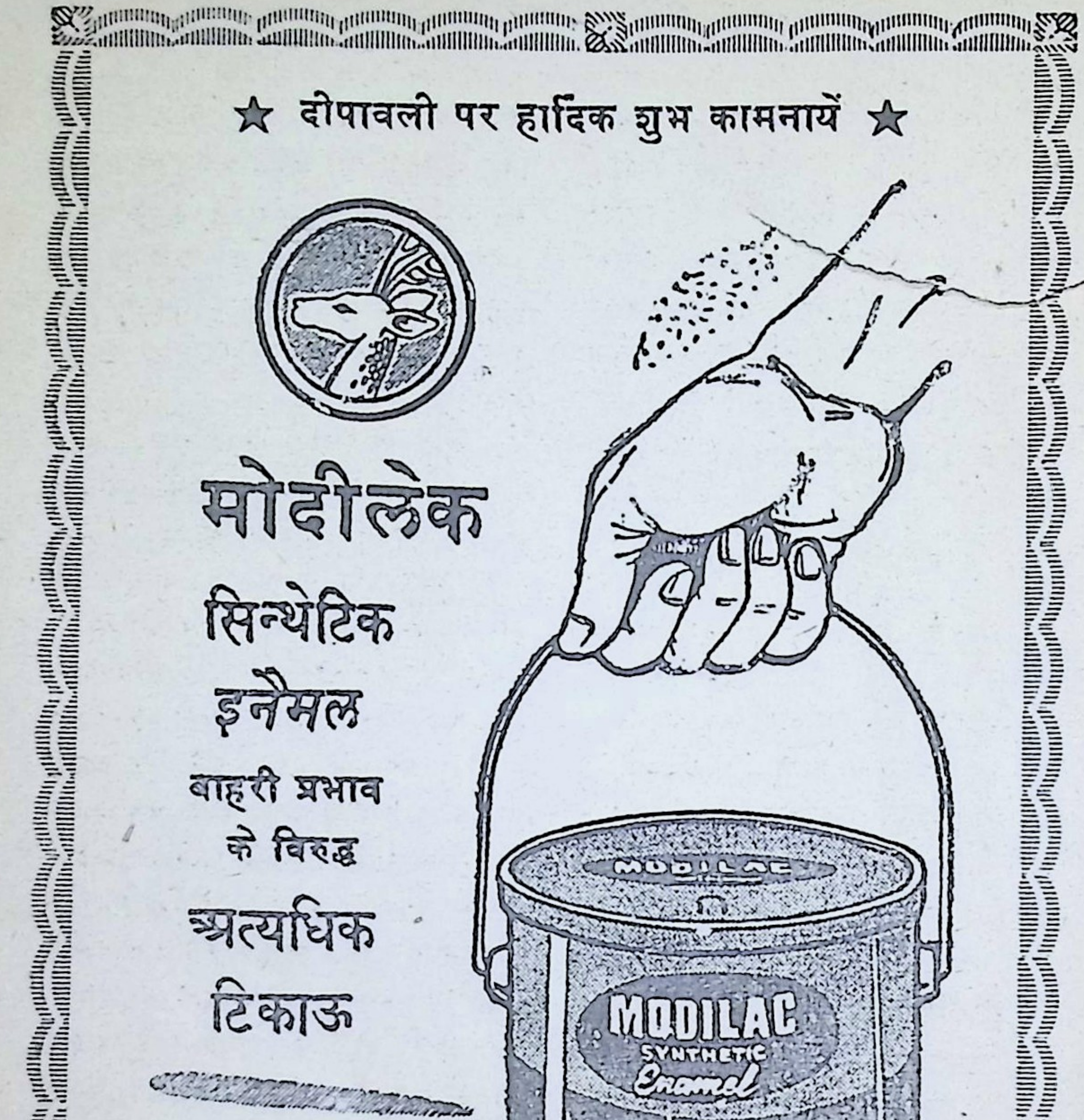
★ दीपावली पर हार्दिक शुभ कामनायें ★
मोदीलेक
सिन्थेटिक
इनैमल
बाहरी प्रभाव
के विरुद्ध
अत्यधिक
टिकाऊ
MODILAC
MODILAC
SYNTHETIC
Enamel
मोदी पेंट एंड वार्निश वर्क्स,
मोदी नगर (यू. पी.)

यह प्रवंचना कब तक ?

—डा॰ राममनोहर लोहिया

[संसद सदस्य]

आजकल यह प्राय: कहा जा रहा है कि पुरानी और छोटी-छोटी बातों पर बहस नहीं होनी चाहिए। मैं यह मान लेता हूं कि राष्ट्रीय संकटके समय पुरानी और छोटी-छोटी बातों पर बहस न की जाय, लेकिन ताजा और मौजूदा बड़ी बातों पर तो बहस की ही जानी चाहिए। मैं यह भी मान लेता हूं कि सरकार की पुरानी और छोटी भूलोंको माफ कर दिया जाय लेकिन उसकी

मौजूदा और भयंकर भूलों को माफ करने या उनके प्रति उदासीनता दिखानेसे आगे आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी। आजकी पीढ़ीको यह बात नहीं भूलनी चाहिए वरना भावी पीढ़ियां ऊपर लानत भेजेंगी।

बांहमें ताकत चाहिए

चीन के हालके हमलोंमें हम पिटे और काफी बुरी तरहसे पिटे। जनता जब सरकारके ऊपर इस भारी असफलता और निकम्मेपन का आरोप लगाती है तो सरकार की ओरसे और सरकार के पक्षधरोंकी ओरसे प्राय: यह तर्क दिया जाता है कि सरकार तो अपने देशकी आर्थिक और औद्योगिक प्रगतिके लिए काम करने में जुटी थी, सपनों का भारत बनानेके लिए सरकार योजनाएं बनाती और उन्हें कार्यान्वित करती रही। इसीलिए पल्टनी ताकत में कुछ कमजोर रह गए।

हमें यह बात बहुत साफ तौरपर समझ लेनी है कि आर्थिक या औद्योगिक ताकत और पल्टनी ताकत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सरकारका यह तर्क मिथ्या और बिलकुल बेबुनियाद है। आर्थिक ढांचे को सुधारना, खेती-बारीकी तरक्की करना औरकल-कारखाने खोलना पलटनी ताकत को कमजोर नहीं करता, उलटे मजबूत बनाता है। खेती-बारी और कल-कारखाने अगर मजबूत होंगे तो पल्टनी ताकत कमजोर नहीं होगी। बांह में ताकत होगी तो मुट्ठी ढीली कैसे रहेगी।

मनोबल और इच्छा शक्ति चाहिए

आपतकालीन हालतकी घोषणा कर

सरकार ने टीका-टिप्पणी करने वालों का मुंह जरूर बन्द करने की कोशिश की है लेकिन जिस ताकत और गर्मी, जिस मनोबल और इच्छाशक्तिकी जरूरत है वह मुझे मौजूदा सरकारमें नहीं दिखाई देती।

साम्यवाद मुझे पसन्द नहीं और न मैं उसकी वकालत ही करता हूं। उसके आदर्श गलत हैं, और यह भी सही है कि उसमें ९८ प्र० श० दोष हैं। लेकिन साम्यवादी हुकूमतकी खूबी यह है कि वह जनताको गरमा देती है, उसमें गति भर देती है। इस गर्मी और गतिका मजदूरों पर या कल-कारखानों के उत्पादन पर उतना असर नहीं पड़ता क्योंकि मशीनोंकी ताकत तो फिर भी निश्चित है लेकिन किसानकी गर्मी से पैदावार बढ़ जाती है। हमें दुश्मनकी इस ताकतका एहसास होना चाहिए। इसमें राष्ट्रका मनोबल टूटने की बात नहीं, इससे प्रेरणा लेनेकी जरूरत है। अपनी खामियां पूरी करनेकी जरूरत है। यह ठीक है कि इस समय अमीर गरीबकी आपसी लड़ाईको दबाकर रखनेकी जरूरत है, हड़तालें नहीं होनी चाहिए और युद्धका काम तेजीसे करनेकी जरूरत है, पर इसके लिए जनताको एक बार गरमा दिया जाना चाहिए। आम आदमीमें जोश और उत्साह भर दिया जाना चाहिए।

यह तटस्थता कैसी

तटस्थ या निरपेक्ष नीतिका बड़ा शोर मचाया जाता है। इस बिन लगाव वाली नीतिको मानने वाले ५५ देश हैं, जिसमेंसे २० ने हिन्दुस्तानकी सरकारके साथ सहानुभूति व्यक्त की है। इन २०में भी केवल दो ने अपनी इच्छासे किया है, बाकी और १८ देशों ने मांगने पर हमदर्दी दी है। मैं बिन लगाव वाली नीति का हामी हूँ लेकिन यह बिन लगाव वास्तविक होना चाहिए। हिन्दुस्तानमें हुआ यह है कि प्रधान मन्त्रीने अपने कुछ मंत्रियों, (मेनन–मालवीय आदि), को सोवियत रूसके प्रति भक्त होनेके लिए कह दिया, और पाटिल-देसाई वगैरह को दूसरे गुटको एटलांटिक वालोंकी तरफ झुकाया। फल यह हुआ है कि आज सारा देश तटस्थ होने के बजाय वाम पंथ और दक्षिण पंथमें बंट गया है। अगर मैं मेनन-पाटिलका मालिक होता तो उन्हें यह कहता कि वे अपने दिमाग को मैदान-जंग बना लें। मेनन ७० प्रतिशत रूस के भक्त रहें पर ३० प्रतिशत एटालांटिक वालों की तरफ भी देखें। और तब इन दोनों विश्व-विचारधाराओं के समन्वय से एक नई चीज बनकर निकलती, नया रास्ता मिलता।

युद्ध करो अथवा गद्दी छोड़ो

आज हमें दुनिया न तो आगे-देखू समझती है और न पीछे देखू, हम यथास्थितिवादी होकर रह गए हैं। ब्रिटिश गायनाके प्रधान मन्त्री डा० छेदीजगन सात पुश्त पहिले यहींके थे। आज हिन्दुस्तान चीनके झगड़ेमें वह चुप हैं क्योंकि हिन्दुस्तान क्रांतिकारी देश नहीं है और चीन क्रातिकारी हैं, इसलिए चाहकर भी वह अपनी हमदर्दी हमें नहीं दे पाता। मैं मानता हूँ कि हमारी पीढ़ी निकम्मी और नाकामयाब रही है। मैं भी पापका भागीदार हूँ। स्वाधीनता के बाद का देशका इतिहास निकम्मेपन और नाकामयाबीकी कहानी है। लेकिन हमें अब फैसला करना है कि दिल्ली की गद्दी रहे तो शानसे रहे, स्वा-

धीनता और शक्ति व समानताका वातावरण रहे वरना सब कुछ स्वाहा हो जाय । हमें आज आगमें तपकर कुंदन बनने की जरूरत है। या तो यह सरकार लड़ाई चलाने का फैसला करे और मनोबल व इच्छा शक्तिके साथ उसे चलाए और अपना दिमाग साफ रक्खे या गद्दीसे हट जाये । दिमागी दुविधासे इस सरकार के दिमागमें घुन लग गया है ।

ये झंडा कभी न झुकने पाये

अभी काश्मीर के बाबत ही देखिए चौवीस घंटे तक भी अपने बयानमें सरकार स्थिर नहीं रह पाती । आज अमरीका का एक मामूली उपसचिव हमें कहता है तब हम पाकिस्तानसे बात करते हैं । इसमें हमारी आजादी कहां रही ?

लोकइच्छा का आदर हो

जरूरत इस बातकी है कि प्रधान मन्त्री और सरकारके मन की दुविधा खत्म की जाय । प्रधान मन्त्री या तो मजबूत फैसले करें, लड़ें और अच्छी तरह लड़ें या छोड़ दें । कांग्रेस किसी और आदमीको लाए । लोकइच्छा का आदर होना चाहिए और जनताको बहकानेकी कोशिश नहीं होनी चाहिए । ●

अपने बहादुर जवानों पर···

पृष्ठ १७६ का शेष

शीघ्र परिवर्तनसे कमांडरोंमें गंभीर योजना बनाने और अच्छा प्रशिक्षण देनेका समय कम मिल पाया । इस परिवर्तनका असर सम्बन्धित अफसरों और सेवा पर भी पड़ा है। इसलिये मैं कहूंगा कि किसी भी कमाण्डरको उसका दायित्व दो और अवसर दो उसे अपनी आज्ञाओंके पूर्ण कार्यान्वयन का । उस पर विश्वास करो । उसकी कमाण्डमें व्यवधान मत उत्पन्न करो और अगर वह गड़बड़ करता है, इसका दुरुपयोग करता है उसे समाप्त कर दो । भगवान हमारी सेवाओंको अभय प्रदान करे । ●

जनता अंगूरासव (विशिष्ठ)

ताजे फलों, सूखे मेवों व अनेक पौष्टिक पदार्थों द्वारा तैयार होता है। असमय में जो शारीरिक कमजोरी महसूस करने लगे हों, उनके लिये उत्तम स्वादिष्ट टानिक है।

दीपावली पर
शुभ
कामनायें

निर्माता
श्री जनता आयुर्वेद भवन (रजि०)
पीलीभीत (उ० प्र०)

दीपावली के शुभ अवसर
पर
समस्त ग्राहकों, संरक्षकों तथा शुभ-चिंतकों को शुभकामनायें
जब आप ग्वालियर (लश्कर) पधारें तो

लक्ष्मी होटल

शिन्दे की छावनी, लश्कर में ठहरिए

हमारी विशेषतायें :—

* शहर के मध्य में स्थित
* पूर्णतया सुसज्जित तथा हवादार कमरे
* जल व्यवस्था २४ घन्टे
* आपकी रुचि अनुसार स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन
* उचित किराया

तथा
"घर के बाहर घर जैसा आराम"

for
*Novelty Diaries
and
*Plastic Novelties

*With best compliments
from*

PRADIP PLASTIC MOULDERS
12.B Lower Chitpur Road.
Calcutta--1

Ph 347374

M.P.A.-86

दीपावली के शुभ पर्व पर

अंग्रेजी व देशी औषधियों के प्रमुख
विक्रेता
कृष्णा मेडिकल स्टोर्स
प्रो० (रामकृष्ण, पालोड़)
गाडरवारा, जिला नरसिंहपुर
(मध्यप्रदेश)

आपकी श्री वृद्धि
की
कामना करते
हैं !

D.C.C.1

तटस्थता बनाम सुरक्षा

सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी

[संसद सदस्य]

★

हमारे प्रधानमन्त्री अमरीका व रूस के वर्तमान सद्भाव और रूस-चीन के पारस्परिक कलह को अपनी तटस्थ नीति की सफलता का प्रमाण भले ही मानें पर बड़ी शक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की वर्तमान खींचतानको किसी नीति-विशेष की सफलता मानना एक भारी भूल होगी।

●

'गुट निरपेक्षता' का अब प्रायः मजाक उड़ाया जाता है। गत वर्षके चीनी आक्रमण द्वारा भारत पर हुए आघातने यह सिद्ध कर दिया है कि नेहरू सरकारकी विदेश नीति आक्रमणका सफल प्रतिरोध कर देशकी अक्षुण्यता बनाये रखने में पूर्णतया असफल रही है। प्रतिरक्षा और कूटनीति दोनों क्षेत्रोंमें भारतकी पराजय हुई है।

दुबारा चीनी आक्रमण का भय

हम लोग अभी भी संकटकालसे गुजर रहे हैं और शत्रुने १७००० वर्गमील भारतीय भूमि पर अधिकार कर रखा है। शत्रु की ओरसे अभी भी सीमा पर सेनाओंका गहरा जमाव है और चीनियों द्वारा लद्दाख क्षेत्रके तथाकथित असैनीकृत भागमें भी नई चौकियां स्थापित की गई हैं। सरकारी प्रवक्ताओंने दूसरे आक्रमणके भयका विचार त्याग नहीं दिया है और उनकी यह स्थिति नहीं है कि वे देशकी जनताको इस बातका आश्वासन दिला सकें कि दुबारा आक्रमण होनेपर चीनियोंको परास्त करनेके लिए हमने अपनी सुरक्षाकी पूरी तैयारी कर ली है।

प्रतिरक्षामंत्री संसदमें केवल इस बात का ही आश्वासन दे सके कि हम पहलेसे पर्याप्त अच्छी स्थितिमें हैं। किन्तु चीनियों द्वारा खाली की गई भूमिमें सेनाओंको न भेजने और उस क्षेत्र पर अपना कब्जा जमानेकी दिशामें किसी भी प्रकारके प्रयत्न का अभाव ही हमारी अस्थिरता और अक्षमताका स्पष्ट द्योतक है।

मित्र राष्ट्रों का सहयोग प्राप्त करें

हमारे देशकी सैनिक अक्षमताका पर्दाफाश हो गया है। अत: यह दूसरी बड़ी भूल और एक व्यर्थकी बात है कि बहादुरीसे सीना तान कर हम कहें कि हम तो अकेले ही भयंकर चीनी आक्रमणका सामना कर लेंगे। हमको मित्र देशोंकी सहायता और परामर्श लेनी ही होगी; इस देशके लिये

DEEPAWALI GREETINGS

From

SANTLAL BANSIDHAR

Dealers in :

CANVAS & RUBBER FOOTWEAR

150-A, LOWER CHITPUR ROAD,

CALCUTTA-1

B.S.O.
Quality Shoes

Gram - FLEETSHU

B. S. O.
Quality Shoes

Monufactured by-

OLYMPIA RUBBER WORKS
CALCUTTA

Dial - 345509

K. R. M.
Quality Shoes

Manufacturea by -

Kadar Rubber Mfg. Co. (P.) Ltd.
CALCUTTA

M P.A.--106

यह एक अनिवार्य आवश्यकता है। यदि सरकार इसमें किसी प्रकारके मानसिक संकोचका अनुभव करती है और यदि वे इस आधार पर अपनी सुरक्षाकी व्यवस्था नहीं करते तो वे इस देशके साथ धोखा और विश्वासघात करेंगे।

इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठ खड़ा होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंके संबंध में हमारी नीति क्या है और इस सम्वन्ध में हमारा क्या दृष्टिकोण है? गुट-निरपेक्ष नीतिके आलोचक यह अनुभव करते हैं कि यह नीति मार्गमें बाधक है। एक दूसरा वर्ग यह भी अनुभव करता है कि अब वह समय आ गया है कि हमें इस नीतिका परित्याग कर अपने आपको किसी सैनिक गुटके साथ जोड़ लेना चाहिये। संसदके विगत सत्रमें हुए वैदेशिक मामलोंसे संबंधित बहसके अवसर पर ये प्रश्न उठाये गये थे और प्रधान मंत्रीने अपनी नीति के बचाने का प्रयत्न किया था। किन्तु वे यह समझानेमें असफल रहे कि किस प्रकार वे इस नीतिको प्रभावी बनाने जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि वे पुनः अपने उसी पुराने सिद्धान्त पर आ गये हैं तथा अमेरिका और रूसके बीचके तथाकथित सद्भाव एवं रूस और चीनके बीचके वैमनस्यको अपनी गुट निरपेक्ष नीतिकी सफलता मानते हैं। बड़ी शक्तियोंके पारस्परिक सम्बन्धोंकी वर्तमान गतिविधियोंको अपनी गुटनिरपेक्ष नीतिकी सफलता समझना अतिशयोक्ति है। यदि आगे भी हम इसी प्रकार विश्वास करते रहे तो हम एक 'मूर्खोंके स्वर्ग' में होंगे। क्या कोई पाकिस्तान और चीनके बीच हुई संधि का औचित्य सिद्ध कर सकता है? क्या पाकिस्तानने एकाएक अपना विचार परिवर्तन कर दिया और पं० नेहरूके हिसाबसे सोचकर गुट-निरपेक्ष नीतिका अनुसरण करनेका निश्चय कर लिया?

यदि कोई कोलम्बो राष्ट्रोंके क्रियाकलापों पर ध्यान दे तो क्या ये शुद्ध रूप से अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें एक सत्य सिद्धांत की रक्षा करनेकी भावनासे प्रेरित हुए थे। यदि ऐसा ही था तो चीनको आक्रमणकारी घोषित करनेमें उन्हें संकोच क्यों हुआ? भारतको ही दबानेवाले कोलम्बो प्रस्तावोंके चीन द्वारा ठुकराये जाने पर भी इन राष्ट्रोंने क्यों नहीं यह घोषित करनेका साहस किया कि चीनका पक्ष गलत है? और भारतकी सहायता करनी चाहिए। वस्तुतः ये देश भयभीत हैं कि कहीं सत्य बात कहनेसे शक्तिशाली चीनके क्रोधका शिकार उन्हें न बनना पड़े।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि कोई भी देश ऐसी किसी नीतिके बारे में सोच भी नहीं सकता जो स्वयं उसके राष्ट्रकी सुरक्षाका समर्थन न करती हो। सन्धियां और समझौते केवल सैद्धान्तिक आधार पर नहीं किये जाते। किसी नीतिके विकासमें नैतिक सिद्धांत एवं मूल्य कोई निर्देशक तत्व नहीं होते। राष्ट्रीय लाभ ही वास्तविक निर्णायक तत्व होता है। बड़ी तेजी से समझौतोंका महत्व अब समाप्त होता जा रहा है। पश्चिमी शक्तियां अब पहले की भांति उतनी संगठित नहीं है जैसी कि कुछ दिनों पूर्व फ्रांसके साथ मिलकर एक बहुत महत्वपूर्ण पार्ट अदा करती थीं। चीन और रूस भी अलग-अलग हो गये और रूस-चीन सीमा विवादकी वार्ता अब

तार : MILK फोन : २१०९

स्थापित : १९२३.

अपर इंडिया डेरी

बेगम बाग, मेरठ

निर्मित

कन्डेंस्ड मिल्क सेवन करें

S.D A.—101

MURARKA

MAKERS OF HIGH CLASS PAINTS, VARNISHES, ZINC OXIDE DRY, ENAMELS, RED LEAD

The Murarka Paints & Varnish works Private Ltd.

(Estd : 1621)

4E, Dalhousie Square,
29, Stephen House,
Calcutta-1.

Telephone:
23—7626
23—7627

Telegram :
"VARNISH"

M.P.A-77.

** दीपावली पर हार्दिक शुभ कामनायें **

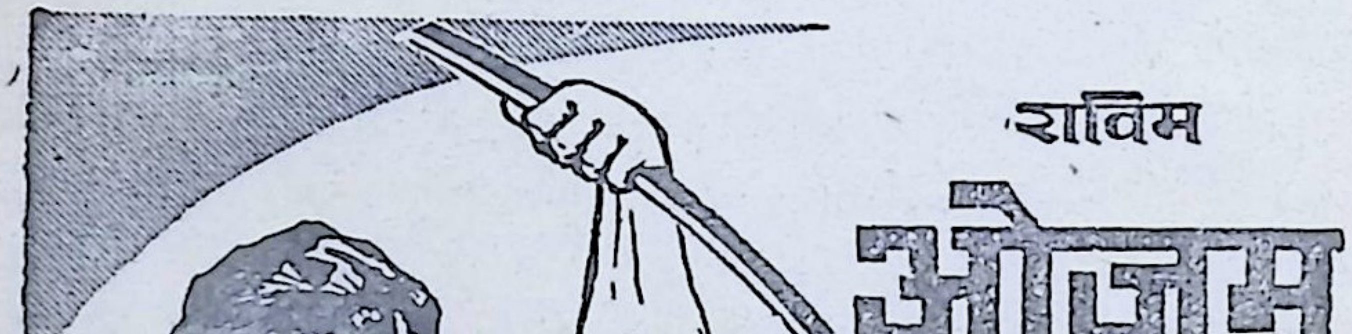

राकेश विज्ञान मन्दिर-कलकत्ता

पोष्ट बक्स नं०-६६७ कलकत्ता-१

एक प्रचण्ड दावानलका रूप धारण कर रही है।

राष्ट्रीय सुरक्षा का विचार सर्वप्रथम रख कर अफ्रेशियाई जगतमें नये गुटके अस्तित्वमें आ रहे हैं। अत: विश्वकी वदली हुई परिस्थितियोंके संदर्भके गुट निरपेक्षता की नीति अपने पुराने ढंगसे अब लगभग निरर्थक हो गई है। भारत इस बातका थोड़ा घमंड अवश्य कर सकता है कि एक स्वतंत्र देशके रूपमें उदय होनेके साथ ही उसने इस प्रकारकी नीतिका अनुसरण किया है। यह एक सही नीति थी और संभवत: किसी भी स्वाभिमानी देशके अनुकरण करने योग्य एकमेव सही नीति थी। इस नीतिको सम्पूर्ण राष्ट्रने स्वीकृति प्रदान की थी और आज भी प्रजा-समाजवादी दल को उस नीतिके मूलभूत तथ्य स्वीकार हैं। यद्यपि उसके कार्यान्वयनोंमें अनेक स्थानों पर उसका मतभेद भी है। यह किसी एक व्यक्तिकी कोई कल्पना नहीं और न केवल पं० नेहरू अपने आपको उसका प्रवर्त्तक मान सकते हैं। यह तो स्वतंत्रताके निमित्त किये गये राष्ट्रीय संघर्षके कालमें अपनाई गई नीति में से विकसित हुई है। उसके समक्ष दो लक्ष्य हैं—(१) राष्ट्रीय हितोंकी पूर्ति और (२) अंतर्राष्ट्रीय तनाव घटानेका प्रयत्न करना।

● क्या भारतने स्वतंत्रता प्राप्तिके पश्चात अपनी आंतरिक और राष्ट्रीय एकताके निर्माणकी, जो कि एक सरकार का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है, उपेक्षा-नहीं की ?

एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिच्छाया के अनुसरणके प्रयत्नमें अपने राष्ट्रीय हितों का विस्मरण कर यह अपने ही नारोंका शिकार बन गया। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में यहां तथाकथित प्रजातंत्रवाद और साम्यवादके विवादमें उलझ गया। ●

शांतिका मसीहा बननेके फेरमें ··

एक 'शांति-दूत' के रूपमें प्रसिद्ध होने की लालसामें इसने अपने आपको भावनात्मक रूपसे कम्युनिस्ट गुटके साथ इस गलत विश्वासके साथ सम्बद्ध कर लिया है। साम्यवादी उसमें बाधक हैं। भारतके प्रमुख प्रवक्ताओंने अन्तर्राष्ट्रीय अवसरों पर एवं संयुक्तराष्ट्र संघमें पश्चिमी देशोंके विरुद्ध उठनेवाली किसी भी समस्या पर उनकी कटु आलोचना की; जबकि दूसरे गुटके उसी प्रकारकी समस्या पर बोलनेमें झिझकने लगे। इस प्रकारकी घटनाओं पर अन्यायपूर्ण मत प्रकट करनेके सम्बन्ध में स्वयं प्रधानमंत्री भी कम उत्तरदायी नहीं ठहराये जा सकते। रूस द्वारा हंगरी विद्रोहके दमनके अवसर पर रूसकी निन्दा करनेमें हुई झिझक इसका ज्वलंत उदाहरण है। इस प्रकारके अनेक छोटे-बड़े उदाहरण हैं।

इस नीतिको दोषपूर्ण ढंगसे कार्यान्वित करनेके कारण हमने अपने राष्ट्रीयहितोंकी उपेक्षा, एवं अपनी प्रतिरक्षा व्यवस्थाकी कमजोरीके रूपमें अत्यधिक भयानक क्षति उठाई। भारतीय नीति निर्विवाद रूपसे साम्यवाद और साम्यवादी शक्तियोंकी ओर से अत्यधिक नम्र थी और इसी कारण यह धारणा बनाई गई कि हिमालय की ओरसे आक्रमणका कोई भय नहीं है। यद्यपि तिब्बत उसका शिकार बन चुका था। यह एक महान भूल थी। जिसे अब भी स्वीकार नहीं किया गया और न इससे लाभ उठाकर हमारी राष्ट्रीय अथवा अन्ताराष्ट्रीय नीतियोंमें कोई परि-

॥ श्रीहरि ॥
सुदृढ़ और प्रसिद्धि प्राप्त

युगबल

ताले (रजि०)
एवं
गीता दैनन्दिनी
(१९६४ की डायरियाँ)
विभिन्न वस्तुओं के
निर्माता :—
स्थानीय विक्रेताओं से
मांगिये या हमें लिखिये

युगबल ट्रेडिंग कंपनी
पड़ाव देव अलीगढ़

दीपों का प्रकाश हमारे हृदयों
को
राष्ट्रभक्ति से प्रकाशित करे

देश की समृद्धि के लिये
सदैव
खादी का ही व्यवहार करें

निर्माता :
उत्तर प्रदेश खादी उद्योग
पिलखुवा (उ० प्र०)

S.D.A—120

INVEST IN DEFENCE BONDS

With Compliments of

KAJARIA SONS (Private) Ltd.
EXPORTERS, IMPORTERS & AGENTS
32. Armenian Street, Calcutta—1.

GRAM : KAJARIAGENT

PH : 33 2114/5

M P A — 81

वर्तन ही हुआ। हमारी प्रतिरक्षा व्यवस्था की कमजोरी और उसके परिणामस्वरूप चीनी आक्रमण और हमारी भूमि पर अधिकृत कब्जेके कारण हम अकेले पड़ गये। परिणामत: हमारे पड़ोसी देश भी सोचते हैं कि भारत जैसा बड़ा देश भी जब अपनी सीमाओंकी सुरक्षा नहीं कर सका तो शक्तिशाली चीनके आक्रमणके समय अपने छोटे पड़ोसियोंको दी गई उसकी सहायता कोई अधिक उपयोगी नहीं होगी।

व्यक्ति अपनी भूलोंसे शिक्षा ग्रहण करता है। इस कारण इसमें छिपे हुए एक वरदानके रूपमें चीनी आक्रमण हमारे लिए था। जिससे न केवल हमको एक धक्का लगा और सारी दुनियां के सामने हमारी प्रतिरक्षा सम्बन्धी कमजोरियाँ सामने आ गईं; वरन् हमारे देशकी जनताको भी अपनी विदेशनीतिकी कमजोरियों और असफलताओंका ज्ञान हो गया।

चूंकि हमारे देश की सुरक्षा प्रतिरक्षा के प्रश्नों का इस से संबंध है। अत: भारत की जनता सरकार की इस नीति के कार्यान्वयन के प्रति उदासीन नहीं रह सकती।

सीमा पर अभी भी ढिलाई है। और अपनी भूलोंको सुधार कर एक सही दिशा में जानेके स्थान पर हम पुन: अपनी उसी पुरानी स्थितिकी ओर जा रहे हैं। हम पुन: उसी पुराने ढंगसे व्यवहार करना चाहते हैं। हमको अपनी प्रतिरक्षाके लिए सामरिक सामग्रीकी आवश्यकता है और एक बहुत बड़े प्रमाण पर उसको प्राप्त करनेकी आशा हम केवल पश्चिमी शक्तियों से कर सकते हैं। यह एक कटु सत्य है।

चूंकि हम स्वयं अपने मनमें सशंकित हमारे बारेमें लोगोंको किसी प्रकारका भ्रम हो इसी कारण हम अपने आपको दुनियांके सामने गुट निरपेक्ष सिद्ध करनेके लिए साम्यवादी देशोंमें सैनिक प्रतिनिधि मण्डल आदि भेजते हैं। अमेरिकी नभ वाणी सम्बन्धी समझौतेकी गन्दी कहानी इसका दूसरा उदाहरण है। अपने उद्देश्यों और हितों को तिलांजलि दिए बिना ही इन परिस्थितियोंमें हमें अपने सहायक राष्ट्रोंके मनमें व्याप्त शंकाओंकी ओर ध्यान देना होगा। आखिर हम उठते किस बातसे हैं? यह ठीक है कि आज हम शक्तिके आधार पर कोई वार्ता नहीं कर सकते तो इसलिये क्या हम कायरताका परिचय दें? डरकर मर जावें। हमने यह घोषणा की है कि न तो हम अपनी गुटमें निरपेक्षताकी नीतिका ही परित्याग करेंगे और न हम किसी भी सैनिक गुटमें सम्मिलित होंगे। स्वयं प्रधानमंत्री पं० नेहरूने इस बातको स्वीकार किया है कि पश्चिमी राष्ट्र यह नहीं चाहते कि हम अपनी दोनों घोषणाओंमें से किसीका भी परित्याग करें। ऐसी स्थितिमें यह हिचकिचाहट क्यों?

हम अपने स्वाभिमान और राष्ट्रीय सम्मानके अनुरूप बिना किसी हिचकके और बिना किसी शर्त एवं बंधनके अपनी व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा अपनी स्वतंत्रता को कायम रखनेके लिए आवश्यक सैन्य सहायता लेना चाहते हैं और इस सीमा तक हम निश्चत ही गुट निरपेक्ष नहीं है। आवश्यकता इस बातकी है कि वर्तमान नीतिको एक समुचित दिशा और स्वरूप प्रदान किया जाय। ●

दीपावली के श्री पर्व पर अपने सभी बन्धुओं को हार्दिक बधाई

तार : क्वालिटी स्थापित १८६१ फोन : १७

मेसर्स-लाला बनारसीदास खत्री

उच्चतम स्वदेशी इत्रों के निर्माता, कन्नौज (उत्तर-प्रदेश)

सोल सेलिंग एजेण्ट : मैसूर गवर्नमेंट संदलवुड आयल फैक्टरीज़, मैसूर

उत्तर प्रदेश, पजाब, मध्य प्रदेश, देहली, राजस्थान के लिये

फोन : ३३-२२४३ हमारी शाखा तार : SANDALGENT

लाला बनारसी दास खत्री

कमरा न० ४७, बांगड़ बिल्डिंग

१६१/१ हरीसन रोड, कलकत्ता–७

सोल सेलिंग एजेन्ट : मैसूर गवर्नमेंट संदलवुड फैक्टरीज

प० बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम के लिये N.S.–6

GRAM : JOINHANDS PHONE : 84551

Corrugated Joint Fasteners

(Pcs. And Rolls)

Manufacturers

AUTOMATIC ENGINEERING PRIVATE LTD.

GOREGAON EAST

BOMBAY-62

DIRECT

Stock "SWASTIKA" Rulers for **Quick Profit** and Satisfied Customers

"SWASTIKA" Drawing Boards for Accuracy & Quality

Mfgd. by :–SWASTIKA STATIONARY WORKS

P. O Box No. 116.

DEHRADUN (India)

S D.A.